

घर-संसार

अन्नाराम 'सुदामा'

धरती प्रकाशन

© अन्नाराम 'सुदामा'

प्रकाशक . धरती प्रकाशन, गगाशहर, बीकानेर (राजस्थान) / मुद्रक :
एस० एन० प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032/ संस्करण :
पैलो, अक्टुबर, 1985 / मूल्य : साठ रिपिया मात्र /

GHAR-SANSAR (RAJASTHANI NOVEL) : PART II
ANNARAM 'SUDAMA' PRICE : 60/-

श्री अन्नाराम 'सुँदामा' रँ उपन्यास 'घर-ससार' रो दूजो भाग सुधी पाठका रँ हायां सूपता मर्न घणो हरख है। हिसाब सू उपन्यास आप लोगा रँ हाथा मे पैलै भाग रँ लगोलग ही आवणो चाहीजँ हो पण छोटी-मोटी कई अवखाया आडी आवती रँयी जिण सू टैम पर काम पूरो नी हुसक्यो। इण सारू आप सू माफी चावू अर खासकर बा पाठका सू जिका पैलो भाग पढ'र पूरो करता ही चिट्ठी-पत्री सू तगादो करणो सरु कर दियो अर आज ताई करता रँया है।

—प्रकाशक

घर-संसार

(भाग : दूजो)

मिगसर रो पैलो हफतो बीतण मतं है । गाव रा घणखरा खेत संभग्या । बाकी खाली वं ही है जिका रा खळा है सावठा, अर सिर है मायै-चोटी सू साव निरवाळा । छाती है न्याई अर सांभणवाळा मे है संख्या अर सम्पत्त मोकळी । नी-नी करता दर्जण-नैडा घर तो गांव मे इसा है ही, जिका होळी रै पगां, मूढा घरां कांनी करमी । बठे ही धीणो, बठे ही धान अर बठे ही सगळो परवार । बिलोवणांरी बाज, मू-अधेरै ही सुरू हुवै अर मूरज री उगाळी फेर, टावरां री किलोळ, उजास ही बधै अर उल्लास ही । टावरां री लैण रेत मे रमती राजी अर घन री लैण खेत में चरती ।

आदमी मोठ-गवार खखेरै का गावटो करै । लुगायां माद ऊपणं । तिस सनावं जद वै घड़ा-गिलाम नही, मनीरा संभाळं । पाणी हुवै गैरो गुनाबी अर मिथी-सो मीठी तो होठा रै लगावै नी तो; दूजो, तीजो—जी मे आवै जिना फोडं, आछो हुवै बो आपरो फोरो हुवै बो गायारो । खायां पछै पेट ठडो, पंडू नीरोग अर आखी चेतना तर । मतीरो तो मतीरो ही है—जोडी-वाळ नही बीरो ।

छाछ-रावड़ी पपाऊ, अर घपाऊ ही कातिसरो । रात नै घूई रै च्याहं-भेर ह्वाई का 'कह चक्वा एक बात, कटै की रात', दान, बाणो रै मिटान पर बधै तो रात री नीरसता सरसता मे बदर्ळ । न कीरी ही रावगी अर न कीरी ही देवगी; मंनत सागं मितराई राखै, रोही री मांज वै ही माणं । एक-दो नै छोड़, घर इसा, घणखरा जाटां रा ही समझो । अं घर खेनी मे तो, ओरा मू सिरै हुवै ही, हुवै कमाई में और । घास-फूस बेचती वै बंताळ-जेठ रै पगा, अर धान-धून ऊपरली रत आयां । की मे ही डोडा

अर की मे ही ठूणा । की पोतै-वाकी ही राखै, कँरसाळी मे ही एकर ती, न काळजो हालै अर न चैरै री हवा ही उडै ।

नायक, रेगर अर मेघवाळां मे एक दर्जण सू की ऊपर घर इत्ता भी है जिंका नै महीनै-बीस दिना रै धान नै छोड, धरे और की लावण रो मोको ही भी मिल्यो । लावण री एक लम्बी लालसा वारै मना मे ही जल्मी अर मना मे ही पाछी बुझगी । बुझै आपेही, लैणायत खळा निकळनै सू हफ्ता पैला हौ घेरा घालण लागग्या हा बेतां मे । आसाम्यां नै खेती वा, चारलै साल ही आपरै घर मू करवाई अर ई सान्भ भळै । बीज-हूळ ही नही, तेल-तमाखू अर गामै-चीरडै ताई री वसी हौ, वा पर ही वाजी । वारलो साल सूको ही गयो तो लेंवता वै काई ' मत लो भला ही, वांरी फसल तो फमौ दिना पाणी ही । अंस की हुयो है तो सगळी कांण धई मे काढली वां । माल उठासियो, आसाम्या देखती रही । केयां री-री हौ की कियो । दो-च्यार डोकरी-डोकरा की आमू ही पटक्या, बोल्या, "वावूसा, औरां कानी नी, म्हा कानो देखो की ? म्हे कठै ही आवा-न-जावा, च्यार महीना अठै ही झूपड़ा रुखाळस्या, टुकडो खाँर आसीस थानै देस्यां पण आसीसां रै ओग सू पिघळै वै मँग और । थानै खाली एक ही वात मुणोजै कै, "न तो रोवण री दरकार अर न हाया-जोड़ी री, पैलां लीक माफ करो पैलडी । दूसर दरकार पडै तो वै बी धेळा ही नुई खीचण नै त्यार, घर खुनो है धारै घातर आधो रात नै ही ।" आसामी किता खोटा भुगतै, अर एक टैम खाँर रात किन्नी दोरी काडै, आ चिंता बीरो नी ओडै मारै-भर ही । मोटो चिंता बीनै एक ही है कै आसामी, समूचो नी मरै पण समूचो सावळ जिये ही नही । मरघा बीरै मूळ री हाणि तो है ही, बीरी मुख-मुविघा नै ओग थीर लानै । ई खातर ही बो, बीनै कर्ज पर कर्ज दे'र ही किया ही जीवतो राखणी चावै । सात पलम ही नी हुवे अर वो सावळ ही नी आवै ।

'घर खुलो है धारै खातर—आधी रात नै ही', बीरै रै मूडै इत्ती मुण्यां पछै, आसामी बीरै सारै ? बी भा-बाप रो जीवत-खचं काळ मे हो करदै अर चावै तो जीवतो लुगाई री छाती पर एक और ला खडी करै । बीरै नै बी राज मू मांटो समझै । न्यारण री जरूरत रात नै ही पडगी तो कद आयो राज अर कद हुयो 'लोन-पाम' ? इत्तै तो गोगो केई बिरिया गाईजै । राज

रो 'लोन' अर सोगन तो खावण नै ही हुवै है, खावण रो खाली अटकळ आणी चाईजै । आ सगळ्यां घरा पर, घणों-थोड़ो राज रो 'लोन' जरूर है पण देणों सोरें सास कोई ही नी चावै ।

अबै केई आं मे सू ठाठा-मजूरी पर, केई भट्टा रो दिस अर केई हाड़ी-कटाई कानी मूरतगढ सू ले'र बंगलै-फाजलकें ताई जा पूगसी । जेठ-असाढ मे पाछा घावसीड तद, की चुकामी, की राखसी । राखसी वो महीनै-बीस दिन मे घा-खुटोसी । ऊमरा रो टैम बै ही धोड़ा, बै ही मैदान, न भूखा, न घाप्या, चू चरं-भरं, गवाडी रो भंसागाडी फेर बियां ही अव्यवस्था रो ऊबड-खावड धरती पर चालसी । आपरो बेच्योडो धान, दूणं मे लेसी, पेट ढनयो है तो पीठ उघाडी । दुरवस्था रो ढीली मंचली मे पडी ई रोगली पंगत नै पसवाडो कुण फोरावै ? भग्या रो हाल तो और ही माडो है । न बा कनै जमी रो बेलीपो, अर न गाव रो । कमी अर कोप विचाळै, आयोडा पीचीजै बै ।

अं सगळा मोचै हैकें म्हारी दसा फुरणी हुसी तो कदेई मर्त ही फुरसी— रातो-रात, म्हारै किया की नो हुवै । आंरो उदासी जद-कद ही मुघा रो चेतना आरसी पर पडै तो वी रो पीड बधं, बा कोई दिसा देखण रो चेष्टा करे । सांवठै जाटां दाई तो कियां हुवै, जद सावटा खेत ही आरै पगा नीचै नी । न बीपार, न पढाई अर न मेळ रो टोस धरती ही आं कनै तो छडी-बीछडी मजूरी सू तो पेट भराई भलां हो हुवो, फेर ही आरी बिखरती मंनत, अर टूटती एकता नै एक दिस मिलणी चाईजै—जीवती-जागती, बा पणी बिरिया सांचै ।

हरिजना रं आखै वास मागै बीरो जाण रो बीपार अबै, तरक्की पर है । छोटा-मोटा बीमू टाबर पठण नै आवै है बीं कनै । वा बांनै स्नेह अर मस्कार दोनू देवै । छोरभा केई 'हाथ रो हुनर,' ही मीखै है । पढण-लिखण मे तुगाया ही रुचि लेवै है । सगळ्यां मू मोटी बात आ है कें वामे आत्म-विश्वास अर आत्म-गौरव जिती सां भी एक मैज ऊचाई पकड़न नै उंतावळी है । बीनै मन्तोप ही है अर आत्मा ही । थोड़ी-घणी डोकरपा ही डूकें बी कनै, केई एकली, केई तुगायां सागै । गिपनी रो कोई दो-स्वार छोड़, घरां मे सगळा मू घणै, केकदरी अर के-मूठ मे वै है केरारी । बा सागै मुघा रो मूक

सहानुभूति तो है ही, आपरें बूतें सारू बा पूरी सायता ही करै ही बांरी ।

कोई न कोई गिड़गिड़ावै बी आगँ, “बाईसा, दो दिन हुग्या, मायो फूटै है, आंख्यां अधघडी ही नी लागँ, समक रात ओय-हाय कर'र काढणी पड़ै, हाड दूखणियो कुळै ज्यू कुळै है, कुण संभाळै, जूत्या चालणी हुया महीना हुग्या घिगाणँ घीसणी पड़ै, पगा में व्याउ, बँ पूरा नी मेलीजै, मू खारो अक पडयो है, रोटी कानी झाकण रो जी ही नीकरै, तीन दिन हुग्या हाथ ऊजळा किया, सका ही नी हुवँ, पचिया हुग्या, भवरा-माटी लगा राखी है, पण काई हुवँ बी सू, उल्टी हुवँ, ताव अर धासी आवै, काटो गडग्यो, सळी चुभगी”, पण डोकरी रै कैया खीर कुण राधँ ? कुण तो वानँ दिखावँ अर कुण देखण रो फौडो, जाण'र गळँ मे लेवँ ? कदे-कणास वारँ होठा पर मतँ ही फूठ उठँ “बाईसा, कठ मोसीज'र तो मरीजँ नही, अर भौत रामजी देवँ नही ।”

मुघा पछलै डौड महीनँ सू, की घरेलू दवाई-पाणी ही राखँ । काप्टादिक ओखदा रो खासो-भलो ग्यान है बीनँ—बंस-परम्परा री भँर सू । बाप ही बँद अर नानो ही । टिचर, डिटोल, गाज, चाती, बोरिक, रुई अर पाटी राख मेत्या है बण । वाडी री एक मोटी क्यारी मे खारो गवार पाठो, दो-च्यार इरड, अर दो गिलोय री बेला ही, लगा राख्या है । पाटी-पोळी ही करै, काढो-उकाळी ही देवँ । डोकरघा राजी हुवँ, सुखीजतँ सास सागँ आमीम बिखेरँ, पण बणखरी बूढक्या रँ मोटो रोग हुवँ कासँ अर कमकदरी रो । घर मे गिणती वारी जू जिती ही नी । ठढो-वासी खीचड़ो का पुरचण धीरी, बा ही बिना लगावण, करडी हुयोड़ी रात री रोटी, अँ ही राजी हु'र नही, लिलाड मे तीन मळ घाल'र, अनादर अर उपेक्षा सू । पेट मे नाखणो तो पड़ै ही की न की पण न बँ पूरा उगळँ, न रचँ अर न सात्रळ पचँ । मळ ही बुपित अर मन ही, रोग तो हुवण रा ही है । वँ जियँ तो है पण अणचाई-जती उदासी पी-पी दिन आपरा किया ही ओछा करै । मुघा वानँ कोरी दवाई ही नी दे, ठेठ बारँ मन ताई पूगँ—सँज अपनायत सागँ । बँ आपरो भेळो कियोड़ो भार, बी आगँ ढाळ'र हळकी हुवँ, थोड़ी नही खामी । केई-वेई तो चला'र आवँ ही ई खातर है । आरी इयां गुणनी, मुघा आरँ उपचार मे ही सामिल कर राखी है ।

डोकरघा इया तो केई आवै पण परसू एक भाई वा सगळा सू उदबुदी,
रीर सू नी आपरी गळगळी गाथा सू । रोग थोडो पीड घणी । आ'र बैठगी,
म्बो साम छोडती । सुधा बोली, “बोलो मा-सा पधारणों कियां हुयो ?”
उदास-उदास देखती रही सामनै । सुधा भल्ले बोली, “बोलो मा-सा,
केई दोराई है तो—सको बयो ?”

“मुणी है आप पडघोडा हो”, वा धीमै-सै बोली ।

“पडघोडी तो हू थोड़ी, पण आप तो काम बोलो, काई करणों है ?”

“म्हारी ऊमर देखोनी कित्तीक काई है, काळो कद काई कटसी
वीरो ?” कह'र बण आपरो डावो हाथ, की धूजतो-धूजतो मुधा सामो
कर दियो ।

मुधा थारे हाथ कानी नी, चैरे कानी देखयो—गडती निजर सू । वा
समझगी ईरै अहम् नै अपमान री कोई लूठी ठेस लागी है, घाव वारै कम,
माय जादा है । वा बोली, “मा-सा, हूं ऊमर नी देखू, रोग है तो बतावो
कोई ?”

“मोटो रोग तो ऊमर रो ही है, नाक-नाक घापगी बीसू ।”

“बताया बीसू काई फकं पड है, आणी है जितो तो आसी—थारै बिना
पूछया ही । सरिर सू तो नीरोग हो नी ?”

बण आपरी पीडी उघाडी—डावै गोडै री ढकणी सू, आगळ दो-एक
नीचै, रिपियं री कोर मावै जितो घाव; घाव मे पीप, अर पीप पचपचै काना
ताई । मुधा आगळी सूं मामूली-सो दबायो का पीप बह निकळी अर वा
सिसकाए ऊपर खीचती बोली, “ओय, इयां काई करो हो बाईसा, जो
निक्ळै है नी ?”

“जी निकळै है तो आछो'क, थारी मनचीती हुवै है नी ?”

“तो जद पीचो, थोडो बयो जोर लगा'र मागीडो ।”

“अर पीचया थे बिया ही, फेर चमकस्यो जद ?”

“पीड हयां तो बाईसा चमकस्यु ही ।”

“दत्त मे ही चमको हो, तो मरणो तो ईं सूं लाख गुणों दोरो है,
छोजे ईंनै, मरण री आपा मान ही बयो करां ? कठै ही कोई वाट
कूडै-कडातियं पर पडग्या हा काई ?”

डोकरी सुधा कानी देख्यो देखती रही ।

सुधा बोली, “सको क्यों मा-सा ? हू थागँदार नी, बेटी हू थारी ।”

‘बेटी’ कैवता ही, या फीस पडी—बिना पीच्या ही, अर आट्या भर ली । सुधा बोली, “ई सू थानै दुःख हुवै है मा-सा तो टाळ सही, बाई करणो है—मनै पूछ’र ?”

आंख्या पूछती वा बोली, “बाईमा खुद री सायळ उघाडू तो लाज हू खुद ही मरू, जीणं मे भदरक तो की नी, पण कठ थोड़ा ही भोसलू ?”

“वात काई है, अमूजणी नै बाळो वारै काडोनी ?”

“अमूजणी है जद तो घणी ही है, नी जद की नी पण हुवो-हुवावो दोस सगळो म्हारो ही है ।

“किया ?”

अबै खुलगी वा, बोली, “पडपोतो है म्हारै, परणायै नै ओजू दो साल ही पूरा नी हुया । डील रो कवळाटियो, थाकल ही है की, सोळ बरसा रो अबै हुसी दो महीना बाद । बीमू डीढ-बिलान लम्बो, दोलई हाड, सोळ-सतरै री बीनणी हुबैली बीरी, बीनणी काई, बीनण ही समझो थे । पडपोतो तेरैक रो हो जद ही हू घरआळा रा कान छावण लागगी ही कै अरे कितीक रात, कितोक ज्ञासरको, हू अबै कितीक दिना री ? मिर दूधै, गोंडा उत्तर देवै अर सोझी ही भौळी पडे दिन-दिन । पडपोतै री बहू रो मू तो मनै ही दिखावो—जाऊं जिकै सू पैला-पैला’ । घरआळा यी ध्यान नी दियो । दां-एक महीना छेडै खासी-बीमार पडी, बेटै पूछयो, “कयो मा, काई जी मे है ?” म्हारै तो बा ही रट, पडपोतै री बहू देखू जद ही जी मे जी आबै । बेटो बोल्यो, ‘ठीक है मा, मीको लाग्यो तो अंस करस्या तजबीज बोई ।’ हू भाग री सावळ हुगी केई दिना नै, म्हारै तो भळे वा ही सागण रट । पडपोतै नै छेरुड आटा दिरवा दिया, बीनणी नै पना लगा’र, खुसी म्हारो आभै पूगगी जाणू । अधकीलो चादी रा गंगा हा म्हाग, आज ताई छाती नीचे राख्या, रिपिमा हा चादी रा तीम, दो पोता परणा तिया तो ही हवा नी लागण दो वाने, वे सगळा दे दिया ई बीनणी नै, की चौई की छानै । ‘बिनणी काई एक चीज है बुढ़ापे सफळ हुग्यो म्हारो तो । जणै-जणै आगै बडाई करतो नी थकती, मूढै रो कवो बीनै देवती ।”

अधमिट वा चुप हुगी जाणू की बिसाई ली हुवै वण । फेर बोली,
 “बाईसा, परसू घरआळा तो घणपरा खेत गयोडा हा । हू पडवै मे जीमै ही,
 वा चुल्लै कनै वेठी ही । में कैयो, ‘साग मे इत्ती-इत्ती मिर्चा ही कोई घालीजै
 है’, अबै टावर थोडी ही है तू, की सऊर राख्या कर ।’ पाछी बोली, मिर्चा
 सू ही तेजअर तूबै मू ही खारी, “तू दीयै जिमी नी, करमां री कीट ही तू
 है, बैरण ! कह’र थोडी करी न घणी, भुवा’र चीपियै री पुरसदी आ मोडै
 कनै, कोर बैठगी, लोही मुरू हुग्यो । टुकड़ो अधविचाळै ही छोड़, हू बारै
 निकळगी, थोडी राख दावली, अबै कीनै ही हू काई कहू ? काल ताई तो
 घडाई कर-कर पूरी हुवै ही । कैया वास अर घर, सै मनै ही भाडसी, ‘आ
 रडार ही छोडीली मरै है, कोई नी सुहावै घर मे ईनै, डरती हू तो होठ ही
 नी पोलू’, कह’र वा चुप हुगी ।

मुधा बोली, “सराही खीचड़ी दांता चढगी ?”

“हा बाईसा, इसो ठा हुंतो तो, काळजो खाली नी करती ।”

“छोरो कंबळाटियो अर कमजोर, वीनणी दौलडै-हाड अर कद री पूरी,
 भैस सागै गरीव टोघडियै री गळजूट क्यो कराई थे ? काई धान बाडो लागै
 हो धानै बो बिना ?”

“बाडो न घाडो, म्हारो जीभ रै बळी चूची लागी ।”

“गाजी तां हुवैली छोरै पर अर पड़ी धारै पगां आवती, जे आव-नाक
 धाटै मे ले लेवती तो ?”

“तो किमी सारो हो, पण वकरै री मा कित्ता थावर टाळमी बाईसा,
 अबकै टळगी तो आगै लेलेसी कदेई, अबै जीभ ही निकळगी अर हाथ ही
 उठग्यो, लोक टूट्या पछै काई है ?”

“आ अधी ममता विप है मा-सा, एक थे ही नी, थां जिता काई ठा
 कित्ता दादा-दादी, अर मा-बाप वीनण्या रो मू देखण आपरै काचै टावरा नै
 गेग मागै बाधै है आए माल, अर पछै ?”

“पछै म्हारै दाई घड़ै मे मूडो घाल’र कूकै ।”

मुधा घाव नै बोरिक सू घो, गाज दाय पाटी बांधदी ।

डोररी बोली, “बाईसा, वासते नै डग्यो ही राज्या, हवा नी

“घारी थे जापो, म्हारै वानी सू तो निघड़क रैया

टुग करती निकलगी वा। बीरो दुःख-ददं सुण'र दुखी हुई सुधा, पण सरोर खातर बीरो अणूती भमता नै चेत कर पत भर वा सँज-सँज मे मुळक उठी। वात तो बा करे मरण ताई री अर सास ऊचो चढ, आगळी लाग्यां ही— मरणो ही चाबे अर डरै ही। बीरो चेतना मे एक छोटी-सी घटना उभर आई, बीरे नाने री कँयोडी—कदेई री।

‘छोरो हो दस-बारै बरसा रो कोई। रमतै री कठे ही, एक आगळी थोडी-सी भरीजगी—कुत्ते री पीठ सू। छोरो, हो कोई ऊची जात रो। बडी सूग आई बीने, इसी तो कदेई नी हुई। कने ही घाती रो घर हो। भाग्यो-भाग्यो बठे गयो। खाती लकड़ी छोलै हो। छोरो बोल्यो, ‘दादा, आ आगळी काटदो म्हारी, कुत्ते रै मँल मे भरीजगी।’

“पाणी सू घोर साफ करलै”, खाती बोल्यो।

“हू ईने पल भर ही नी राखणी चाऊ।”

“काट्या पीठ बेजा हुमी।”

“पडी हुवो, नी घाह।”

खाती त्याणों अर ऊमर लियोडो हो, बोल्यो, “तो लै, आगळी ई बोट पर राख।” राखदी बण, खाती अकरी-मो दी, ऊंधे बसोलै री आंगळी रै पोरबे पर। लागता ही छोरे रै मू मू निकळचो, ‘ओय मा’, अर आगळी बण एकदम सू मू मे घालली।

“अरे इया काई, तू तो कटावे हो नी ईने?” घाती बोल्यो। छोरो तो लागता ही हवाई-जहाज हुग्यो, जावतै री पीठ ही दीधी खाली।

घटना रै सन्दर्भ मे अणचीती ही मुळकली वा, ध्यान बीरो पाछो हो गयो हरिजना री दुरवस्था कानी। बीने पांच-सात गवाड़ी इसी दीखी बां मे, जिका मे डँग-डोकरी एक-एक, बेटा च्यार-च्यार, पांच-पाच। पळसो एक, आगणो एक, पण बी सागी ही भागण पर, छोटो-मोटो एक-एक आस-राम, एक-एक बेटे ढक राख्यो है। बीमे ही चूल्हो, बी मे ही चाकी, सबाढ-पाणी ही बी मे अर उठा-बैठो ही। भागणों नीपे तो कळह, अर बुहारें तो ही वा। गिलास, बाटकी, अर छुरियो-चीपियो कोई कीरो ही नी लाख्यो, टीगर बण हो करदियो ईने-बीने तो सुगाया रै आपस में घोरा उछळन लाग्या, आपे मू बारै हुई रो, जोर, ओर बी पर ही नी बाल्यो तो रीस,

आपरें टीगर पर उतारण लागगी, कोई सामु नै बीघण लागगी—जीभ सू, घणी तीखी पडै बा, हाथा-पाई रो सामनो ही करलें, इत्तं कीरी ही दाळ उफणगी का कड्डी निकळगी, चूल्हो बुझग्यो पण महाभारत नी बुझ्यो। इसी कळह, जादातर सिझ्या री ही हुवै, थक्या-मादा आदमी केई गुटको ले'र आयोडा हुवै, लुगाया लारै आदमी ही मूडै रा माईक जोर मे करदें। पडतो अधारो अर हुती कळह तर-तर बघै। एक वारणें रै एक-एक आर्ध आसराम मे, सँ दुख पावै पण जाग्या छोड'र अळगो, दो पांवडा ही कोई नी जाणो चावै। इतियासिक महाभारत अठ्ठारें दिना में बुझग्यो, ओ बरसा मू चर्च, कुण जाणै कितोक लम्बो चालसी ? वा सोचै, ओ, ईं एक गाव मे ही नी, छीदो-भाडो आखँ देस मे है। वा दो-च्यार इसी टोकरघा नै ही जाणै, जिका पर वारा बेटा, हाथ उठावता नी मकै। बहुवां उठावै, ईंमे इचरज ही काई ?

केई घर इसा भी है जिका रै आगणा मे दो-दो, तीन-तीन भीतां खड़ी हुयोडी है। वँ घर काई, हिन्दुस्तान-पाकिस्तान रा साकडीजता सस्करण है। राट, रोजीनै नी तो इकातरै चूकै ही नी। सँ एक-दूजै री पीठ तकता दीसै, एक-दूमरें नै नीचो दिखावण नै सँ कूडी किलावन्दी रचै, लडनो वीरो काई नाव, ईसकै रा अनेक रस्ता है। इसै घरा री आ कतार, गाव मे आए साल नी, आए दिन लम्बी हुवै की न की। कित्ती ही आधी परम्परावा रो कमीजतां पजो आ पर टिक्यो है। दाह, जुवो अर जारी तो गटडी-रोटी है आ रै। झाडा, डोरा, कड़ाही, अर जात-जम्मा री मुखवात तो दीखै पण अंत नी। बीमारो, गरीबी, अर गन्दगी घणखरै घरा नै पइसा सामा दिया ही छोटणो नी चावै। रेगरा रा तीन-च्यार घर है, आळो चामडो रमै है वँ। नाजो-मोरो आदमी, बा घरा कनकर निकळनो अमूजै। कूडां कोशी तरै मू सिडै, लपट दस पावडा परिया सू ही नाक पर आ बँठै, बारी नास्या तो आदी हुगो अर बिसी ही बारी मानसिक अवस्था। दुर्गंध है अर खूब है पण वँ समझ है कँ म्हे जड काटदी बीरी। 'चमड़ा रगाई समिति' रै नांव 'लोन' ले-ने जेठ मे ही धनतेरस घोक्ली बां। रोया बिना मा-ही बोचो नी दे, षोडी कोसीस विया, बाहा गोरवै मिल सकै है बांनै, बठै निरवाळी रंगाई करो आपरी पण वँ सोचै है कँ "वोट रो राज चाल्यां १६, म्हारी चित्ता अर्चै

राज नै ही हे, म्हारो इतजाम मीडो-वैगो बो मतै हो करमी ।”

केई गवाडी इसी है आंमे, डौड दमक पैला, सो-सो बीघा रा सेतहा जिक्र कने, आज वै दस-दस, बार-बार, बीघा रै टुकडा पर आ बैठा । जोडी जोर मे रही तो ओजू और ही टूटसी वै । आंगळी पाक'र किसी हाल हुब, साप कित्ती ही सागीडी नीपजो, पाच-दस बीघा मे खल्लो घल'र किसा किडा लाग, हुगो दो बोरी कांट तो टीगर महीनै मे चाट पूरी करसी; अकाळ पडग्यो तो कर्ज मे कळीजो, हेलो दिया ही कान कोई नी माडै ।

सुधा री बडी गैरी इच्छा है कै इसा घर चूलहा अर पळीडा न्यारा-न्यारा भला ही सेवै पण 'अविभक्तं विभक्तेषु' खेती एकल हुवै टुकडा मे नी । सरीर न्यारा-न्यारा पण मन एकल हुवै, एकल ही मैनत हुवै, 'समानी-आकृति', एकल ही हुवै उद्देश्य; जद जा'र—जाग्यासर पूगीजै । भग्या नै सामिल मे खेती करा'र, एक उदाहरण तो वण खडो कर दियो, पण हाल ताई वो चर्चा री हवा पर ही की उभरचो है, मैनत री एकल माटी मे गैरी नीचै नी बैठो, दूसरा ही केई, आ पगडटी पकडै जद हुवै । वा आपरी साधना री मैदान की लम्बो करणां चावै है, पण काणकी रै ध्याव मे, फेरा पूरा नी हुवै जितै सो टंटा ?

2

मैतरा खेती री श्रोगणस अंस ही कियो, कियो काई करवायो हो वा कने सू तारै पड' र सुधा । दातिये अर कसिये रै हाथ लगावण री गौगन न आरै थाप-दादा तोडी अर न आ । अँ राळ आ वमाया ही अंस है । सिद्धी काटता, एक-दो जणा हाथ रै ही खा बैठा, निनाप साव छीदो हो तो ही, बी मागै आ, धान रा दूटा ही केई जाग्या मूत लिया । गाव रै कण ही देख्या-मुण्यो वो हंस्यो, पण सगळा सू मोट्टी हसट तो एक दिन ओर हुं, वण पछनी मे दकदी ।

मधो अर धोरी व्ह, मूरज निवळता ही खेती पूग्या । पैलें दिन रात

नै, सिरदारी आनै खासा लवडधक्कै लिया । बोली, “पाच तत्त रो इसो ही पूतळो थारो अर इसोही औरा रो, तो थे अमीर की घणा हो ? थारै मतै ही थे काम करण नै क्यों नी सिरको ? रोज किच-किच करणी पढै, अणसमझ हो थे का धान नी खावो ? विना कैया करै इसा देवता वणन-आळा नी, तो कैया तो पग आगीनै मेलो की ?”

माद ऊपणीजै ही, आज एक ही दिन हुयो है । पैलै दिन रो वीरा दो-एक नीरो ऊपण्यो पड्यो हो । मोठ आधीक वीरो हा, बै साभ लिया । मघो आपरी बहू नै बोल्यो, “लै कोई नी आवै जितै आपा ही दम-धीस छाना ऊपणा ?”

“हा लो,” अर वा तिपाई पर चढगी, मघो छाला भर-भर झलावण लाग्यो । माद नै छोडदी, नीरै नै ऊपणनो मुरू कर दियो । आधो'क वीरो ऊपण्यो हुसी, मघै री बहू बोली, “है ओ मोठतो कोई कदेई सै पडतो दीसै है ?”

“लारै जावता आसी, तू ऊपण खाथी-खाथी,” मघो बोल्यो । इत्तै मुधा अर सिरदारी आ पूगी । आनै देख'र, मुधा अर सिरदारी दोनू ही हुसी । मुधा बोली, “भाग्या ओ काई करो हो थे, नीरै मे सू भळे काई काडू हो थे ?”

सिरदारी बोली, “मै देख्यो, अँ आज इत्ता वैगा आ पूग्या तो मूरज कोनै ऊगसी ? वैगा, पधार'र, काम कियो ओ, आज नीरो ऊपणो हो काल ऊपणस्यो चाचडा ? बरस ले'र धूड मे ही नाड्या रे ।”

मघै री बहू बोली, “मै तो भुवामा कैयो हो आनै, ऊपणन री डिगनी आ नी, वा हुवैनी, अँ बोल्या ऊपणे राख तू ।”

‘धोखा ऊपण्या, पण सावळ हुई, दो घर डूवता टूय्यो एक ही ।”

आ बात जद गाव मे पूगी तो लोग हमण रा ही हा । मुधा नै सीध मे राख'र कैयो कैयां, “मुख मू टुकटो खावना रै आ मिदरआळी क्यों लारै लागी है ?”

की हाणि अर हसड करा'र ही, मुधा नै ई मे हाणि कांकरै जिनी अर नाभ पहाड-सो लाग्यो । माद, गुणों, चारो अर ल्याळियो थै तो समझण लाग्या । दातियो अर कसियो ही की चलावणो सीख्या । ई सान तो रेंद टूँटर कढायोडो हो अगलै सान हळ पर ही हाय राखसी तो अगला पाठ आरी चेतना मे और गैरा उतरसी ।

अस प्रकृति री भैर इसी हुई कै जमानो भाग रो नाचतो आयो मामनै । आछो हुयो, दूध अर दुहारी दोनू ही बसता रँतिया । अँम ही टाट कढाई अर अँस ही भाग रा गडा पड ज्यांवता तो आं नै दूसर एकजुट करणा टंढी खीर हुती । खेती हुई तो खँर पगा नीचँ जमीन सारू ही, पग हुई जितो हुई गैरी, थुथकारो नांखँ जिसी । सगळां सू मोटो वात हुई, सामिल-खेती री; पण इँ मे न गांव नै आस्था पैला ही अर न अबँ है, भग्पा नै खुद नै हो नी । आदसँ री देवळी तो सुधा रँदिमाग मे ही पण आ कमाउवां नै देप'र आस्था बीरी ठिठकगी । या सोचँ ही, "अँ है भंगी-भाई, नव यजी ताई तो अँ सेज सू छेडा हुवँ, फेर आरा पग पाछा खीचण नँ कित्ती हो आ मे आधी आदता, मतीरा रो भारो कीकर बंधसो ? केई दफँ अँ, पग सुजा'र खडा ही हुग्या, भाई बीरा ही किया आनँ, पण इँ कान सुण'र बी कान काढदँ, बारी काई करँ कोई ? "मघा, मूळा चालो भाई," "हां चालो थे, म्हे आया, पग मे जूती ही नी घाला," पण आबँ कुण ? सुधा नै झूझळ ही आवती अर मन ही बीरो पाछो पड़तो, पण लारँ सिरदारी रो जोर पूरो हो । जीभ सू ही मचकावती वा अर जूत ही दियावती, मोट मे बण वानँ त्रिखरण नी दिया—अंकुस राख्यो ।

इँ खेती रँ मिस केयां नै की लगन ही लागी, की लोभ ही पडघो, आपरी परिस्थिति नै ही की समझी, अर जीवण री ईली लकडी मे कठँ ही, आरम-गौरव री चिणख रो आभास ही हुयो । बिरत छोडदी अर अबँ ओ ही नी हुयो तो घर री रामलीला चालसी किया ? ओ बीज बारी माटी मे कठँ न कठँ रूपग्यो हो, वो ऊगसो एक दिन ओ सन्तोष सुधा नै मोटो हो पण नियति, अवार की उदास ही बी मागँ ।

मिश्रजी आ' र ज्यू ही पाछा गया, सुधा नै लपेटे मे ले, गांव री हवा एकर तो इसी फुरी कै वा विचारी ममँ, चिंता, दुविधा अर उदासी मे तर-तर गैरोजती गर्दँ, एक दो दिन नी, केई दिना ताई । अणचीती निरासा री बाढ बीरँ कंठा ताई आपूगी । बीरी योजना अर उद्देश्य तो पड़ग्या खटाई मे, पग ही आपरा बीनँ छूटता लाग्या बडँ सू । इँ मे मिश्रजी रो दोस बिल्कुल ही नी, दोम है फूड री बुगली धरती पर घड़ीजतँ एक बिसलै धातावरण रो । धानावरण नै गामा पैरावणिया, हा तरपच अर बीरा आय-मीच भग ।

कूड़ रो काँई चाको, सूई रो मूसळ कर दियो। मुधा जे ठठारा री बिल्ली हुती तो सपनै मे ही नी संकती। अफवाहा रै कडवै धुवँ मे डूव'र वा घवरा उठी, संसार रै इसी हीर्ण सभाव नै समझण रो, बीनँ काम ही नो पडघो हो पैला।

मिश्रजी रै पाछा मुड़तां ही, आ बात जगळ री लाप-सी आखँ गाव मे फैलगी कै आ सुजानगढ री वामणी है कोरँ अर अठँ भाग'र आई है।

भाग'र आई नै ले'र सात-आठ दिन ताई गाव रै घर-घर मे चर्चा रो एक इसो देव-दानवी सागर मधीज्यो जिकै मे साच रो घुलघुलो तो कोई, कदे-कणास ही उठतो पण विस आपरी पूरी ऊचाई पर हुवती। गाव री कुत्ती-वृत्ति हाउ-हाउकर, बीरी निर्दोस चेतना मे एक इसो विस भरदियो जिको बीनँ न तो संज मे पचँ अर न उल्टी हु'र पाछो ही निकळै। दुविधा रै आकास मे अधर लटकगी वा त्रिसकु-सी।

'भाग'र आई' रै भाखरसू लोगा मन-घडन्त चर्चावा रा लम्बा-ओछा इत्ता नाळा काढलिया जिका री गिणती संज नी, पैलडा सूकँ नी बीमू पैला, दूजा त्यार। 'लफगी है,' 'धणी कूट' र काढदी,' 'खावण-खडी है, घर रो गैणो ही दसिया नै दे बँठी,' 'ददियो ही हुंतो की तो वाप नी लेजावतो?' 'एक मोडँ सागँ भागी ही, ठा लाग्या मोडो तो डरतो पार हुयो, आ पडी भुवाळी खावती फिरँ है, घर मे बडनो तो चावँ पण बडँ किसै नाक? मोडो-बँगो, गाव नै उजाळसी आ, सिरदारी रै बेटँ मार्ग लगड़-पेच बतारँ है ईरो,' ई डगसू मूढा जिती ही वाता। कठँ-कठँ आ भणक ही पडँ कै, 'भई, इसी लागी तो नी, फेर काँई ठा खाल थोडी ही वामँ है की री ही, खिडकी चोत'र माय कृण झाक्यो है कीरँ ही?'

सुसरो नी आयो जितै, बीरो व्यक्तित्व एक डमी करामानी वायळ मू दक्यो हो कै घासा-लोग बीरँ वारँ मे संज-मृखद कल्पना करता नी घनना कै, 'देखो मळ मे वास करतँ भंग्या रा भाग, जठै देवकान्या-सी ३' मानघादेह बामो लियो है, ईरा पग टिकता हा वारो कुम्भीपाक तो ग्रिहणीं मुह अर बँकूट वणनो। अँठवाडँ पर क्षणइता नै, रोटी मिलण लागी।' कोई बीनँ कंवारी, कोई परणी, अर कोई जाणँ काँई-काँई बतारतो? रहस्य ही वा।

अबार चर्चा रं फुटकर बजार रा भाव जठै धाप' र नीचा है बठै गावरं एक सभ्रात दापरं मे चर्चा है कं सुसरो ईरो चैरै-मंरै ठाकरियो, वेसभूता सू खासा सरतरियो अर ठसकैआळो लाग्यो । ई कुभीपाक सू ईनै काठण नै समझो, चावै आपरो पाणी राखण नै, नस नीची कर' र किया ही आयो विचारो । दोरी-सोरी आ मान ही गी, पण पछै काईं ठा काईं चमको उठयो ईरै, जीप पर चढचोडी पाछी कूदगी अर भाग'र भंगीवाड़ें मे जा बड़ी; जद सोचा हा ईरो कसूर नी, माथै रा पेच ही ढीला है ईरा, ई बदनसीब वामणी रो कुण करावै बिजळी रो सिकताव ?

हरधनजी बोल्या, "पेच ही जे ढीला हुता तो आ स्यांणी-सखरी बाता नी करती ।"

गोपाळ श्ठाराज हा मे हा मिलावता कैयो, "बात तो साची है, ईरो तर्क-ज्ञान एकर तो पढेसरी रा पग पाछा मिरकावै ।"

"तो फेर बात काईं है, समझ मे नी आई," कैया पूछयो ।

हरधनजी बोल्या, "जठै ताईं मे पढी है ईनै, ई मे हुणी चाईजे चिडाळ-कुळ रो पोयता प्रेतात्मा कोई । वा किमी पठित नी हुसकै ?

"हु क्योंनी सकै," मगळा ही बोल्या ।

"अधूरी लातसावा-बम, वा किसी भटकती नी फिर सकै की मे ही?"

"बदो नी फिर सकै," सागी ही मुर भळे बोल्या ।

"वा आपरै मंज सम्भार-बस, मू आपरो अधभोगी दिस कानी ही वरमी का और कीनै ही?"

"अधभोगी दिस कानी ही," मगळां ही कैयो ।

"गुाव रो चिडी तो गांव बानी ही उडगी, बी आत्मा नै तो चिडाळ कुळ ही रुचसी; वामणी हुवै चावै दिणियाणी; ई मू किसो फरक पडै है, चलमी तो प्रेतात्मा री, सूम्भ मे स्पूळ मू संसगुणो बळ बेसी हुवै है ।"

"मानी," करीब-करीब हागी ही मुरा भळे समर्थन दियो ।

"प्रत्यक्ष नै प्रमाण री काईं जस्तत, रामधनजी राठी री बहू तो बाग मे जीवती-जागती बँठी है ओजू, टावर ही हुवैता आधी दर्जन अवै तो चीरै?"

"हा है ।"

साल हुग्या । बीस-तीस हजार रा टक्का ही है कर्न । छोरी है एक बीरा हाय पीळा कर दिया—तीन साल पैला । सवा घटा रोज समाई करे, पण बीनणी विना हियो ही ऊधो अर तकियो ही । अज्ञान रो ऊंट, छंळी री फिराक मे है । बोल्यो, “बामणी, बिणियाणी कोई ही हुवो भला ही, भली बोल'र कँगो पडै है कं वा जे आपणो घर वसावै तो इलाज रो खर्चो हू ओटू ।”

एक बोल्यो, “पण ठीक हुया पछं, थारै कर्न बाळन नै रँसो वा, आपरं घरे नी जासो ?”

दूसरै कँगो, “रँया तो सेठा ठीक ही है, थारै काकं हस्तीमलजी रँ ही एक बगालण है घर मे, थारै बामणी ही सही, गाडी तो लँग पर ही चालसो ।”

“अरे भग्या सू तो जद कद ही आछो हू ? रावतमल उचक'र कँगो ।

सोहन मुलफियो बोल्यो, “बामणी, बामण रँ ही ओपं है, इलाज जाणै अर हू, करावो बात आपानं ?”

एक जणों उचकयोड़ो ही बैठो ही, बोल्यो, “दादा मू पैला काच मे देख्यो है' क नी ? दाड़ी मे काळो तो सोध्यो ही नी लाधं अर बीनणी भावै है पच्चीस साल री ?”

“कयो काई माड़ो है मूढो ?”

पुरयो बोल्यो, ‘ मू तो सगळा रा ही फूठरा है अर बत्तोसी ही ऊजळी, पण, सिरदारो सू मित्या हो' क नी पला, वा चूडावण सू ही ध्यारचंदा बेसी है, रेह चौईसू घटा हाय मे ही राखै है ।”

बात फेर, आगं नी चाली ।

एतान मे बैठ'र द्या बात करे वै धूक मीठो भला ही करो, हुवं अमूमन बेकार ही है, पण संसार रो सभाव हे । आ लोगा बात नै आगं सू आगं, मंतरा रँ गळं मे ई उग सू उतारी कं ए'र तो बानं पूगे धंम हुग्यो कं ई मे ओपरी छाया कीई जरूर है । कया रँ मन मे आ और बैटगी के वा ओपरी छाया जे कदेई विचर बैठं तो आपणों छागो-भलो नुक्ताण ही कर सकं

है। ईं सू बेटैम बात करण मे घाटो।

माथो सिरदारी रो ही एकर तो चक्कर खा उठयो। "मैं सुसरै सागै जावण खातर, ईंनै पेट मे बड़'र मगझाई ही कै बेटो आपरै घरे ही फूठरी लागै, अगला न्यौरा काढ'र लेजावै है तनै तो क्यो नी जावै ? आ ऊमर, ओ उणियारो पण ईं चीकणै घड़ै रै तो छोट ही नी लागी। चढ'र पाछी कूदगी, जद सोचू हूं, चेड़ो है ईं मे कोई न कोई, नी जद इसी लुगाई, ताळै मे बन्द कियोड़ी ही नी रुकै, घणी नै अधारै मे ही जा सोधै।"

बीरो मन नी मान्यो, वण पूछ ही लियो, "वाई रात नै कदेई की डरै तो नी ? की दीखतो हुवै कदे-कणास, तो बता—सक मत।"

"तनै किया वैम हुयो मा ?" वा उदास-उदास बोली।

"केई दिनां सू तनै उदास देखू हूं अबार, जद पूछू हूं।"

"मा री सेवा-पूजा करता थकां, ओपरी छाया रो प्रवेश म्हारै मे काई, म्हारै पाडोस्यां मे ही नी हुसकै, धारै आ किया जची ?"

"जची तो नी, पण माईत हमेसा ऊधी तेवडै—आप-आळै री।"

प्रचार री पांड्यां चढघोडो कूड, एकर तो सूधै बैठै साच नै ही पस्त करदै; सुधा री उदासी ईं मिथ्या प्रचार सू बधी ही, घटी नी।

रूप अर मर्घ री बहुवा सुधा सू कीं टेढी है अवार। एक नै तो करदो सिरदारी नाराज अर दूजी नै सुधा।

सुधा सुसरै सागै सासरै जावण नै फळसै नू बारै निकळी तो रूप री छोरी सांभी आ'र छीक करदी। सिरदारी रो माथो टिठकन्यो वी बेळा ही। बीनै झाल आई, पण गिटगी वी बेळा तो वा। सुधा रै लारोलार वा छोरी जद पाछी फळसै मे बड़ी, तद वा बीरो बूकियो झाल'र बोली, "नास्या मे धारै कोई कीड़ो जुळबूळ है का तमाखूरी डबडो कोई ? पाच मिट ही धारै नू टापरै नो टिकीजै, क्या वान्त मरी ही बठ ? न कीनै ही मुख सू विदा हुवण देणों, न कीनै ही मुख सू बात करण देणी, हरदम ईरै लारै बळसी, सगळा रळ'र घायलो ईंनै," कह'र वण एक चंपी गुद्दी मे, छोरी गोच घायगी। हाथ टावर रो हुंतो तो कोई बात नी, पाच कील रो हाथ, पाच कील रो वेग समझो; दस कील री भार कद झलै ही आठ बरमा री छोरी नू। बीरी मा खड़ी ही कर्न ही, वण सिरदारो नै मूडा-

मूढ ही कहदियो, “देखी धारी बाईसा नै, काठीराखो, म्हनिं न्याल नी करे, बिना मुतळव छोरी नै कूटली, धान दोरो घालू हू ।”

काळ नै धूळिया ही देदिया हुवे, अवे सिरदारी नै कुण रोकै, बोली, “देखो धे रुपलैआळी गूघली नै, घाप'र धान मिलता ही फण करण लागगी है । तू तो वळै ई लाड रै लचकै नै, दिन में दस दफे मधै नै जरकावे ज्यू, जरकावे; 'राड सेकली मनै तो, मरै न माचो छोडै', मी काढती हुसी गाळ अर मी एक ठोकदी तो पूर फाडन लागगी, बाळू डीळ धारो”, अर ईरै सागै ही वण रुपै री बहू रो बूकियो झाललियो, आख्या जगण लागगी बोरी, फडकतै होठा तिलाड री र्पोरी चढगी । बोली, “तू म्हारै सिर पर हर्गै तो ही कबूल है, पण काठी राखो धारी बाईसा, आ किया कही तै, बाईसा इसी धारी किया लागी तनै, दौड-दौड धारा घणां करै जिकै सू, इसा काई टड्डा परखावे है तू बाईसा नै ? म्हारै सामनै 'बाईसा' रो नाव आज लियो है, आरन्दै बाको बस में राखे, नी तो चद्रमा मोचलिए धारो ।” बूकियो झाल्या-झाल्या पांच-सात दफे वण बीनै घटी रो गेटुळम करदी, पतळी छाल तो आगै ही फीस पडो बुरी तरै, “आंय, में गरीवणी नै मारै रे ।”

सिरदारी भळे दडकी, “जळडा करती मानै है का सावेळी जिमाऊं ? करदिए पछै मुकदमो म्हारै माधे, चढवादिए फौसी मनै ? जुगरी, हराम-जादी रदार रै गुण तो कठै ही गया, बोलण नै मरै है भळे ? में ही धारा थोडा किया, किस्ती-किस्ती दफे रिपिया माज्या—मैत री जात, व्याज तो हो ही कठै, रोवती जद, मूळ में ही टाचा हूँ खावती । मोख्या रो बादो ही चोंपो धारै सू तो, आप में पडघै बीज नै वो ही पोछै ।” बीरा मैतरी-गम्हार मयळ हुर्या, वा बोलती गर्द, आछो-मदो, निवळै बो धणी रै भाग रो । भगणा घणघरी भेळीं हुगी, भाग रो रुपो ही आ लियो । मधै री बहू नै छोड, जुगाया मै, सिरदारी री भीड बोनी । मधै री बहू ही वफारो नी काडू तो ही, पण सिरदारी रै मामो देख, काटजो घोरो साथ नी दै हो, जीभ नै दातां सारै कर, हिलण नी दो बीनै ।

केई भगणा बोली, “बाचीगा, धे माईत हो, पेट मोटो रागो, म्हारै तो दो-दो, चार-चार टावर है, धारा तो थै मगज्या ही है, म्हारै नूँ घणा याह्ता है वं भाने—गम गिटो आज-आज तो म्हारै कैया हो ।”

आरो रोझो सुणर मुघा ही कोटडी स् निकळ'र वारै आयगी । सोचै ही, 'अतिपरिचयात् अवज्ञा भवति,' चौईसू घंटा वसू हू आंमें, पूछ की घसीज-मी ही," बीच बचाव करती वा बोली, "मा, लाडू री कोर में किसो धारो, सगळा ही म्हे धारा ही तो हां ।"

केई बोली, "नी बाईसा, धानै म्हे काई कैवां हा, म्हारै तो थे जी री जदी हो, धानै देख-देख जियां म्हे ।"

"जियो हो थे धूड," सिरदारी बोली ।

"मा तूं भळे बोलण लागनी ?" मुघा बोली ।

'हियै फूट वात्त करै जद झाल नी आर्व आदमी नै ?"

"फेर वा ही बात ?-उयळ, कितीक ताळ उयळसी, छेरुड तो वंद हुणों ही पडसी ।"

मुघा, एक मिट सगळधां कांनी सरसरी निजरसूं देख्यो, फेर बोली, "हूँ तो कांईठा कीने ही धारी ही लागती हुस्यूं, पण, मनै तो थे मगळो बिरखा-सी बाल्ही लागो हो ।"

सिरदारी बोली, "तूं तो धारी ही लागसी आंनै, रात दिन एक कर-राखो है आ धातर, टैमसर न नीद, न रोटी, देसी अ तनै जस रो पीडियो —ठोकलिए नावळ ।"

"मा, जम अ राखो, कुजम मनै सभळ्वावो पण मूंडा तो मुळकता राखो ।"

"तूं आप कठै आई है, तपस्या में कांई कोई भंज पडघो है धारी, ठाकुरजी नै ठा ।"

"तं जिसी मा मिलगी जद सोचूं हूँ, तपस्या सावळही म्हारी ।"

सिरदारी पांच-मात रूपे नै ही मुणाई । वो आपरी व्हू रो वूकियो पकड'र, घर कांनी ले टुरघो बोने । बोल्यो, "कानी, ईरो तो है मायो धराप, धारै धातर म्हारी चामडी री जे जूती वणै ती ही धारो बदळो नी उनार मकूं, आ इंनै कांई ठा ?"

सुमाया रो खिडतो झूमको आप-आपरै घरा कांनी टुरग्यो पण मुघा आरं पगा मे अकारण ठोकर रो टियां बण्योड़ी सोचै ही, "इतो कांई स्वार्थ है आं मूं म्हारो ?" वा उदाम हुणो ।

मर्घ री बहू रो मूं चढण रो न कारण, न कारण रो नाव । एक दिन दोपारै पावेक दूध मांगण आई बा । घरे महमान आयोड़ो हो कोई । सुधा बोली, “की पैलां आवती तो वात बणती, अबै तो बरता दियो ।” सुधर बिदा हुई बा, पण मू चढग्यो । रस्तै मे कोई मिलगी, पूछ लियो बण, “कोनै गई ही ?” बफारो काडती बा बोली, “गई ही उत्तर लेवण नै ।”

“क्यों काई हुयो ?”

“म्हे घर रा हां, बांरो तो चुळू दूध में ही सीर नी अर थोरी, मेघवाळ नै बुला-बुलांर ऊधावै, इसै लूखे लाड नै चाटा काई ?”

बात सिरदारी ताई आपूगी, की सुधा रै काना मे ही पडगी । सिरदारी चीनै की ऊंची-नीची ली, बा नटगी । बोली, “कैयो बीरो मू बळै ।”

सिरदारी बोली, “फेर कोई बात नी,” पण सुधानै बण कैयो, “मैं तनै काई कैयो हो वाई, कै धीणो धारै तो हे पण बी सागै धीजो मूघो पड़ैलो कदेई, बा पगा आईक नी ?”

“आसी मा, संसार रो सभाव हे कै बीरा निनाणवै करो अर एक नी तो समूचा पर ही पाणी फेर दै यो ।”

गांव मे चर्चा री बधती लाय मे आ दोना लुगाया गुप्पा-चुप्पी मे पूळा खूब नाख्या । सुधा नै ठा लागग्यो तो ही बण, होठ ही नी खोल्या की सामा ही । दुख इत्तो ही हुयो कै अंग रा कपडा ही वैरी हुवै हा । आई नै ओजू साल ही नी हुयो, बळती अवार सियाळै मे ही सुरू हुगी तो अगला दिन तो झलणा ही ओखा है । चीरै पाणी पर उदासी री एक गैरी काई, काईताळ ताईं तिरती रही । चर्चा रै, ई घटतै-बधतै तूफान सूं, बा इत्ती नी धबराई जितो चर्चा रै अगलै चरण सू ।

3

तोत रा घोड़ा दौड़ावंग नै, जिस्तो लुसो मैदान अवार सरपंच अर बीरै थोटीकट चेलां नै मिल्यो बिसो और कीनै ही नी । सुधा जिकै दिन, तीम-

चाळीम लुगायां नै भेली कर पंचायत पूगी, सरपंच री चेतना एकर चुक-
 लीजगी, की भावी अंदेसै सू । सहारां मे तो लुगायां, आपरी मागां नै ले'र,
 नारा, भासण, पिकेटिंग अर पूतळा बाळन ताईं सगळा कर सकै है । आंसू-
 गैस अर लाठी-चार्ज सू ले'र हवालात ताईं री जोखिम ही बँ उठा सकै
 है । सडक सू ले'र, ससद ताईं बारो एक अलग स्तर है , पण, गांव री
 साकडी इकाई में, बोल-वतळ जठै, काकाई-बाबाई री सीधी पगडांडी सू
 जुडै, बहुवा आदम्यां रँ जाड में जठै जीभ खोलणी तो दूर, टिचकारी सू
 सैन करती ही सकै अर गूवटा राखँ छाती सू एक बिलान नीचै-ताईं ;
 वठँ बँ घर रा आंगण छोड-छोड, पंचायत-घर आगँ हमलावर-सी जा ऊभै,
 विलुल नुईं यात है ।

सरपंच सोच्यो, "इं अगुवा लुगाई री आगळी सीध मायँ, बँ जे म्हारी
 पाषडी उछाळ दै, की आवळ-कावळ बकदै तो हूँ बा पर किसो लाठी-चार्ज
 करवा सकू हूँ, का आसू-गैस रा गोळा छुडवा सकू हूँ । बँ जे, धूड-फूस को
 फँकदै म्हारै पर, जूती री देवँ नी, खाली उबका ही दै, तो बा मारी सूँ
 माड़ी अर आपो भूल्योडी अधवावळी कोई मेलदै अणचीती ही तो न
 अँफ० आई० आर० ही दर्ज करायणजोगो अर न की आगँ ही होठ खोलण
 जिसो, बिना पइसँ लोग देखँ तमासो ।"

बाने जल्यँ में देख'र, पंचायत-घर धारकर जिया-जियां मगरियो
 मडणों गुरु हुयो, सरपंच रँ खँरँ री हवा बिसकणी गुरु हुगी । वास्तव में
 ढर बीनै न लुगाया रो हो अर न गाव री भीड़ रो ही । बात ही, बीरी
 घाउपीर चेतना रा मायला पग साव भ्रष्टाचार री घिसकती घूड़ पर हा ।
 बीरै सरपंच रा पग, जाग्यां मतँ ही छोडै हा । दारू, जुवो, अर जारी रो
 जनक जद वो खुद है तो वो बंद बाने वाप रो सिर करै ? बण सोच्यो,
 "आज तो हरजी रँ विरोध में पंचायत आगँ भेलो, काल म्हारै विरोध मे
 माहता बाने कुण रोके ?" बीरै ही, दो-एक काधिया कहदियो, "सरपंचां
 बाडै कुत्तँ रो तो लाय मे वळसी काई, हरजी काईं तो घोवँ अर काईं
 निचोवँ, टैम मू पैलां, गिद्यी थारी घुसती लागी । पग जमाया राख्या
 चावो, तो इं लुगावड़ी रा पग छुडावो गाव सूँ ।" बीरै हाडो-हाड दूकगी,
 यो बीनै गांव मू बिदा करण रा नुस्खा भेळा करण लाग्यो, साधारण

नी—रामबाण ।

वो आछीतरै सू जाणै है कै दाह, जुवो, जारी अर घूसखोरी अवार कठै नी ? चपरासी सू ले'र मिनिस्टर ताई सगळै आंरो ही बोलवालो । न सरकार री मीच्योडी अर न जनता री ? यथा राजा तथा प्रजा, जनता किसी न्यारी है । काई हुग्यो हजार कागला री काव-काव मे, एक-दो कमेडक्या न्यारी कू-कू करलै तो ? अँ चीजा तो अवार मरकारी सीटा सागँ इसी चिपी है कै आँनै सिरकाया सीटा सिरकै अर बाँनै सिरकावण री हिम्मत घातां री बस्ती मे थोड़ी ही बसै है ? वो खुद दाह तणो जीत्यो है । चीनै ठा है, अँम० अँल० ए०, अँम० पी० बीरो मार्फत हो बोतला वटवाई ही गाव मे । बीरो विश्वास है कै अँ चीजा आज बढ हुवै न काल, बढ हुसी बाग देवणिया ।

बण दो-एक चलता-पुर्जा नाई, अर दो-एक डूम-डाकोता नै एक-एक बोतल सूप'र कैयो कै जजमाना मे धे जठै ही जावो, एक ही घात कैया करो कै, “आ लुगावड़ी तो बडी माडी आई गाव में, मौको लाग्या गाव री बहू-बेटघां नै उजाळसी । गाव रा जादा सू जादा मिल'र, पचायत नै दरखास्त देवो कै इँनै गाव सू वँगी विदा करो, दरखास्त री नकलां मंत्री, मुख्यमंत्री ताईं और देवो ।”

गोडा पर घड़'र आगँ सिरकावणआळी, दो-एक लुगाया नै बण और चटादिया दस-बीस । बण सोच्यो जनमत जोर चढघा, आ काई टँरै बाप नै ही छोडणो पडसी गाव । निदा रँ दाणां रो दळियो; दळियै म् आटो, अर आटै नै कपड-छाण कर-कर, सुधा रो आभो आधो करण मे सरपच अर बीरै लोगां पाछ नी रायी । बढ सू बढनाम बुरो, उदासी तो बिचारी री गाडीयै ही ।

टागरा नै दोपारै री छुट्टी कर, दूध जमावण नै सुधा, पग रसोई मे दियो ही हो, लार री लार एक छोरी आई बोली, “बैनजी आपरो कागद है ।” लिफाफो हो, ठिकानां रा आखर बण गौर सू देट्या, पण अदाज नो बघ्यो । कागद जेब में घालती वा बोली, “कण दियो तनै ?”

“डाकियै ।”

“ठीक, घाल तू”, अर या आपरै वाम में लागगी । दूध मे जाण

दे, ढक बीनै चोखीतरै, फेर कागद नै बण खोल्यो । पढ्यो, उदास तो ही, एक पूछो और पढ़्यो, एक अणचीती आसका सू चेतना बीरी हाल उठी । घरती पगा नीचै सू निकळती लागी बीनै । होठ बीरा मतै ही फूट पडघा, “हे प्रभु अबै ?” अर होठ फेर मतै ही बढ । मिटभर बठै ही खडी रही—अवाक अर थिर । कागद पाछो ही जेब मे घाल, टाबरां कानी टुरपडी ।

दूजै दिन दीतवार हो । टाबरा नै छुट्टी ही । दिनूगै-दिनूगै पूजा-पाठ सू नचोती हू, बा अर सिरदारी गाय रै जाबतै मे लाग्योडी ही—दस-पाच दिना मे सी-सुरू हुसो ई खातर । नुई खीपा, अर डोरिया दे-दे, वैं बूढै अर जरजर छप्परियै नै काया-कल्प करावै ही । बालियै गारो गिलो राख्यो हो, मुधा ठांण नीपै ही । सिरदारी बीनै बरजती बोली, “बाई, बास मे छोरघा रो तो एवड उछरै है रामजी रो, गोबर रो लसरको लगाणों तो सै ही जाणै है, तू क्यो पसै, अवार बुलाऊ कौनै ही ।”

“भहारै हायां रो किसी मैदी घसीजै है, मा ?”

“धारै तो और काम ही घणां ही है ।”

“गोबर मे लिछमी हुवै है, गोला हाथ मनै ही करणदै ।”

“तो कर, पांती की मनै ही दिए ।”

“कौ कयों सगळी ही तनै ।”

सूटर बणावण रो काम मिगसर लागते ही सुरू करादियो बण । भँवरी अर सान्तडी ही सूटर बणै । टाबर पढावण मे ही वैं मदद करै बीरी, पण बा कोई खास बात नी । पोट-भर खुमी तो बीनै ई बात रो है कं सुरू रै सीखतइ टाबरां रो मास्टरणी समझो चावै बँनजी सिरदारी हँ, एक नुऱँ आस्था जलम सेलियो बीमै । मुधा पैली मू तीजी तांई हाजरी रजिन्टर घाल दिया, हाजरी रोज हुवै । पैली रो हाजरी सिरदारी छुद लेवै, एक-दवण टाबर बी आगँ बँठै । महीन आखर पढण में की अनुविधा हुवै बीनै । महीनै पैला, मुधा मंडी जा'रर बीनै चश्मो दिरालाई—बडी राजी हुई बा ।

भँवरी नै पढण-पढावण रो बडो कोड है पण फुरसत कम मिलि विचारो नै । पौसै-मोवै, पाणी लावै अर आर्यँ घर रो फूस ही काढै । दो घडी फेर

सामु सागै छाणा-बळीत नै ही जावै ।

सिरदारी खा-पी'र, इग्यारै-सवा इग्यारै वरामदै में आ बँठी । पोयै अर पाटी-वरतो सागै हा । धीमै-मुस्तै किताब री सीधी सब्दावळी वा आपरै मतै ही उघाडै । पढ, लिख अर बोल'र वा कित्तो राजी हुवै वा ही जाणै । सोचै, "देखो, म्हारी आख्या रै जीभ लागगी, जीभ रै हाथ अर हाथ मे बडग्यो जाडू । ईं सू ही जादा अचंभो वीनै आपरी चेतना मे आस्था अर आनन्द री वधती चौडाईं सू हुवै । एक दिन घण आपरै ऊबड-खावड आखरा मे पेम् नै एक पोस्टकार्ड लिखदियो, धीरै-धीरै अर हाथ नै ठैरा-ठैरा । ठिकाणो तो मुघा ही कियो अर कोमा, पाई री की मदद ही । लिख्यो, 'पेम् सू सिरदारी रा आसीस ! वेटा, समचार सब भला समझ, पण थारी मा अबै सागण नी रही, सरोर तो सागी है बीरो । आ मँर तू मुघा री समझ । कागद दीजे । टाबरा नै सोरा राखे । थारी मा—सिरदारी ।

कागद पूग्यो, बेटै जिया ही बाच्यो, वीरै अचभै रो ठिकाणो मो रँयो । वो आपरै संधा-भँघां नै दिखावतो फिरघो, "देखो म्हारी मा, साठ रै वाद सीखी है, दुनिया कँव, 'साठी बुध नाठी', पण आ फालतू है, साधना सू मिद्धि जरूर मिलै ।"

अवार वा 'प्यासा कौआ', कहाणी दे-देख लिखै ही—सागै बोलै ओर ही । मुघा पाटी देखी, पाठ ही बचायो । बिना अटके, सटाक-सटाक बाचदियो वण । एक कागद अर पैमसल तिया मुघा ! कागद पर फूठरै-फूठरै आखरा में तीन सँणा लिख'र बोली, "सँ मा, आनै उघाड़ देखा ?"

वा मन मे की गोखती बोली, "म्हारै", मुघा थीगणैस मे ही टोकदी, "आनै कीनै वधै है, 'म' आघो है नी ?"

"हा है, फेर ?"

मुघा 'तुम्हारे' लिख'र बोली, "बाच इँनै ?" बांचदियो वण ।

"तु नै ही छोड अर 'रे' नै ही, बिचलै नै बांच अबै ?"

"म्हा", वा बोली ।

"तो अबै पाटी सुरू कर वा सागण सँण ।"

वा बोली, "म्हारै ।"

"हा दँयां, अबै चाल आगै ।"

वा बोली, "म्हारें सतगुरु दीनी रे बताय, दलाली होरा-लालन की ।" आ लैण बोलता ही बीरै चैरै पर एक राग फूट पडघो अर बाणी सू एक मँज सुर-लहरी निकळ पड़ी । अगली दो लैणा नै वा बिना सावळ गौर किया ही आलाप उठी—

“लाल लाल सब कोई कहै, सबके पल्ले ताल,
गाठ खोल देखी नहीं, इण विध भयो रे कगाल
दलाली हीरा लालन की ।”

आं बीरो प्यारो भजन है, जद-कद ही बा बेलही हुवै अर हुवै आपरी मँज मस्ती में, तो आलाप उठै । चेतना मे तो वो जीवत हो ही, अवार आपरा सू उठतौ वो बीरी जीभ पर आ बँठो, चेतना सरस हुगी बीरी, मन आस्थावान अर प्राण धिरकता । सोचै ही, “अरे अरै हू काई-काई वाचस्पू, कबीर, सूर, मीरा, तुळछी अर रैदास सगळा, दादू-नानक सँ, खजानों खुलग्यो, चाबी लाधगी ।” वा सुधारै पगा कानी हाथ करण लागी ।

“मा, पटकू है काई ?”

“बाई, तनै कठै राखूं ? साठ साल सू आंधँ अर उजाड घोरै पर कोई बीज नो फूटघो, तँ वो पर फुलवाद री आस खड़ी करदी । घोरै रो हर कण हरियाली मे खुलणो चावै ।”

“मँनत अर लगन पळै, करामात ई मे धारी खुद री ही है ।”

“म्हारी करामात हूँ जाणू हूँ बाई, तू दाय आवै तो ही बता, जरूर तनै मा रो परचो है, बीरो हुकम है तनै, हुयां बिना कुण है इसो जिकी कोचरीच्यै ठांव मे पाणी ठँरा सकै । म्हारो सरीर एक अघखळ डूँढो है, बीमे सतासी-माता कह भलां ईं मुरसती-माता, पगलिया मांड दिया, तँ कही वा कर दिघाई, लयदाद सन्नोसी-माता नै पछँ, पैलां तनै ।”

“कीनै ही नीचो पटकगो हुवै तो बीरी बढाई करो, तूं म्हारा मोडा फोडावण सू राजी है तो कह ?”

“घारें दोराई है तो जांवण दै बाई, मैं तो म्हारें मन री कही है । बाई, हूँ कीनै ही जद, कथा-भागवत बांचतां देखती तो सोचतीकँ देखो

छोट-छोट आका सागै अँ किसोक जैन जोड़ जाणै है, म्हारें माथें मे ही इयालको तातण कोई जे, आपरा सागै जुड बैठे तो हू ही बाचलू, सगला सानी नी तो कोई खूर्ण मे बैठ'र ही सही, घणो नी, खाली बीजक री घाण्या ही पण आ अटकळ तो टायर थका ही आवती हुसी, 'पाकी लकडी रामदाम, कीकर निकळै काण', पाका डाळा जुळै थोडा ही, टूटो भला ही, तो ही में एक वूड कथावाचक नै पूछ ही लियो कँ 'हे ओ, माईता, थे आ घाथी-खाथी कथा किया बाचो हो, इसी मनै ही कोई अटकळ वतावो नी ?' वँ बोल्या, 'आ अटकळ सिरदारी करणी आछी हुवँ तो अगलै भाँ मे ही सोधै कठै ही', पण न धो कथक्कड नै ही अर न मनै ही ओ टा हो कँ म्हारें मे धी अटकळ रो तातण ओजू जीवतो है—सुरसती सागै जुडन नै ।"

"दिनूगै रो भूल्यो, सिझ्या घरे आवँ जितँ भूल्यो नी, चलो छेकड़ जावता लाध्यो बो ही आछो ।"

"पण एक ससै ओर है बाई ?"

"काई ?"

"थारें चैरै री कासी पर हसी दुल-दुल चमकती, पण अबार इसो काई चौमासो चढ्यो धी पर, काटीजती देखू हू बीनै ?"

"इयां ही लागू हँ तनै", उदास-उदास धा बोली ।

"म्हारी सौगन है तनै, घात नै लुकोई तो ।"

मुधा सामनै देखती रही पण बोली नी ।

सिरदारी फेर बोली, "केई दिना सू गाव मे अबार थारो चक्कक मोकळो सुणीजँ, दुग्र तो हुवँ ही पण दुनिया रो मूढो थोडो ही पक्कीजँ, विलोवण दे झूक, थारो काई लेवँ ?"

"पण ई रो दत्तो डर नी ।"

"तो ?"

"एक कागद आयो है डाक सू ।"

"कद ?"

"कान्द ।"

"कीरो ?"

"काई टा ?"

“काई ठा किया ?” वा अचभै सू बोली ।

“नाव ही नी दियो लिखणियै ।”

“तो फेर क्यारी कागद अर काई फायदो देवणियै नै । काई लिख्यो हे बी मे ?”

कागद सुधा निकाळ्यो अर पढण लागी—‘देवी, थारो चैरो तै इत्ता दिन ढके राख्यो, ठीक रही, नी दीख्यो जितै निभग्यो पण अवे वो मतै ही चाँडै हुग्यो—एकदम रोलड-गोल्ड है, गाव पर थारा ठग-पजा फैलावण री मँर राख । दो-तीन दिनां मे थारा बोरिया-बिस्तर बाध'र बिदा हुवण मे ही भलाई है थारी, नी जद इज्जत रा टक्का करा'र जासी बी मे काई काढसी, बाडा कुत्ता रो लाय मे की नी बळै लो, दिन थारो, रात म्हारी, घर थारो जेळ म्हारी, इत्तै मे ही समझ लिए ।’

सिरदारी बीरै मू सामो देखती, बडै ध्यान मू सुण्यो कागद नै, फेर बोली, “ला मनै दे तो ?”

सुधा देदियो सिरदारी रै हाय मे । आखर साफ हा । वण ही उघाड लियो—खासो-भलो । उदासी मे एकर वा ही डूवगी । पलभर रक'र, वा बोली. जाणू आपरो निरणै वण करलियो हुवै, “वाई, ऊंदरां रै टीका मिन्ती मरघां पछै ही निकळसी, समझगी नी तू ?”

सुधा बीरै मू सामों देखण लागी ।

“थारो काम कर, धाप'र तो जीम अर धाप'र ही मो । इसो करण-जोगो अर करामाती हुतो कोई तो आपरो नाव नी लिखतो ? जेळ हुयोडा दूजा नै ही सुण्या है, छुद नी भोगी है । दिन मू डरै वा चमचेडां छातर बंदूक बसाणी नी पडै, काकरा ही घणा, म्हारै हाया मे चूडी नी ठुळी है, जघा'र दिया पछै एकर तो ऊट रा पग ऊपरन करदू, डर ही मत तू ।”

वण ठीक कही, पण सुधा रै मन मे तो ही निष्फिकारी नी वापरो । वा बोली, “मा, नाव दे'र, यानै चाँडै सजाई थोडी ही मांडणी है ? टंढग रा दो-च्यार ध्यान मे है काई ?”

“हां है दो-च्यार कळमूडा—जाट अर रजपूता मे ।”

“बाई कियो वा ?”

“रात-बिरात सेत-खळै, रोही-राही मे दो-च्यार दफं, धूड्याणी

आपरी करली बा ।”

“काई हुयो फेर ?”

बाका हुया बै म्हारी नाड जात मे ही समझ—हरिजनां मे । ई जातडी नै तू जाणै ही है, हुबणनै काई हो, एकर तो पग-पीटो खासो ही कियो, थाणै-कचेडी सम्भ्या, पग ढक्या, पागी ही लाया । केई बूझ-बुझाकडा विचाळै पड'र कैयो, धिगाणै, घर रो साथळ कयो उपाडो रे ? सौ-दोयसै दे-दिरा'र मू बढ करदिया वारा ।”

“जेळ ही हुई कीनै ही ?”

“एक एवाडियै नै हुई ही एकर छव महीनां रो पण जेळ काट'र आया पछै दमिया रो तो वो दादो हुग्यो अर नूधा रो बाप । अबै वो नी रैयो, रोही मे पैणै पी लियो बीनै ।”

“ई हिसाब तो जेळ भोग'र आणों वरदान हुयो बीनै—हीरो वणग्यो वो तो ?”

“अवार तो घणखरो इया ही देखां हा बाई ।”

“पण इसी गोळमाळ घणी था नांढा में ही क्यों हुवै ?”

“एक तो आगै ताईं म्हां लोगा रो पूग कम अर सागै समाज में पूछ ही । गवाह-साबूत तयार करणा दौरा, न जेव रो जोर अर न जूत रो, मूर्धै पर सेलास दुनिया रो नेम है ।”

सुधा सिरदारी मामो देखती उदासी मे ऊंडी बैठै ही ।

सिरदारी भळे बोली, “बाई नाडा नै की तो नागां परख लियो—बाकै मे आगळो फेर'र अर की बै है ही ई जोगा ।”

“ई जोगा किया ?”

“मिनख घणखरा दारखोरिया अर जुवारी, मायं-वार कठै ही घूड घावता फिरै तो बारी लुगाई ही कोई की घूड खावणी जे करलै तो अचभे ब्यारो ?”

“हालत खराय है मा ।”

“बाई, न एक पर अर न एक गाव, मुलक सगळै मे हीं डूबी पर नव वाम दीसै है मनै तो । मियाजी उदास कयो, कै सहर रै अदेसे मू, आपां तो आपगां जाबतो राखो बाई, पराया नै समझा तो सका हां पण तयार करतां

ताळ लागसी ।”

“ताळ लागे तो छोडदां बाने ?”

“तो पीचीजा वां सागे ?”

“टुरणों तो सागे ही पडसी, सगळा नै सागे राख्यां बिना हार है आपणी ।”

“हार नी, जीत राख पण निरभै तो रह, हू बैठी हू जितै ।”

“पछै ?”

“पछै धारो निभाय अठै मुश्किल है ।”

“काई ठा ?”

“मने दीसै जिसी कही है में तो ।”

“हुसकै है पण अणआई-चित्ता मे पैलां ही क्यों घुळू ?”

“मत घुळ पण एक गळती तै करदी ।”

“काई ?”

“म्हारो कंयो नी मान्यो तै ।”

सुधा समझगी, वा उदास-उदाम नीचे देखण लागगी ।

सिरदारी भळे बोली, “घरे आर्ये नाग नै काड, लीक नै पकड़घां बाई कुण जाणै कितो लम्बो भटकणों पड़े ?”

“पड़े तो पड़े, पण धारी छांयां है जितै तो मत बोल ।”

सिरदारी रै चैरै पर एक उदासी फैलगी वा कंयो चाबै ही कं म्हारी छायां नै तै डाल मानराखी है पण मने अत्रे बी मांकर तावडो छणतो दीखै है । बात नै होठां ताई ला'र, वा पाछी ही गिटगी । आपरी पाटी-पोथी जाग्या-सर राख बोली, “बाई घर में एकर पग घाल'र, पाछी ही आऊ हूँ—सागी पगां ।” वा टुरगी, चालती सोचै ही, “रुप अर जबानी ईरै खोळै बंध्या घोरा है, बाळसी ईने ही नी, सागे मने और । टसक-टसक'र क्रियां रात काडू हूँ, म्हारो जी जाणै है, जे कोई काई-किसी हो हुगी तो मरी न जीवी ।” वा चालै ही खुलै आकास नीचे पण ओ सांतो बीरै अन्तस नै डरुं हो ।

घ्यार बजी ही, गाय रोही सू आई खड़े ही, बीने छूटै घाघ, कुत्तर आगे मेलदी बीरै । बीने याद आयो, अरे आटो भिगो'र, एक थालै बटके

नीचै राखयो पडघो है—दिनूगै रो । भूख दिनूगै ही नी ही, थाली पर बैठण रो जी अद्वार ही नी करै । आटो दिनूगै नै बू-दे उठसी और नी तो, पीडो कर'र, गाय रै मूढै मे तो दू । वा बरामदै कनै सै आई तो सामनै सानड़ी आवै ही पग घोंसती ।

“सान्ति ?” मुघा बोली ।

“हा बैनजी ।”

“चूहै कनै वैठी-वैठी दो फलकिया तो उतारलै, आटो तो पडघो है दिनूगै रो—बटकै सू ढकयो, जीम लिए दूध सामै ।”

“थे नी जीमो ?”

“जी ही नी करै ।”

“दिनूगै ही तो नी जीम्या ?”

“हा ।”

‘ भावै जिसो ही को तो जीमलेया ।’

“देखी लागसी, हाथ-पग धोर आटो मठार तू, हू छाणां रो कूडो लाऊ ।”

वा मुकाण (छाणा, थैपडी मुकोवण री जाग्या) पर आ'र, मूका-सूवा छाणा कूडै मे नाखण लागी । मामनै बाड रै चिप्ये एक अखबारी पानै पर बीरो निजर गई । उठा लियो वण बीनै । काई दूर मे चीकणों हो बो, चिकणास पर ही छीदी-माडी लाल कीटघा, बडी पतली, बडी महीन । पानों हालता ही, मँ कीटघा हाल उठी—हडबड़ा'र । पानै नै वण साबळ झटका'र, पढण जिमो करनियो—भीटै रा महीन-महीन भोरा हा बो पर, विचार आयो, “भूखी कीटघा विचारी, की चेषो करै ही आपरो, कयो छेडै करी वानै, काई काढसी ई अँठ मे तू ? याइ कानी फंकटू पाछो ही ।” देख्यो पानै कानी—उठती निजर सू, ‘दैनिक नवभारत’ री हो—कोई हपतै भर पैला रो । पानों अँठो, खबग बासी वण बीनै तो बी बेळा बो, तवै उतरती रोटी-सो ताजो अर सतावरी पाक-मो पुष्टिकर लाग्यो । आज नव महीना नँडा हुसी वण कोई दैनिक पढणों तो दूर, बीरो मू ही नी देख्यो । बाप रै तो वा बदे-कणास ही पढती वण, सासरै दो घडी रोज ही, हिन्दुस्तान हूवो चावै नवभारत, वै घुराक हा बीरो ।

मौक-बेमौक वासी रोटी सू वीनै न उदासी ही अर न आपत्ति ही, पण अखबार री बासी घुराक न बीरी आख्या नै रुचती अर न माथै नै ही । देस अर आखी धरती रै धरातळ सू मन बीरो की न की जुडघा ही राजी रैवतो पण अखार बी सामो सन्तोसी-माता रो ओ मिदर अर आ उदास हरिजन-बस्ती, बस, इत्तो सो धरातळ ही बीरो ससार हो । ई धरातळ री खदबदीजती हाडी मे रोज री घटनावा रा उठता-वैठता गुठला बा देखै, का गांव रै छीलरै सागं मथीजती, रागद्वेष री आंधी छप-छप बा सुणै । केई विरिया तो वा इमी उदास-अमूजती बेळावा रै धक्कै बाजी है कौ कावू वार हुती मनम्या बीरी कह उठी, “मू माथो ले’र, कूच क्यो करैनी अठै सू— मुखपासी”, पण, वीरै विवेक बीनै धामलो जावती नै । अवार केई दिना सू किसी ही मनहूम बेळा भळे आ घेरी बीनै; घेरो बीरो नापणं मे ही नी आवै । इसी बेळा मे इसो वासी अर अँठो पानो ही बीनै वाटहो लागसी कदेई, इसो वण सपनै मे ही नी सोची ।

कूडो लेजा’र वण रसोई मे राखदियो । हारै सू पाच-सात घीरा काढ’र, चूल्हो वण धुखतो करदियो । फलका सातडी करै दत्त, पानं नै आख्यां मा’कर काढण नै वा बारै आ वैठी ।

मिधथी मे ही, बीरी आंठ्यां, “सामूहिक बलात्कार सँ एक मोटै मिरै नाव पर, जा अटकी । लिख्यो हो—आगरा, खबर मिली है कि यहा सँ बीस कीलोमीटर दूर, एक खेत मे किमी हरिजन युवती के साथ कुछ बदमाश, बलात्कार कर फरार हो गए; युवती अचेत अवस्था मे अस्पताल पहुँचाई गई । पुलिस बड़ी शरगमीं से बदमाशों को तलाश रही है ।”

बीरै सिर पर उदासी री कावळ पैला ही भारी ही, भीज’र अवै वा जोर भारी हुगी, काळजै सी बडग्यो । अगलै कालम मे—“शाजियाबाद, बडूक की नोक पर लूट और बलात्कार...” ‘कुर्व मे पड़नदे’ बुदबुदाई वा—खबर अधूरी छोड आगं बघगी ।

की आगं, “दिल्ली के एक नामी होटल पर छापा मार . मंत्रांत परिवारो की कुछ युवा लड़कियों को बरामद किया अर्नतिक व्यापार से सम्बद्ध है । होटल के मालिक को भी लिखा गया है ।”

लगती ही, "समस्तीपुर के एक जनपद में हरिजनों के दस घर आग को भेट, लूट और बलात्कार। पुलिस चार घंटे बाद घटनास्थल पर पहुंची। जांच सतर्कता से जारी है।"

बी कर्न आर्य गुमनाम कागद नै याद कर पीड़ बीरी अदार गैरीज ही अर चिंता बधै ही। आख्या वण दो मिट बंद करली। टीस घुटती गई, उदासी ढकली वीनै। सोचै ही, "व्यवस्था, पदलोलुपता री भाग पी राखी है का समाज री समझ नै गूग रो धुण लागग्यो कोई? रोगी सत्ता, रोगी ही समाज। दुविधा रै दळ-दळ मे न दिस, न द्वार।" आख्या खोलली, चावै ही आगे अवै एक आक ही नी देखू पण भूखी निजर भंटे भागपड़ी आगै।

लिख्यो हो, "जैसलमेर, पाक घुसपैठिए रात के साये में ऊट और गाए बडी सट्या में हाक लेगए।" बडबड़ाई वा, "मूखें हा घुसपैठिया, आर्ध राज में, लुगाया थका ऊट वाळन नै हाक्या।"

निजर और आगै बधी, "बम्बई, एक बड़े व्यापारी के यहा तस्करी का सामान थीर नकली नोट छापने की मशीन मिले।"

चिपती ही—"उज्जैन, विपाकत आटा खाने से बीसों बीमार, दो की हालत चिंताजनक।"

पानो दूजै कानी फोरलियो वण, दवाई, विज्ञापन, निविदा, लाटरी परिणाम, गुमशुदा की तलाश जिसा थळ छोडदिया वण। पानो फोरत ही दरसण हुआ।

"कलकत्ता, स्टेट बैंक की शाखा बंदूक की नोक पर लूटी गई, उग्र-वादी कार में सवार थे।"

"दिल्ली, एक रिटायर्ड फौजी अधिकारी, कुछ गोपनीय फाइलें, एक पाक एजेंट को सौंपते हुए रंगे हाथों पकड़ा गया—इससे एक बड़े गिरोह का भडाफोड़ होने का अनुमान है।"

पाच-सात सैना छोड, "कानपुर, दो राजनीतिक गुटों में संघर्ष, तीन मरे बीसो घायल, कपर्धू, अर फेर बो ही राडीरोणो जिंकू गू अमूर्जै ही वा।"

"नागपुर, एक रंगीन सांस्कृतिक कार्यक्रम में रोसनी गुल, लूट और

बलात्कार। चीख और क्रन्दन से सभागार का आकाश काप उठा। प्रतीत होता है, कुछ शरारती तत्वों ने योजना-जाल पहले से ही रच रखा था, पुलिस तत्परता में जांच कर रही है।”

उत्तेजना में होठ बीरा धिगाण ही धूज पड़चा, “जाच, धूड़ कर रही है जाच। पुलिस सभागार रा वारी वारणा गिणसी, का मच री लम्बाई-चौड़ाई नापसी अर फेर आसै-पासैआळा नै चैरा देख-देख लयड-धक्कै लेसी, शरारती इत्त पुलिस री शिकायत करण नै कोई शिष्टमडळ में जा मिलसी, साग हुसी वारै अंम० अँल० ए०, अँम० पी० कोई, अर छाण-वीण रा पग सिफारिम रै धोरां में लापता।”

अवै सिर री रगा बीरी तणै ही, झूझळ अर बेचैनी मतै ही उफणै ही बीमे। सोचै ही वा, “पानै नै फाड फँकू पण फेर विचार आयो कै गधै रा कान घीच्या, खबरा री कुमारी रो काई बिगटै? पानै पर रीस काडचा किसी बीमारी मिटगी का यथार्थ अदीठ हुग्यो?” निजर भळे टुरपडी सागण ही पगडांडी पर—भाग खापोडी-सी, लिख्यो हो।

“राजधानी में दो छविगृहो का भव्य उद्घाटन”, बीरा होठ फेर हाल उठपा मतै ही, “बस पडतां की गरीब री जेब में मूळी रै पाना सागै ही टुकडो लगावण नै पूण-पावलो मत रँणदेया।” काँ आगै, “अगली योजना में साठ प्रतिशत लोगों को दूरदर्शन लाभ।” प्रतिक्रिया अबकै बीरै होठा पर तो नो फूटी, पण मन में मोकळी उफणी, “रोटी, कपड़ै अर आवास रो सुय तो मत दिखाया गरीवा नै, दूर-दरसन दिखावण में पाछ मत राहदा, ई मू वारा डील ही ढकीजसी, आता ही बाँरी अ,सीस देसी अर आल्या ही कमर लम्बी लेसी।” अन्तिम लैण ही, “गुरदासपुर, एक निरपराध को गोली से उड़ाया गया—रोडवेज रोककर, जेप पृष्ठ सात कॉलम पाव पर।” पानों एक हाथ में घामती अधमिट वा विचार-मूड सी छोई रही।

आ बात नी कै ई पानै में घणखरी खबरा एक ही माजनै री कृपि, कारवार अर विकास री भी ही—ठीदी-माडी, पण दां पर वा सरी निजर नाशती आगै बघगी, बिना हलचल, बिन. मयीज्या। मन ही बीमे, आ खबरा बीरै समानधर्मो पुद्गला नै और उत्तेजित . ऊहापोह में छोई, अचानक यण सुण्यो, “बैनजी?” वा चींकी, तार

बोली, “हा, आई बाई ।” वा चावती तो दो-व्यार अणछूई लैणां भळे सोध लेंवती, पण अबै ऊबगी ही वा, गरीब पाने नै लीर-लीर करतो भेळो कर, दाव दियो हारै रे सिलगतै मू मे, वो धुखण लाग्यो, धुखे वा ही कम नी ही । रसोई मे गई, सान्ति बोली, “फलका त्यार है वैतजी ।”

“त्यार है तो लगा भोग, उडीके कोनै है ?”

“आप, नी जीमो ?”

“मनै तो भूख ही नी ।”

“आप, नी जीमो तो हूं ही नी जीमू ।”

“म्हारो कोई ईमको है काई ?”

“आप दिनूगै ही नी जीम्या ?”

“भूख नी ही, तो नी जीमी ।”

“फेर हू ही नी जीमू, भूख मनै ही नी ।”

मुधा वीरै चैरे सामो देख्यो, “भूखतो है ईनै, पण हूं नी जीमू तो आ ही नी जीमै, आ ही कोई बात हुई ? वा आपरी बात पर जोर देंवती भळे बोली, “नी जीमै तू ?”

“नो”, छोरी धीमै पण साफ बोली ।

“भूख है तो ही ?”

अपग छोरी, चुपचाप मुधा रे मू सामों देखती रही । मुधा बोली, “म्हारो अवार जीगोरो नी बाई, घाळी पर वैठण नै जी ही नी करै, बह-दियो तू जीमलै ।”

छोरी होळै-सै बोली, “भावे जितो ही तो—आधो-चीयाई ही ।”

मुधा झूझटावती बोली, “कहदियो हूं नी जीमू, तनै भावे तो जीमलै, नी तो उठार वानै आळै मे राखदै ।”

कैवण री ही देर ही, छोरी फलका एक टोपिये मे जचार, आळै मे मिरखा दिया । मुधा वीरै चैरे मामों एकर ओर देख्यो, वो पर कोई प्रति-क्रिया नी दीखी वीनै, मिवा संज सरलता अर आज्ञाकारिता री सीधी लीका रे । दिना री उदासी मू गाडीजतो-पत्थरीजतो बीरो अन्तत पिघळ'र पाणी बपग्यो । त्रिचार आयो वीनै, “भंग्या री छोरी, चालती अंठ खावती, लूखे-मूके टुकडे पर टुट'र पडती, अयार भूखी है, मामनै रेसम-सा कवळा फलका

है, घी-सक्कर कर्न है, सामने ही नी देखै बारी, सिरकादिया बान अण-चाईजता-सा—जाणू अजीर्ण है ईने । बीने लाग्यो कै इसो हेत का तो की मा में ही हुसकै है अर का फेर, 'पानी परात को हाय छुयो नही, नैनन के जलसों पग धोए' जिसे दोनवधु दोनानाय मे ही आपरै की अनन्य प्रेमी पातर । पग धोवण नै न फुरसत अर न मुध, मतै ही तो आसू पडै हा अर मतै ही पग धुपै हा । अपंग-अडौळ छोरी रै काळजै मे इसो अभंग अर अटूट प्रेम जिकै नै न भूख हिला सकै अर न कोई करड़ो आदेस । ई पावन प्रेम री मालकण नै कुण बतावै अपावन ? में भूखी अर उदास पातर, आपरै छोटै सै काळजै मे आ करुणा रो सागर छिपाए वैठी है । हूं नी जीमो तो रात भर आ गूदड़ी नीचै पड़ी-पड़ी तारा गिणसी, न ईने नीद आसी अर न सान्ति । गदगदीजती वा होळै सै-बोली, "तै वाई, धारो कैयो नी करसू तो रैसू कठै ? निकाळ फलका, हूं दूध काड'र लाळं अवार, दूध सागै जीमस्या आपां । चरको मू करण नै, चावै तो एक पापड सेकलै, आळै मे पडघो हुसी ।"

"हां चूल्हो तो ओजू सजळ ही है वैनजी, सेकलेसू पापड ।"

मुधा बारी आई, गाय नै वाटो दे'र दूध काड लाई । पतळा-पतळा फलकिया चूर-चूर दूध मे, दोनां ही अरोगलिया । फलका इसा ही तो छोरी नेक्या हा, छागा रै खीरा पर अर दसा ही इकसार बटभा हा । पापड रो चौयो टुटडो बण लियो, मजाल है कोर ही कठै ही बीरी काची रही हुवै वा पेट पर बीरै खीरो लाग्यो हुवै ।

मुधा बोली, "रसोई तो तू, देवता राजी हुवै इसी करण लागगी ए नान्ति ।"

वा की नी बोली । सिरदारी खातर दूध की, खीरां पर राखदियो ।

मिथ्या पडते-पडते सिरदारी ही लाठी लियां आ पूगी । वास री दस-पाच लुगापा ही धीरै-धीरै आ जमी । दम बजी ताई ज्ञान-गुरवत अर घर बिघ री चलती रही । सिरदारी नै दूध पा दियो । काळजो न्यायो हुग्यो बीगे, नी-नी करला नीद फिरनी बीने । नान्ति ही जा रळी नीद भेळी । बारी, मुधा ही क्यो बचै ही, रजाई नीचै जा बड़ी, पण नीद नेपी किनी कारै ही । काई ताळ पला रो स्यूळ पानां बीरै सामने ही राख हुग्यो हो

पण वीरा घणखरा आखर ओजू जीवता हा वीरी जागती चेतना मे । अबार वै निकळ-निकळ वी आगै साक.र हुवण लाग्ग्या । मन उधेडवुण में लाग्ग्यो, “प्रभु, काई जमानो आयो है, जाणू इत्तं बडै देस रो कोई घणी-धोरी ही नी हुवै । आजादी मिल्या आज दसक वीतग्या केई, ज्यू-ज्यू वा वधै वो सार्गै वधणा तो लोणा मे चाईजै सगठण, सहयोग, श्रमनिष्ठा, साच, सरळता अर मुख समृद्धि पण अठै प्रवाह ही उल्लो है, बर्ध है बलात्कार, लूट-खसोट, बेईमानी अर आपसी सिरफोड़ । लुगाई रो तो, एकली रो निकळनो, रात री छोडो, दिन मे ही धर्म नी, वीसू तो तास री पत्ती ही आछी, वा ही बडो अदब सू परोटीजै । वा तो बीडी, सिगरेट दाई हुगी, जी चायो जद सिल-ग.ई, होठा रै लगई अर वूट नीचै दे'र पूरी करी का फँकदी आधी रेत मे—मन मे आई जीनै ही । लुगाई जद न खेत-खळै निरभै, न घर मे अर न सहर-बजार मे तो कठै जावै वा ? मैण री माखी हुई अंधकार मे कोई भीत रै तो चिपण सू रही वा ? ओपरी हवा लागण रो राई भर बँम हुया ही, कळमूही नै डोई कठै ? बिना पाख्या इसी उडावै समाज बीनै कै बँगी-सी वा, की रूख पर बँठी ही है फेर ? अकूरडी रै फूस नै, हेत री आघ कठै ?” पसवाडो वण फोर लियो, पण प्रवाह नी फुरचो ।

“राजधानी रै काळजै लूट-खसोट, हत्या अर बलात्कार, हरमोड पर जठै पुलिस रो जवान, हर चौरावै पर चौकी जठै, फोने वायरलेस सब । वात ही खूटगी, ई हिंसाब का तो पुलिस री आट्या अर आत्मा बीमार है का फेर व्यवस्था री । बुध अर असोक जिसे पच सितारा होटला मे अनैतिक वीपार, भलै घरा री भटकी छोरचा रो झूमको जठै, का तो माईत सूना है बारा अर का समाज रा माथा । सून में तो खतरो ही पनपसी । अणपड अर एकल एवाडियो ही आपरी सइकडू भेडां रो ध्यान राखै, भटकण नी दै बानै, तो समझदार माईत जवानी री थळी पर पण राखती आपरी एकल-दोकल बेटया कानी जे आख्या मीची राखै तो जणन रो फोडो वै क्यो देखै अर क्यो घरती पर अणचायो भार बघावै ? जूत पडै तो ही नी समर्त, नित नुबै सिनेमाघरा रा उदघाटण और करवावै । 'लोन' ही सरकार देवै अर लाइसेंस ही वा, फेर छोरा-छोरी आपणा बिगड़ै तो कोई परवा नी, सोदो घाटै रो नी—लोग सोचै । कुमाणस बुद्धि रै, आ कीड़ा देस री रीड

चाटणी मुरू करदी तो बीरं चैरं री ताली किता दिन ठैरसी ?”

टीवी है, कंसरी-कीट-सो बीडीयो घटै हो, विलायती बासना रो सागर लापतो वो ही आ पूगयो । सुहागण लागी दुहागण रै पाय; मैं जिसे करे मोरी माय, पिच्छमी संसार चाबै ही आ है कं भारत नी रैवै, खुद टूटै तो टोक है, नी तो तोडो बीनै । ठगी करण नै इत्तो बडो बजार और कठै लाधै अर कठै लाधै इत्तो लम्बो-चौडो अर सूनो घरातळ । मिनिस्टर अर अफमरा रा लाडला अर फिटोळ सावजादा विलायती ब्यू फिल्मां, नागी, उत्तेजक अर बासना सू लथपथ काळै बजार बेचै, सहर री हर गळी ताईं पूगण में सचेष्ट । की फुटपाथी अवारागर्द रो अकं तो पुलिस कांई ठा काढसकं है पण बां मावजादी छतां कानी पग राखती वा ही संकै ।

नेतावा नै फुरसत नी डाण फैंकण सू ही । राजनीति री चौपड, कूट-नीति रा दाव, कुस्यी री गोटघां, जोड-तोड़ रो ओ खेलो खतम ही नी हुवै । ‘दो दलो में सघपं,’ सघपं हुवै थोड़ो ही है, कराईजै है वो तो ।”

महसा बीनै याद आई, वण पढी ही कठै ही, कं “जैन साधवी के माय छेड-छाड करने पर स्थानीय जैनमंडल ने, मुख्यमंत्री को एक ज्ञापन दिया ।’ अवार सोचै ही वा कं जैनमंडल ही क्यों ? और मंडळा रै तुळी सागगी ? इमं मौकै ही सर्वाळी सजगता नी बापरै तो फेर कद बापरसी ? कठै नेता कठै साध-मन्त, सांग बणाया फिरै है घणखरा ज्ञापन ? ज्ञापन मिल्टी अर मिजादस्स थोड़ा ही है ? सील री भोळी अर जयान पूतळघा, ताव नै तेडो देवण ई आंधे जुग में घर छोड़’र निकळै ही क्यों ? निर्वाण बारै ही है, घर में नो ? विचार आयो, म्हारै पुरखावांरी घरती सू गूज्यो हो कदेई, न स्वैरी, स्वैरिणी कुत. ? बलात्कार में आंधै पथ पर पग राखणआळी आदमी ही जद कोई नी, तो लुगाई हुवण रो सवाल ही कठै ? तो अवार आ रोगली मानगिकता, बघती नदी-सी क्यों है इत्ती ? हुणी तो आ कोई प्रतिक्रिया ही चाईजै, तो बाप इरो ?” सोचती रही वा काईताळ, सहसा विचार आयो बाप इरो, आधै परिग्रह रो भोगी दरसन ही तो हुयो, जडा बीरी ऊपर है अर रोग नीचै । आधी पूजो रा ऊंचा उमार बां जटा नै सीचै, निचलो तबचो हो; बां डाळ में सुख मोधै—ईसकै रै ओग नै सांग लियां । ऊपर सीचीजती वं जडां मृद रै विवेक सू समझै तो बलिहारी है बारी, ि

सू एक आम्हा निवळी प्राणवान वणती, 'मा ते व्यथा, मा च विमूढ भावो,' हू कठै नी ? की मे नी ? जरूरत पडता ही आत्मानं सृजाम्यहम्, काई ठा कद की मे जाग पडू, मनै कठै सू ही सभ'र नी आणो पडै पण तू अणआपै भय री चिंता मे गळै, अणदेख्यै अर आकासी चैरै सू डरै अर अणरोई आख्यां रा आंसू गिणै—आ कठै ताई ठीक है ? विकार नै मत सोच । हर-जीत नै आळै मे राख, हर हार नै गळै लगा, अफलाकाशी अर गतमसँ हर जूझ, वस ईं सू आगै की मत सोच, सिद्धि अर शान्ति ईं मे ही है ।' भार छटग्यो, आश्वस्त हुगी वा । वस्तो पाछो ही राखदियो बांध'र वण । बंद करदी वस्ती अर कोटडी । रजाई आपरी आ सभाळी । ऊजळी आसा मे, बीरी याद पर एक कोई नैण नाच उठी, 'सुमिरेहु मोहि, डरपहु जनि काहु', अर बीरी आंख्यां लागगी — एकदम निघडक ।

4

धोरी अर भेघवाळां रै आठ टावरा री एक उदास कतार आज नुई आई है पढण नै । तीन वा मे छोरघा अर वाकी छोरा । दो छोरघां अर एक छोरो भाई—बैन है, नानी रै अठै आया है । अँ सँ सिरदारी बैनजी कर्न जा खड़ा हुया, मैला, कुचैला अर सूगला । वण ईं अणचीती कतार नै आपरै चर्म सू सरसरी निजर दे'र देखी । ठंड मे बँठी नै ही बीनै, पसीनों आवतो लाग्यो । वण सोच्यो, "अठै तो अगली अघै श्नी पीचीजै है अर अँ फेर आ ऊभा, कुण जाणै कठै लुक्पोडा हा इत्ता दिन ? पढै तो, राज री स्कूल नी है ? पण सगळां नै मुरसती रो वासो कवळै कर्न ही दीसँ है ।" टावरा नै खडा हो छोड़, वा सुधा कर्न आई, असली अमूजणी तो ढकँ राखी, सहज में बोली, "बाई, मोडा घणा अर मढी साकड़ी, एक नुई पळटण ओर आई है टावरा री ।"

"आवण दे मा, आपांनै छोड़'र ओर कठै जासो विचारा ?"

"पण वँटण नै की टोड ही तो चाईजै ?"

“नी ठोड़ हुवै जित्तै म्हारै कनै भेजदैं ।”

“कोई नुवों छप्परियो खड़ो नी करला उत्तै कतार नै विदा करदा एकर तो किमो मैणो है ?”

“कित्ता दिन लागसी छप्परो बणतां ?”

“दो दिन तो समझ ही लै ।”

“तो दो दिनां खातर काढण रो नांव ज्यों करै, मिदर री ओट मे वँठा रैमी म्हारै कनै ।

“तो राख, पण टावरा नै एकर देख तो सरी तू, पूर तो कुवै मे पडद्या आपरो सेडो ही नी संभै वासू । कनै वँठाया ही सिर ऊचो चढै है ।”

“सोग-पूछआळो तो कोई नी है वामे ?”

“है तो लुगाया रा जायोडा ही,” बा की झंपती-सी बोली ।

टावरा नै बण आपरै कनै बुलालिया अर वँठा लिया लैणसर खुलै तावडै मे । सिरदारी गई अर आपरै काम में लागगी । सुधा बां टावरा कानी देखण लागगी । बारै कपडा री हालत आ ही कै मैल हुग्यो बांमे कपडा सू भारी । केई कपडां तो मतीरा रो पाणी अर गिर चूम-चूस, सेडै अर अँठ री आल खा-खा आपरो असली रंग ही गमा वँठा । रेत चिपा-चिपा वँ और ही करडा हुग्या, गरभडै रा रीगा पेट अर गोडां सू गिट्टा ताई बेतरतीव बण्योडा हा । रज बां पर चँठ-चँठ बारी आकृति थिर करदी । केया री आख्यां दूखणी आयोड़ी ही, केयां री आवण मतै ही । गीड अर चूचरा रो कब्जो हो बां पर । बा समझगी आ मँर अणमेघा वोज अर बोरिया री है, टीगर आखो दिन जाड चालू राखता हुसी । दो छोरचा रा विलान-विलान रा केस मैल सू करडा हु'र बिप्योडा हा । लीख अर जुवा रो काई चांको हुवैलो बा में, रह-रह बै अबार ही माया कुचरै ही, पग गगळां रा ही उबांणा । नख वघ्योडा ही नी, आज ताई कटघोडा ही नी । दात पीळा, डील थक्योडा । वासी मू तो, वँ कुरळो थूकण रँ डव ही नी । मिनघा रो जाव, इसो हिया-हेठ बण अबार ताई नी देख्यो । एक-एक नै बण पूछ्यो, “कपडा कद पँरघा हा रे ?”

“दियाळी नै ।”

“बी पछै घोपा ही हा कदेई ?”

“नी ।”

“खोल्या ही नी हुसी कदेई ?”

“नी।”

“काय, पीठ अर गले लारै खाज आंबती हुसी ?”

“हा ।”

“निमटण जावै जद पाणी ले जावै है ?”

“नी ।”

“तो बीठ करी अर काछियो बाध लियो ?”

छोरो नी बोल्यो, नीचे देखण लाग्यो । आठ टाबरा मे सू छब रा उत्तर मिलता-जुलता ही हा । आधा मे काणों राव, दो वामे की ठीक हा । केया रा अधघडी पैला ही बीज खायोडा हा, मूंडा री बास दो हाथ परिया सू ही आवै ही । केई छोरा री जेबा मे बीज अर बोरिया ओजू हा । बण बारै कढवा दिया वानै । केई छोरां रा हाथ सूध्या बण । दो नै छोड'र, सगळां रै तमाखू री बास आई । पूछयो बण वानै, “चिलम पियो रे थे ?”

वै नी बोल्यो, उदास-उदास नीचे देखता रैया ।

“डरोमत मारुं नी थानै, नुवा गाभा पैरास्यू अवार ।”

रुक-रुक हा भरसी वा । कोई दादे नै चिलम भर'र देवै अर कोई बाप नै । पैला दो सुट वै खीचलै । आदत वामे पडी तो नी, खडी हुवै ही । बा रसोई मे गई । एक कूडो पाणी चढादियो अर मायं नाखदियो दो-मुट्टी सोडो । पाछी ही आ बँठी वा कनै, आप कनै पढणआळै दूजै टाबरा नै ही बठै ही बुलालिया बण । इत्तै एक डोकरी आ खड़ी हुई । हाथ जोड़'र, सुधा नै बोली, “दाईसा राम-राम ।”

“राम-राम, पधारो ?”

“पधारणों नो आप जिस मोटे मिनखा रो है, म्हारै तो गोता लिख्योडा है ।”

“बोलो ?”

“एक छोरो अर दो छोरघां, दाईतो-दाईत्या है म्हारा, पाच-मात महीना खातर थाया है आप कनै, दो आंक अर की हुनर सीखण नै ।” टाबरा नै बण कनै बुला'र बताया ।

“अठे ये पढण खातर बुलाया है ?” सुधा पूछ्यो ।

“बुलाया कण बाप है ? बावलियो घालग्यो ।”

“घिगणै हो ?”

“और रोणो ही क्यारो है ?”

“क्यों ?”

“मावडी तो आरी गई अगलै घर, बाप करलियो नातो, नातैआळी आप जाणो ही हो परामै जावनै सूघै ही कद ? आप बतावो हू कठै काढू भा आयोड़ा नै ? पण म्हारै कनै किसी थेली है बतावो ? म्हे तो आप ही रावडी सू बान चेपर दिन काढा हा ।”

टावरा री बावत सुधा बीनै की ऊचो-नीची लेऊ ही पण बीरी कथा मुणर बण जीभ ही नी खोली । डोकरी, होळ्ळे-होळ्ळे पग राखती, सिरदारी रै छप्परियै मे जा बडी ।

भंवरी आयगी । सुधा बोली, “आज तो वाई, बेलीपो दे की ?”

“फरमावो ?”

“तू देख, पाणी गरम ह्यग्यो हुसी, वाल्टी भरला, अर कूडो भरर पाछो ही चाढदै चूलहै ।”

“अवार काई करस्यो इत्तै पाणी रो ?”

आगळी सीध करती बोली, “अँ छोटा-छोटा मानवी उणिमारा दीयै है तनै ?”

“हा ।”

“टावरा री गत में है का जूण ही भोगै है खाली ?”

“मैना ही नी, बीमार ही तागै है मनै ।”

“तागै है तो उपाव करा की ?”

“जरूर ।”

“साल मे दो दफै तो एवाड़िया ही पाणी मा'कर काढै है—तरडिया नै ।”

“हा ।”

“तो तू अर हूँ, भा पर पाणी नाखा होळ्ळे-होळ्ळे अर अँ न्हावै रगड-रगड ।”

“भापा तो नांख देस्यां पाणी, पण आंरी मावां नै ही तो बुलावो एकर ।”

बुलावा, पण आनै की ढगसर कियां पछै ।”

नाख काटदिया वारा, तेल, लूण अर तातै पाणी सू दांत ही की दीखन-जोगा हुग्या अर बाका री बास ही बिदा हुई । न्हा लिया सगळा, नुवा काछिया अर कुडतिया सगळा नै पैरा दिया । माथा में दो-दो आगळी तेल दे-दे, चैरा चमकता कर दिया । नुई पाटी अर नुंवां बरता दे-दे, सगळां नै लैणसर बैठा दिया ।

डोकरी सिरदारी रै छपरै सू निकळ, सुधा बनकर हुती इंतै-बैतै देखण लागी—डोळा तिडकावती ।

“काई देखो हो माजी ?” सुधा पूछयो ।

“म्हारला टावर नी दीसै, घरे भागग्या दीसै है रोवणजोगा ।”

“कठै भाग्या कुण जाणै ?”

“कुण काई हू जाणू हूं बाईसा, वारा लखण म्हारै सू छाना नी ।”

“अर वारा चैरा ?”

“चैरा ही छाना नी, जाम्या जद सू देखण लागी ही ।”

“भागग्या तो हेला मारो वानै नाव से-ले-र ।”

“हुया बिना ही हेला मारूं, इया काईं थे कनै ही लुको राख्या है कठै ही, का आज छौळा पर आयोडा हो बाईसा ?”

“हेलो करण मे हर्ज काई है माजी ?”

“आपणै काई है थे राजी चाईजो, परतिया, पेमली अर पानवी ?” बण हेलो दियो ।

“हा नानी,” टावर तीनू ही गूडा हुग्या ।

डोकरी वारै नंडी पूगगी, चैरा पर आख्या गडो-र बोली, “गोदी-छोरो गाव दिढोरो, ना-खाधा, थे तो कनै ही वैठा हा । ओळखणी मे ही नी आया फूटरा हुग्या रे थे तो ?” सुधा कानी देखती, अचभै सू भळ्ळे बोली, “बाईसा, सेठा रा ना कर दिया थे तो आंनै । लखदाद धानै, अर धारै माउ-पिता नै, हाया मे जादू है धारै । मोट मे लिछमी अर बोली में धारी मिहरी बाह रामजी, काईं घडी है ।”

“माजी, सेठा अर वामणा रा, टावर सँ एकसा ही हुवँ, पण थे काई कियो ?”

“किया चाईसा ?”

“न आनँ स्नान, न आंरा कपडा ही साफ, न गीड पूछयो अर न सेडो, उठतां ही गोरवँ नी टोरघा, ईनँ टोर दिया ।”

वा की नी बोली, सिरदारी आ पूगी अर बाकी टावरा री मावा ही । सिरदारी बोली, “बाई, आ पळटण ठीक बैठाई ।”

‘अर वा पैलडी ?’ सुधा बोली ।

“वा तो बाई, सामों जोया ही सिर ऊचो चढे हो ।”

“तू किसा ओळखँ है वानँ ?”

“वै तो हजार टावरां मे ही छाना नी मावँ ।”

“वाह मा, अँ वै ही तो है ।”

“ई हिसाब तो बाई, आख्या अर चेतँ दोना ही उत्तर दे दियो दीमँ है ।”

“उत्तर नी, वीं बेळा थारँ मन पर घूणा अर ऊव ऊचा आयोडा हा, तनँ वै ही दीस्या, चँरा पूरा नी ।”

“अवार तो आनँ गोदी लेवण री जी मे आवँ है, धुयकारो तनँ नाखू का आनँ ?”

“धुयकारो आरी मावा नै नांख, अँ छड़ी ।”

लुगायां की भेळी-भेळी-सी हुती सुधा कानी देखण लागी । सुधा बोली, “हे ए, थानँ मावां री जूण दी है रामजी, वेटां री मावा तो और ही भागण ।”

“हुकम करो चाईसा ?” वै बोली ।

“हुकम काई, आनँ जणतां ही, डाई धारी उतरगी काई ?”

सामनँ, वरामदेँ में दो जणी कोई और छड़ी ही आयोडी, वै ही दो-प्यार मिट मूं आंरी वातां मुणँ ही, अर हरकतां देखँ ही चुपचाप । सुधा री घ्यान धीनँ नी गयो—बिल्कुल ।

“किया, म्हे नी समझी चाईसा ?” लुगायां हीळँ-मँ पूछयो ।

“ऊमर री आधी नैडी घाटी थे पार करदी हुमी, ओजूं ही नी समझी

तो कद समझस्यो ? ये थारै टावर सू की आस राखो हो का नी ?”

“राखा तो घणी ही हा—पार घालसी तो ।”

“की वै ही तो राखता हुसी थारै सू ?”

“राखै क्यो नी ?”

“ये आरो आस रत्ती ही नी पूरम्यो तो अँ थारी क्यो पूरसी ? नुहाणो-घोणो तो कुवँ मे पडघो, ये आनँ मिनखां दाईं निमटणो ही नी सिखावो ? अवँ ही थानै अँ दीखँ है अर आया जद ही दीखँ हा, की फकँ नी तानँ थानै ?”

“लागँ है वाईसा, फूला थोड़ा ही है म्हारी आंढ्यां मे ? पण पमु हां म्है तो रास्तो थे पकडावो म्हानँ ।”

“रस्तो ओ ही है कँ पैला तो आप-आपरै टावरां रा कपड़ा घोवो, मिदर रँ लारै पडया है, बठै ही सोढँ रो पाणी है । कपडा मुळकसी तो टावर ही मुळकसी ।”

“किया ?”

“आ पछै, पैला कपडा निचो'र लावो ।”

वँ गई, आपरी दिस कानी । बरामदै मे खड़ी दोनू लुगाया नीचँ उतर आई । पैला वँ सिरदारी सागँ चौमिजर हुई, बोली, “सिरदारी बडिया, राम-राम ।”

“राम-राम बाया, सुख विलसो अर सुहाग हुवो भोवळो, ओळखी नी ?”

“नी ओलखी जद ही तो आसीम सेळ-भेळ री दी हँ ?”

“क्यो की कावळ कहँ दियो है तो माफ किया बाया, आघो अर अजाण बरावर हुवँ है ।”

“नी बडिया, भाव ऊजळा है तो सब ठीक है, आ तो आसीस है, हित मे निकळी थारी गाळ नै ही म्है तो घी री नाळ मानां हां । आ म्हारै सागती तो है रूपजी बोपरै री बेटी ।”

“कचन वाई ?”

“हाँ ।”

“अरे !” कहँर अघमिट चुप, फँर वीरी आंढ्या एवाएक छत्रछत्रा

उठी। ओढ़ण रँ पल्लै सू आख्या पूछती बोली, “बाई काळ नै थारै भाग मागै ईसको हुग्यो, साल ही पूरो नी टिपण दियो, बोरियो खोस लियो कुमागत। थारी मा-सी खट'र खावणआळी तपसण सोधी ही नी लाधै। गयै नै हाय रो उत्तर देवै, मूढ रो—नी। वामण वाणियै रो जमारो है बाई, दिन तो दोरा-सोरा तोड़ना ही पडसी जोर थोडो ही है की आगै ही?” वा आपरी गळती समझगी कै ‘सुहाग भोकळो हुवो’, इँनै मनै नो कैणो चाईजै हो।

मागण ही वा भळे बोली, “अर हू बडिया जोधँजो जाट री बेटी हू।”

“करमां?”

“हा!”

“तू तो बाई सात भायां री सोनल है, थारो ब्याव तो घणै गाजा-बाजां ह्यो हो, म्हारै तो थे दोनू ही हायां मे छोटी-मोटी हुयोडी हो। थारो मामरो तो बाई, घणों ही अळगो है—हे जोधपुर कनै जावतो अर ई रो हूगरगड, म्हारै सू काई छाँनो? पण आ बतावो थे आज, ई बाड़ोटियै मे क्रिया आई?”

“थारै अठै एक वैनजी है नी?” करमां बोली।

“हां है।”

“वा सू मिलणों चावां हा।”

“मिली, नी क्यों?”

मुधा कनै पूग'र जिया ही वा प्रणाम क्रियो, मुधा बोली, “आओ वाया बँठो।” जियां हो वँ बँठी, लुगायां ही आ खड़ी हुई कपड़ा निचोर।

मुधा बोली—“धो लिया कपडा?”

“हा बाईना।”

“मँल हो की?”

“पूछो ही मत।”

“तो बँठो दो मिट, थारी 'क्रिया', पूगी करू।”

“आई ही म्हे ई घातर ही हा।”

“टावर री पैली गुरु मा ही हुवै है का ओर?”

“मा ही।”

“वा मा ही है अर गुरु ही पण टावर, बेटी-बेटी हुवँ असल मे धरती रो ही है।”

“किया ?” वै अचभै सू बोली ।

“था मावा सू ही बड़ी, एक मा और है ।

“वा भले किसी ?”

“जन्मभूमि, आपा सगळ्ळा जिकें रा बेटी-बेटी हा ।”

“चूध की थीर खोलो, सावळ नी समझी म्हे ।”

“वा बदरी-द्वारका सू ले'र पुरी, रामेसर ताई फँली है । टावर सँ ई मा री सेवा खातर आवँ है, फेर आगँ बघँ सगळें संसार कानी, पण बघणरो ओ पैलो पाठ, वै आपरी मा सू ही सीखँ—बोवँ सागँ । मावा, बोलो चावँ मत बोलो, मन-मन ही, वै आपरँ दूध री हर घूट मे बारी चेतना पर काँ उतारँ । दूध सागँ उतारघो पाठ मरँ जितँ नी मिटँ । लोरो सागँ उतारघो पाठ बँगो जर्म वाळक री चेतना पर । वाळक नै धरती सागँ जोडँ वो मा री कूख सफळ, वा निरवाळी, ऊजळी । धरती बीसू राजी ।”

“बाईसा, म्हे अँ वाता काई समझा ?”

“अरे आ तो समझो हो कँ थारा रामदेजी, पावूजी, जाभोजी सगळ्ळा था जिसी मावा रँ ही हुया का और कीरँ ही ?”

“मावा रँ ही ।”

“पण वै दौडघा आप खातर का धरती खातर ?”

“धरती खातर ही ।”

“आप खातर दौड़ें वारा मेळा मडँ है कदेई ?

“नी ।”

“तो थारँ आ टावरं मे कोई गाधी, नँरू, पटेल अर लाल बहादुर निरुड पडँ तो, थारो अर थारी धरती रो रतबो बघँ ही ।”

“न. ओ इसा भाग कठँ ।”

“फेर वा ही वावळी वात, चोर, डाकू अर लफंगा करण सू राजी हो धे ?”

वै नी बोली ? मुधा फेर घोल्या होठ, “साच री वानँ कमार्द घालो, वाणी बारी माजो, सस्कार देवो आछा, फेर फळसी किया नी ? भतां ही वै
भाग-2

घटता मजूर, खसता कितान, चौराबै रा सिपाही अर सीमा रा जवान की हूबै, हूबै ईमानदार । घरती फेर राजी है । चोर किरोडपति सू ईमानदार मजूर लाख दरज आछो । घरती री मनस्या नै समझो थे ।”

बांरो जी सोरो हुयो, अर जाण ही बधी बारी । वै बोली, “बाईसा, म्हे ही अबै निरवाळी हां—वेती-पाती सू, मुणी है पढ़ावो हो, मँर हूबै तो आवा दो बधी ?”

“फेर चाईजै ही काई ?”

खुसी नाच उठी बांरै चैरा पर, वै टुरगी चुपचाप ।

5

करमा अर कंचन ही सुधा री वाणी पियै ही काना सू । वै सोचै ही आ कोई सडक-छाप लुगाई नी । वीरै प्रति एक सैज राग जाग्यो बांमें—जिकै मे थदा ही । सुधा बोली, “हां बोलो बायां, किया हुयो बाणों ?”

करमां बोली—“आई तो की मुतळब गांठण नै ही हा ।”

“तो संको बयों ?”

“आप सू अघघड़ी की बात करणी चावां हां—निरवाळी ठांड ।”

“आओ”, टाबरा नै बण आधो छट्टी करदी । वै दोनू सुधा रै लारै-सारै टुरपड़ी । सुधा बांनै टाबरा रो सीडाई, धुणाई अर कलाई दिखावनी बापरी कोटड़ी कानी जावै ही । रस्तै मे सिरदारी बँठो ही, आसण विछा, पोधी पडै ही रस ले-ले'र । वै दोनू वी कानी अचंभै सू देखती ररगी । करमां बोली, “बडिया, तू तो सागण नी रही ?”

“किया बाई, अबै सी ग निक्ळग्या म्हारै ?”

“सोग तो बडिया, थारै पैसां हा, अबै कठै ? आख्या पैना थारै दो हुना करतो अबै हुगी च्यार, सागण कठै रही तू, बदळगी अर बदळती ही जावै ।”

“ये बाणों बाया, मनै तो कीं ठा-नी ?”

“भोजू ही ठा नी लाग्यो तो फेर लागण रो ही नी ।”

“यारी ई बँनजी रो माया है बाई, आ पाख्या लगा'र कदेई उडा-नाखसी तो उडणो किसो नी पडसी ?”

‘सरस कथाए’ भाग दो कने पडी ही वीरै, कंचन बीनै उठा'र बोली, “लै, अठै सू बाच देखां बडिया ।” सिरदारी विना अटके, विना चबाए, बाचणों मुरु कर दियो । कंचन बोली, “बडिया, रेकाड तोड दियो तै तो ।”

करमा बोली, “ई ऊमर मे, ई ढंग सू सीरघोडी मे तो तनै ही देखी—बडिया ।” वै सुध. री कोठडी मे जा बैठी ।

मुघा दोनों रै चैरा नै आपरी निजर सू नाप्या । करमा हलकी-सावळी चाक रो पुळकी फीडो, लिलाड चौडाई मू मुरु हुंतो जादा ऊपर जावतो पठार री चोटी-नुमा हुग्यो, आंख्यां रै पाणी मे उजास अर बी सू ही रोच अर रीस लाग्या । बोली मे सरळता अर मँज समझ लागी, बीमे उठतो स्वाभिमान वीरै चैरै पर तिरै हो, पूरी छव फुटी, दोलडै हाड अर इक्कीस-बाईम मू कम नी ।

कंचन रा होठ पतळा, सरळता, अर सत्त्विकवृत्ति री त्रिवेणी मे डूबतो-सो सावो वीरो ।

वेस-भूसा विधवा री वीरी । ऊमर मे दोनू साईनों-सी । बा आरै आणै रो कोई सँज जम्दाज नी लगा सकी । बा बोली, “हा अबै मुणावो, मुतळव री कोई बात ?”

करमा बोली, “बात आ है कँ म्हारी मदद करो की ?”

“काई ?”

“म्हे दोनू अगलँ साल दसवी रो इम्तियान देणो चावो, पढाई तो म्हारी फळसँताई ही है ।”

“फेर ही, की तो है ही ?”

“चौथी-पाचवी ताई ।”

“घणो इत्ती तो, म्हारी तरफ मू हँ बोई कसर नी राय्, धारँ घातर म्हारी कोठडी चौईमू घण्टा खुली है पण एक बात पूछूँ हू, आ भाग धारँ अबार किया उपडी ?”

“काई बजाऊ ?” की असमजम मे पटगो बा ।

“बता है जिकी ?”

“आपने दम-बीस मिट रो समै हुवे तो होठ खोलू की, नी जद ओर कदेई बात ।”

“अपणागत रो धरती पर आपणै तो अवार ही, फेर की नै ?”

“परणी नै मनै पाच साल नैड़ा हुग्या, मा-बाप रै लाडैसर, सात भायां बिचाळै बँन हूँ एक । सासरो ही खावतो-पीवतो पण म्हारै खातर बठै दोराई अर दुविधा मू उवाया खड़ी है ।”

“क्यो ?”

एक सँज-सकौच बीरै चैरै पर भळ्ळे उभर आयो । सुधा समझगी, बोली,
“भार नै रोक्यो काम रो नी, वीनै सुण'र हुसकै है हू कोई ठीक राय दे सकू तनै, धारो मानस बी सू नीरोग हुसी, बीमार नी । काई ठा आपा एक ही रोग रो मरीज हुवा ? ऊमर एक-सी है हो, फेर सको क्यांरो ?”

“आपरो जद इत्तो ही स्नेह है तो बता देमू, ऊमर धारी-म्हारी एक जरूर है पण रोग मिलतो-जुलतो नी हुसकै ।”

“ईरो तनै पैलां ही काई ठा ?”

“म्हारै रोग रो मूळतो ओं है वैनजी कँ परमात्मा मने रूप देवण में की कंजूनी करदी ।”

“किया ?”

“म्हारो चैरो नी दीखै आपनै ?”

“दीसै क्यो नी, आंघ रो जाग्या आंघ, अर नाक रो जाग्या नाक, काई अगर दीखै ? काई तीखै नाक में मेंडो नी आवै ? अर घणी मोटो आख्या में गोड नी धारै ? फुटरापो तो की और ही हुवे है आदमी अर लुगाई में, जिकै नै वरना तप'र उपजाणो पडै है, चैरै पर नी, चेतना में । तँ जिकै नै फुटरापो समझ राटपो है वो भ्रम ही नी भटकाव है—डाळ कानी उतरतो । हीण भावना है बा, रोग मू बेसी ।”

“आप वान करो हो, घणी ऊंचो, बीनै छोडो एकर, मैं म्हारै रोग रो कारण बतापो है आपनै ।”

‘अच्छा फेर आगै ?’

“जिकै रै तारे मनै लगाई ही, ओ जोधपुर में बाबू है एक दफतर में ।

घरवासो बण एक मास्टरणी सागै जचा राख्यो है, हूं न विसी पढी-लिखी अरन विसी फूठरी अर अपटूडेट ही । मनै वो किया अगैजै ?”

“सासु-सुसरै कोई रस्तो नी निकालचो ?”

“सुसरो विचारो अगलै घर गयो, हुतो ही तो काई करतो, सूधो आदमी हो अपड अर एवड़ चरावणआळो । सासु साफ कह दियो, ‘बहू, बेटो म्हारो कान ही नी माडै तो हूं किसी भीत नै समझाऊं ? न हू सोरी अर न वीरा कान झालणजोगी, धारै सू कोई उपाव लागै तो लगा—बात लुकोई कितान दिन रैसी ?”

“छुट्टी-छपाटी नै देवता कदेई घरे ही नी आंवतो ?”

“उडतै मन दिनूगै आयो, अर सिद्ध्या पाछो, सागण दिसकानी ।”

“पास-पडोस कण ही नी समझायो ?”

“समझावण रो बात दो-च्यार विचारां, मू में घाली पण बां सागै बण, रुख ही पूरी नी मिलाई । वो कनै तो सूको-पाको एकउत्तर हो कै, ई बाबत म्हारै आगै कोई होठ ही मत खोलो, हूं ई अणघड़ भाठै नै ऊमर गळै में घालै नी फिरूं—एक दिन रो काम छोडो ही है ?”

“तै ही तो कदेई बतळायो हुसी बीनै ?”

“बतळायो बयो नी ? कैयो, ‘हूं धारै सागै की हालत ही नी रह सकू ।’ हूं बोली ‘तो हूं ?’ जवाब मिल्यो, ‘तनै आछी लागै ज्यू ।’ सासु की भलेरी है बोली, ‘एकर तू जोधपुर जा’ र, एक-दो दिन और देखलै, रमावण बी ताबै आवै तो ठीक है, नी तो ‘ना’ तो दीसै ही है—देवर नै सागै लेजा ।’ हू गई, घर में ही हो, मनै देखता ही पारो चढग्यो बीरां तो, पैलां तो भाई पर बरस्यो, ‘कण कैयो हो तनै अठै ले’ र आंवण रो ?’ बोल्तो, ‘मा भँयो, हो ।’ ‘अवार रो अवार लेजा ईनै,’ हूं विचालै ही खोल पडी, ‘मारो कूटो हू नी जाऊं ।’

‘घड़ी नै ही, हूं बाळ नी दू तनै ?’ साल-पीळै हुंतै, एक घरदी म्हारै, पण में बाफ ही नी काडी पाछी । ‘मत जा, पडी मर आपे ही जामी घूड खावती ।’ देवण नै तो एक-दो बो और घर लँवतो पण बास-मुहस्तै सू की संकग्यो लाग्यो मनै । देवर तो पैलां हीं निकळग्यो, वो ही घर मूं निरळग्यो, हूं एकली बँठी रही । घंटा-सवा घंटे बाद, बा मास्टरणी आई—वो मू मिल-

मिला' र। हू बैठी ही अणैसै मे आठ-आठ आसू नाखती उदास, कद बो आवै। वा आवती ही, डोळा चढायां बोली, 'कुण है तू, नी ओळखी में ?' मैं कैयो, 'हू गोपाळराम रै घर सू हू ?' 'तो म्हारै घरे काई मागै है। कुण है गोपाळराम हूं नी जानू।' हू बोली, 'हू नी जाऊ, बो आयां ही जानू।' वा आनै सू बारै हुगी, बोली, 'बो म्हारै घरे तनै रोंवण नै आसी ? काई मागै है अठै बो ? म्हारै घर मे घिगाणै बड़नआळी कुण है तू, चुडैल-चोरटी, निकळै तो निकळ नी तो पुलिस नै इतला करूं हू अवार।' पाडोस री दो-च्यार और आ खडी हुई—बीरै माजने री ही, घेरली मनै। वै मास्टरणी रो भीड ही बोली। मनै तो बोलण ही नी दै। हूं बांसू अजाण तो न्यारी अर असमजस मे भळै। एक डोकरी आई, मनै परिया लेजा' र ममझाई, 'बेटी, हू समझगी तनै अर धारी बात नै पण आ है चलती गाडी रो चक्को काडै जिसी, सोनारी है जात री; पाणीआळी हुती तो आपरो घर ही नी बसावती। ओ मकान है किरायै—ईरै नाव अर, मूळ वात आ है बेटी कै खास खोट तो आपणै घर मे ही है, की कैणो न मुणनो, डूबी पर नव बास है, इतै में ही समझलै तूं, धर्म री बेटी है तू म्हारै, धारी हु' र, कहूं तनै कै म्हारो कैणो मानै जद तो अठै सू विदा हुणै मे ही फायदो है। हूं, बीरी मुणती रही, देखती रही बी कानी। वा बोली, 'समझलै दो अठै, दस दिन ही नी वापरै अर आ तनै रैण नी दै दो-घडी ही तो तू कीरै लवै नागै ? एकलपी नै घडी रात निकळनी ही ओषी।'।

मैं बीरो गुण मान्यो, सीख बीरी सिर पर मेली अर सावळ सोच लियो कै दगै फजोतिर्य मुहाग सू तो रंडापो ही भलो, भट्टी मे पड़ो अँ दोनू अर ऊपर पडो भाठा आरै, टुरगी हूं तो आई जिया ही पाछी।

गुघा बीरी व्यथा-कथा मुणै ही कान दे' र। बीरो साच बीरी चेतना पर मंडै हो वा बोली, "फेर सामु काई आखा मुणाया ?"

"सामु बोली, देख, घोरसो करनी अर रोटी खावती नै तो हूं पालू नी पर है धारो, बेटी म्हारो, म्हारै हाथा-बाया है नी, समझावण में पाछ रागी मैं नी।' इया हूं किमी अणममस ही, घरू सागो देख' र, दूजँ दिन ही पोरै आ पूनो।"

"टुरनी बेळा सामु की उदास हो हुई हुसी, कैयो

“बात तो बण उदासी री ही करी पण हो बीमें लोकाचार ही जादा।”

कचन ही चितराम मडी-सी मुर्ण ही, अबार बीरा ही होठ खुलया मत ही। बोली, “काई धूड ही कवण नै बी कनै, लीपा-पोती ही करी हुसी की?”

करमा बोली, “सामु कयों, धणी सागै सस्कार तो खैर नी पण म्हारै सागै तो है ही, बुलाऊ कदेई तो आए।” घर-छूट हुयां पछै, अबै मनै सको ही क्यारो हो, मै साफ ही कह दियो, आऊं, माईता धारै लारै थोडी ही करी मनै? तेली सू खळ ऊतरी, हुई बळीतै जोग, बुलावण रो अबै फोडो ही मत देह्या, हू नी आऊं।”

सुधा बोली, “ठीक सुणाई, धणी पडपोडो कितोक है?”

“बी० ए० बतावै है।”

“पीड़ थारी मा-बाप नै ही कदेई प्रकासी तै?”

“बारै महीना-दो बरस तो सकै-सरम मे ही रही हूं, फेर हूं काई प्रकासै ही, मतै ही प्रकासीजगी पीठ—तमां-हमा मू। बिरियां दो-एक भाई ही गया, घड़ की चाकैसर बैठे तो, पण हाथ-पल्लै की नी पडयो बारै।

“अबै तो निवेडो हुयो सगळो?”

“हा हुयो, हर मिटी, लार छूटी।”

“माईता रो विचार अबै काई है, ठा लाग्यो की?”

“कोई नुवै घरवासै री ही सोचता हुसी पण मै वानै आगूच ही कह दियो कै मनै दो-ब्यार बरस अबार ई पचई मे पटवया ही मत, एकर हूं पढस्यु जो भर' र।”

“पडघा पछै?”

“काई ठा पचई मे पडू' क नी पडू, पैला की नी कह सकू।”

“बाद मे जे बो धणी कदेई, भूत्यो-भटवयो आ बतळावै तो?”

“तो रायां रा भाव राते गया, उवाणी थोडी हूं, जूत्या रायू हू थागळ पन्दरै-पन्दरै री। दया जिनावर धोडी ही हूं, जो मे आई जद ही बाघली जची जद ही काडदी कूट' र।” आख्या मे बीरै एक आश्रम उभरय्यो। सुधा सोचै ही कै ई साब बेकमूर कपिला रै, धणी एक दिन, एक बीछाप री धरी ही खीच' र, बा सायत ओजू ईरै अहं पर मडी है। भळे बोली “बन-

जो अब कोई नातो है न रिश्तो, थारो हाथ ऊपर रैसी तो नातो, एक पढाई सागै ही राखस्यु ।”

“हूँ तो म्हारी तरफ नू मदद करमू ही, अर एक मौके नी भी करू तो काई, थारो लगन रो वेग नी रुक सकै—आ म्हारी भविष्यवाणी है । पण एक बात मनै और बता कै थानै अठै आवण रो संकेत कण दियो ?”

“पुरखै बाबै, रिश्तै मे बै म्हारै एक ही पीढी आतरै है ।”

करमा रो व्यथा-कथा मुण' र, मुधा रो खाली जीसोरो ही नो हुयो, बीरो तूटती-तिडकती आस पाछी सधपो । ई नुवै मिलाप मे बीनै आपरो आवास अठै जादा मुरझित अर सबळो लाग्यो । वण सोच्यो—

“ब्यार लाठी चौधरी, अर पाच लाठी पच ।’

छव लाठी हुया पछै, पंच गिणै न घच ।’

ई रै तो भाई है सात, ईरो उठ-बैठ म्हारै सागै हुया, कीरै माथै में घाज चलै है जिको म्हारै कानी गैर आख सू देखसी ।”

अबै वण कंचन कानी देख्यो, वा मतै ही बोल पड़ो, “बस, पठण रो इच्छा ही म्हारी है, वैनजी ।”

“फेर चाईजै ही काई ? परिवार में अठै ।”

“घाली मा है ।”

“और कोई ही नी ?”

“नी ।”

“ऊमर धारी ?”

“बयांळीस नैडी हुबैली ।”

“भुजारै रो साधन बारै ?”

“बड़ी-पापड़, दाळ-दळियो करै, एक-दो गाय ही राखै ।”

“बापूजी रो हाथ कित्ताक दिन रैयो सिर पर ?”

“म्हारै ब्याव सू दो बरम पैला ताई ।”

“सासरो ?”

“डूगरगढ ।”

“बौरियै रो मुख कित्ताक दिन रैयो ?”

कचन अघर्मिट मौन हुगी, हृळकी-सी, एक अणचाई उदासी वीरे घंरे पर विखरगी वा होठ की खोलू ही, पण करमां वी सू पैलां ही बोली पडी, "वो मुख तो वैनजी, सालभर मे विलाईजग्यो !"

"बाई कीरो सारो ?" उदासी पल भर वीन ही रुधली ।

वा फेर बोली "सासु-सुसरो है ।"

"हा है ।"

"और ?"

"दो नणदा, जेठ है च्यार, परिवार पूरो है ।"

"सागै ही है सगळा ?"

"अवार री घडी तो सै सागै ही है, अबै मायं-मायं केई कूदणमत है ।"

"सासरो पइसैआळो हुवैलो ?"

"पैला तो लाई-खाईआळो ही हो, अवार दो बरसां सू सजोरो है ।"

"धारो तो लाड ही राखता हुसी ?"

"राखै है पण आपरी एक आस पर ।"

"वा क्यारी ?"

"वै सोवै है कै साल-छव महीनां मे आ साधपणों ले'र, घरवार सू पूठ फोर लेसी, हमेसा-हमेसा खातर तो थोडे दिनां खातर, लाड मे कमी आपा हो, मत राखो ।"

"ठीक, पण साधपणो बै खुद नी लै ? का धारै साधपणो सेवतां हों धारै कल्याण रो सीट मतै ही सुरक्षित हुगी आगै ?"

"इं ऊमर मे वै, साधपणों कियां लेवै ?"

"क्यो, इं ऊमर मे काई है धारै, लाचार है हाथ-पगा सू ?"

"पकती ऊमर अर बेटा-पोता ।"

"आछो'क, सोनै मे सुगंध है फेर तो ! साधपणो लेवण मे अै ही बातां चाईजै ।"

"कारवार नै कियां छोडै ?"

"कारवार तो काई चीज है, छोटणो तो सरीर नै हों पडै ।"

"पण वैनजी, साधपणै मे पकती ऊमर ही आप कियां बताई !"

“ऊमर सामे अनुभव भी तो पकै है आदमी रो? कच्चो अर अधूरो अनुभव कोई काम रो—तपमार्ग मे?”

“हा।”

“पक्को अनुभव कठै ही आग्रडै नी, घापी लालसा कठै ही दूरै नी, अर सुलसघा विचार कठै ही उलझै नी। वै खेन-कूद ही तो लिया, घा-पी अर पर-ओड'र ही, रळी काढली वां, अब चूकै कोई तो निर्भाग। बाळक अर जवान नै तो, साधपणो लेवण रो महातम ही नी, ई जुम मे तो बिल्कुल ही नी।”

कंचन सुधा रै सामी देखती को सोचण लागगी। गुधा बोली, “बैनड़ी, दियो कर'र, दिस वै दूजां नै ही दिखावै जठै बात की और है? ई विसै मे वा धारै आगै की चर्चा ही तो करी हुसी कदेई?”

“हा करी ही एक-दो विरिया।”

“काई?”

“बीनणी, म्हे दो-पाच बरस, आंख्या नी मीचा जितै तो धर कोई बात नी, धारो आव-आदर ही है, पण पछै मुश्किल हुज्यासी, जेठ-जेठाण्या आग चकरी हुई फिरी तो बोल-बतळ सीधै मूठै, दिन-भर धारै टाबरा रा मेडा, गीड अर अँठ-चूँठ पूछो, माथै रो जुवां चुगो तो घात करसी हममुखी, अर सां काम किया अर एक कोई, कारणवस तावै नी आयो तो निनाणमे पर धूड, पाव-पाव रा मूँडा धारा पमेरी मे। मांदी-ताती हुगो कदेई तो, मेवा अवार आपरा जायोडा ही कर'र नी ठारै, तो पराया पूत कीनै न्याल करै? साधपण मे सगळो ही सुख, धर्म-ध्यान खुद करो, औरा नै करावो। आपरो ही कल्याण अर दूजां रो ही, म्हे ही ऊजळा अर धारा माईत ही। पण आं सगळां सू ही, मोटी लगन म्हारै आ है कै, जीवतै जो हू पांच रिपिया गाजै-वाजै सू लगा मन रो काडलू तो लाघ रो, आज तो रामजी राजो है हाथ च्याराकानी फुरै है, काल रो कीनै ठा?”

“साधपण मे रिपिया लगाणा च्यारा, हूँ नी समझी?”

“साधपणों लेणै मू की पैला, म्हारै घातर वै एक रिपिया तो बीमे सामे ही, नी-नी करता हजालू।”

“अरे हां, अब हूँ समझी, पण बैराग रो उच्छव

मम्बन्ध ? वो न उच्छ्वसू वुझै, न कीरै ही उकसायां उपजै, न बेस लिया वधै अर न केस लोच्या । विवेक है बी तो आपरी ऊंचाई पर उटतो, पन धारै होठा पर उच्छ्वसू नाव उच्छ्वता ही, म्हारी एक सारली याद ताजी हुगी ।”

“काईं याद है इसी कह सुणावो ?”

“म्हारै अठै, पन्दरै-पन्दरै, सोळै-सोळै बरसा रै दो छोरा री, दीक्षा हुवण सू पैलां, बनारी निकळी, की रईस बनडै री बनारी नै ही मात करै इसी । बडी भीड, बडा गाजा-बाजा, घोळ-उछाळ, गीत-भजन सै । दीक्षा री त्यारी, ठिकाणें में मानखो मावैनी । भीड़ गावै जोर-सोर सू,” म्हारै मन बसियो वंराग, लेस्यू हू तो साधपणो । मजो देखो थे, वंराग लेवै, बै-तो मौन, चैरा पर बारै न आत्मविश्वास रो विस्तार अर न कठै ही फकीरी-आनन्द जिसी फूटती किरणा । उदास-उदास देखै बै, कदेई भीड़ कानी, अर कदेई आपरी दुविधा कानी, अर वंराग नी लेवणिया री भीड़ कठ फाडै ही म्हारै मन बसियो वंराग, लेस्यू हू तो साधपणों । भीड़ रै मन में वंराग कदेई हुवै ही नी अर न साधपणो लेवण रो जिद् ही । टैम पूरी हुई, अर भीड़ आपरै पापे-पुने लागी । वीनै काईं मुतळब वंराग कीनै ही उपज्यो नी उपज्यो । वा तो ढाळ गावण री आड़न है का चैल-पैल देखण री । वधतै वंराग रा पग पाछा भजां ही छीचो वा तो ।

ढाळ फुरगी, भजन दूसरो सुर हुग्यो, “अरिहत मरण मे आज्या, मुनि चरणा मे सीस झुकाज्या, तू साधुसरण मे आज्या ।” हूँ सोचै ही, साधु बण्णा बिना, अरिहत सरण मे नी आईजै ? वा सरण तो सगळों नै छुली है, मब जाग्या—सब समै । हू दीक्षा लेवणियां रै चैरा पर उठतो अन्तर्द्वन्द्व भळे पटण लागगी । म्हारै मने-ग्याने अँ सोचता हुसी, “अवै कियां तो कटती वैगो सो दिन, अर कियां आगी घर जिसी सोरी अर निरभै-निरवाळी नोद ? गोचरी नै किया फिरणो पड़ती घर-घर ? म्हारै ऊपरला बारै-काईं हुकम भुळासी म्हारै ? मुक्ति रो महीन मार्ग कुण जाणै कद जावतो हाप लागती म्हारै ?” फेर धारै आपरा माईत, भाई-बंधु अर साथी-मनडिया ही दीर्घ हा रह-रह । उदासी वधै ही वारी, अँतो अघार खाना हुसी अर फेर वां सागै मिलणो कुण जाणै कद हुसी ? मा री रोटी-रो-सो र्याद

गोचरी री रोटी मे कठै ? दादी अर मारी-सी बोल-बतळ, वा-सी आत्मी-यता अणसैधै सत्त-श्रावका मे हुवण रो सवाल ही काई ? असुविधा अर उदासी बधती लखाई मनै, वां वाल सता रै कोरै-काचै चैरा पर ।

केस लोचीज्या बांरा, सफेदझक वेस, मूढा पर भूमत्या, वात सता री जै-जै कार सू आभो रह-रह गूजै हो । मिश्री अर दमेदै रा वाटिया बटता गया अर भीड खिडती गई । माईत धन्य हुग्या, हुयांक नी, आ तो बै ही जाणै पण लोग वांनै सरावै खूब हा । एक सैज उदासी बारै चैरां पर ही काठी चिपी ही पण म्हारी चेतना पर वा विसेस हावी ही । हू सोचै ही, आ उदासी सैज है, पसु नै ही, खूटे सू कोई छेडै करै तो, बो ही एकर उदास हूवै, अं तो मिनख रा बेटा है, पसु सू कित्ता जादा सवेदनसील पण मोटी बात आ कै, बारै चैरां पर कोरीज्यै भोळापण नै न वारी उदासी ढक सकी अर न बांरो अन्तर्द्वन्द्व ।

हू मन-ही-मन सोचै ही, “प्रभु, जे आरै खुद रो वैराग-बाछाडियो, विवेकानन्द दाई, ज्ञान रो ठाण सोधण नै खूटो तोड निकळतो तो कित्तो आछो अर अनुकूल हूतो आ खातर ही अर आखै मिनख समाज खातर ही । पण चांखो, हे जिया ही ठीक, अकार सू ही अं जे ई रस्तै पडै है तो आरै तप-छितिज पर कदेई, विवेक री इसी किरणा तो फूटै जिकी पाप-परिग्रह अर विषै-विकार रै अधकार मे डूबती दुनिया नै, उजास कांभी ले जावै, धरती गवै करै आ पर, चिरजीवी हूवै अं, वरसां सू नही, विवेक सू ।” वा नै देख-देख, म्हारी उदासी गैरीजै ही, म्हारै मोह री आ, सैज कमजोरी समझो, चावै म्हारी गूगी भावुकता टा नी लाग्यो मनै । पण हरिमाया विचित्र, गळत गई म्हारी सोची, गळत गई भीड़ री सोची अर साव गळत गई साधु-संता री सोची, माईता री तेवडी ।

“आ किया वैनजी ?” वै बडै अचंभै मू बोली ।

“बाया, हरदम बाध्या तो बळध ही नी खटे । दो-सवाशे बरम मुश्किल सू निकळथा हुसी बा नै, वै एकदिन पाछा वठै ही जा पुग्या जठै, ना रो दूध चूषता-चूषता बडा हुया हा, जठै घर अर गाव रो स्नेह मित्यो हो बानै, पढतां-लिपता अर खेलता-कूदतां जीवण जठै सक्ति अर समझ मचै करणो सीज्या करतो, मन अर मामपेस्थां जठै फूलण री उनावळ किया

करता, सँज मस्ती री बेताज बादसाई वारें चैरा पर बैठ, जठे मुळकती नी-
थकती, बी आपरी घरती री जलमजात ममता बामें मर थोडी ही गई ही ?
बारी अल्हडता अर आजादी वानें, घर-घर सू गोचरी लावती बेला टोक्या
ही नी हुसी, विद्रोही वण'र बै मच खड़ी हुई हुसी वारें सामनें—वो ठाले
वैठा मे, ऊव अर अरुचि घर करती गई हुसी । घर रो स्नेह, गाव री
हर, अर ओळू वारें माणम मे उफण पडचा हुसी—ई आंधी कंद सू
निकळन खातर । आपरी आखी सक्ति, अर आखो निश्चय वटोर, ओषा
अर मूमत्या नै हाथ जांड अकूण्याताई रा. रात रो अधकार चीरता बै
टुरपडचा हुसी—एकदम एकला । कित्तो बडो साहस सजोयो हुसी वा
आपमे ?

भीतरी विद्रोह जाग्या, वधण री बोदी बाड कुण सेवै ? हू सोचू हू, घरे
पूगण सू की पैला, बारी आत्मीयता गाव सू मील-अधमील उरिया ही
बठली घरती अर बीरै बाठ-बोझा सागें जुडती-जागती हरी हुती गई हुसी ।
ओ खेत, बो नीम, अर वा जाळ, सै बारी रागात्मकता सागें जुडता एकमेक
हुग्या हुसी । हर पगडाडी बठली, वारा पग ओळखें, हर नजारो बठलो
बारी आख्या नै रुचें, बारी चेतना मे रमे । घरे पूगतां ही तो वानें, साय्या
घेरलिया हुसी अरे ओ कांडें ? थे आयग्या ? साच अर अचंभे रो मेळ गळें
मिलग्यो । खबर गांव भर मे फैलतां घडी भर ही नी लागी हुसी । मा-बाप
अर वैन-भायां एकर वानें की-काई, वडें अचंभे सू देत्या हुसी—अणचीत्या
अर आसा रें विपरीत पण फेर वारी रुकी रागात्मक ग्रंथ्यां सू सँज स्नेह री
सत-सत धारावां, एकेसागें फूट निकळी हुसी । मारी सीपट्या में तरळना
रो कित्तो बडो भंडार हुवै है, काई चांको है बीरो अर काई वना रें प्यार
रो ? याद आवता ही, सौ कोस परियां वैठी ही उफण पडै बै, सँदे मित्या
तो, न वारा कठ काम करै अर न जीभ । बीपार ही सगळो आगू बण
बैठे । दादो-दादी जे हा वारें, तो, डोकरा रें कांपर्त हायां में आसरें री
गेजी आ थमी हुसी, होठ अर हियो मुळक उठचा हुसी । ओ अणचीत्यो
बरदान पार ।

मनें ठा है कै आज बै, आपरो कारवार करता, 'गृहस्थ-धर्म मजै मू
पाळें है । वारें जीवन मे नुवो अर स्फूर्तिदायक अध्याव मुरु हुग्यो । देस री

छवि मंवारण में वारै श्रम री तूळिका, वारी लगन री भूमिका जहर की न की सहयोग देवै है । साहस ही खाली नी कियो बा, एक बडै भारी पाप मू और बचग्या वै ।”

“पाप सूं कियां वैनेजी ?”

“नी आवता वै, तो कुण जाणै वारी अणभोगी कमजोरी, वारी कवारी लालसावा अर अंकुरी अनुभव वारा, बा पर थोप्यै अधकार सूं निकळ-निकळ वा मे कित्ती ही कुटेवां नै जलम देवता अर फेर वै बी छीलरै जोगा ही रह, आपमे तरै-तरै रो कोठ कुचरता—एकदिन पूरा हुता—पश्चाताप री मांत ।” वा मौन हुगी एकर, अर वै बी सामी देखै ही तिसाई-सो ।

बा फेर बोली, “लेस्यू हू साधपणो, भीड़ रो चढायो रग थोड़ो ही चढै है की पर ? जे चढै वो, तो कित्तीक ताल रो ? तावड़ो अकरो लाग्यो अर रंग बदरंग हुयो । वैराग रो रग री रगारा नाद मे त्यार नी हुवै । वैराग साग थोड़ो ही है बायां ? चोर अर साह, नेक अर वद, जार अर जुवारी, जलमभूमि आं सगळा री गृहस्थ ही है का और की ?”

“गृहस्थ ही ।”

“वो विगड़घां साधुवा रा टोळा भला ही कित्ता ही कूको, कित्ता ही लम्बा हुवो, धरती नै भार अर खुद नै अभिसाप है वै । घर है आदमी री सँज श्रिया-स्थळी, घट'र घाणों है बीरो तप, अर धरती री सेवा है बीरो मोश समसो चावै केवळ-पद ।”

बीरी बाणी रा बीज, वारी धरती पर जमै हा, वै जुड़ै ही बी सागै, एवसी मानसिकता, अर सभाव री एकसी प्रकृति मे । बा कंचन कानी निजर करती बोली, “वारी दीठ साधपणै कानी मोडन नै, सासरैआळ्ठा और ही को कियो हुसो ?”

“हा कियो, महीना दो-एक, सत्या रै ठिकणै भेजी मनै, धर्म-ध्यान री पाटी सोपण नै ।”

“काई पाटी सिघाई बां ?”

“बडी-सती कंबती, “कंचन बाई, संसार मिथ्या अर दुख रो घर है । काया रै बल्याण खातर आपानै ई साध्वी-जीवण छोड़, कोई सँज काय नी । जलम-जलमान्तर सूं भीगी चादर रा अण घाँवण”

खातर, ओ औसर वडै पुन सू मित्यो है आपानै । 'वाई रा बंधण कटघा, भली करी रघुनाथ', था पर तो पूर्वली पुन्याई री मर और ही घणो है, अब जे चूकग्या तो आवागमन रँ चक्कर रो फेर कोई अदाज नी । मन में ये कोई तरँ रो संको किया ही मत, खूब तो करस्या विचरण, खूब विचार अर खूब ही धर्म-ध्यान । हजारू लोग करसी मथे बंदण, जास्या जठे ही जै-जै-कार करती भीड़ त्यार लाघसी । न ठरण री चिता, न परण रो, अर न अहार-पाणी री, आ तो थारँ सू ही छानी नी । उठया पातरा, तियो बस्तो, चाल म्हारा भाई । कठे ही मन ही तो देखो, ब्याव, संसारी राग-रग अर महल-माळिया नै, बारँ बरसा री हो ठोकर मार, ओ बानो धारलियो, सैज काम है काई ओ ? थारी-म्हारी अवस्या में तो दिन-रात रो प्रकं है, ये इत्ता क्षिणको ही क्यों ? बारँ मागली ही, सँ जोर देवती, "कंचन वाई, अब तो पग पाछो सिरकाया ही मत, होठा कनँ आयो ग्राम है ।"

"तनै ई कैणमत मे कठे ही की सक री यू ही आवती का धोळो-धोळो सगळी दूध ही लागतो ?"

"मनँ भायँ मिलावण खातर, अँ इत्ता वेस्वार तयावँ जठे, दाळ मे की काळो जरूर है, म्हारँ अन्तःकरण पर की सक तिरणो मुरु हुंतो, पण हुँ रँवती चुप ही ।"

"तू ही की कँवती तो हुसी वानँ ।"

"सामु-मुसरु तो राजी है ही मा, अर मनै ही आप राजी ही समसो, पण मा ही तो है, बात नै की वारँ काना मे ही तो घालणी पडती । वँ कँवती, 'हा जरूर घालो बात, एकर नी सौ बार, मा-मा ई देव-दुर्लभ जीवन मे पग देंवत जीव नै पाल'र पाप रो भारो थोडो ही बांधती ? बारी तो हा ही समसो ये । 'तो फेर हुणो ही है मनै,' हू कह तो देंवती मंके-मंके मे पण सकळप-विकळप म्हानो अन्तम नी छोडता ।"

"ओ नी छोडणो, अम्वाभाविक नी, नीरोग मन आपरी सैज घारा मू निकळ, अणदेखी-अणपरखी घार नै कियां अगँजै ? सैज घमँ मू विपरीत है नी वा ?"

"है तो विपरीत ।"

"मन्त हुवँ चारँ नेता, आंधा हुवँ चारँ नवटा, पंथ बघायन री बीमारो

सगळीं मे हे। सवाल औरा सू पछें, पैलां खुद सू करणा चाईजें कें हू घर छोड'र डें टोळें मे रळू तो रळू वयो ? अं टोळा कांई सगळा ही केवळ-पद नें पूर्ण, अर गृहस्थ सगळा ही भव-व्रधण मे झूलें ? राजनीति रें दळा दांड आरा दळ ही तो बणता-विगडता चालें। आपरी संकडीजती भीता मे कांई अं, धारो-म्हारी सैज कमजोरी सू ऊंचा उठयोडा अर वीतराग हुवें ? आपस मे वेंठ'र, कोरी ही निदा-स्तुति जीभ पर नी राखें ? मान-अपमान री ऊंचाई लाघम्मा अं ? जिकें घरां नू निकळ-निकळ आया है, वारें सागें आरो कोई रागात्मक लगाव नो हुवें ? श्रावक मात्र सागें एक-सो ही लगाव, राश्र्य का अगली पात रा केई मूळ रा बाळ ही हुवें वा मे ? धारो अन्त करण देखें जिसी मतें ही भाषदेसी। विवेक री ताकडी पर तोल'र निरणें तू खुद ही करलें। इत्ती तो तू जाणें ही है कें आज री जागती मानवी चेतना, नी चावें कें स्वस्थ-सजोरा, टोळा रा टोळा गोचरी पर जियें, करें की नी। न बें उपयोगी, न आवश्यक। मोठ-वाजरी, अर दूध-दही की हुवें चावें, वें न तो उपदेसी धूक उछाळचा उपजें, न उपवासां सू अर न एकान्त मे आट्या मीच्या नू; पसीनों चाईजें वानें, धूक नी। आं टोळा सू राष्ट्र नी चलें, उल्टो विषटन हुवें बीरो। राष्ट्र री दुरवस्था नें देख, कितें सन्ता देस नें दिस दे राखी है, दीमता हुमी तनै ही तो केई ?”

“मनै तो आहार-पाणीआळा ही लाग्या घणखरा।”

“भोळी, राष्ट्र नें पैलां चाईजें सम्य अर श्रम, सास्त्र अर केदळ-पद पडें। आदमी हुवें चावें राष्ट्र, भयमुक्त हुए बिना, न उत्पादन हुसकें न उपामना। राष्ट्र रें एकल छीरसागर नें छोड, सम्प्रदाया रा छीमरा सेवें, बाकनै परम्पराई तोता रटन्त रें मिवा, एमरत-वरमी अर भीता तोड नून-नून कडें ? सवमू बडी जेन अर सब सू बडी धर्मात्मा हू धारी मा नें समझू हूं, एकलभी लुगाई हु'र खट'र खावें वा अर कांई ठा साधपर्ण री ऊचाई पर बँठा कित्ता अणकमाउवा नें पोथें वा ? गोचरी केई दफें कित्ती मूधी पडें अर कित्ती चुभती, एक घटना म्हारी याद पर अवार ही नाचें।”

“तो कह नाखो, तारें वयों राखो ?”

“म्हारें नानाजें, गाचरी नें एकर दो मत्या आई। चूहें आगें मानी बँटी हो। वा बोली, “रोटी-रावड़ी, कडूडी-खीचड़ी अर दूध दही सें ही है,

हुकम करो काँई-काँई चाईजै, खीचडी देऊं ?” सत्या मे सू एक बोली, “चाईजती तो नी ?” नानी की चमकी, बोली, “चाईजती अणचाईजती ये मत पूछो, थानै चाईजै वा बोलो ?” वण सोच्यो, खीचडी सायत ही लै, बोली तो, “फलका देऊ ?”

सती फेर बिया ही बोली, “सूझता तो नी !” नानी सभाव री की अकरी ही अर मू-फट न्यारी, बोली, “म्हारै तो सै ही चाईजता अर सै ही सूझता है, धोवण ही चाईजतो है, टोधाड़िया पीसी वीन, अर डगळियो ही सूझतो हें, मारै मे काम आसी बै, थानै नी चाईजै अर नी सूझै तो मत सो पण इसी नान्ही-योयी ठोको तो मोटचार-जवान हो, हाथे सेक'र खावोनी ?” गई विचारी बै आई ज्यू ही । नानै नै ठा पढी, वा नानी नै समझाई कै तू थारो सभाव नी बदळै ? पण बदळनो हसी खेल थोडो ही है, मरो जितै वा तो मू-फट ही रही ।”

करमा बोली, “वैनजी, नानी थारी ठीक कही, मनै तो दाय आई ।”

कंचन ही कैयो, “आपरी नानी इमी खोटी तो नी कही ?”

“नी कही, पण घरे आयै खातर तो जीभ पर लगाम घासतीर मू राखणी चाईजै, बोलणो इसो मीठो अर अभिमानहीणो चाईजै कै एकर तो पत्थर ही पाणी वण उठै, रू-रू मीठो करदं अगलं रो । बोलणो तप है नी, हसी-खेल थोडो ही है ? एक छिण रक'र वा भळै बोली, “मा मू ही की यात हुई हुसी, ईं वितै मे ?”

“हा ।”

“काँई कैयो वां ?”

“थारी तू सोच याई, टावर थोडो ही है अबं तू, हू तो म्हारै मू तावँ आसी इत्तै रोटी हाय हिला'र ही खासू ।”

“मुतळव, माग'र वाणै मे वारी आस्था नी, समझदार नै ईं मू बेसी और साफ काई हुवै है ? तै काँई कैयो फेर ?”

“की नी ?”

“थारी जाग्या हूं हुंती तो हू काँई कैवती ?”

“काँई कैवता बतावो ?”

“मा, तू तो जीसी जितै रोटी खासी हाय-पग हिला'र, अर हूं मोटधार-

जवान पेट पाळू सूनू गळी-गळी री गोचरी पर, इत्ती सस्ती इत्ती भूली-भटकी हू ? थारै उदर मे लोट, थारै जीवण सूनू पांती नी वटाई मे ? थारी ही दूध ग्रथ्या सूनू जीवण रस चूस-चूम ओ जीवण खडो नी कियो मे ? थारो खून, थारा प्राण, म्हारी हर घडकण मे नी मचरै—जीऊ जितै ? थारो थम अर थारी समझ म्हारी आखी चेतना मे एकाकार नी ? है, अर है तो थारी समझ रो तिरस्कार कर कृतघणता रो कोड हू कयो पाळू ? बी सूनू मुक्त हुवण रो मौको भळे कद मिलसी मने ? 'मा पण' रो विदु है तू, घरती पर सगळा सूनू मोटो अर श्रेष्ठ विकास थारो ही हुयो है—देवत्व अर अमरत्व तै रूपायित किया है, थारै सूनू मिली समझ नै, म्हारै बूतै सारू जादा सूनू जादा घरती माता री सेवा मे खर्च करगू, थारी समझ रो असली विस्तार ओ ही है, अर म्हारी मुक्ति रो साधन ही है ओ ।"

बै दोनू कोल्पोडी-सी सुणै ही, कचन बोली, "बैनजी, मने ही परमात्मा थारै-सी समझ देवै—निर्मळ अर एकरस ।"

"अरे जिकं री मा, सेवा अर थम री सजीव मूर्ति बीरी बेटी री समझ विसी हुवण मे काई गोळ ? देर खाली, वा आख्या नी खोलै जितो ही है ।" एक पल एक, बात री दिस बदळती वा भळे बोली, "सासरै रो गणो-गाठो ही की है सो कने ?"

"हा है की ।"

"घर-वाडा अर जमी-जायदाद ही है सासरै ?"

"है कयोनी ।"

"बघतो कारवार है जठै, दफाना ही है ?"

"है ।"

"तो पाचे दरसे तू थारी पाती-थोळी ही माग सकं है वा कने नू ?"

"आ तो हू सपने मे ही नी गोचू बैनजी ।"

"मत सोच, अर सोचणों ही नी चाईजे पण कानून थारै पण मे है, अर थारै सामरैआळा ईने सोचै भी है ।"

"बारी बै जाणै ।"

"जानै फाई, बात है ही इसी, साप खायोडो, डोरिये मूं हों टरे, समाज मे आए दिन घटै है इसी घटनावा । बै सोचै, आपणै ही जे धीननी बढळ

बैठे कदेई तो, काई पूछ बाढा आपा बीरो? ईं खातर मौसम सू पैलां हीं पाणी आडी पाळ बाध लेणी चाईजै । आ, जे ठंडै-ठंडै ही साधपण रो मार्ग पकडलै तो धर्म री मेवा, समाज मे नांव, साध-संत राजी अर सागै आपणी मनचीती ।”

“सोच सकै है वै ।”

“सोच सकै नी, सोचै है वै, पण तू थारी तरफ सू तसियो ही सगळो भेटै नी ?”

“किया ?”

“सीधी अर साफ राखदै बी आगै कं मनै न तो थारो गणो चाईजै, न कोई रकम री पाती, अर न साधपणो ही, थारै अठै आसू-जामू तो थारी सेवा चाईजै मनै तो ।”

“कह देसू टैम आया ।”

वात अबै तोरै आयोडी ही समझो, पण वां दोना रै एक जिज्ञासा होठा ताई आ-आ पाछी जावै ही । वै रह-रह बा कांनो देखै ही । वै पूछ ही कै थे वैनजी, इसा स्यांणा समझणां अर दीपता हुंर, ईं भगीबाई मे कीकर आ फस्या ? मुधा भापगी थारी जिज्ञासा नै, बोली, “थे तो निरवाळी हुई अबै, मुणा-मुणा थारी रामकथा, अबै रही म्हारी थारी ?”

“हा, की ठा लागै तो ठीक ही है ।”

बण ही आपरी व्यथा-कथा सार-रूप मे राखनी बा आगै । वै तूण ही नी हुई, थारै अन्तस री भिन्नता भागगी अर आपसी एकता थारी घिग हुगी । बा बोली, “देखो, परिस्थिति री धरती आपणो न्यारी-न्यारी हुमकै है पण हा आपा ससारी लू मे मूवती एक ही डाळी री अलग-अलग पत्ती । ऊमर आपणी एकसी, पीड री मोटाई एकसी, आगै बघण री ललक एकसी तो हू सोच हू, लगन ही आपणी एकसी ही रैणी चाईजै ।”

“लगन ही खाली नी, हेत-प्यार मे एवसा ।”

“एकसा, तो ईं एकता मे सगळीं मू पैलां, मनै थारी सापण समतो ।”

“थे वैनजी हो नी, पूजनीक ?”

“बोली मे वैनजी, मन मे बराबर री अर आत्मा मे थारै-भ्ठारै मे की भेद नी । उपासना आपणी आंगण मू सेर आघी धरती पण राष्ट्र सगळीं मू

पैली, चाल आपणी राष्ट्र री मूळ धारा सागै, दिस-दीठ बी सागै । वो जिये तो कुण मरै ? वो मरै तो कुण जियै ?”

“भुतल्लव ई रो वैनजी ?”

“मगळो ससार ही बीरो कुट्टुम्ब है, ‘एकं साधे सब सधै’, बीरी साधना मे सँ मुषी—सँ सोरा, बीरो उद्देश्य ही ओ है ।”

“मन, बचन, कर्म सू म्हे आपरै सागै हौ ।”

“पढण नै आवो आज सू ही ।”

“ई मे गोळ ही काई है ?” टुरगी वँ मन मे उत्साह अर मूढां पर मुस्करान लिया ।

आज मुधा री चाल मे ही फकं हो अर चँरै में ही । दिना रो डेरो डियोडो दुविधा बीरी-बिस्तर बाध'र टुरै ही, अभयता बी जाग्या जमै ही । बीरो माग्यो बीरै सामने आ ऊभो—इत्तो वँगो ही । बीरी चेतना मे व्याप्त, रूप-विग्रह एकर चमक उठघो मतै ही, या गदगद हुमी । सोबण लागी जद, नाने री याद करायोडी. मानस री दो सँणां मानस में नाच उठी मतै ही—

“देस-काल दिमि-विदिस हु मांही,

कहहु सो कहा जहा प्रभु नाही ।”

आज बीनें जित्ती सोरी नीद आई, अउं आया पछे विनी कदेई नी ॥

6

दम-बारै सुगाया आवै रान नै पढण नै । पढ़ी दो घडी वँ बोल-बतल करै. पण, धारो-म्हारी अर घर भी हंगी-मूनी नी, जीवण री कौ लीक में बध'र —ममाज सागै जुडन गे । मुधा वा सागै बराबर जुत, पण धार बां मू जादा घीचै । वा धारै है कः “धारी मंझ्या ही बध'र अर साभरता ही । सगन धारी तारै अर चाय बामे जागै ।” काई ताळ वा, किम्मै-बहाण्यां री दुनिया मे घुमारै बानै, अर घोडो पढण रो बळाप ही करावै । माइंन्यां सोगी-सोगी चालै, पण बूड-अधबूड, पण आगीनै रापती चमकै. बाघट्टन

रो डर लागे बाने । सुधा सोचै, हिचकिचाट री वारी आ भूतणी, अठै आयां तो निकळसी ही, आज नी तो काल, इतै ई मिस, वै जे, की बरतो पकडनो ही सीखै तो सुभ है—मूढो दिस सामो तो ह्यो ।

आं मे घूडी अर घाई पचास सू दो-दो बरस ऊंची है । दोनू ही मेप-वाळी है । घूडी रै ई साल जीमणआळो धान ह्योडो है । की खट्टी देव अर की धीणों । घणी ही बेटा रै बराबर खटै ओजू । बहुवां अर आप कातै, बेटा कार-मजूरी पर जावै, पोता-पोती ही की हाथ हिलावै, सं सागै हो है, गवाडी रो चैरो चिलकै, पग बीरा दीड़ता घालै ।

पोता-पोती तो घाई रै ही है । मोटघार जवान तीन बेटा पण गवाडी लाई-खाई करणआली ही है । बेटा से न्यारा है पण है एक पळसै मे हो, आप-आपरी लावै-खावै, सुख इतो ही है कै सीग ओजू आपस मे कीरा ही नी उळसै । घाई बेवा है, घणी नै छूटपा डीड ही बरस ह्यो है ।

घाई रै तो लगन इसी लागी है वा आपरै बेटां री बहुवां नै ही सागै लावै । वा सोचै, 'रग नी आवै तो कोई बात नी, की बुद्धि बापरै तो ही लूठो लाभ ।' पैले दिन सिरदारी जद ले'र भाई आं दोनां नै, तो सुधा बोली, "है ए, ये तो करडी गरज करावो, इनै पग राघती ही दोरी हवो, कोई पकडै है काई धान अठै ?"

"म्हे तो केई दिन पैला ही आऊ ही बाईसा", दोनू ही बोली ।

"आऊ ही तो कुण आडो फिरग्यो थारै ?"

"सिरदारी भुवाजी म्हानै पढण रो कहदियो बाईसा, तो म्हारो मन बी पाछो पडग्यो ।"

"पढण रो कहदियो तो काई, वण भोभर मे हाथ देवण रो कहदियो धानै ?"

"पण बाईसा, ये स्याणा हो, ओ वाम अवार म्हारै बस रो है काई ? ई ऊमर में आकां कानी न म्हारा हाथ ही फुरै अर न माया ही ।"

"झूठ बोलो ही ये, पावै-कमावै वारा हाथ ही फुरै अर माया ही, नान्हा-नान्हां आधार धानै डूगर-सा डीघा किया सागै ?"

"डीघा तो नी पण मन मे दोरा सागै ।"

"हां आ म्हारै ही जची, पण आपानै मन रै मर्त नी घालणो, मन

चालसी आपणै मर्तै ।”

“पण बाईसा, पढणो तो टावरा रो काम है ?”

“टावरा नै सिखाणो तो और ही दोरो, पण धारै जे इसी ही जच्योड़ी है तो पढण रै मारो गोळी, घडी दो घडी ज्ञान-गुरवत रै मिस तो आस्यो का नी ?”

“हा बी खातर तो जरूर आम्हा ।”

ई ठंग री वातां करणआळी वै ही लुगाया अवार वणंमळा रा मै आग्रर माडै । किरडै नै देख'र, किरडो रग पळटै, सिरदारी नै देख'र बांरो मन ही पावसग्यो । ‘सडक पर मरपट मत चल ।’ ‘आ कमल, वरगद पर चड’, जिसे विना लगमात री लेणा धीरै-धीरै माडती वै कित्तो राजी हुवै, वै ही जाण । सोचै है, “म्हे काई ठा कित्ती ही पढगी अर कठै जावती पूगम्या ?” अरण-आपमे वै एक नुई जाग अनुभव करै ही ।

धाई एक दिन मुधा नै पूछघो, “है ओ बाईसा, ह ही कदेई रामदे-घणी रो पोषियो बाच सेस्यु ?”

“जरूर, गोळ ही नी ई में, जादा मू जादा दो महोनां और समझ तूं ।”

खुसी री एक सैर बीरै चैरै पर दौडगी । बीरी आसा री छित्तिज ऊंचो आवतो देख, मुधा रो उत्साह ही कम ऊंचो नी आयो । बी दिन पछै, वा औरा बिचै, मुधा सागं की जादा हिल-मिसगी । प्रसंगवम, मुधा एक दिन पूछलियो बीरै, “घणी छूटघां किताक दिन हुग्या धाई-माई ?”

वा नाक मे कीं सळपालती-सी बोली, “बरस डोडै'क हुग्यो हुसी, पण बी कुमाणम रो बयों नांव सो भ्हारै आगं ?”

वा बी कानी अचभै मू देखती बोली, “बीरै तारै ही तो बाई ही तूं ?”

“बाई कुण ही, करदी मनै नो ।”

“करदी तो ही हो तो घणी ही ?”

“हुग्यो बरम पत्रळा हा जद, पण अवे गवै-गवापै नै पाटो बयां खातर पाडो ?”

“पण बीरै नांव मू तू इत्ती दोरी बिया, नी नमशी हूं ?”

“दोरी दया कं बीरै ओसर मू ही जादा, बीरी घिसाई में टूटणों पढ़यो भ्त्तनै, गवाही भ्त्तरो ओजू मूई नी हुई ।”

“घाई-माई, बताया दुख तर्न हुसी, अर नी बताया मनै, देखलै तू।”

भैर करदी बण, बोली, “पछलै दो-तीन बरसा सू दारू पीवतो, आ किरपा एक ठाकर करी बी पर। पैला तो बुला-बुला सियाई बीनै, हिलग्यो जद आपरै घरे राखलियो बीनै। ओल्है-छानै, ठाकर रै भट्टी निकळती। मै घणो ही पाल्यो, पाल्यो जितो दफं ही बण मनै कूटी, मै तो फेर तिष ही छोडदी, कुर्व मे पडो, हाड कोसू भगाईजै ? छोरा ही एकर कूटण नै सम्भ्या बीनै, पण ठाकरडै सू डरग्या, नागो बळै हो, घाणै सागै राम-रमी पूरो ही, दारू पूगतो वठै।”

“काई काम करतो ठाकर रै बो ?”

“बीरै धन नै नीरवाळी, बाखळ मे दंताळी सू ले'र मांय-बारै दारू रो बीतलां पुगावण ताई।”

“काई देवतो ठाकर बीनै ?”

“रोळ कमावै रावळै क. पाडोसी रै खेत, दे'र बीनै कुण टारं हो ? दो टैम रोटड़ी, सरीर ढकण नै बोदो-पुराणो कोई कपड़ियो अर पग ऊधा टिकै जितो गुटको, बस।”

“फेर ?”

“ठाकर छूटग्यो फेर बीनै कुण राखै हो ? अबं घरे ही घोटो ओर घरे ही पियो। पीवण नै मंडी गयो एक दिन, आवतो रस्तै मे ही पूरो हुग्यो, दिनूर्ग म्हांनै ठा लागी, सास कर्न एक खाली बीतल पडी ही। सास लावण मे सगळो तो दिन लागग्यो अर हजार नईं रिपियां रो कूटळो हुग्यो। दो टैम आटै रो ही जुगाड नी हो बाईसा, पण काई करता बुमाणग मू पानो पडग्यो जद ?”

मुघा आपरै बबहार, अर हेत-प्यार मू आपरी चेत्यां रै, बूडी-ब्रह्मन किसी ही हुयो, अन्तग में उतर, आत्मोपता रो एक सैज जाग्या रघ सँवती, ओ ही कारण है लुगायां सगळो खावै बीनै, अर आवै बो मनै।

लुगायां रो लैण आए दिन, तोटो-मासो बी न बी बधै हो। सनिजार नै पडाई नी हुवै। सभा हुवै अर सभा मे ज्ञान-मुग्धत ही नी, मन बहनाय रो सरल-मोधी मल्लां भी। बग पडतां हरेक नै बी न बी बोलणो पडै, मापी

न भिरदारो नै अर न घूडी-घाई नै ।

मुघा नै नै बोली, "आपानै तो आपणी बोली में ही बोलणो है, आंटा-टूटा गोवा रा रोटा, सै ठीक है फेर क्यों संको अर क्यों हिचकिचावो ? की आगै बध्या पछै, हिन्दी में बोलस्या, की ताण आसी तो आगै सोचस्या ।"

दो सनिवार टिपग्या, बां मे केई बोली, केई नी, पण, अबै, अ. सीध सगळां नै बधगी के बोलणो हरेक नै है अर वो इसो दोरो नी, जिमो आपां सोचां हा ।

कंचन-करमा ही रूकगी एकदिन—सभा री कारवाई देखण नै । पैलां बिणती हुई टाकुरजी री । घूडी, घाई इत्तादिन टाळती रही, आज मुघा बोली, "अबै, होठां आडो ताळो राध्यां पार नी पडै । बाई है आ तो, आप-आपरी काठणी सगळा नै हीं पडसी ।"

"म्हानै तो बाईसा, भळे ही माफी बगसो केई दिन ।"

"क्यों ?"

"म्हानै तो गुणन री आदत ही है का सडन री समझो ।"

"सडन री है तो लडो दोनू, हाया-पाई तो नी जीभ नू, कुण जीतै बां मे देया, पण मूडै री लडाई में, गाळ जीभ पर नी आणो चाईजै ।"

"लडाई मे तो गाळ ही निवळै ।"

"हां निकाळो, पण कोझी नी ?"

"गाळ ही फुठरी हुवै है कदेई ?"

"पारे बैरी रो घर तापडै करूं, चोर मरै धारा, मायो काना बिचाळै करूं, नी मानै मारी गीगी, अर बाळदू कांटा धारा, अं गाळ कोझी है काई ?"

मुण'र सगळी राजी हुई । घूडी, घाई बोली, "पण इयां, कैया थोडो ही सझीजै ?"

"नी सझीजै तो थोसो बी ? चिडो-बागलै री ही घाल, खेत रो रामभणतों अर का चात म्हारा चयों चमरकू नू । बोलणो तो पड़गी बी न की ?"

घूडी बोली, "हुकम करो तो कोई आडी तो हूं आट दू ?"

"आधं नै दो आध्या, फेर चाईजै ही चाई, आडो ।"

"एक पहानी हू बहू मुणल म्हाग पून ।

डिन पाट्या ऊंखो उटै, घाल वळै मे मूल ॥"

मुधा सगळी नै बोली, सोचो थे सगळी, पण बोलो हू पूछू वा ही।”
सिरदारी नै पूछयो, “बोलो बडा-बैनजी ?”

“पांख्या बिना किया उडीजै वाई, म्हारी तो समझ मे नी बंठी”,
सिरदारी बोली।

“कोई बात नी, नी उडीजै तो।”

केया नै और पूछयो, पण नी बोली कोई ही, पूछता-पूछता, दस-बारें
बरसा री एक छोरी बोली, “बैनजी, किन्नो हुयो ओ तो।”

सगळी ही बोली, “हां बिल्कुल ठीक सोची अण।”

सिरदारी बोली, “देखो, ई काल री छोरी रो माघो किसोक घूम्यो
है ? साठी बुध नाठी, म्हारै तो माथै रै कांई चूची लागी है ठोड सू ही नी
मिरकै ?”

करमा बोली, “बडिया, माघो ठोड सू मिरक्यां पछे जो सी किता
घडी ?”

सगळी हस पडी।

अई धाई री बारी आई, बा ही बोगी—

“भागै चालै बीनणी, सारै चालै बीन,
बतावो कांई हुयो, रिपिया देऊं तीन।”

एक जणी बिना पूछयां ही बोली, “है ओ आ ऊंधी रीत किया, आपणै
तो भागै बीन चाल्या करै है नी ?” सगळी ही हंसी। सिरदारी नै पूछयो,
बा बोली, “इत्तो तो हू ही समझू हू, मूर्ई-डोरो हुयो ओ तो।”

आडयां छोरया ही आडती। बडो आनन्द आंवतो वानै। घूडी रै बेटे
री बहू कबीर रो भजन सुणायो, “घूषट का पट योल रे तोहे पिया मिलेगे।”

—घन जोवन को गरव न कीजे, कटुक बचन मत बोल—मतबोल—”

“सुगाई टावरां रो झूमको, पूगी रै साप-सो सैरीजयो। मुधा तोचै ही,
“कांई लोच ? अर काई मिठाम दियो है रामजी इने ? इसी जळम-जात कठ
नै जे कोई की मुंबो मोड़ देवै तो, आ लता मंगेसबर नै ही डकड़े।” बा
सगळ्यां नै बोली, ‘कटुक बचन मत बोल’, ओ तप जिकी गयादी, अर जिरै
गाव मे पूग्यो वारी एवता रो दूध जुगा ही नी पाटै।”

ई डग मूं बामे मनोरंजन, उन्मुक्तता अर आत्म-विश्वास में एक सागै

ही दौड़ हा, एक ही लक्ष कामी । साकड़ें खूणा में टैम तोड़ती लुगाया आपरी बाणी नै खूनें समूह में काढती किस्ती राजी हुबं ही, वैं ही जाणै । मुघा बांनै हिलती करै ही अर बारै हेज नै पक्को ।

केई जणी बोली, 'बाईसा, म्हानै ही म्हानै कैयो बोलण खातर, ठीक है वो तो, पण की तो होठ आप ही खोलो आज ?'

"क्यों नी ? हूँ किर्म न्यारें ठसकें री हूँ, धारी टोळी री हीतो हू । छोटी-सी एक कहाणी सुणाऊ थानै, घटघोडी अर एकदम साची, कहाणी रो नाव है ।—'अकलआळी बीनणी ।'

"हा-हा मुणावो" सगळी ही बोली । कहाणी रो कोड छोरघा नै जादा हो ।"

"दिन हा मीठी ठारी रा । माल हो काळ-कुममें रो । गांव में चोरी हुणी सुरु हुमी । एक घरमें सामु-बहू दो ही जणी ही । आदमी दो हा अर दोनू ही भाग रा परदेस गयोडा । डोकरी दिन-दिन चिंता में सूकै । बहू नै बोली, "रात नै कोई दूबें में बड़ बँठो कदेई तो किसोक हुमी ? सोच्यां ही, गो-न्गारि मनै तो, पाड़ोसी तो इमा है, कूक्यां ही नी बोलै ।" बीनणी बोली, "तो मा-सा चिंता कियां काई हुसी, आमी वो आपणी चिंता सू षोड़ो ही स्वमी ?"

"रुकें तो नी हू ही जाणू हू, पण डर तो लागैनी ? अर डर माया रो दसो नी, जिनो काया रो है ।"

"ठीक है पण आपणो जाबतो दूजा तो करण सू रैया, करणो तो आपा में हो पडनी ।"

"आपां बाई नव चूल्हा री राग्य करग्यां बळती वाटी ही नी उचळीजें म्हारें नू तो, कुबेळा रो खडको मुणतां ही ताव खडें है मनै तो । पट्टें री रमार इमो नू ही नी लागी मनै, धिकें जितें गावळ है, बा बेळा कीरें ही आवें ही नी, आपां पट्टें जाबतो है न धाबतो फेर ।"

बीनणी उदास हुंती बोली, "तो ?"

"तो आ ही है बीनणी, कैं, मिश्या पडनां-पड़ता, रोटी-टुकड़ो घा, ताळा-बूटा डर, औरियें में जा बहग्यां अर खोनग्यां बीनें दिन लग्या हो ।"

"ठीक है मा-सा आप हुवम करग्यो जिया ही हुमी ।"

धूँडी बिचाळ ही बोली, "बीनणी बापड़ी और कांडं कैयती, कोडं सारु हो बीरै ?"

"अमलं दिन बीनणी पीडारो खोल्यो थेपडघा रो । या एक-एक थेपडो दोना कानी देख-देख, आप कानी सिरकावै ही । पीडारो पुराणो हो । वण थेपडघा बीसेव जिय्या ही सिरकाई, दो लिंगतर पूण-पूण विलान रा जुद्ध-चुळता दीस्या बीनै—कळायण-सा काळा । सामु ही आ पूणो । लिंगतरां नै देखतां ही सास ऊंचो चडै हो बीरो । बोली, "बीनणी मार आनै बैगासा, धूजणो मुरु हुवै है मनै, चामडो रं जे आ चीनों ही पूछ लगा दियो तो, हमास्त मू तो फेर पाणो ही नी मागीजै लो, याको खोल'र गमाजळ ही भला ही दिए, हे भभूतासिध तू लाज राखं ।"

बीनणी बोली, "राख'र आनै किसा बेचना है मनै कडे ही ? मारस्यु नी कांडं करस्यु आरो आप घर मे पघारो भला ही ।" गई सामु तो ।

"बा जियां ही मारण मतै हुई यानै, एक इसो ही विचार कोई बीरै मन मे आयो, मारती-मारती बा, एकदम मू रुकगी, छोड दियो मारण रो विचार वण ।"

दो-एक छोरघां बोली, "क्यों बैनजी, आ कांडं जची बीरै ?"

"बैनजी नै कांडं ठा अगली जाणै ।"

लुगाया केई बोली, "हा आगै फरमावो बाईसा, दूसरै रं जी रो बीनै ठा पडै ?"

"बिछुवां नै वण दोरा-भोरा पकड चीपिये मू एक पुराणै पारिये मे पाल दिया अर पारियो लेजा'र राघदियो रसोई रं एक मूर्ण मे । ऊपर घर दी बीरै थाली । दो दिन निक्ळग्या पारियो बिया ही पडघो, वण छेडघो नी अर सामु मायं बडी नी, फेर ही दिन मे बा ताळीमारी राघती रसाई रं । पण सामु नै न ई बान रो ठा अर न वण कैयो । कह'र घिगाणै बड्ड मोन थोडी ही लेंपो ही ?"

तीजै दिन उष्ये भाना रो एक चोर आयो जार्धा'क रात मे । चोर वारलो थोडो ही हो, गांव रो ही हो कोई । अघेरें मे नै हो ओपग । बीनै ठा हो के डं घर में धादमी तो कोई है नहीं, लुगावड्यो है दो ! घर तो ही केई दिना मू ही, मुगन-मरोध रो बद्रिया मोको आज ही मिस्यो वानै;

टुरघो जद पीठवाणी छोक मुणीजी बीनै । बण सोच लियो, 'आज तो सीधी आगळो घी खूब निकळणो चाईजै । ओ आ पूग्यो ।

बीनणी बडी जागरुक ही । की चडकै रै बँम सू बा झट जागगी । सामु नै बोली वा, "है ओ की पग मुणीग्या, कोई बडग्यो दीसै है मनै तो ?"

डोकरी बोली, "कुवै मे पडन दे, बडग्यो तो, कूटो जरू है'क नी सावळ देखलै, लेजावण दे की लेजावै तो, मूती रह बोली-बोली ।" पण आ, सांच ही कँ "सो दिन सुनार रा तो एक दिन लीहार रो ही, कदास सुणलै सावरियो की म्हारी ही ।"

चोरडो भारी वाता कानो कान करतो किवाडां रै सारै आ लाग्यो ।

बीनणी बोली, "और तो कांडै है, रसोई मे म्हारा टड्डो अर तेवटो पडपा है, रसोई कर'र वै हा जठे ही भूलगी, वाने कोई पूग्यो तो मुश्किल करसी ।"

टड्डा अर तेवटै रो मुण'र चोरडै सोच्यै जोगमाया कदास, दिना रो नही महीना रो वेटियो अटै ही पूरो करदँ, फेर छोक पाद आई बीनै, 'अरे पीठ पाछी छोक सुभ ही नही तुरन्त फळदार हूवै ई हिसाव तो ।' बण कान की ओर नँहा कर दिया किवाडां रै ।

डोकरी बोली, "रसोई मे कठे चूर्म चारै है काई ?"

"घरघोड़ा तो पारिये मे है, ऊपर थाळी दियोही है ।"

"थाळी कोई सौ-पचाम भण रो मिला है ? इयां काई चेतो घरे नी हो ?"

"जबे ज्यू समझो चूबयां चीरामी है ।"

डोकरडो की झूझा'र बोली, "घारै मे महर किसे दिन हो ? ताळती तो बजती है ली रसोवडी रै ?"

"मोच ओ ही तो पावै है, करनाळो ही दे राख्यो है खाली ।"

"तो, रो सामु नै लागगी मुबे विचाळै, ओ भाव मोनै रो आगळ तात बमाणी ही आंगी अवार, मैणां बरा मू हुवै ? हे हडमान बाबा, अथे तो घारी भाख्यां ही चानणों है । बाबनिया । कोई काजळ नी घालदँ । सेवग्यो कोई, तो वै आया मनै गिज सेसी अर टूम दूमर घडीजण रा भपना हो सेया भना ही । बाबा, मूडी तो दिनूगै अँट स्पू पछै, पैमा घारो प्रमाद करग्युं ।"

लुगाया मे सू एक मर्त ही बोल पडी, “डोकरड़ी, बाईसा म्हारे दाईं ही कोई मूकणी माटी रो ही चिता तो हुवे हो बापडी नै।”

चोरई वारो पछलो राडी-रोणो बिल्कुल हो नी मुण्यो, करनाळो है खाली, बस इत्तो सुणता ही वो तो रसोई कानी सिरकम्पो—बंगो-सो। बीरें तो टड्डा रो उतावळ चूठिया बोडे ही। करनाळो छेड़े कर रसोई मे बड़ग्यां चुपकै-सै। तुळी जगाई, चानणो हुता ही, धाळी दियोडो पारियो दीसग्यो बीनै, तुळी बुझगी, सोच्यो अर्ब पडी बुझो हाथ सीधो टड्डे तेवटे पर ही जासी।

बिच्छू अमूज्योड़ा बैडा हा तीन दिना मू। उडीकै हा, आख्यां फाड़पां, हाथ मिला'र कोई 'जै रघनाथजी रो' करे तो? पारिये रो धरती रा घणी हा बै। वण थाळती होळै-सै छेडेकर हाथ जिया ही पापो-सो आगीनै दियो, लिगतारा बीसू ही खायो एक-एक इंजकसन साय सू भरपोड़ो ठोरु दियो, एक-एक आंगळी रै, बिना पीस अर बिना टैस्ट किया। इसो दोरो तो ढाढा-डाकधर ऊँठ रै ही नी दे। चामडी रै बिपतां ही रो-अंक्मन मुह हुग्यो अर झाळ अर ओळभा एडी मू चोटीताई जा पूग्या। पायो बी हाथ रो मुठियो, मुट्टी मे जरु पकडभा, जाड अर होठ भीच्यां भाग्यो वो पण बापळ मे पूग्यो जितै, होठ ओग आगै, बाट फाटती रोटीसा मर्तै ही पीसग्या अर सार्गै कठ ही—'ओय मावड़ी भरग्यो ए, ओय रे, ... गाय पर मूर्त अघेरै रो नीद नै चीरती किरळी दूर ताई फँलगी। हाथ तरड़ावै तो हमो कँ पाटमी वो। आख्या आडो अघेरो अर सरौर मे वाईटा आवै। होठ अर कंठ अर्ब गुल तो गया पण बढ नी हुवे। ओय मावड़ी ए... आभो ही अंघेरीजै अर बीरो चेतो ही।

बीनणी नै अर्ब विश्वाम हुग्यो कँ अंघेरै मे धन भाळतां भाईजी नै टड्डा अर तेवटो मिलग्या दीसै है। वा कूटो खोल'र बारै जावण लागी जद सामु बोली, “गूगी है” क स्याणी, कडै निरळै है आधी रात नै, पहया बज्जनदे टड्डा तेवटो है जठै ही, जी नै पिर राय, अर्ब तो रामजी बरगो वा हुगी, गरी कमाई रा है तो कठै ही नी जावै।”

“घारै की किरळी-सी नी मुणोजै यानै?” वा की गजोरी हू'र बोली।
“मुणोजै तो है की छणनी-सो, पण बी मू आपां नै बाई?”

“काई किया नी ? की अगलो करै है तो की आपा करस्या ।” डोकरी, बात न ओजू ही नी ममझी, पण लारै हुगी वारै । वारै आ’र, वा दोनों ही चोर-चोर कियो जोर सू । लोगा में जाग तो की पैला ही मुरु हुगी ही, आवै तो हा ही, अरै और खाया हुग्या ।

पकड लियो बीनै । बीरी सरधा तो जवाब दिया बंटी ही, ओळभा छाती में आ लिया, केई बोल्या, ‘श्रीगणेश तो ईरो जूतां मू करो और लाड पछै ।’ चोरडो कूकतो-किराघतो बोन्वो, ‘अरे बापजी जूता पैला नी, अरे पैला शाडो घलवावो म्हारै, ओय भावडी मरू ए, अरे शाडो घलवावो रे .. जो निबळसी ।

केई बोल्या, ‘नी-नी ठीक हुई साळै में, मारो जूता ।’ एक जणो बीनै कोझीतरै कूकता देख’र बोल्थो, ‘रामजी रै घर सू हजार जूता रो हुकम हुवै जद एक विच्छू घावै, हजार जूता तो लागग्या ईरै, अरै लागसी वै ऊपर ।’ पण आ, ठा वानै ओजू ही नी के विच्छू ईनै दो खाया है, हजार जूता रो गोळ एकै सागै ही किया ?’ एक जणो बोल्थो ‘अरे चानणो कर’र देखो तो सरी है कुण ओ ?’

इसै नै चोरडो बोल्थो ही, ‘अरे हू हाजीडो हूं, पैलां म्हारै ये शाडो घलावो, अरे म्हारो मास निकळै रे...। अघेरो आवै आह्या आडो ।’

दो-एक समझद.र हा की, सोच्यो ‘सास रो कांडै विश्वास कीहुती काई टा की हुयै—चोर रो टा आपा नै लागग्यो अर चोरी रो टा ईनै लागग्यो, पह जाणै अर डारोत । वा तो गांव रै सरपंच नै सेजा सूप्यो अर सरपंच गांव री अस्पताळ मे । गांव में केई दिन ठंड इगो वापरी चोर तो, वारणां बीरो ही उघाडो देखां ही, रात नै कीरै ही घर कांनी पण तो दूर मू ही नी करता । बात रो पूरो टा साम्या, बीनणी नै लोगा बटो सपवदाद दियो, सबै ये बीनै काई बेम्प्यो, कट मुणावो ?’

मुणावो बोनी, “बाहेगा, बीनणी बेंटी, उम्ताद नीवड़ी, चोरटै मू तो चानणो नी हुयो, पण बच कर दिखायो, इमो मो पुतिमआळी ही नी दिया सकै ।”

छोरपां बोती, “विच्छू पंठपो चोरडै रै अर जो सोरो हुयो म्हारो ।”

धूरी, घाई बोनी, “सपदाद बीनणी नै काई, सपदाद है धानै, ये हुवो

न म्हानै सुणावो इसी-इसी बाता ।”

सिरदारी बोली, “बाई बिच्छू चापडै नै दोरा छाया, बीन कोझी तरं कूकतो-विलखतो सुण, म्हारो जी ही दुख पावण लाग्यो, पण काई हुबं रोवणजोगै नै चोरी रो कुलछ किसोक ऊधो पड्यो, कुकावै तो कूकणो ही पडै, कुदरत कीन माफ करै ?

एक बीनणी होळै-सै पूछ्यो, “ई बात रं साच रो थापनै क्रियां ठा लाग्यो, बाईसा ?”

एक जणी बोली बीन, “इतो काई पूछै है खोद-खोद’र, इसी बाई थापणदार लाग्योडी है नू ?”

मुधा बोली, “ना बाई, कोई कीन ही टोको मत, पूछै कोई तो पूछण दो, आ तो जिज्ञासा है, या टोक्या नी मिटै, सुण्या, समझ्या मिटै ।”

अधमिट रक, या भळ्ळे बोली, “म्हारै नानाणै सू अधकोस परिया एक गाव मे, दस बरमा पैला आ घटना घटी, गाव रो सुगायां साणै जा, हू खुद मिली हू बी बीनणी मू ।”

“भळ्ळे साची मे काई कमर रही ?” ग्रामी जणी बोली ।

आरी आलोचना सुणली मुधा । अबै बोली बा, “देघो, ओ तो छोकरै रं टूटणो हो, अर मिन्नी रो आणो, सजोग बैठणो हो, बैठण्यो, पण ये ध्यान राख्या. धां मे सू कोई बिना सोचै, बिच्छू पकड़’र की ठाव मे मन घाल लिया, ठा बिना कदेई, घरआळै कण ही भूल मे जे हाथ घाल दियो तो सिगतार टड्डो-तेवटो दिया बिना नी मानै लो ।”

“हां आ साची कही बाईसा और तो हाथ देवै नी देवै, उछाछटो टोगर तो कोई, हाथ दिया बिना भरयो ही नी मानै ।”

सगळी ही हसती-मुञ्जवती आप-आपरं घरां कानी बिदा हुई ।

कचन अर करमा बोली, “ईनजी, सभा थारी जार रो, बड़ी दाप बाई म्हानै, आगैसारू म्है ही भाग तिया करग्या थो मे ।”

“ये भाग लेवो, ईरो जरूरत धानै ही नी, आपनै गाय भर बीमू आगै ताई, आधे देस नै है बीरो ।”

“क्रियां ?”

“की समूह मे कठै ही, पकयोडा अर मुञ्जयोडा विचार बारै बाइन

रो सँज-सरल उपाय काई है ?”

वै दोनू ही बी सामों देखण लागी, वा बोली, “बाणी ही तो है ?”

“हा बैनजी ।”

“जुगा मू टूटता-अमूजता अँ लोग अर इमा ही काईं ठा और किता, देस री मूळधारा सागै जुड़नो चावै का नी ?”

“नी बयो, जर चावै”, करमा बोली ।”

कचन ही समर्थन कियो, “नी जुड़चा बैनजी, न्यारी फटती धारा निभै किना दिन ? छोर्ज ही वै तो ।”

मुधा बोली, “बिल्कुल ठीक पण कीनै ही दिस ही ठा नी हुवै तो यो टुरै कीनै ? ये थारी सघरी-मतोल बाणी मू सागै टोरो बाँनै, ददळो बाँनै अर एक सबळी पात सागै खडा करो दानै पण ईं खातर पैला धानै थारी बाणी री मायना तो करणी पड़सो ।”

“किया अर कठै ?”

“बी खातर आ सभा ही थारो पैली पाठमाळा है—बिदु सू सिधु कानी लंजावणआळी । ईं मे बोल्या हिचकिचाट थारी निरुळ भागनी, बाणी मजनी, मोच अर मिठास आसी बी मे, बीरो घाल बघसी । बी त्याग अर गाच जुड़ग्या बीमे तो, भीड री भीड थारै नारै टुरपडसी, थारै संवेत पर नाचमी । औरा री तो हू कहु नी पण, धा दोना खातर आ म.घना मुश्किल नी ।”

“म्हारै इसां काईं है ?” दोनू ही बोली ।

“धा दोना रा मायना खैरा मे खासा-भला पडलिया ।”

करमा बोली, “म्हारै खैरे पर धे काईं पडधो बैनजी ?”

“थारो खैरो फूल-सो कवळो अर फौलाद-मो पररो । कवळापण, आम आदमी री हिन चावै अर करडापण मागल ।”

“मागल ? हू नी समझी !”

“खोर, जर, अर गुढा नै टोक करण नै करडापण चाईजै ।”

“ईं मू मुाजब आपरो ?”

“ईं गांर री बागडोर एक दिन नू मभाळ मकै है—अर ईं मू आनै री मभाळै तो ही अचमो नी ।”

कचन बोली, "म्हारै चैरै रा आघर काई बोलै है बैनजी?"

"तू इकरंगी रैसी। सेवा, सहयोग अर चिंतन धारै मे जादा है। दळित दुखी नै धारै सू बडो भारी पोपण मिलसी। धारै स्वागत में दूर-दूर ताई पलका विछासी लोग। हूं झूठ नी बोलू, मैं जिसी पडो विसी भाखी है।"

वै बडी तुष्ट हुई दोनू। वै टुरगी धीरै-धीरै, पण वारा मायना आघर, वारै वारलै चैरा पर अकित हुवण री उतावळ करै हा।

7

देसभक्ति, धर्म अर राजनीति, आत्मविश्वास अर समाज री आधी परस्परवावा मू जूसण री शक्ति रो कोई न कोई बीज, मुघा, कंचन-करमा री दुआकी धरती पर तोपणों नी भूलती—मौके रो मौसम आया। वै डोड-दो घंटा, तिषबंधी आणी मुरु हुगो, घरे पढती बो अलग। मुघा कंचती दोनां नै ही, पण कचन नै की बेसी जोर दे' र कै, "बाई, रात नै तू दो घडो बेसी पडलिया कर पण दिन मे मा-सा नै सारो पूरो सगाया कर। रात नै वारो पीडघां अर पगयळघां पर हाय फेर दिया कर, ना, ना करै तो ही, हायां रो न को घसीजै अर न की विगडै। धारै करणै मू ही नी, धारै मिठास मू पूछघां ही, वारै तन-मन रो धाकेलो मिटै, घुमी बधै वारो, अर बधै वारै स्वास्थ्य, सन्तोष री ऊचाई। वारो हर घुणों घुमी में डूबै तां धारो चेतना पर एक उजास मतै ही उतरै जिसे न हर घरवाणी नै गुलम अर न की बनवासी नै। मा तो मा ही हुवै है।" कंचन रो उत्साह आसा-वान हु' र ऊपर उठतो।

बण आपरै अठे एक दैनिक अर एक साप्ताहिक अघवार मगाणा मुरु कर दिया। दस-बीस मिट केई वानै देयतो, केई मुपती। एक ट्रांजीस्टर ही आ लियो। करमा स्कूल नै ही अपण कर दियो बो। मिश्या बीमू घर अर भोर मे पांच-सान प्रभाती, बस। न बोने दिनभर धूचाणों अर न बीगु कीरी ही आदत रो मू ऊधी दिस कानी करणो।

आ दोना रै आगै सू, मुघा काम में अवार दत्तो व्यस्त हुगो कै भय अर आगंका वा विल्कुल ही विसरगी । दिन जावतां कांई जेज लागै, फागण आ लियो, वा, आ दोनां कर्नै मू दस-दस मिट नैडो तो घाली वाचन ही करावती, श्रुत-लेख ही लिखावती । उच्चारण पर विशेष ध्यान देवती । ह्रस्व, दीर्घ अर विसर्ग, श, ष अर स रै उच्चारण में जठै ही गडबड हई, क, कु नै जठै ही एकमेक कर दियो, आप शुद्ध बोल-बोल, फेर बा कर्नै सू बोलावती कंई बिरिया । गुन-मून, दिन-दीन जिसा दो-च्चार जोडा रोज लियावती, समझावती अर आपरै चाम्पा में प्रयोग करावती । मज्ञा, सर्वनाम, विशेषण अर त्रिमा पढायती बेळा परै-मे ही पूछ लेवती । कर्ना-कर्म अर विशेषण-विशेष्य री ज्ञान वाचन री बेळा ही चांगी चेतना रै गळै उतारती । हपनै मे एक दर्फ, स्वतंत्र लिखावती बां कर्नै सू । भामा ओपती अर असारदार किया वर्ण, अर कियां बीरो अमर खत्म हवै, समझावती । आंग, नाक, होंठ-दात अर हाथ-पग गम्बन्धी मुहावरा, अर 'काळ में अधिक मासो अर भाघां में काणों राव' जिमी रोजमर्ग री लोकवक्ति चांगी जाण लागै जोडती ।

'एक ही साधे सब सधै' हिन्दी ठीक हुगो तो इतियाम, भूगोल अर नागरिक शास्त्र में नैज हुग्या, न लिखण में बाधा अर न पडण में । इयां ही और किंगै घालै हा आपरी नैज चाल मू । रुचि दांरी हुवन लागरी बडवती अर आस्था विकसमान । विशेष बात आ ही कै आन्मीयता री घन्ती दारी, ज्यू-ज्यू एकारार हुवै हौं, गाव में मुघा री पूछ बधै ही, पण कुमाणमा रै बा धुभै ही ।

अदीनवार है आज, मुघा रोटी-बाटी जीम र' रसोई मू निकळी जिनै माडी-दुभार नैडी बजगी ही । गिरदारी दो बाड-छपारा लगा गदरा हा । अवार एक पनपाई बंटा बँ चिलम पिये हा । गिरदारी बोली, "चांगी पूचाडी आ, बी परिया सिरक' र तो पियो, बिजय कोई काटा में पडगी तो मनै तो न्याल करो ही ला, सागै औरा रा टापरा और घुग्रायोला ?

एक जणो बोल्यो, "इयां म्हे काई गुमा हा भुवा ?"

"गुमां में ही म्हे बसर है ?"

"कियां ?"

“स्याणा हुंता तो धी-दूध का छाछ-राखड़ी पी’ र ही मस्त भी रैवत ? धुबो ही कोई पीवण री चीज हुवै है ? गिटे कित्तीक तख्खरख्ख, धाकं मांकर नी काडो तो नास्या मांकर काडणो पडै, काई ठोको ईं पीणं मे ? नी-नी करता म्हारे की न की तो काम छोटी करस्यो, रिपिये-खंड री तमाखू रो लडोड देस्यो अर थारे कोई धूई नी निकळै, फेर कंवै म्हे गुगा खोडा ही हा— तो सोग हुवै है गुगा रै ?”

वै नी बोल्या, पी चिलमडी, पाछा ही काम मे लामया ।

मुधा सोच्यो “दस-बीम मिट अन्न की पाधरो करलूं, फेर मा काली जाऊ, मोचसी, अदीतवार है तो ही दो मिट ही ईं नै खा’ र नी फुरकी।’ एक-डौड बजी कचन अर करमा आसी फेर पाच बजी ताई उठणनै ही फुरसत नी, बा आसण पर आडी हुवण मतै ही का बीनं कोई अंभतो-सो लाग्यो । वण बंठी-बंठी ही गोडा तणी हु’ र, बारं देख्यो तो पेमा मेघवाळी आवती दीखी । अन्न पाधरो करण रो मनो वण डा दियो । बंठणी सावळ, डोंफरी मू चीनिजर हुतां ही मुधा बोली, “आओ मा-मा, मँर रिया करी ?”

“मँर काई, की फोडो धालण आई हू ।”

“बोली ?”

“छोरै पचास रिपिया भेज्या है मनियाडर मू । फात ही दिया है डारिये अर सागं औ पुस्टाकाट”, कह’ र बागद वण धोरै आगे घर दियो । मुधा बागद नै सरमरी तौर मू देख्यो । न पूरी मात्रावा ही अर न पूरा आग्रह ही । समचार अदाज मू ही ओळख्या । निघणियो न पढ़पोडो ही अर न अण-पड ही । बा बोली, ‘माजी, पड’ र मुणाऊ का मोटा-मोटा समचार जबानी ही कहनायू ?”

“बाईमा, मनै आम खागा वा पेड गिणना, समचार चाईजे मनै तो ।”

राजी घुमी रो कह’ र, बा बोली, “निख्यो है रिपिया तो अबार पचास ही सावै आया है, महींनै-बीम दिना मे, तजबोज कोई बंठी तो की और भेजदेस्यु, और कोई चीज-बस्त रो फोडो मत देते, भूरकी सामरै मू आवगो हुगो” ?

डोवरी बोली, ‘देगो बाईमा, गंधरै रो हियो फूटघो है, डूम रै घोई रो मो, तिग्यावतै नै गरम नी आई बीनं कं कोई चीज-बस्त रो फोडो

मत देने, फुलडो ता भेजी है मोटी-मोटी पचास, धणी-बहू नै गयां महीनां हुग्या तीन। जावतो कह' र गयो हो, छोरी नै बुला' र, सवाड करा दिये—पैली सवाड है। छोरी नै आ' र, बँडा, दिन बीस हुग्या, आजकाल में सोवणआळी है, की तो बीनै चीकणो दळियों चटाऊ का, नी? तीन महीना में सौ नैडा तो मैं माथे कर लिया, अ पचास तो जांवता ही खोस तेमी बाणियो, कड़ालिये में पछे, काई म्हारो करम राघस्यू? लिख दियो कोई चीज-वस्त रो फौडो मत देसे, अकल तो सरावो बीरी?"

मुधा बोली, "तीन महीना में पचाम तो रिपिया अर वामे ही भळे बेटी नै सवाड। इपा काई अन्न नै थे मूधो ही हो, खावो नी? पचास रिपिया में तो महीनो भर मूको आटो ही नी सरै।"

"नी सरै तो, मचका' र, कागद एक इसो लिखो थे कं, रिपिया दूजे ही दिन आ पडे।"

मुधा की मुञ्जक' र बोली, "कागद नै थे कहो तो बद्रक करदू?"

"की करो बाईसा, रिपिया भाणा चाईजे बैगासा।"

"गूगा, रिपिया तो अगलै र भेज्या आसी, आपा तो समचार ही लिख सका हा।"

"तो लिखो थारै दूके ज्यू।"

"लावो देयो कागद, लिखू जचा' र।"

"कागद तो, डाकघराने गई ही लावण नै, बंद हो वो तो।"

"तो?"

'आप कनै नी कोई? आगे ही थे दो लिख' र दिया हा मर्न, याद है भूलू नौ, पद्मा नीराधू, हाथ की फुरण दो।'

मुधा महीने में दस-बारै काई, अर दो-ब्यार अन्तर्देशीय, वाम री तुगाया रा लिखे। समचार बारा अर कागदा रो खचें मुधा रो। वै ही राजी अर या ही। पद्मा कोई मर्त देवें तो ठीक है, नी तो हुबै घणखरी आही कं, न वा मागे अर न कोई देवें।

मुधा उजे, पोस्ट काटे लिख दिवो बीनै। लेलियो बण उठनी बोनी, "भलो हुया आररो, न्याल करदो।" पद्मा मितर घीरी जेब में हा पण अनार तो बै, न बोरी जेब मू अञ्जगा हुया अर न बोरे जी मू।

सुधा सोच्यो, "घणो नी तो, पाचेक मिट तो कमर की पाधरी कर हो लू, की टैम है ओजू।"

आडी हुबण मतै हुवै ही, का मिरदारी अर सामै आप सादनी-सी एक और लिया, सामी आ खडी हुई। सुधा बी नुई आई लुगाई कानी देख्यो अर देखती ही गई मिट भर! वण लुगाई ही सुधा कानी देख्यो—आपरी निजर गडोर, पण बोली पैलां सुधा ही, "गगा भुवा है काई?"

"हा बेटी, एक तो सामण ही हू।"

सुधा एकदम उठ खडी हुई, सिर बोरो एकाएक झुक्यो अर हाथ बोरा बोरे पगा पर जा टिबया। वा गद्गद् हुगी। सिर बोरो जिया ही सुवो हुयो—सँज अवस्था मे, भुवा आपरा दोनू हाथ बी पर मेल दिया, वा ही एकर भाव-विभलता मे डूबगी।

सुधा बोली, "धन-पडी, धन-भाग, आज, ये रस्तो कीनै भूलग्या भुवा?"

"बाई, कुवै नै कुवो नी मिलै मिनख नै मिनख तो कदै न कदै मिलै ही।" वा बैठगी आसण पर पण बोरे चैरै सू एक उदासी रह-रह गार्के ही अर वा जाणू बोने लुकोवण मतै हुवै।

सुधा बोली, "मा, अँ म्हारा भुवा है, गोदारा है। म्हारै बापूजी नै धर्मभाई बणा राख्यो है, बडा रामनेमण अर छट' र छोट, आरी गोदी री डूगरी पर हू छूब उतरी-चडी हू, मू रो बवो काड' र, पैला मनै देवता अँ, म्हारै जीवण-मिठास मे आरो हिस्सो कम नी।"

सिरदारी बोली, "बडा भाग थारा तो है ही, कम म्हारा भी नी, म्है ही दरसण कर लिया आरा, तू अठै हुवै न, म्है दरमण कग आंग? आपा है तो रैसी दो दिन, आपरै टावर नै संभाळनी, मुय-दुय री पूछमां बोने।"

सुधा बोली, "जावै कठै है, तू ही बैठ दो मिट।"

"हँ मिट दो मिट नी, दो-प्यार घंटा ही बँट्यु निरवाटी हू' र एकर छपारा कानी जाऊं, म्हारै गया बिना बै कांटो ही ईनै-बोने नी करै, चिलमड़ी घुम्मा' र बैठग्यासी।"

"हां, तौ फेर जा।"

वा भुवा कानी देखती बोली, "भुवा, मरीर तो मर्ने मे है।"

“घोटवों कडे जितै भजै मे ही है बाई ।”

“बापूजी और ?”

बापूजी रो कैयो जद, अध मिट मोन हुगी बा, बीरै चैरै मू झांकती उदासी गैरीजगी, अर आख्या बीरो मजळ हुगी, फेर भारी-भरभरै कठा मू बोली. “बाई दिन जावतां कोई, जेज लागै, बीम दिन हुग्या, बीरो मरीर सान्त हुया ।”

आख्या मुधा री ही छळ-छळा आई, किता ही भाव बीरै चैरै पर आया अर गमा, बचपण मूं ले' र अवार तांई रो अतीत बी मे सजीव हुग्यो, आख्या बण बंद करली, पण आमू बंद नी हुया । सिर आपरो बण गगा री छाती रै लगा दियो, आमू प्याया हुग्या, अर मागै भाव, गिम्धी बंधता होठ फूट पड्या, “भुवा... बापूजी ?”

भुवा दोनु हाथ बीरै गोडां पर धर दिया, बोली, “विराजी मत हुवेटी, ओ समार है ही इसो, अठे पिर कुण है, जावै ही जावै है मैं, जिता आवै है सै जावण पानर ही तो आवै । बाप जिसो बाप हो, घणो ही मन में रैवती बीरै पण सारै कुमाणस पानै पडगी, हँसतै-हँसतै दुप बांध लियो अर खुल्यो नी रोयां ही, पण, टा बीरै पडै याई ? धारै कानी मू बढो सोरो हो यो—तनै गोरी-मुयो देय' र ।

सारनै महीना, धारै गुसरै मू बीने जद, धारो अठीनै आवण रो टा लाग्यो तो, तू जागै ही है, मन मे बीरै उमळ-मुमळ अर चैरै उदानी आवै ही । मरीर साधार, मन अमान्न अर आकळ-बाकळ, हाथ तंग अर ऊपर मू धारी उधेठ-बुण, पण आं मगळा मू ऊपर, बा धारी मा घालती घुठिया औम मू, इना दौरा बांडती कं बरना रो ग्यायो-पियां बाळ नांपती बीरो, 'वेटी, री बडाई करतो बरतो ही नी, मत्तो हूवै हो बी सारै, सँ अबै टोमसै पीदियो, नात्र बावतिर्य रो बठे जावतो ऊजळो बियो है बण ? बी आगै ही होट योमू तो, नात्र पतथाई मेनपां पडे, ओजू ही बाई हुयो है, ऊग्र-हँनी यो सारै ही—अठे छापी राधे तो ? ग्दारी टीगरघा मत्तपी और धोगो करदी बण कुमाणन—नोज नै ही जामी इसी !” मनै टा है बाई, बाई-बाई मुगावती बा बी पछी नै । घालन-फिरण री जे थोड़ी ही मरघा हुती बी मे, तो पूगो घावै मन पूगो, रात-विरात बदेई धारै कानी अर

दुर पडतो वो, पण न यळ अर न वळ, वेडी मे बंध्य बी जीव रे जी मे ही, वा जी मे ही रही । मैं सुणी, तूं एकर गई ही बठे ।”

“हां ।”

“पण हू नी मिल सकी यारें सू ।

“तू रात भर ही तो रुकी ही बठे ?”

“भुवा, गुड नी, गुड जिसी जीभ ही नी, तो काई करती रक’ रे ? वापूजी सू दो मिट बात करली वै ही उखडती-मुदरा में ही हा—मा छापोडी ही बा पर ।”

“बारी हालत तो तै देखी हुसी ?”

“हां, बारें साकळ हुतें मरीर, अर परेमानी में डूवतें-निकळतें मन, मन ही ढकदी उदासी में ।”

“बी पछे तो हालत तर-तर बिगड़ी ही है, किसोक हो दीडार अर किसोक हेंसाळू ? रूप, रस, गध बीरा, बी घुद री सापोडी सू ही चाटगी, दोस कीनै देवें अर दोस दिया किसो दुख हळको हुयें है कीरो ही ? सममदार हो, पीड़ नै बारें नी उछाळी ।”

“पछलें दिना में, अडचल घणी हुगी हुसी ?”

“सरीर तो बियां बीत्योडो हो ही, बिदा हुयो बीसू दो दिन पैला दम, उठाव घणों करलियो हो । हूं तो दो-तीन बरमा मू, घरे जांर तो होळी-दिवाळी ही मिलती । गवाड-गट्टी में चालता ही टकर ज्यावता बदेई तो अधघड़ी मुख-दुख री करलेंवता बेंन-भाई । दो-प्यार दफें मदे, भाव-आदर ही नी, तो दूमर बठे जाईजें ही किया—घावें सोनो ही बरमै बटे । मूमई सभाव री है, आपां न जावा, अर न रीम करां । जांवती जद गिनियो-दो रिविया, और नी तो दो-त्प बोरिया ही, गयें-भाटें टायरां नै की-न-की देंवती ही ।” अघ मिट घुप हुगी बा । फेर बेनियें में हाथ घालें, एग लिफाफो निकालघो, बी रे हाथ में देंवती बोसी, “भरणे मू दिन दमे'क पैलां घारी मा गई ही आपरे पीरें—प्यार दिनां घातर । ब्याव हो भरीत्रं रो । तीमरे दिन बण मन बुनाई मिसण नै । हूं आई, बो मूतो हो मार्ये पर—कमरे में गाव एकाशी । दो घटा नैडी, हूं वंटी रही बीरी ईग बनें । धोरे-नै बीत्यो बो, “आपगी मू ?” “हां, मैं बंयो । “बहन, मरीर अबे, दग-गोप

दिना मे जासी", कह'र वो चुप हुग्यो, आख्या भरली । हूँ बोली, "भार हुवे तो ला बटाऊँ, पीड रो पाँती कियौ करू बना ? पण बिराजी क्यों हूँ ? रिपिया-पद्मा चाईज तो बोल ? म्हारें सायनः और कोई काम-काज है तो कह ।" बोल्थो, "रोणों अभाव रो नी बँन रोणों है तू आई अर हूँ अधमिट ही उठणजोगो नी ?" हूँ बोली, "ओ कीरो सारो ?"

वो बोल्थो, "बँन, तू पबित्र है—म्हारी मा-मी । धारी घरती पर निश्चै ही गंगा रो बामो है, धारो बडो भारी रिण है म्हारें पर पण बानै बोल'र बतावण री अवार न म्हारी सरधा अर न मनं फुरसत ही । वो सँ उरिण तो हूँ सायत सात जळम मे ही नी हुसकू । ओजू ही बँन, एक तकलीफ तनै और देणो चाऊँ ?" वो चुप हुग्यो, बीरो दम उठ खडो हुयो । मैं कँयो, "म्हारी बड़ाई नै तो तू रेंणदँ, बाम री बान कह । धारी धूकणी उठती-बँठती देखू अर वो सामे धारी उठण-बँठण री लाचारी तो म्हारो जी दुघ पावै ।"

आपरी आखी ताकत भेळी कर'र बो उठयो, पण मिट भर मू जादा बो बँठो नी रह सकयो । आडो हुग्यो पाटो ही । सास की बँठयो तो तकिपै नीचै मू एक लिफाफो काढयो बण, बोल्थो, "ओ लिफाफो मुघा नै देणो है वाई, धारें हाप मू, तनै खुद नै जा'र । मैं इँनै निखण मे दो दिन मू की बँसी ही सर्म लगायो है, पण दिए ईनै म्हारो सरीर बरतीग्यां पछै ही पैलां नी ।"

"तो तू ठीक नी हूँ ? हूँ तो तनै खानतो-फिरतो देखणों चावै ही ।" मैं कँयो । वो बोल्थो, "एक दिन तँ आगै ही ब्यायो हो इंयां ही की, आज भळे उपछै है बिगी मनस्या नै ।" "हूँ नी-ममाही-धारो मतलब !" हूँ बोली ।

"बँन, एक दिन हूँ जावै हो ओ गांव छोड'र, दवाग्यानों बमै ही नी जद करतो काई ? जावनै नै नै रोबलियो मनै, याद है ?" "हाँ है की", मैं कँयो ।

"तू बोनी, "बँदराज, तू बामण है, ऊमर में छोटी पण पद में मोटी । मंसार मे म्हारें भाई नी, आज मू ही म्हारो छोटी भाई है तू, मा-जावै मू बँसी । हूँ मोटी हूँ धारें मू, तनै नी जावण दू; छव महीनां गयो है यो महीनो-बसो दिन इँ बँन रँ कँपे मू और गव । तँ म्हारें खानर रात-दिन एक कर दिया, म्हारो दवाग्यानों पमबग्यो, म्हारा पण जमग्या, अटै ही बन

काईं गयो, तँ बसालियो, कहाणी लम्बी है पण याद है नी तनै ?”

“हाँ है की ।”

“बो दिन तँ गाँव सू जावतै नै रोकयो हो, आज संसार सू जावतै नै रोकणो चाव है ?” हँ बोली, “तो नी चाऊँ ?” बोल्यो, “म्हारो मंगळ चावण रो धारो सभाव है, पण बैन ईं सरीर में अब ठोक हुँर भळे चाल सकँ इसा पग काईं, कोई चीज नी रही, न सास, न स्नायु अर न मन ही । भोगा रो कतार ओजू बिसी ही खडी है, पण मरीर भोगोजग्यो, काळ बियां ही दोड़ै है तरोताजा, सरीर चूर-चूर हुँर भांचो झाल लियो । जीवण रो लालसा एकदम किनारै आ लागी, न बा घर कानी अर न ससार कानी ।”

“बा तो गयोड़ी है पीरै” मैँ कैयो ।

“बोल्यो, “बा कठै ही जावो, कद ही आवो बैन, बीरँ थाया-गयां, म्हारै जाणँ में काईं फकँ पडै है ? जाणों हँ ही चाऊँ, अर बा म्हारै सू जादा चाव है कँ म्हारो किन्नो बैगँ सू बैगो कटै,—बिया बा काल सिझ्या ताईं आ पूगसी ।” लिफाफो मैँ ले लियो, जेव सू वण दो रिपियां रो एक नोट निकाल्यो बोल्यो, “बैन, ओ धन हँ म्हारै बनँ, काल ही मिल्यो है मनँ ओ छिप्यो खजानो—खाली तनै सुपण घातर ही । ओ तनँ, अर ओ बागद गुधा नै ।” मैँ कैयो, “मनँ नी चाईजै, काईं करुँ हँ रिपियां रो ?” “मनँ टा है, ईं लेखँ धारै पर रामजी राजी है बाईं, खँबण रो न तनँ लोभ अर न इसी कोई लालसा ही, पण म्हारो सोगन है तनँ, अन्तपन्त तू बैन है ।”

मैँ लेलियो नोट, बोल्यो, “बैन रिपिया री मदया मत देख, देवण रो खाली, इत्ती-सी उदारता म्हारै सभाव मार्ग जुटन दे—जावतो टैम ।” बीं रक्कर भळै बोल्यो बो, “बाईं, काल लिग्यो बाणियों पक्कीम रिपिया देर गयां हो डोड बरम पैसा रा, हा तो घणा पण देवण री जी जी में ही नी हुवे तो किनी बुझी माडू वीं सार्ग ? वै रिपिया में धारै अर गुधा घातर ही आया ममझ्या, पण छोरी गडै ही बनै, बाणियों नी दुग्घो जितै, रिपिया पकटे खडो रही या । हँ चावतो तो रिपिया राय सेवतो पण बा आया पटै म्हारो दुख दुगोजतो अर हँ एक बिग्रह में उटततो मरीर छोडतो; मैँ बा घात्र छोरो नै मूपटी ।”

माँचै नीचै एक ठोगडो पटयो हो, रैन बोरी, गंधार पणों खीमे । मैँ

बीने साफ कर नुई रेत भरदी बीने । हू बीनी, "तो जाऊ अवे ?"

"जा, म्हारो घासो भार तँ हळको करदियो आज ।" वण आपरा हाथ म्हारें पगा कानी कर दिया अर उठण री कोसीस करी । में कैयो, 'रेण दे तू, काई करे है ?' बीरो गिर पळूस दियो में । बीरें सामने किसनजी रो एक पुराणो किल्लडर झूलें हो । किल्लडर कानी हाथ करतो बोल्यो बो, "बैन, याद तो कर इने, अर सेवा कर मगळां री, फतें हे धारी" इती यात हुई बी सांगे वाई ।"

मुधा मुणें ही घ्यान मू, बीनी, "भुवा कित्ता दुख पाया बै, म्हारा इमा भाग कठें, कै हू बांरी की सेवा करती ।"

"आ आदमी रँ यस री यात नी वाई", कह'र वा इग्यारें रिपिया देवण लागी बीने ।

"बयांरा देवो हो, हूं नी तू ?"

"नी बयो लँ, बैन रँ मिम लेणा अर भुवा रँ मिस देणा, हू नी दू तो गुण दें तने ?"

ते लिया वण ।

गगा बोली, "बाई, बागो तँ अठें किया लियो ?"

मुधा दम मिटां मे सगळी कथा माडरी, बीरें काळजें । वा बोली, "बाई, गगाजळ बसाई री सीगी मे हुवें चावें बेदपाठी री मे, बी मे न दाग न दोस । तू कठें ही भेल, दाग सगावण मतें हुवें बी महत मे ही सगामदें हू अर गगा किनारें जा'र ही । तो हू जाऊ अवे ?"

"सिध ?"

"महो ।"

'बठें ।"

"भनीजो एक गाव मे रँ, दूमरें अठें दूखान कर रागी है—विरानें री, टंमनर पूग जाऊ बी बने ।"

"रान-रान तो म्हारें बने ही मुग-दुग री बन्ती ।"

"तू नाराज नी हुवें तो, दो दिन बाद आऊ, एवर तो जांबनी चद ही टीर हो, उडीकगी बो ।" वाच पुरो हुयो ही, इने बंचन अर करमा आ पूगो । बा नागें ही बी बात हुई बीरी । करमा बोली धे ही गोशारा अर हूं

ही । बँनजी रो भुवा हो का नी, थें जाणों, गीत रे नातें म्हारो भुवा हुक्क
 में तो गोळ ही नी । आज रो रात तो थाने अठें एकणो ही पडसी, दो-दो
 भतीजी अर पगलिया रात भर ही नी मांडो ? मानगी वा । दिनूगें-सिद्ध्या,
 मुधा रो दिनचर्या देखी । सिरदारी अर धूडी-घाई जिम्मा नै पडती-लिपती
 देण, न बीरें इचरज रो पार हो, अर न बीरो खुसी रो । प्रार्थना सुणी
 सिद्ध्या रो, "हे भगवान, मुभ सुणूं, मुभ देखू,

मुभ सोचू, मुभ करू,
 सगळा मार्ग हू,
 निरभं विचरूं,

आगें मुधा, लारें सगळी ।

गगा बोली, 'बाई, आज थारो बाप जे धरतो पर हूवें, अर थारी आ
 लगन देखलें का गुणलें कीं करूं सू ही, तो बीरो खुसी रो काई ठिकाणो ?
 थारो काम देख'र हू राजी, थारी ऊमर देख'र हूं की सकू पण मनं विचारास
 हुग्यो कें तू खे-निकळसी, थारी प्जोज तम्बी अर लूठी है, थारी दिनचर्या
 रें चक्रव्यू में कोई अर-गीर नो बड सकें । जोवण रा अ पछता दिन, म्हारा
 ही जे थारें करूं ही बीतें तो किगाक आठा ?"

"नेकी अर पूछ-पूछ, तू आवें तो केर मनं चाईजें ही काई ?"

"आनें पडावण रो काई लें तू ?"

"की नी ।"

"तो खर्चो-माणो थारो ?"

"भूटर, आसण. दरी-पट्टी अर टाको-टेभो की करलू, मनं कितारु
 चाईजें ? अचे वें आनें ही बाटदू, पाटी-पोपी में का पूर-मल्लें में ।"

"थारी मँनत पवित्र, थारा भाव पवित्र, थारो काम पवित्र अ थारी
 उठ-थंड पवित्र । थारें सू धरनी राजी, नू बीरो पीड़ नै हो ममती अ बीरो
 मनस्या नै ही ।"

अगलें दिन भोरा-भोर ही, मुधा रो भोळावण देंवती गिरदारो नै,
 करमा रें ऊंट-गाई पर वा बिदा हूई पंडी नै ।

8

इग्यारें बजी ही दिन रो। मान्गडो केई टावरानें नें जोड-बाकी रा मवान करावें हो। छपरें मे बँठी सिरदारो केया रो साड करे ही अर केया नें आग्र दिपावें ही। मुधा पाच-माग टावरानें अर्जो रो आटो समझावें ही। वा ओजू निरण-काळजें ही है, दो घुटका दूध ही बीरें होठा नी चडपो। चडें काई, दूध दिनुगें ह्यो ही पोठो हो। गाय रात नें खुसगी हो, टोषडिब रं खूंटें जा चडो, बां काई छोडें हो, मूतलियो घणयरो। झासरकें बा उटी तो गाय घूटें मू परिया बँठी, उगाळी मारें ही। दूध अधकीलोक ही दियो वण, मुधा चुळू दो-एक पाणी रळा बीमे, आधो गंगा नें पा दियो अर आधो मिरदारी नें। सिरदारी ना-ना करती माधो घणों ही हिलायो पण मुधा नी मानी। गगा ही बोंली, 'बाई, बिदा हुता दूध नी पिया करे है, हू नी लू।'

बा गिलास में बिचटीक बाजरी रो आटो नापनी बोली, 'लं भुवा, बेम अर्ब तो नीबें बँठो? अर दया तू किसी घायल-कमावण नें जावें है कठें ही? क्यों डरें हत्ती, जवन तो रामजी राघवी, मिनय रा राध्या बित्ताक निभमी?'

'तो सा बाई,' अर पीणो पडपो बीरें।

हत्ती साळ हुगी, पण बाप रो कागद पडण नें कोई निरवाळी बेळा साथे जद हूवनी? टावरानें छुट्टी कर'र, निपाको वण घोत्यो। अधपाठिया प्यार कागद हा बी मे, दोना कानी मू ठमा-ठमा'र भरपोडा। बारें बाळजें-नुश्यो, सोम्टकाई साईज रो एक फोटू वण देयो। बीरें देयता ही, मा-याय रो बीती अर भूली-बिगरी छिब (छवि) बी रो चेतना पर एकर गाकार हुगी अर सागें बीरो मंचळ वचन ही अनीन मूं निरुद्ध'र मुम्भरा उठपो बी आगें। फोटू वण मेज री दरान में राग्रदियो अर आर्या भावगी, कागद रो घरती पर। तिरयो हो—

'बेटी, तू बँठे ही हूबें अर किमी ही अवस्था में, कल्याण रा बादळ पारें पर झुळ-झुळ पडे, अर घरती रो स्नेह, हरियाळी वण तनें दननें।

कागद री इत्ती लम्बी काया देख'र सायत तू अचभो करै कै, बाप रै, कागद री आ, काई जची ? कागद रै नाव, आज ताई जद बा, एक लैण निख'र ही सौगन नी भागी तो छेकड़ जावता किसो आभो पडै हो बा पर, किया लिखदियो ओ बा ? सोचणो, अचभो करणो सै ही ठीक है धारा । कागद में धारै परण्या पछै ही नी दियो तनै, तो अवार नी दिया हू किसो न्यात-धारै हुवै हो ? आ बरसा में, इसो राग भी धारै कानी नी हो, हा, कदेई धारी जादूई मुस्कान नै देख-देख म्हारी ऊचाई रै सँज-सिपर मू एक क्षरणो फूट्या करतो—धिरकनै आनन्द रो, बीसू म्हारी धरती रै हर छूणै पर हरियाळी हसती अर एक मैक उठती, पण ज्यू ही म्हारो दूजो घर-सत्तार मुरु हुयो, तरत्तर कम पडतो क्षरणो मूरण मतै हुग्यो । म्हारो धरती पर पण जमावण लागगी एक उदास बीरानी । जीवन में ज्यू-ज्यू, तणाव, धिरोध अर विपरीतता बधता गया धारी तम्बीर अणचाईजती-सी बण तळै बँठतो गई अर अणयाद री परत-दर-परत चडनी गई बी पर, पण मनै काई टा भौत अर बीमारी री आधी मागै जूझती म्हारी जीवण सी बुझण मतै हुसी कदेई, तो धारी बा तस्बीर म्हारी चेतना नै अणचाई मधभी-अकशोर-सी, आ हू सपनै में ही नी सोच सकै हो । हूँ किया अटवळती थै बा सभावना घणो अळगी नी, म्हारै तकिये रै पमवाई ही मुकी वँटी है पठै हो—खाली अवार री ई घडी मू भँटण नै ।

परमू री बात है, हू मूतो हो कमरै में साव-एपाकी—मोन अर मुरक्षामो । धारी मा आपरै पीरै गयोडो है—ब्यार दिना घानर, ईरी बी सोध मायत गंगा देवे तनै । ईन रै चिपाचिप जीवण हाय नै गुसी अल-मारी रो तनै टा ही है । बीरै रूप अर सोल पर दो महीना पैना ताई, एष गाडो अर हरो पड्डो पीरो दिना करतो । आंधी तो अळगी, बीरै रूप रै हाथ गगावनी खंख हो मवती, पण नी मुहायो बो, धारी मा नै, उतार-लिमो बण, अर अलमारी री बाया नै, अनाथ रै टावर-मो उपाड़ी बग्दी । मैं मना करे पण म्हारो दीन आशाज पमरै रै आजास में गुजर रमनै लागी आपरै, अर म्हारो इच्छा निराग हू, पाछी म्हारै में ही बँठगी ।

अलमारी रै ऊपरनै घणा में छोटी-मोटी शीश्या है शीम-पाटींग री । बेया में दो-शे, ब्यार-ब्यार गुरारु है अर बेई साव घायो पण

बारी अवस्था म्हारै मू लाय दर्जे आछी है । बारा गिर उघाडा नी, ढक्कण हू हरेक रँ सिर पर, आव है चैरा पर, बँ झडकाईजँ ही है इकातरँ-दूजँ, पण म्हारो सिर पौह-माघ रो सौत-नैर मे ही ढकौजण नै उडीकँ अर जेठ-वँसाध रो आधी मे ही । दाटी अर केम महीना रा वध्योडा है, रह-रह शो चाने वामे । मैल नग्रा मे जम'र करडो हुग्यो, पण अब करडापण बीरो किनाक दिन टिकसो ? कपडा नै हू छोडणों चाऊ, पण बँ म्हारो विवसता समझ, प्रीत आपरो अन्तिम छिण ताई निभाणो चावै ।

घारी मा नै सोस्या मू घाली टप्तो ही मोह है कँ वँ की ललसर रही तो गिण्यै दिना दाद वा ध्याराना-सौस पटसा हरेक रा बटलेमी । म्हारी जीवन मीसी घाली हुया काई दे'र जामी योनै, वा आछीतरँ सू जाणै है । म्हारै घानर बी मे ऊय है, उदासी अर अनादर है । ठैरणो हूँ ही नी चाऊँ, उँतावळ म्हारै ही मोकळी है पण म्हारी उतावळ मू काळ कद आपरा कान घोलै, अर कद आपरो घान घायी करै ?

निचले ही निचले छण मे आयुवँद रो पोथ्या है पाच-सात । अबार छष वाने आधी करै, काया बारी कमारघां चाटे । म्हारी तो वाने न झडका-वण रो सरघा, अर दम रँ कारण छडकाणो, न मनै सदै । अँ पोथ्या घारी मा नै सौत रँ टाबरा-सो दूग्यै । वँ रोज छीजँ, जोभ तो बारँ है नी, जिकी बारो पीड नै प्रकारँ । बांगी अर म्हारी अवस्था एकमी है । वाने अकूरडो रो फूस उडीकँ अर मनै समगांण रो बोई मूनी घरती ।

अबार पडे-मडे विचार आयो कँ जिकँ घरक मू तँ सालीनता सागँ घारी जीवन-जानरा गुरु करी—अणगिण आगावा सागँ, सत-मत रोम्या नै नुवो जीवन दियो, कित्ता रो ररी-रघी अर टियो हुनी जीवन-जानरा पाछी चालू करडो; वो घय नै तँ एक घाधी अलमारी मे पटक, तिष ही नो ली घोरी, दुगँति करडी । वोनै दम-पांष मे नो, घरती रँ एक-दो मपूत मे ही जीवन्त अर घरपिन नी कर सरयो ? इति बडे गाव मे ध्या घंघा नै आज, मामा रिपियो दे'र ही जे देणो घाऊँ बीनै ही, गाहक तो ही, नी मिनै बाँरो । गाहक घणावण रो बेष्टा ही तो नी करी मै बदेई, चाँवतो तो कर गके हो । बँद अर फेर बामण । बामण तो एक जूण जाह हिमा'र ही, अर बदेई निराहार रह'र ही घरती नै बाँट सरँ है आपरो गंताई-जान । बेटी,

मैं वास्तव में म्हारें दायित्व की हत्या करी है, पेट सू पांवड़ो ही आगे नी सिरक्यो। दोसी ही नी, कृतघण हू, अर कृतघण रो निस्तार बंगो-सो नी, रिसि-कथन है ओ। दळियै रं ठाव सू काति नी उतर सकं। देस-समाज अर घरती नैं वामण चाईजैं—आम जीवण में उजास भरण नैं। मर्नै एक बूडें पुजारी पढायो बिना की लिया, पाणिनी रो प्रसार कर दियो बण—मैं एक में ही नी, म्हारें जिमें पचासा में, फेर ही कमल बीरो जाचना रं काई मू ऊचो अर अछूतो रैंयो। वामण हो बो। म्हारा ही अवार जे, घना नी दो-च्यार बेला ही हुता कठे ही, तो न अवार म्हारें प्राणा रो ऊचाई ही कम पढती अर न म्हारी आत्मीयता की घरती सू उठती मक ही। पण में तो ऊमर रो मट्टो घणखरो, समै रो रेत में रज्जा दियो बेटी—समझ थका, जद सोचू हू कं कनापि देवेन हृदि स्थितेन यथा नियुक्तोऽग्नि तथा करोमि, आदमी रं वम की बात नी लागी, डोरी और ही की रं ही हाथ में दीसै है; वा जौनैं छोबीजैं, वोनैं ही टुरणो पडैं।

हा तो बेटी, ईस रं हाथ दे'र हूं उठघो अर सिरक'र बितावां रं सायरं जा लाग्यो। खरक रो म्रथ उठायो—घर पूछ'र। पाना रो कोरां बेई जाग्या सू, कसारपा सिरावणो करगी। ओजू ही इत्ती तो छंर ही, कं आखरन नैं वा मू नी घाल्यो, पण वं काई तो ममसैं आखरसार अर काई अयंसार—घाणें अर बिनाडनं रं सिवा, आपरो प्रकृति रं अधीन जीव है बिचारी, पण बारी अर धारी मा की मति-प्रकृति एकगी है।

तकियै सारें आडो हुग्यो हू, अर बीरा पानां पळटण लाग्यो—बिना उद्देश्य, घाली बंठो घाणियो रं घडें रो घान बो घडें में धार्ये। एक पानं में एक साँटरी की दो टिकटा निवळी, बीत्योही अर बेकार, मौन अर मरी पण फेर ही वं बिना मंजन सयनति बणन की म्हारी सासगा नैं उजापर करे ही। मुज्जयै मं—फाड फैंकी में घाने। बेटी, अं दो ही नी, जीवण में इमी बीगू टिकटा में खरीदी अर छेदड फाड-फाड फूम रं हवालें कर दी। ऊचं में दम रिपियां ताई की एक टिकट में नी, पण इनाम मोथै मू नीघो पाव रिपिया रो 'मास्वना-गुरम्हार' ही बदेई नमीव नी हुयो मर्न पण अवार मौत की नदी तिनारं बंठो, मोचू हू कं, 'बदास आज, जे हू मयगारि हुनो तो म्हारी बेदना अर तड़कड़ाट नैं काई म्हारी सयननाई रोच मंती ?

सखपनाई नै अधभोगी छोटता, काई मानसिक सताप नी नाचतो म्हारें मन री घरती पर ? कुण जाणै किती रसाकसी करती चेतना ? हुयो बो ठीक है, की न की बच्यो ही हू, सन्तोष है मनै, साँटरी री टिकटा नी खुली तां ? कमाई री असली साँटरी तां आगै खुलसी—भार री रकम ढोंवण घानर ।

अगना पन्नां भळे पळट्या में तो एक जाग्या पोस्ट-काडें माइज रो एक फोटू मिल्यो । उत्मुकता सू लीण हुयो बोनें देखण मे, वो है ही इसो ही । तू देखमी बीमे घारी मा, तू अर हू रूपायित हा । तू म्हारी छाती आगै, म्हारी मायळां पर जच्योडी है, दीपती-मुळकती । जाणू घारी फलती मुस्कान, वो म्हां दोना रें घेरा पर ही उतरी है । तू मँज फुठरी, मँज मुळकती तो म्हे मँज नै जलम दे'र अमँज क्यां ? फोटू नीचें लिख राख्यो है में—'हसमुग्री अर स्नेहानुरा—आपरें मा-बाप सागै ।' कुण जाणै अँ शब्द में निरच्छ राग री किती ऊचाई पर पूग'र लिख्या हुसी ? नेहरू अर कमला ही आपरी बेटी इदरा नै कदेई प्रियदर्शिनी समझ'र आनन्द विभोर हुया हुसी । म्हारी मनोदमा ही वो बेळा स्नेह री चरमावस्था सू रच ही नीची नी रही हुवँली । ई सँज राग मे रगीजतै नै पद-पइसो अर महल-मडी बाघक नी लागै, भाव है ओ तो—एकदम निर्मळ, की पर ही उतर मकै है—हिडद-हिमालय मू । अतीत अबार म्हारें सामनें आ'र गढो हुग्यां अर पूछण लाग्यो मनै कँ, मा इरी असमें मे ही चलवगो तो, स्नेहानुरा आ. स्नेह घानर तरमती रही पण तू बाप तो जिर्य हो, तँ ही तो नो दियो, छोडो-सो ही स्नेह पागो दे स्नेहानुरा नै ? स्नेह री भूय मे गूवनी बटै ही, जे भटकगी हुवँ बा, तो दोग कौरो, वो प्रमाद रो भागो कुण ? बेटी हू जीवतो जरूर हू पण जीवन्न नी; जीवण री एक, दिस-दाजिवहीण, परिभाषा हू ।

पन. फोटू देखतां ही, निगमा रो बगार मेंवती म्हारी सालमा, जीवण रो एक दिम पकडनी—नुबे निरे मू, बीरें आगै, आसा रो एक मोनजिग बिबाड खुल्यो समझनें । तू भंग्यां रें पाई मे जा पूगी, ईंमू म्हारें मोळें आनां आ जची है कँ नै मे घासना री भूय तो बतै ही नो, हुनी बा गो तू भगीपाडो कदेई नी मेंवती । तनें आछो, ममशादार, दोदार

अर पद-पइसँआळो कोई मोटघार राख'र राजी हुतो, पाणी है धारै चंरै पर, तस्वीर मे धारी कुदरत रा दियोडा सँज सुन्दर रग है, पगीनें सू धुपणआळा नी—हसणआळा । चेतना मे धारै सदबुद्धि है अर बीवार मे है धारै समझ रो वासो, पइसा धारै अगण-पगण हा, ई घातर तोभ रो कोई वादळो ही धारै मूरज नै नी ढकसकी है । आ घातर, मनें कोई प्रमाण भेळा करण रो जरूरत नी, म्हारो अन्त.करण ही सबसू सथळ प्रमाण है ई मे । घर मे सारो-चारो ही सगळो धारो । बेटी, तोभ, वासना अर मालकाई रै मद सू बच्च्योडी नै, सत्तार तो काई, स्वर्ग रो आकर्षण ही नी छळ सर्क, तो फेर तू माडी कियां ? आ ओजू ही म्हारी समझ मे नो आई । गोचू हू, जरूर तनें ठेस लागी है कठै ही, काई है वा, आ तू ही जाणै, पण एक बात निश्चित है कै है तू कोई बडे अभाव रो पूति मे गुत्योडी, अभाव धारो नी, हुणो बो दूसरा गो ही चाईजै । हा, चुभ बो धारै ही सकं हे, सबेदना धारी सबळ है—ई घातर । म्हारो सोचणो जे सही है तो धारो मगळ हुणों भी सही है—एकदम लोह-लीक । कठै ही घेत तू पण विन्यास हरेक रो मत करे अर अविश्वास ही हरेक रो नी, चरक रो आदेग है ओं ।

चरक पढणो अर बीनें आम आदमी रो दिनचर्या मागे जोडनो, बीरे उद्देश्य पूति मे दोनां रो एक ही अर्थ है । चलो हूं नी पत्रा सक्थो बीनें ही तो नी मक्थो, गयो ब्यत अर्थ पाछो तियां बावई ? पण तू, जागती आत्मजा जद ताई मौजूद है, कठै ताई, म्हारी वा घासी माममा, चरक रै उद्देश्य सू थोडी ही नी, घासी भली भरीज सकं है, गढा मे नी, अर्थ मे । सपूत रो कमाई मे मगळा रो सीर हुवै, मा-बाप रो हुवै ई मे तो इचरज ही काई ? धारी प्रवृत्ति तो घामी-भली म्हारै मे पळी है अर जीवण-चेतना ही धारो म्हारै सू निकळी है बी न बी गो; ई घातर म्हारो विश्वास न धारै मे अनाधार हुमकं अर न साब उपेक्षित, जरूर पळगो बो ।

बेटी, आपन देग मे आदमी तो जरूरत-अत्ररत त्रिगोड है, पण घागो बामे साधा नै ही बडी मुश्किल नू आकतो हुगी । पेट मे ऊणो-गुणो अर अंदाजहीण माहण मे अर धारंसी माग-मुत्रब जीमर्ग मे रात-दिन रो फरक है । बिना ही तो, समझ ही आ है कै आ—देह टाकुरजी पडी ही

प्रावण-पीवण खातर है, ई खातर उठे जद मू लेर आख नी लागे जिते प्रावण-पीवण पर जोर राखणों। बारो ओ समझणो-करणों, वैद, डाक्टरा खातर तो अणकमाई चाही है अर बा अणसमझां खातर अणचाया चाववा। कित्ता न कित्ता, मर्म, मयोग अर नैम रो विरोध कर'र खावै अर कित्ता न कित्ता आपरी धरती री प्रकृति नै ताक में राख'र। धरती री प्रकृति री उपेक्षा ? तू समझगी हुसी, आपणा खोखा अर खेलरा, इग्लैंड-अमरीका री प्रकृति रें भाफिकनी, विपरीत है बारें, तो बारा माम-मछनी, अहा आपणी प्रकृति कद चावै, देखा-देखी कोई धिगार्ण चर'र राजी हुवै तो बीरी मरजी है। आदमी ही नी, हर प्राणी आपरें भूगोल री उपज ही तो है। न अमलो गळै अर न ऊरीजणो बन्द हुवै तो रोग अर रोग्या रो काई चाको ? दवाया रें नाख पर सीस्या में धाल्योडा राख-रेत अर जहर ही नी बचै, फेर ही अभाव अर फेर ही रोग-संकरता बढती पर। सस्ती दवाया रा सौदागर रोगों री रोक-धाम तो करै नी करै पण रोग्या री रात काटण में तो पाछ नी राखै। कित्ता न कित्ता रोगी गळत दवामा रें प्रताप न तो मरै अर न माचो ही छोडै, तो ही लोग खार्ण-पीण री सही विध कानी आय ही नी उपाडै, ई में बारो दोस इत्तो नी, जितो वैद-डाक्टरा री बधती कतार रो है, अर बा कतार, आ चावै ही नी कें आम आदमी मुक्ताहार-बिहार री सम धरती पर छड़ो हुणो सीखलें। सीख्या, कार-बोटी, बीडिश्रो, बीबी-टीवी अर हवाई-जातरा जिमें रगोन सपनां नै बा कतार आकार किया देयें ? ऊंचो पढ़ाई रो अर्थ ही अदार अर्थ सागै है, असहाय री सेवा सागै बठै, अर बठै ईमानदारी सागै ?

अदार दुनियां रो ढाचो ही इमो है बाई कें होठ बारां माईक पर, हाय नमस्कार री मुद्रा में पण आट्या है पडने पर। ई खातर ही आदमी रो खान-पान, रेंप-भौण अर मोष-ममता में गडबडाईजग्या। सम्म्र बेचपियों बिसो बाणियो-देग आ चावै कें कोई दो पादोमी राष्ट्र आपनो भाईचारें में बगता फूल-पळै ? बिसो नेना आ चावै कें देग रो आग्रो बगें एक ही आवाज में बोर्न ? धार-रुमा री कुस्यां तोहता बिमा करीन कामना करै कें आपनो मामना लोग घर में ही सज्जलें ? दूबानदारों री सम्बीबती बनार बाना में तेन पान राख्यो है तो धरती री बूक बुण मुर्न ? पीढ तो भोगें

जिके नै ठा पड़े ।

बेटी, क्रोध-कळह, ईसको अर कजूसी, स्वास्थ्य रा सगळ्यां सून मोटा सनु है । अति कजूसी, आता रो संचे-शक्ति तो जादा करदे पण बारी छोडण-शक्ति धीरे-धीरे ले वेंठे वा । ईं खातर ईस आदम्यां रं, कब्जी, मस्तो अर रक्तचाप नीचां, गठियां अर गोंडां मे सोजो जिसे कुण जाणे जिते रोगां नै पैदा करदे । आछे स्वास्थ्य घातर उदारता शक्तिवर्द्धक औषध है । क्रोध, कळह अर ईसको घून नै विनलो करदे । अँ ऊठ, पाडा अर चकरा स्वास्थ्य रो धरती पर, संज नीद, संज-भूद्य, संज चितन, समाव रो संज समता अर बीरों धीरज, जिसे उठनें वूटां नै घर-घर ऊमर सून पैसा ही बीने उदाम अर डंघर करदे । तू वमें बीं समाज मे कळह-ईसको, आठम अर आधी आदता रो जाळ है, तू बाने निमूळ कर, नुई दिस दिए बाने, घारी जीवण-बेल लहलहा उठनी ।

बेटी, 'मात्राशी स्यात्' नीरोग जीवण घातर मित भोजन करणों घरक री उकिन है धरती रं भगळ घातर । विद्यार्थी-जीवण मे हित-मित भोजन नै ले'र, 'कोऽ रुक ? कोऽ रुक ?' री एक छोटी-सी कहानी घारे होठां पर नाच्या करती, मनें भरोसां है, वा भोजू ही घारी चेतना मे जिये है कडे ही । तू जिके वास मे बमें है, बीने अघार बडी जरूरत है बीं बहाणी री । अँठे, अधमीज्ये, बागी, बामतें अर अपमानित उपेक्षित भोजन पर गुजर करना जुग बीतग्या बाने, वागे भटकी आदना मे नुयो मोड दे'र तू जे आयुर्वेद प्रणीत परम्परा सून जोड देनी बाने तो भूहारी घाली मालमा घारे मे भरीज'र, मनें ही तृप्त हुगी समझने । तू भूहारे वेद जीवण मे बीं भगी-सीसी नै न उमी कोई, दिस ही दे.मक्को अर न दीठ ही डगी । ही जरूरत पडपां बदेई बाने. हाम उठाई मग्नी गोटी का कोई म्याद छतम हूँ पुरानी घुण रो पुष्टियो दे'र पिड ही छुष्टायो मे, दायित्व नी निभावो । आत्म-विस्तार रो मोको हो, कितो घोरो मित्यो हूमी, गुग मे ममदियो, कुण जाने अर्थ बड मित्त ?

बेटो, जीवन रो मापंकता दे घान मे नी के कोई कित्ता बरग जियो. मापंकता ईं मे है के जो'र बण कियो बाने ? जीवन बरगो तू नी काम तू कूनांने । जिये जीवन तू नापो-भूषो, अर गोवी-टोपी घनी-घोरो, बीं न

की नी पोपीज्यों तो वो हजार साल जियोड़ो ही काळींवर जैठो ही है—
साधु-मन्त घनी-विद्वान चावै कोई ही हुवै ।

नू चिकित्सक री बेटी है, बेटी री कोरी संज्ञा ही नी, समझदारी री
विमंगण और है धारै सागै । चिकित्सा रा बीज—सेवा अर परिचर्या धारी
चेतना मे जन्मजात है, बानै बा उपेक्षिता री उदास धरती पर उगा, धरती
धारी, मैक धारै मे फूटसी । पण बाई, 'सबतें सेवक-धर्म कठोरा,' है, ओ
मगळा सू दोरो, ईं घातर मगळा मू जादा मंतव ही ईंरो है, ईंमू बडो और
कोई भजन नी । जिको स्नेह तने मिलणो चाईजै हो धारै मा- बाप मूं बीनै
तू ईं बिसाल धरती री आत्मीयता मे धारै आसै-पासै सू ही सोधणों मुरू
धार, धारै मुख-मतोम री कोई चाको नी रैमो ।

बेटी, एक बात और, धारै मन मे सायत एक संकोच उभर सकै है कै,
हमेसा-हमेसा गानर महाजातरा पर जावतें म्हारै बाप रै हाथ सू घणा नी
पागद रा दो छूतका ही जोबाचार री रक्षा घातर छेई नी हुया—म्हारै घातर ।
ओ मकोच धारै उभरै तो बेजा नी, नी उभरै तो और ही आछो, निष्काम है
धरती धारी, पण म्हारै डूवतें काळजै नै ईं संकोच जितो खुरच्च्यो है
कार्दनाळ, हू ही समझ सकू हू बीनै ? करूं पण, करूं काई, सरीर रोगाधीन,
हाथ जाचक री झोळी मू ही माडो, चाको फाड़पा ही बी पर कोई पइसो
नी राग्ये । हा, मन ओजू ही आपरो मभाव नी छोडघो, दातारगी री
धीन ओजू ही की ज्ञाना पानै है बीनै । पण बीरी ईं झूटो दातारगी मू न
म्हारी ही नी मुखळय सरमरै अर न की अगलै री ही । बेटी, नी-नी करतां
ही, ईं पाय मे म्हारा हजार रै अईगडे बाकी है, पीमा रा नी, दवायां रा ।
पनां नै तो ओ विश्वास हुग्यो कै बंदराज री मुवो अर्वे घुनै आर्भ घातर
तटवा तोई है, दो आपरो गोडवां ही नी काट मकें तो आपणो काई काडनी,
अर्वे तो बीनै दे'र घूट मे ही नायणा है । मुख-दुख री पूछणों तो दूर, बा
पर बनकर निबळनो ही छोड़ दिया । दो-ब्यार जणों नै रामधार ही कर-
वाया पण मदेना सेतो बंद पार पडो ? एकर तो सोग धारट नै ही पाछो
बन्द है, तो जवानी मदेमो काई कामन राग्ये है ?

मान भर पीना केई, म्हारै बनै बिना बुलाया ही आ बंठना अर बंठना
'मुन्को बांटे मेबा है तो झुटावो ?' केई धरळ-मोडे पर बिना बंयो ही आ

बैठता। केया रा शब्द अवार ही गूँ है म्हारै अन्तस रै कानां मे कँ 'बैदजी बरात चालणों है, हपतै भर पैलां ही कह दियो है थानँ, और पीरो ही हँकारो मत भर लेया,' 'मेळै चालणो है मोटर मे, घरे ही रँया, हू बुलायो भेजू हँ।' 'सीताराम?' 'हा बाबू', 'बैदजी के लिए एक ठू सेव मुघारो तो?' 'सवा मणीको है, प्रसाद आज म्हारै ही लेणो है।' मनँ ठा है, बा लोणां रो घणघरो समँ अवार तासदेव रै घरणा पर घडै है, बीगू बाँरो मन-बहलाव ही हुँवै है अर की जेव गर्म ही। ई साल भर रै समँ मे, बा मे मू केया रै केई बेढा-उत्सव हुग्या, पण म्हारै ताँई वै तो दूर, बाँरो कूटो-माघां सदेसो ही म्हारै कान मे नी पडघो। भूय सू भाएला कुण घालँ ससार रो सभाव ही इसो ही है बाई, ई पर न साल-बीळो हुणो चाईजँ अर न उदाग। भवसागर रो लँरा गिणनी नही, देखणी घाली।

मँ सन्तोस कर लियो कँ उधार की आवँ तो ठीक अर नी आवँ तो ठीक, जद सरीर सू ही सागो छूटै है तो रिपियां रो सागो अबँ बितीक ताळ रो ?

'छेकठ हू बाप हँ, की न की तो छोरी न देणां ही चाईजँ हो मनँ,' आ सालसा ओजू ही जियँ है म्हारै मे कठै ही मनँ आ बिल्कुल ही ठा मी, पण भगवान मुणली जाणू; अणचीअ्यो ही एक बाणियो आयो, घर मे छावतो-पीवती ही नी, लघपति पोत्रीसन रो, बळकतँ में पाट री दलासी करै, स्मणों अर बातपोन इसो कँ कतरनी रो जरुरत ही नी रागँ, बान अगवँ रा बात गू ही कतरँ। म्हारै कनँ दवायां रा पुडिया बंधायण आयो हो, आवतां ही पैलां तो पगां साग्यो, फेर आरमीयता मे इसो बाँयो मनँ जाणू टँ गाँव मे म्हारी जितो बिता इँनै है बिनी सायत बीने ही नी। बोअ्यो, 'गुरुदेव, दो बरस पैलां काँई सरीर हो आपरो गोळी री जान धर बाँई बग-दगात करतो पीरो? अवार देखू मामनँ तो रोनां छूटै,' अर बँवता-बँवता, पीरो बीरों उदाग हुग्यो, कंठ की भागी अर आँख्यां वह घाली। आ ही एअ बळ्या है बाई, हरेक रै बस री नी। बी बाँनी देख्यो हँ ही गळगळो-गो हुग्यो। जीवन रो टिमटिमावनीं ममता म्हारी एक टिन गोष उठी, 'जे ह एकर पाटो ही की घिरण-फिरण सागजाऊं तो ई रँ घर रो घोटवां बिना की तिया ही बाडू।' पीत दे'र तो बां, पैलां ही नी टारणो मनँ। पुडिया

वा दिशा में। इतने वण बैठे-बैठे आपरो जदों लगा लियो, म्हारें सामने ह्पल्ली करदी। मैं भरली एक ह्ळकी-सी चिवटी। जदें रो अ-आ ईं गुरु ही सिखायो हो मनै। नी-नी करता वण च्यार किरचा और घर दिया म्हारें आगें। कितो निस्वार्य हेत है इंरो, सोचतो म्हारो साप, मंत्र कीलीत-सो ह्पयो बी आगें।

उठतो-उठतो वो बोल्यो, 'गुरुजी मनै की वैम है, आपरो आगें रो हिसाब ह्पणो चाईजै म्हारें कानी।' आ सुण'र मनै ही की याद आयग्यो, ह् बोल्यो, 'हां है, योगेन्द्र रस, चद्र प्रभा अर च्यवनप्रास गयोडा है। 'कांई अर कित्ता है इंरो मनै ध्यान नी, पण है की न की, अँ लो बीस रिपिया,' वण म्हारें आगें घर दिया। मैं कैयो, 'सेठां रिपिया तो पँताळीस-पचास नँडा ह्पणा चाईजै?' वण पचाम-पचास अर दस-दस रँ सोटा मे सू, पांच रो एक मँलो-सो लोट काड'र म्हारें आगें और घर दियो, बोल्यो, 'घारो बढळो गुरुजी, म्हारो कांई माजनां है, ह् उताळं, थानै देऊं जिता ही थोडा, अँवै ही की कसर रही है तो, वा आगें कदेई काड देसू, अँ तो सांभो एकर।' हँ बीरँ मू कानी ताकतो सोचँ हो कँ ह् तो गाड़ी नँ उडीकतो, बीटो बांधे त्यार बँठो ह् अर ओ आ कसर आगें काटसी कदेई। एकर तो पूछू हो कँ कसर काटण रो तो सेठां मानी, पण आगें मिनस्या कठँ, जाग्यां रो सीध तो मनै हो करो की? म्हारो सोच्योडो मन मे ही रँयो, ह् की नी बोल्यो, बी पगां रँ धोक ग्या' र टुरग्यो चुपचाप। हँ बीरी जावती पीठ नँ प्रणाम करँ हो—मन ही मन। मनै ठा नी कँ छोरी किमाड झाले अठँ ही छडी है काईताळ मू। मेठ नँ वण म्हारें आगें रिपिया घरतां देछ लियो। वां मांचे कर्नँ आ आ घड़ी हुई अर बिना पूछघां हो मनै, रिपिया टप करता उठा लिया अर निकळगी वा ही सेठ रँ लारँ-मारँ। मैं मोषी ही पन्दरँ देसू तनँ अर दस गगा नँ—ठीक भेज्या भगवान पण मनै चाईं टा, म्हारें मनसूवँ रो ओ उठतो बूटो म्हारो परबनता रो लाभ उटा'र, घर रो बकरी ही बोई, इंवां घरनंगी, म्हारी आंटां आगें।

छोरी नँ ह् ना कर मके हो चाई, पण मनै ठा है कँ घारी मा घर मे पग नी देमो बीमू पैसां ही आ छोरी बीने भोर-भोर मिलगा नांघगी अर वा भारतो ही म्हारें आगें एक नुवो महाभागत मोडदेमो—म्हारी ईंन बनें बँट'र,

न म्हारें मू वो सभळें अर न म्हारी मनम्या ही इगो की करण री इजाजत दे मनै । मैं होठ ही नी योल्या । सिरफ'र अलमारी कर्न गयो—जिनामा बस । डायरी पडो ही पुराण हिमाव-किताब री । मेउ रो हिसाब देखो, अडताळीम रिपिया पचास पइसा हा, किरचा रो राज अबै आयो बी-बी समझ मे । डायरी सू मैं इमा-इसा में पाना काढ लिया अर बिना बाने देल्या लॉटरी री बेकार टिकटा-सा फाड-फाडवाने फूस भेळा कर दिया । हिसाब सेस अर बीरें सागें उधार पावण री म्हारी तरफ मू म्हारी सामगा ही सेस । म्हारें गयां पछे ही, आपरें बिबेक री डायरी सू कोई देमी कीने ही तो मनै काहें, म्हारो बीं सागें न कोई गग अर न रंज ।

बेटी, देवण री ममता रो की दाग ओजू ही, मौजूद है म्हारी बेचना रें कपडे पर कठे ही, हूं काहें समझू पण प्रभु खुद ही जे घोवण मनै हुवें तो कुण रोके कीने ? आज दिनुगे गीता री किताब मे, दो रो एक लोट मिलगयो—मैलो-सो । राख्यो तो धर में ही है बीने बदेई, पण बर अर कठे मनै काहें ठा ? अबार हूं तो आ ही मोचू हू के आ कृपा श्यामसुन्दर ही करी है म्हारें पर । लोट तो काम ही मिल्या हा पच्चीस रा पण हूं तो जागे खरो ही सावळ नी देख सकयो । सोच्यो एक देऊं गगा नै अर एक तर्न पण मन पाछो ही सावकीज्यो, दो रो तो लोट, बी मे ही फेर आघ, गंगा नै ही दे दियो मैं समूचो ।

मू मोचती हुसी, तो दयां काहें रिपिये, दो रिपिया रें बिगर बंटा रो, दो रिपिया ही नी मिले घर मे ? तारलें महीने बिबती छोरी नै मैं केयो, 'जा एक रिपियो तो सा घारी मा कर्न मू ।' मनै गुणीज्यो, 'बाबनिये नै बर, रिपिया चाहेंजे तां बेचदे मनै, बंयो बल छोरी नै पण गुलायो मनै । वो दिन पछे मैं, बंयो ही छोड दियो; रिपिये-पइसें पानर ही नी, पानो रें लोटे खानर ही । देखे तो जोगनू, कंई तो गुलनू, बनडाई तो बोननू, धाव्यां पाने दो घरी तो टोरु है, नी पाने तो जागती काडदु बछा री मम्याई । दोग्य मायन हैम्तारी । ही तो बदेई दोग्य ही पण बा तो गर्दे, अघबिवाई घोयो दे'र । घोयो देवण नै ही आई हो बा । अबे टा परे है के भादमी ठोअे ही दोग्य रें माये मू है । दुग्य मे माय रें प्रीन भगम बा है । दोग्य रें खानर ही मनै बाहरी लार्ने । निमेंड रो बरे बा अर दिग्य हो देरे ।

कई दिनों पैलां, छोरी बळती चाय डोळदी सायळ पर, जाण'र नी, उपेक्षा सू । फासा उपडग्या । तेल री आंगळी, का कच्चे आलू री पीठी की लाग मकै ही बा पर पण, मन सुणोज्यो 'भाचें पर बँठे नै ही चाय, बँठे नै ही पाणी, अधालियो म्हानें तो, नीचें नी उतरिजें, इया, काई मंदी लाग्योडी हे पगां रें?' बळघो ही ह अर क्रोध रो मिकार ही हूं । वो भोर म्हारो बिना चाय ही गयो—एवदम सूको । मागी में नी, दी बण नी ।

अकूप्या अर मोडा पैला रा छुपोटा है की, तारें सँ आखडग्यो हो एकर, एक मोटें मे रमी है की, बुळें वा बदे-कदेई तो रात, तारा गिण-गिण काडणी पढे अर दिन बडो दोरो । मीको लाग्या भाड्या ही कम बँर नी माजें, पण हें रोणं दतियाम रो काई अन्त है वेटी? सास सागो नी छोटगी जित्तें, मोटाई बीरो घघती रमी पण 'द्वेन दिस बिल पास अबें', धिर आ भी भी रँवें, आ सोच'र ही मतान है ।

इत्तो तो भली ही है कं ओजू बण म्हारें पर हाय नी उठायो । उठावण रो सभावना मे हू पैला ही क्यों गळ ? हा गुणावण मे बा मन पैला नी गळ । हूं सोचू, जे हूं पाछो बोलसू तो न बीसू म्हारी पीह ही कम हुवे अर न म्हारें मे काई नुयो बळ ही बापरें । बा आपरी आदत मे कंद है, वो विचारी रो बस नी, पण बीने जे सायळ बोलणों नी आवें तो मन काई सायळ गुणनो ही नी आवें ? एक सभावना और है म्हारें नी बोलणें मे, हूं सोचू कं म्हारी हँ अबोलतारो, अवार नी, म्हारें मरपां पछें ही घी परसायत बी अमर हुवे अर बा आपरें सभाव नै की बढल्लें—बढल्लें तो म्हारो गुणनो अँळो नी गयो । बीरें बरावर गुणाया, म्हारी सोची सभावना अजलमी ही रही । बा बढल्लें-नी-बढल्लें छोड दें, पण म्हारी नीयत अर म्हारी क्रिया, म्हारें सभाव गागें तो जुडनी हुमी कट्टे ही ? दूसरो, गाळ नै गाळ सू सुभावण रो उपाव, पमु-उपाव ही तो है ? हूं घां गागें ही उळस अर फेर म्हारें मन गागें हो ? एक सू बच्चा ही म्हारो तो जीत ही है ?

हूं वेई दफे मुणू कं 'ई रोग अर भूय रें ग्राड सारें आ'न हू कुवें में पट्टी.' अर हू मोच के 'ई मटामाया नै सा'न, कुवें में हूं पट्टग्यो' पण, बीरो मोषणो जाना सही है बा कुवें में पट्टी नी, यों विचारी नै तो पट्टदी बीरें मारतें अर म्हारी मानता । भूळ में दोमी हू ही हुयो, दुय है मन कं हू आरी

की मदद नही कर सकूँ अवार, पण म्हारें जाणें री बाद बेटी, म्हारें ई परिवार रो काई हुसी? आ, न में कदेई मोची अर न अवार ही सोचूँ। कोई काई अदाज लगा सकै है कै कीरें ही मरघां पछै, बीरें परिवार रो काई हुसी? मरघां पछै न कीरो ही परिवार न कोई कीरो मालिक ही। अणूतो सोच'र, आपरें जातरा पय पर जाण'र कोई कांटा खिडावें तो समझदारी कठै?

हूँ चुप हूँ बाई, पण गुंगो नी, पीड है पण दुख नी, आसू है पण चीख नी, समझा सकूँ हूँ, पण पा, नी सकूँ कीरें ही। जाणूँ हूँ कै हूँ सरीर नी पण म्हारो देहाभिमान है ओजू, गयो नी, पण देह सूँ की उदास जरूर हूँ। मखियो ऊर कुचीलो सारें ही पडघा है आलमारी में—म्हारें जोगा तो, पण आत्मघात री कदेई नी तेवडू। चाऊं हूँ कै पछलें सास में ही कदास की एकता हुज्यावें बी सागें—जिकें मार्ग हुणी चाईजें तो ठीक है नी तो उदासी अर अधभोगी लालसावा रो संसार, भळे डोणों पडसी कठै ही बडो दोरो हुसी धो।

घेटी, घाव अबै चिरमिरावें है अर मोडो चस-चम करै है की। सिर भारी हुवें है, अर बेचनी बधै। मोचूँ हूँ कै जरूर की अणघाईजतो तिथी-ज्यो है अर चाईजतो छूटघो। कागद नें दूसर पड'र की बाटू अर की जोडू, इत्ती म्हारें में न शक्ति अर न इत्ती फुरसत ही म्हारें वनै। इत्तो विश्वास जरूर है कै छात्र-वृत्ति है घारी, साह नें राधणों जाणें है तूँ। निरयो है वो, तनै की देवण रें उरमाह में तिथ्यो है; जातरा में तू न कठै ही भटकें, न छीजें अर न छट्टीजें—ई छातर। घेटी, तनै सागटो पर दे'र ही हूँ इमो हज्जको नी हुसकें हों, जितों ओ कागद सिध'र हुयो हूँ। तनै की देवण रो ममता में, अबै म्हारी सासमा ही मिटयो अर घारें कानसी सगन ही। एक् ही बात है बेटी कै, घरनी रो राग सागें तू गाए, बीरी पीड नें समझें, बी मार्ग जाणें, अर मगज्या गू मोटी बात याद राधे, दक्षिणावन्तो अमृग भजन्ते, दिए, लैवण रो आम हों मन राधें—पळयो-गूमसी-मैत्रसी तू।

मुमैणू
हरिदत्तगर्मा !

कागद नै बण बडै ध्यान सू पढघो । सोचै ही, “देख, किन्ता फोडा पडघा है म्हारै बाप मे । हू अभागण न बांनै पाणो रो लोटो ही पा' मकी अर न अन्तिम दरमण ही करसकी बारा, नियति नै नमस्कार ।” एक उदासी वीरी चेतना नै घेरती, वीरी आख्या मे उतर आई, बह चाली बै । दो मिट बाद, आख्या बण पूछली; सोचण सागगी, 'रोवण सायक वै हा ही नी । रोवण लायक वो हूवै जिको ममता रा दाद कुचरतो, तृष्णा रै जळोदर सू जूझतो अर सोभ-मोह सू जलमी अणगिण पीडावा सू चीखतो जावै । आ, आस मनै सपन मे ही नी ही कै, जावता-जावता बै, कदेई इत्तो दे'र जाती मनै जितो ई जीवण मे लो कांई अगलै मे ही नी छूटै मनै, अछूट है वो । इसो अर दत्तो देवणियो तो कोई बिरलो बाप ही साधसी कीनै ही ? पण खाली मनै ही नी, हर ममत्तदार बेटी नै दियो है बां । आत्मीयता बांरी धरती रै ओर-छोर है अर बापपणो बारो, म्हारी-भो हर बेटी सागै जुड़घो है । विवेक रो बूद पारो, सागर बणन मे सचेष्ट रही है । मन्तोष ही नी, गौरव है कै बै हार'र नी, जोत'र गया है, रो'र नी, हँस'र गया है । कनै कांणी कोडी ही नी ही, सुटा'र गया है खजानो । मुवेर करदी मनै ।

पछनै पांनै नै वा भळे देखण लागगी । शो-एक जाग्यां, दो-च्यार आगू ही पडघा है बारा बी पर । केई आग्र अर शब्द आंगुवा सागै गळ-गळ, लोप हुयोडा है, पउण मे नी आया बै, प्रमग सू ही पत्तो लगानो पडघो बारो । आग्रो रो आकृति मतै ही योर्न कै बांरो हाय केई जाग्यां काप्यो है, पण म्नेह अर सगन बांरा कठै ही नी काप्या । कागदां नै बण मिर रै सगा'र धर दिया जाग्यांनर । मोर्बे ही निरवाळो हुग्यु कदेई लो मिरदारी अर रचन-वरमां नै ही सुणाम्यु बै अर दुविधा रै सम्बे पढतै पढां मे हू ही पउग्यु ।

दोगरै पछे आज छुट्टी करदी टाबरंग नै बण, सुगायां-पताया मोनळी ही आंखण लागगी—गुधा नै बतटावण नै । बाग रो घणछगे सुगाना नै लो गन हो गुरर लागगी ही कै, बाईगा रा बापूत्री चमता रिया, बी घटै ही बा जिनुमै पूरी हुई । पांच-पाच, मात-मात सुगाया रा भूमबा उदाग-उदाग भा बँडे । आंखते ही गुधा बी विरात्री हूवै अर सुगायां, बी धीरत्र बंधावै बांनै अर घेर लोकाचारो चर्चा मुग् हूवै ।

केई बोली, “म्हानै तो, दो घडी पैलां अबार ही ठा लागी बाईसा, मुणना ही, घर हा ज्यू ही छोडघा, धारै कानी टुरगी, परमात्मा आगै कीरो जोर चलै बाईसा ?

एक डोकरी बोली, “उयां काई हुयो बाईसा ? कीमार हा काई ?”

मुधा बोली, “दम री सिकायत ही, पांच-सात वरमां मू ।”

“ऊमर कितीक ही ?”

“पचास मू दो-च्यार कम ही हा ।”

“अरे राम-राम, जद तो काई ऊमर ही ?”

दूसरी बोली, “भौकाण कराणव तो जावोला ?”

“मा तो है नी, माई-मा है, या कम ही चावै ही मनै, तो देखो ।”

डोकरी बिचाळै ही बोल उठी, “ना बाईसा, जावो नी बाई वगो, ऐन ड बाप है जलम रो देवाळ ?”

सिरदारी ही बठै ही बेठी ही, बोली, “तो आ कितो जतम रै देवाळ मू मिलण जायै है, जावै तां माई-मा मनै है अर या जायां न होउ ही गोलै, अर न आश्र ही, तो बनळावै कीनै भीत नै जा'र ?”

“हा भुवाजी, जद तो जाणां फालतू ही है ।”

वैगई, फेर आयगी दो-च्यार । मुधा रो बियां ही थोडो बिगर्जा हुणो, पारो कीनै बियां ही की धीरज बधाणो अर फेर बा ही सागण-भौ चर्चां घालणो, दया काई हुयो बाईसा ? कद छूटा, ऊमर कितीक ही, टायर विसा है ? मोटो ही मोटो छोरो है, क, छोरी ? छोरी परणावण-मायै हुंती कीई ? की बळ ही छोडग्या हुती जावना, मा रो सभाव किमोष है । गुजर अबे किये चालमी, कीरै पीरैआळा की मजोगा हुवंसा ? मयाला रो बाई छेरो ? पूछणआळो अनेक, जयाव देवणआळो एक । केई तो गोद-गोद'र इगो पूछै कं घाणदार नै ही छेई बंटावै । कीनै ही कीरै ही दुष-ददं मू दसो मुनटब नी, जितो है मोकावार मू । भूयां ही दिन भर गी । उठी जिते मायो हुयो भानी अर मू बियायो । दोपारै दो, पूली-दो यत्री बेटी ही, गूज नी छिप्यो जिते बा रह-रह की बिगर्जा हुंती अर फेर पूछपोडे सवाचा रा जयाव देती । मिश्या भाठ बगो जावना, दूध में माण'र, दो पनबिया वेड में माश्या ही हा, इमै मूदावी पडण नै आ बेटी ।

9

काल बजी ध्यारेक, टावरा न छुट्टी हुया पछे, मेषवाळां रा दो छोरा, स्कूल मू निकळता ही चड-भट तिया आपस मे । दोनू ही पैली-दूजी रा हा । पैलो डोल मे बी दूवळो पडे हो । दूगर वीरे पाटी री ठोकदी । कोर रो टाचो, माथे मे वंठयो की । मामूली खून आवण लाग्यो । छोरो आवतें घून रे आगळी नगा-सगा घडी-घटी देखे अर रोवें । ठोकणिये, तेंतीसा दिया—दिग देखी बीन ही ।

आठ-दग टावर भाभ्या-भाभ्या, गुधा कर्न आया, अर सिबायत कग्ता बोल्या, ' वैनजी, मोडिये रे माथे मे सोही आवे हे, नधिये पाटी री ठोकदी बीरे ।'

बा खापी-खापी बारं आदें । मोडियो खडो-खडो रोवें हो, पाटी-वस्तो कर्न ही, रेत मे पडपा हा । गुधा पाटी-वस्तो झटका'र उठाय अर बीरो हाथ पकडे-पकडे आपरी बोठडी मे लार्द । पूछणो बीन, "काई नेत वाटें हा रे, क्या वास्तें उळ्ळया, बत्ता तो ?"

छोरो की रोवतो-रोवतो बोल्या, "वैनजी, वण म्हारो वस्तो घाम-नियो ।"

"तू फेर की नी बोव्यो ?"

छोरो, गुधा रे सामों देखण लाग्यो । बा बोली, "मोडू, टर बिल्कुल ही मन, तर्न हू की नी बहू, कान नधिये रा ही ग्रीचम्यू", अर वण बीरो गिर पळूननी, बीन आपरी कुर्गी कानो की उरिया तेलियो । छोरे पलभर घातर, आपरी निबर वैनजी रो आंघरा परटिबार्द, बीरे विवेक ने विश्वास हुयो बा बा बोने मारं निषे ही नी, टर भिटयो बीरो, धीगत्र बायस्यो योमे । सो छोरे-अं बोव्यो, "पछे, गाळ मे ही काडो वैनजी बीन ।"

"काई गाळ काडी रे, माथी बनाए ?"

"मै बंपो, भाटी रे, गाळी रे रामजी करे, म्हारो वस्तो नियो, बांग मा-बार निया मू पैली-पैली भरें ।"

"बग इतो ही बा भळे की ?"

“भले काढी, ‘ढकणी मे कोयलो, म्हारो बरतो लियो बो आपरें बाप नै रोयलो।”

वा बी कानी वडी आसावान दिस्टी मू देखती बोली, “तू तो गाळ ही कविता मे काडै हे रे ?” छोरो बी कानी देखण लाग्ग्यो, कविता काडै हुवै हे बो की नी समझ्यो ।

वा बोली, “गाळ वण ही पाछी काढी हुसी तने ?”

“हा।”

“काडै ?”

“थारा मा-बाप अर घर रा सगळा ही मरसी सिझ्या मू पैली-पैली।”

“बस इत्ती ही ?”

“और ही काढी ही फीटी-फीटी।”

सुधा नै अबै काडै रा घणा छूतका उतारण मे लाभ नी लाग्यो । वण सोच्यो, नधियो ई मू डील मे ही तकडो अर गाळ काडण मे ही पण बो मोडिये री होड नी करसकै । मोडियो कविता प्रेमी है— बीनै दिस मिल्या बो कवि हुसकै है । वा बोली, “मोडिया, मा-बाप थारा ही जिये है अर जीवता नधिये रा ही हुमी ?”

“हा।”

“आ मे सिझ्या मू पैला-पैला कोई नी मरघो तो थे दोनू ही कूडा हुपाक नी ?”

“हा।”

“तो गाळ थे कूडी ही काडो अर कोझी ही ?”

सगळा टावर सुधा कानी देखण लाग्ग्या अर मोडियो ही । वा भले बोली, “मोडिया, तू जे बीनै कंवतो, नधिया थारो बाप सिझ्या मू पैला-पैला, राष्ट्रपति बणै अर थारी मा प्रधानमंत्री, तौ बो काडै कंवतो तने ?”

बो की नी बोत्यो, सगळा सुधा कानी देखे हा । वा बोली, “आ ही तो कंवतो कै, थारा मा-बाप अर थारें घर रा री बणै राष्ट्रपति अर प्रधान-मंत्री।”

मे ही टावर बोल्या, “हां बैनजी”, अर एक मुञ्जक बारें होठां पर फूटगी ।

वा बोली, "गूगा, मरण रो कैया कोई मरे तो कोई कौन ही जीवन ही ले दे। मिथी रो कैया ही मू मोठो हुवे तो लूण मू माघो कुण लगावे ? लगावे काई ?"

'नी लगावे', सगळा ही बोल्या।

"नी लगावे तो घोखो, पण लडो धे अर गाळकाडो मा-बाप न, वा ही भळे कोझो अर फीटी ? फायदो हुयो'क नुकसाण ?"

"नुरुसाण वैनजी।"

"आगे माहू या मे सू कोई काढमी गाळ कौन ही ?"

"नी काढा वैनजी।"

"काल आवण दो नधिये न धे, कानडा नी मरोडू बीरा तो, पण कनाम लागता ही तू मन याद थपादिए मोडिया ?"

"भलो।"

छोरे रो बिम घातो-भलो बुमग्यो, गुधा बी न दो बरला घामती बोली, "इत्ता पणा का ओर देळ ?"

एक ही सेवतो बो बोल्या, "एक ही चाईजे वैनजी मन तो।"

"छोरा, धारं मे तो कबीर है रे ? अर अबार मू ही जागतो !" टावर द्रं मू बी नी समझ्या, तो ही गुधा रा होठ तो बरबस फूट ही पटपा। बा बीरी सैज साधुता मू बडी प्रभावित हुई। वण सगळा न एक-एक पतासो दियो, बीने दो देवतो बोली, "तू साच बोल्या है, तने एक बेसी।" बो बडो राजी हुयो, पण मुक्कान बीरे होठा पर सम्बी नी हु'र बीरी आख्या मे ही घणोभूत हु'र धमक उठी। पतासा वण आपरी जेव मे घाल लिया। वा बीने आप कानी की ओर उरिया ले, बीरी गुदी पर हाथ राखनी बोली, "बरतो तने मितग्यो, नधिये रा कान और घांच देम्यु, राजी है अब तो ?" गिर हिनार वण हां कह दियो।

गुदी पर हाथ राखता, गुधा रे हाथ रे डोरी भी कां रडकी। वा बोली, "गळे मे काई है रे ?"

"मादळिया", होळै-नी वण कैयो।

"गळे रो गुडी घोल देया, हूं ही देखू मादळिया धारा ?"

गुधा मावळ देल्या, एक बन्नाबी छोरे मे तांवे रो एक पुराणां परगो,

छाप अर आंक सँ घसीज्योड़ा बीरा, भैरूजी रो चादी रो एक फूल, तावँ रा दो मादळिया, पीतळमे जडघा रामदेजी रा पगलिया अर एक काळो मिणियो । बण सोच्यो, “मा-आप, ई खातर जाणँ इसी तकडी मोर्चविदी खडी करदी हुवँ कँ अवे ई रँ नैडा न ताव-नप ही आमकँ, न भूत-प्रेत अर न न डाकण-स्यारी ही । देवता चौईसू घटा पीरो देवँ ईरँ गळँ रो धरती पर वैठा, मजाल है फेर कोई रोग-दोख आवँ ईरँ नैडो । अज्ञान अर अति-ममता मे गळो इया ही रुधीजँ ।” बण पूछ्यो बीनँ । “कित्ता भाई हो रे ?”

“हू एक ही हू बैनजी ।”

‘और नी हुयो ?’

“हुयो हो एक म्हारँ मू पैला, वो पाछो हुग्यो ।”

“बैना किन्ती है रँ ?”

“तीन ।” बीरँ गळवघ्यँ रोग रो जड, की ममझी वा ।

छोरो गयो अर बीरँ सार्गँ दूजा टावर ही । सुधा सोचती रही काई-ताळ “देखो, छोट-छोट टावरा रँ होठा पर किसीक मूगली गाळा है ? पण बै विचारा, किसा मा रँ पेट मू निकळता ही काढणी चालू करदँ है ? आपरँ घर अर आसँ-पामँ रँ वातावरण सू ही तो बै चुगँ है अर चुग-चुग वानँ उछाळँ है दूर-दूर । धीरँ-धीरँ बै, आपरँ भडार नँ इत्तो भरलँ है कँ वो जियँ जितँ नी खूटँ वानँ । गाळ वाल-सनाव सार्गँ नी जुडँ, आपानँ ईरो ध्यान पूरो राखणो है ।” वा उठ खडी हुई अर आपरँ काम मे लागगी ।

दूजँ दिन अदीतबार हो । मूरज अधघंटा अदात्र चढघो हुसी । बरस अट्टारँक रो एक परणी-पाती छोरी आई उदास-उदाम-सी । सुधा नै बोली, “बैनजी, म्हारी दादी घडी-पलक पडी है, काल पछँ एका ही रट लगा राखी है, अरे ! मरँ एकर घाँना रा दरसन करावो । तकलीफ तो आपनँ की हुसी, पण पधारण रो मँर करो तो भाईतपणो हुसी आपरो ।”

“काई नाव है घाई, दादी रो ?” सुधा बोली ।

“पैमी, आप कनँ, केई विरिया कागद लिखावण आया करती नी ।”

“हा-हा आया करती, जानगी, चाम लू हू आऊ हूँ ।”

सुधा तिरदारी नँ मार्गँ लँर टुरगी अर जा पूगी पैमा रँ शूषई । पीठो

एक बोदो-सो, बीरें बेटे री बहू पैला मू ही ढाल राख्यो हो, डोकरी री मचली करे । नीच बारण रो झूपडो कुच्योडो अर एक धूणी लाग्योडो । बीमे हो चूल्हो अर बीमे ही चाकी, बीमे ही तणी, अर बी मे ही भाची । मुधा ही बीमे अर च्यार टावर बी मे पैला मू और—मोडा घणां अर मडो गाकड़ी, मिरदारी तो नूपडे रै वारें ही बँठगी ।

गळतै-चुसतै डोका माकर जाग्या-जाग्या मू छणतो तावडो झूपडे रै मायल सत्तार नै देखे । मुधा रै एक पमवाडे चाकी, पण बीरें न हत्यो, न मामनी अर न बेवणी । घटता पूरा करे वा । बीरी अर डोकरी री अवस्था एकनी । दोनू हो उटोके, एक मैनत रै ललकतै हाथ नै अर दूसरी मौत रै अर्भ हाथ नै—फकं बस टत्तो ही ।

चूल्हे रै एक पमवाडे कड्डी री काना-बारी कूल्हडती, ऊपर बीरें एक ग्याडो ढकणो, बी माकर कूल्हडती रो बाळजो साफ दीखे, की कड्डी ही बी मे । एक पुराण घामलिये मे एक बासी सोगरो, अर की ठंडा टुकडा । च्यारू टावरा री जट बघ्योडो, मैला ही चारा हाथ-पग अर मैला ही बाग कुडता-काठिया । दोयां रै हाथां मे टुकडा, खडा ही खावे, अर दो, हांडी मू बामी खीचडो हाथा मू काड-काड दांता नीचे मिरकावे । खावे पणों गिटावे घोडो । अँठ-भोरा, अर अँटा हाथ, हाँटो रै खुले मूँडे बडे-निपळे । टावरा री ओ बोपार अग्ररे हो मुधा नै, टोकू ही वा पण रङगी—की सोच'र । इसे एक छोरे, कूल्हडती री ढकणी छेडे करनै, एक टुकडो खुबो-नियो कूल्हडती मे ही । अवे नी रहीग्यो मुधा मू, होठ बीरा मने ही फूट पट्या । वा बोनी, "टावरिया, दया काई करो हो रे ? एक जाग्या सावळ बँठ'र की जुगत मू तो जीमो ।" टावरां एकर देख्यो मुधा कानी संवता-गबता । मुधा रै सार रो सार, राग की अकरो करनी, टावरां री मा बोनी "बान कीने ही, दो मिट ही मुग मू मत वरण देया, अघघडी तो वारें बडो एकर ।"

टावर मुधा कानी देखता, झूपडे रै वारें हूग्या । हाडी अर कूल्हडती मू परे बिना ही पड़ी रही, बंदी तो नी बची वाने । हाँडो री ओझोंडी गुगण मुधा नै वू देवे ही, पण टैम देख'र अवार वा सूप ही ।

चूल्हे मे की घुगणो घुथे हो, राग बी मे बेवणी ताई भरी ही । राग

बीरी दो-तीन दिना सू नी निकळी लागी । कर्न ही छाणां रो कूडो पडघो हो । चीपिये री एक फाक पड़ी दीस ही आधी बार, आधी राख मे । न चकलो-बेलण अर न मिर्च-मसाला खातर कोई हटडी ही दीह्या बीन बठे । माटी री एक परात मे कीलो डौढेक अण ओसण्यो आटो पडघो दीस हो । चूल्हे री नाक लार, दो एक लस्सण रा गांठिया चिलकै हा । थळी रै मायले पासै पाच-सात छूतका कादा रा पमा नीचे आ-आ अणचाई उदामी भोग हा । एक घूणे मे कीले-कीले रा दो खाली डबलिमा डालडा रा, अर किरासणी तेल री एक सीसी दीखे हा ।

किरासी री बास झूपडे रै पून मे मिल-मिल, वर्ध ही, ढक्कण नी हो बी पर ई खातर ।

झूपडे रो काळजो ही मरमत मांगे हो अर बीरो माघो ही । सुधा रो बीमे दम ही घुटे हो अर मन ही । डोकरी री मचली मीचे, खखार रो ठीगळो पडघो हो । खखारा नै रेत अर राख ओढायोडी की नी, देख्या सुग उपजे । डोकरी रै बेटे री बहू, हाथ जोड'र खड़ी हुगी, बोली, "बडा भाग म्हारा, आप म्हारै झूपडे मे पगलिया किया । सामु दो दिना सू एक ही रट लगा राखी है, अरे, म्हारा प्राण जासी, मनै एकर बाईसा रा दरसण करावो । बी नी आसके तो मनै पटको बठे सेजा'र, एकर किया ही मिललू वासु दो मिट ।"

"मा-सा रो हेत की जादा ही है म्हारै पर", सुधा होळै-से बोली ।

बेटे री बहू धस्सिये रो लडखो छेडे करती बोली, "माजी आख्या खोलो, बाईसा पधारघा है !"

मीट लाग्योडी ही, आख्यां डोकरी नी खोली । सुधा बीरै माथे अर छाती पर हाथ फेरण लागी । बहू बोली, "बाईसा, ओ आप काई करो हो ?"

"क्यो ?"

सास बीनै खंचोजता आवे हा अर तांत बीरी की बोलती सुणीजे ही । सुधा बीरो नाड शाल राखी दो मिट तादे, मरी-मरी-सी क्षणी या बीनै ! बिच-बिच मे बीमार मीडवी-सी की उछळनी लागी । चंरे कानी देख्यो, नाक री डांडी की टेढापण पकडे ही । अण अनाणां सू अंदाजलिपो घासो-

भलो के मूवटो अबे दिन-दो दिन सू जादा टिकतो नी लाग्यो पीजर मे ।
बा बोली, "मा-सा, आख्या नी खोली ?"

'मा-सा', अ मीठा आखर डोकरी रो चेतना मे मुरखित हा कठे ही ।
बा मे बीरी श्रद्धा ही अर सम्मान हो बा खातर । अवार बे एकदम सू
ऊपर आयग्या । वण आख्या गोलदी पण धुवां बघे हो झुपड़े मे । मुघा रो
पैरो बा नी ओळख गकी पण कान जागता हा बीरा, होठ बीरा भते ही फूट
पडघा, "धुण बाईमा ?"

"हा मा-मा ।"

बुझनी बाट मे जाणे तेल रा टोरा पडग्या हुवे, एक सन्तोष बीरे सज्जा
पर बिघरग्यो । अर्धमिट रुकुर बा बोली, "पैरो नी दीछे ?"

बार छेडी मिरदारी बोली, "दीछे काई मिर, मायली छामा अर धुवे
रो गोठ. साजे-भोरें नै ही नी देखण दे । मंचली नै वारे काडोनी, आवे बे
सास, मोरा तो आवे की ?"

माची वारे काडली, डोकरी नै हिलाई ही नी । अबे थोडी, चांनिजर
हुई बा, आख्यां आली अर गदगद हुगी । धूजते कंठा सू बोली, "कित्ती
बिरियां दूध पायो मन, दवाई दी ।" धूजता-धूजता हाथ जोड दिया, होठ
ही बंद अर आंख्या ही, पण, आख्यां नी रकी, बह घाली । बा की ओर
बोनू ही, पण रोग बीरे बस रो नी हो ।

मुघा बोली, "मा-सा, न मै को पायो अर न को दियो धाने, धे धारो
ही घायो-पियो. छोडे बीने, अरे तो और की कानी ही मत हांको, न जम्बरन
सू जाश की सू ही बोतो, रामजी नै ही देखो, राम-राम ही बोतो, रामजी
धारे निरामे यहा है, झूठ नी बोनु ।"

बीरा होठ भळे काप्या, "रामजी धां मे ही है बाईमा, रामजी मे अबे
भळे बमर रही ? 'मा-मा'. बिना बनझाणो ही नी ? जायोहा ही नी
बनझाबे द्यां तो ?" फेर दो मिट नी बोनी जाणे शक्ति भटे भेडो करती
हुवे को बचन नै । 'बोली कित्ती गोबनी, कित्ती मीठी बाणी', बीरे होठा
पर भळे बिघरगी—झीपी अर धूजनी ।

मुघा मोर्षे ही, 'चेतना ईरी रोटी रो इत्ती भूयो नी ही, जित्ती जीभ
रे मिठता रो पण भी मित्यो ईने यो । जीभ रो सू नोर्षे मूखनी रही आ ।'

होठ भल्ले बुदबुदाया, "म्हारा कामद लिटया थें, हस, मुळकर, हू नी भूलू।" होळें-होळें आपरी ओढणकी रें पल्लें री छोटी-सो गाठ, घुजतें हाथ, मुघा कानी करदी। गाठ खुलवाणी चार्ब, मुघा समझणी। पुराणी काया, पुराणी ओढणी, लालसा री पुराणी ही गाठ, अर पुराणो ही तोट वीमे। बहू ही कने खडी ही, अर सिरदारी ही। अं देखें ही ध्यान सू। सिरदारी बोली, "बाई खजानो सूर है तने?"

मुघा खोलली गाठ धीरें-धीरें। चीनहो, मँलो अर उजास छणतो रिपियो हो एक। वा बाती, "रिपियो है मा-मा, काई करणो ईरो?"

"कामदा रो है थारें", हाथ री आगळी हिताई, बोली, 'ना मत किया।' बोली धीमी पण साफ ही। हाथ काळज पर राख'र जोड दिया वण प्राथेना री मुद्रा मे। ना किया करै मुघा? डोकरी री मुद्रा अर योजना ही, इसी ही अर इसो ही हो, मायलो मकळप वीरो।

मुघा बीरें निश्छळ अर उरिण चैरें कानो देखती सोचें ही कं ई रिपियं नै अण जी री पकड़ सू किती ऊंचाई पर राख्यो हुसी। चूल्है-चोकें री नित री माग काई ठा किती बिरिया ई आग नाची हुसी—उघाडी हुंर, पण अण बीसू आख ही नी मिलाई हुसी। एक-दो टैम लूखो अर असूणो छाणो मजूर है पण गाठ रें बाधी ई पराई रकम नै छेडन री बीरें मन मे ही नी आई हुसी। ई रो भेद ही तो वण नी दियो हुसी घर मे, कीन ही। भेद दिया कोई मांगलें अर नी देवें वा, तो मुश्किल, देवें तो ई छेद-डली टैम बो पाछो जुडनां मुश्किल।

वण सोच्यो हुसी, रिपियो ओ, हू खुद दे'र आस्यू, अगली रें हाथा मे, पण त्रिवसता कीरें सारें, न पगा साथ दियो अर न डील री अवस्था ही, पण लालसा ताजी-तकड़ी रही। सोच्यो हें तां, जे इतने पोती-पोतें रें हाथ भेजू अर वें बिचाळें ही भरपाई करलें तो किगीक हुवें? जी रो सकट तो जद ही कट जद धिरियाणी गूद ही आर्व अठे किया ही? गाठ घुळतो गई हुसी अर धिता ही, कं गाठ आ, जब जीवण रें साग ही जासी अणचुली-अणचूकी। मन रें भार रो फेर काई चारो? अवार वा वीगे आख्या आगे ही चुनगी, एकदम गागी हाथा नू तो बीरें आत्म-सन्तोष रो काई चारो? मेण-देण अर राग-द्वेष री अं गाठो गुनणां ही तो मुक्ति है। बीरी आख्या

बद अर चैरे पर एक उषळ-गुषळहीण मान्ति । बीने अठे बुलावण रो मूळ-मकगद वा ममज्ञगी ।

टोकरी खातर कदेई वा मोच्या करती कौ कागद लिखावण तो आ, जी कर जद ही आ वई अर पइना एक रा ही नौ परखावै, हुवै नही तो घैर कोई घान नौ. हुवै तो ही ई रे जी मे नौ आवै देवण री कदेई, नीयतवारी अर मीठी ठांगरी हे—पती नौ और काई-काई? बीरो एक अणरगो अर उपेशित चितगम अण उतार राख्यो हो आपरै मन में। पण आ सगळें कागदा ग एक दिन भेजा ही पइगा देसी इया, मँ-व्याज, ममम्मान अर बीरो बो रगहीण चितराम मतरगी वण नाचनी बीरी चेतना पर कदेई, इगी कल्पना वण मपनं मे ही नौ करी अर नौ करी पदेई कौ एक भूयँ-तिस्सौं उगळिया री चेतना आरगी महाजातरा पर टुरती बीरै आंधे-रोगलं अहं नै इसो नीरोग आरार देमी, जिके रो बिजापन कम, ऊमर अर असर लम्बा हुसी, वा आपरै एर वर्रं नै आपली वृत्तज्ञता रै भिवता मार्ग इया तोलसी ?

गिनियो वा पेमा रै बेटे रो वहु नै देवती थोनी, “लै टावरा नै बी भाडो मगवा दिए ईरो।”

‘पण बाईमा, छर-मात दिन हुग्या मखली भवतां आनं, पण ई रिपिये री इराने नौ आ थोडी ही सीध नौ दी।’

“किमी तो रकम ही आ, अर काई धाने ईरो मीध देवती विचारी, आपरै जगटे मू ही कुरमत नौ ही टनें तो? मीध धाने हूं देऊं बी, तावै आवै तो।”

‘जम्बर देवो बाईमा।’

‘मान-बटाऊ अबे बिदा हुवण मते गाग्यो मनें तो। दो-पाच पटा, नौ हुयें जिनं मूठ अर तुळ्ळी रो तात्रो पात्रो, मू-व्यायो-सो रवि हुवै तो गुट-बियो देशिजा। राम-राम आ तो पेना हा ये लेनिया, पे जे प्यार नाव गुणायो तो बविदागो हे धारो। आरो ही मनो अर धारो ही।’

मुधा अर गिरदारी दोनु मूक टोकरो आरं, टुरगी आपरै घान-मुकाम बनो। आरं हो मिट बाट ही, पेमा रो पोनी ही टुरगी बो गिनियो मे’र, पाप नून अर पधाय दाम तेन भेवण नै।

कै दोनु बिदा हो एव घर आपरर निरुळे ही, मुधा नै दो-भीन पुनिग-

आळा बैठा दोह्या वीरी चौकी पर । पांच-सात पावडा आगं एक संधी मेघवाळी मिलगी, बोली वा, “आज तो घन-घडी घन भाग, म्हारें वास में वाईसा रा पगलिमा ? की भली ही बापरसी ।”

मुघा बोली, “बास थारो-म्हारो एक ही है; पण ई कनलें घर मे आज पुलिसआळा किमा जम्योडा है ?”

“आपनै ठा ही नी ?” वा की अचभीजतो-सी बोली ।

“बिना वतायां काई ठा लागै, काई वास आवै है ईनै ?” सिरदारो बोली ।

कोटवाळी बोली, “काल आपरें अठै सू पढर आवता, दो टीगर उज्जलिया आपस मे, एक रै पाटी री लागगी, की लोही आयग्यो मार्य मे ।”

आ तस्वीर तो मुघा रै दिमाग मे एकदम ताजी ही, वा बिचाळै ही बोल पड़ी, “छोरा नधियो अर मोडियो ही तो हा ?”

“हा वाईसा, आपनै तो ठा है फेर ।”

“ठा तो छोरा री चड-भड रो है, पुलिस आवण रो थोड़ो ही ?”

“घरे आर मोडियो आपरी मा आगं रोयो । तीन छोरयां बिचाळै आ, एक ही लट है बीरै, ऊभी सूकं है वी पर, सुणतां ही बीने की बाकी नी वच्यो, पगा मे पगरखी ही नी घाली वण । नधियै नै वण घरे जांर कूट नाछ्यो दड़ादड़ । नधियै री मा की वेळा घर मे नी ही । वा आवता ही, त्रिकाळ सिङ्ग्या पैला तो दोना मे जीभ-जूड चाल्यो, चाल्यो काई समझदार मूं सुणीजै नी इसो । रात नै जिया ही नधियै रो बाप आमो, बीरी बहू बीनै सिलगांर चूचाड़ी करदियो । मोडियै री मा कनै थळ की सावळ है, रोटडी घापरं घावै है पण मिनखा रो बळ नी । दूसरी रै घर मे है तो भूख, पण मिनख अर नागाई दोना रो जोर । घरे आर मारगी, आ बासू कद सईज, वै ही दो जणां मोडियै री मा नै कूटग्या वीरै घरे आर । घाणों ई घातर आमो है, पग दोनां ही ढक राध्या है पण वाईसा टाबर दिन मे दग दफे सड़े अर दस दफे ही राजी हुवै, वारें बदळै माईत चडै तो बेजा ही है ।”

“पण स्कूल आगं उज्जय्ये टाबरां रो फंसलो, जितो स्कूल मे हुवै बिसो माईता कनै थोडो ही हुवै ? मोडियै नै तो में राजी कररं घरे भंज ही दियो हो, नधियै नै स्कूल आया और सें सेंवती ऊंचो-नीचो, फेर तारं काई रंयो ? वारें माईता बिना सोच्या हीं टीक नी कियो ।”

‘वै काई करै हा, धाणैआळा रा भाग जोर करै हा बाईसा ।’

‘‘जोर काई, निचोईज ज्यामी दोनू ही । दो टैम सावळ जीमै, बो घर तो लाई-ग्राई मे, अर लाई-ग्राई करै वो कर्जदार—आ हुसी दोना मे ।’’

‘‘इसै नू ही काई सरमो बाईसा, गवाह ही तो त्यार करणां पडसी । अबार तो वै बारै मगरा धापी दे-दे बारै पेट मे बड़ै—वारा बेटा बण-बण, पण टैम आया वै, बाप बणसी, पग-पग छेडै पइसो मागसी ।’’

सिरदारी बोली, ‘‘अणममज आर्ध मूं ही माड़ा, अै तो इसा पडसी दोनू कं फेर बरमा ही सुवा नी हुवै ।’’

वै चाल पडो आप-आपरै रस्तै ।

मोटियै री मा सागै सुधा री घणैड ही पण अजाण बा नधियै री मा सागै ही नी ही । सिध्या बजो व्चारेक, वण दोना नै ही बुलवाई । कचन अर करमा पैतां नू हीं हाजिर ही । सिरदारी तो गंठजोड़ै री गाठ-सी सिरकरै जात्रै ही कठै ही ?

अै मगळी वंठणी एक जाग्या । मुधा बा दोना नै बोली, ‘‘है ए धे म्याणी-गोनी ओ काई कियो ? इरै नतीज पर ही सोच्यो है की ? मुकदमां नो आरमी नै मागण-घावणजोगो करदैं । बीमे हारआळै री तो हार है ही, जीतआळै री ही हार है ।’’

वै दोनू घुपचाप गुणती रही, उदास-उदास ।

या भळै बोली, ‘‘दोनू ही धे त्रोध अर ममता रै बर्ज मे ही । त्रोध रै आरश नी हुवै अर ममता रै मायो । एक आंधो अर एक पागल । त्रोध रै बेम मे आरमी हत्या करतो ही नी मर्ये अर टूटती ममता में पागल हुतो ही । धे आधी नू धणी घा-बुटोई, पण छोरा री तो ओजू मुरुआत ही है, धारो धे हिन चावो ही का अहित ? मा हो धे, बां घातर अबार धारै मूं ऊपो बोई नी ।’’

‘‘बाया तो बाईसा हिन ही हा ।’’

‘अर काम करो वैरी नो नो ? हिन टंपा हुवै ? टाबरा री बात री जिनो टा मनै हो, पानै बोरो पाव-पानी ही नो, मनै पूछती धे, पण धारै इसो मशर कठै ? हं देखू ह या टाबरा नै, पाळै रै दिना मे धारै मरीर पर, पूरो कपडो नी हुवै, बंद मुट्टी, भेडा गोश अर बृहकुडीवता कोठरी रै गूंनै

मे उदासी ओढघा, किया टंग पूरो करै है ? पेट में बारै लूखो दळियो, ठंडो-बासी खीचडो, सेकयोडा बीज का लप, आधी-लप बोरिया हुवै । लापसी अर गुडराबडी खातर होळो-दियाळी नै उडीकै, बारो बासी दळियो अर ठडी रावडी ही धानै नी सुहावै । पुलिसआळा अर राज रा हाकम-मुसद्दी तो धारै नैडा हुया अर धारा आपरा अँ अबोध टावर धारै सू अळगा ?”

दोनू ही होळै-सै बोली, “अळगा किया बाईसा ?”

“थे पाच रिपिया कमाया है का कमास्यो वै तो धाणै-कचेडीआळा खीचलेसी, धारै पइसा सू वै दाहू पीसी, गुलछर्रा उडासी, सिनेमा देखसो, टैराजीन पैरसी, बाटा अर फ्लैरम रँ जूता में घूमसी—घर घातर माडी अर सांकळ खरीदसी, डया धारो आखो पसीनो तो वै चाटलेसी अर थे अर धारा टावर दळियै नै उडीकस्यो । करों धारै मन में आवै ज्यू पण छाती पर हाथ धर'र आ तो बतावो कै कियो थे माडो का आछो ? आछो कियो जद तो थे धारै घरे सिधावो दोनू ही, में बुलाई म्हारी भूल हुई, माफी देवो मर्न ।”

कचन अर करमा बोली, “आछै-माडै सार नी जाणै अँ काई गूगी है ?”

वै दोनू ही बोली, “आछो तो इनें किमा कहीजै बाईसा ?”

“नी कहीजै तो थे डूबर पाछो ही निकळगी समसलो, एक बात धानै और पूछू ह धारै घर री हूर; वा आ कै म्हारै टावर-टीकर है कोई ?”

“नी ।”

“म्हारै एक बाळक हुयो हो, बडी-बडी आंख्यां, तीयो नाक, चीओ लिताड, अर गोरो निछोर, पण दो दिन बाद ही रन्तो लियो बण । हाचळ म्हारा भरघा पण काळजो घाली, ही आवादी में पण उजाड लागै हों मर्न, बारै साव सूकी पण माय पूरी-री-पूरी डूबी ही उदासी में । न रोटी भावै अर न नौद ही आवै । मा तो हू बणगी पण विना टावर री । बाळक नै प्यार करण री एक लालसा फूटी ही म्हारै में, पण बाळक नी रैयो तो बाळक नै प्यार करण री म्हारी वा लालमा ही नी रही कार्र ?”

“वा तो की न की रैयो हीं चाईजै”, गगळी ही बोली ।

“कीं न की ही नी, वा ही बीसू सनगुणी जादा हुगी । वा अणभोगी लालसा हूँ नथियै अर मोडियै जिमें किर्न ही बाळका नै प्यार कर-वर पूरी

कलू तो धान की दोराई है ईमे ?”

‘दोराई ई में क्यों हुवे ?’ वं दीनू ही बोली ।

‘नी हुवे तो नथियो-मोटियो म्हारा धोड़ा घणा ही बेटा नी हुया ?’

‘हुया क्यों नी ?’

‘हुया तो ये म्हारे कर्न ब्यार घटा आवे, वारो मन की सोचनी ?’

‘धान ही है ।’

‘है जद मोटिये ने तो मे हसना-मुझकतो कर’र घरे भेज्यो ही, नथियो नी ही, स्कूल आया अगले दिन बीने ही की बुचकारती-डरावती, हू भर ये सगळा राजी हुंता, पण ये बिचाऊ ही. ओ महाभारत किया छेडदियो ?’

मोटिये री मा बोली, ‘गूग बडगी म्हारे मे ।’

नथिये री मा बोली ‘मे थोडो ही नी मोच्यो चाईगा ।’

मोटिये री मा कानी निजर करती बोली मुधा, ‘घारे एकलपो छोरो है. ताडेसर, मानी पण ओ घारे स्याणप मू मी साल नी जीमके, म्हारी स्याणप मू म्हारो छोरो जियो काई ?’

‘नी ।’

‘जीवन-मरण री आ सीना ही न्यारी है, आपणे हाथ में नी । आपणे हाथ में तो समझ है एव, के लडाई नी कर’र प्रेम करणो, गाळ नी बाड’र मोटो बोनपो, घररो नी दे’र, मदद करणी । म्हें सगळां री अवे एक ही सालगा है ।’

‘करमावो ।’

‘हए मूरत मे हरे धाने राजी देखी थावा ।’

‘तो अवे काई करणो, माय तो हरे सणा बंटी ।’

‘जान ही धाने-चौकी जा’र राजीनाथो वेग करदो थे, धाने बोई कितो ही निजगावे, कितो ही पाटी पडावे, ये जान ही मन देया ।’

‘अर हा ।’

‘बान पर अटल हो नी ?’

‘नटे बोगे गुर हूटो ।’

‘सबो मन हरे सगळो धारे माने धानम्या, फेर तो टीक है नी ?’

‘माईनपनीं है धारो ।’

बी दिन ही, रोज दाईं लुगायां पढण आई, नचिये अर मोडिये री मा ही बामे ही । पढाई री टैम जियां ही पूरी हुई, सुधा से नै बोली, “पाच-सात मिट थारा, हूं और लेणा चाऊ--देवो तो ?”

“पाच-सात ही क्यो, बेसी लेवो, थाने कुण नटे ?” खासी बोली बामे ।

“थारी मँरवानी ही नी, थारो विश्वास ही म्हारे अन्तस मे कम नी ।”

मिटभर रक'र बा बाने संवोधती बोली, “आखो दिन थे छटो, चूल्हे-चानी सू ही खसो, बाळक अर बूढे-बडेरा नै ही सभाळो अर सार-सभाळ की गाय टोघडिये री ही करो । रात नै खाणो-पीणो अर माजा-धोवो करो जिते रू-रू थाने कुळतो लखावतो हुसी, फेर तो मन अर सरीर दोनू ही गूदड़ा नीचे जावण नै उतावळा हू उठता हुसी, पण ये न मन री मुणो अर न सरीर री । म्हारे कैये नै ध्यान मे राख'र, दो घड़ी खातर ईने टुरपडो । ईसू थाने तो काई ठा कित्ती अमुविधा हुती हुसी, ये ही जाण सको हो, पण मन कित्तो बळ मिले बी सू, ये नी समझो ईने । हूं थारी पढाई-लिखाई री मात्रा सू इत्ती राजी नी, जित्ती थारी आवण री रुचि सू, थारे मेळ-मिलापसू । अबार ताईं था मे सू दसां, डाकघर मे खाता खोल लिया, कई और त्यार है, केई था मे सू मनियाडर-फार्म ही भरणा मोखगी, आपरो काम निकळे इसो कागद लिखणा ही, अँ हू, थारी कृपा ही समझू हू म्हारे पर ।

“आ जल्दी बात कियां आईसा, कृपा थारो'क म्हारी ?” कई बोली ।

“देखो म्हारा घर-बार-सँ छूटग्या, साब एकाकी हूं थाने ठा है, आसरो है तो थारो, अर जाण है तो थारे सागे । एक सालसा रो भार ऊंच'र अठे आ पूगी, थाने वाटण नै वो । ये जे बिल्कुत ही नी लेवो बीने, तो हू बीने ऊंचाए कित्तीक देर फिरूं ? अमूज मरूं हू तो । पण जियां-जियां थामे थारो आत्म-विश्वास जागे, ये अर थारा टाबर नीरोग दिम कानी देखो, थारी मुख-मुविधा मुळके, म्हारी लैरा मते ही ऊंचो उठे, आ थारी कृपा नी तो काई ? ये दो-दो, च्यार-च्यार टाबरा री मावां हो, अर हू म्हारे कने आवण-आळें तीमू-चाळीसू टाबरा री मा । कमाई बँ थाने मूर्प, वारी बटुवां पग थारा चापे, अर दोड-दोड काम थारे आगे करे, हूं तो थाने थारी मेवा करण लायक की करदू, मागू न थां मू अर न वामू, फेर ही थारी मा बणनी चाऊ तो थाने काई दोराई ?”

“कण कैयो दोराई रो धानै ?” वै बोली ।

“अर कृपा फेर किसी हूवै ? आज धारै वास मे थाणो आयो, मनै ठा लाग्यो, ठा धानै हो हुसो ?”

“हां है बाईम, ।”

“बडो भारी चिता हुई मनै, धाणै नै मोच'र नो, भोळै नथियै अर मोडियै नै मोच-सोच । अरे, बारै मूढै रा घास कोई खोस लेसी, बारै सरीर रा गामा कोई उतार लेसी, निरदोग है वै अर एक दात रोटी तोई इसा भाएला । आ सुग्री-नन्धो उदासी किया बोसो वै, हूं कांपगी, ईं घातर कै हूं बारै की नैडी हू । हू हों नो, मूण'र, सिरदारी मा ही उदास हुगी अर उदास हुगी कचन अर करमां ही । कोरै ही अबोध बाळवा पर तकलीफा रो आधी ऊमटै, अणसमझी रै दरियाव मे कीरो ही परवार हूवै तो धानै किमो की दुख नो हूवै ?”

“हूवै कपोनो याईमा, म्है मिनय नो ?”

“तो तकलीफ अर उदासी डकं ही मनै, मैं नथियै अर मोडियै रो मावा नै बुनाई । राजीवै रो अर्ज करी, वै मानगी, घोलो, मैं तकलीफ पांवती पर, आ भारी कृपा हुई क'नी ? हू मूकती बेन, बारी कृपा रो बिरथा पा, एक-दम मू पाघरमी । अबै मनै नोद हो सोरो आसी अर भूय ही मोठो लागसो । बारो रिण हूं किया उतारूं, जल्दी हो समझ नो आवै । बारो ईं कृपा-भुगन्ध नै हू, आर्यं गाव मे बिखेरणी चाऊ—घर-घर मे । बां दोना दाईं ही, धा पूज्यो रो विश्वास है मनै । हां अबै धे जायो भलां ही ।”

दुरगो वै, एक नुबं विश्वास गागं । कचन, करमां रै मामनै ही एक दिग गुतमी, नुबं विश्वास रो ।

राजोनारो तो बारो हुग्यो, पन हुग्यो बडो दोरो । बाधियां पोचा धानन मे पाछ नो रायो । ‘घूर'र अबै चाटोई है काई ? ईं मूढै रै घप्पा मुकन्धो रोक्क नै किया हो ? भोग टक्का नो गिन संमी मात्रनै रा धारा ? बल गल्लर तो भोग पर होमदै है ? आगं मारू धारो गवाह बनं बो धूट गावें ? अरे पदमा धे मत लगला, म्है लगला पन पगां तो पुनो रायो ?’

काईं ठा कित्ती-कित्ती सुणनी पडी नथियै अर मोडियै रै बापा नै ? पण बारी मावा अड'र बैठी तो इमी बैठी कै घोस्या ही नी सिरकै । धाण'वाळा ही बानै कम नी डराया, पण करमा ईं मे अगुवा रही अर लारै बीरै लुगाया रो एक लम्बो दळ, एकदम बजा-बजा'र परक्योडो । करमा धाण'दार नै बोली, "फाटया जद सीधीजै, रुस्या मन तो लडया वयों नी मेळीजै पण भानै बै की अर्चरा लागै, घरती सागै जुडो, थारो साख जमै, राजीपै गे लीका खीचता थारा हाथ जे की धूजता हुवै तो म्हे ओर ऊपर जावां ?"

राजीनात्रो हुयो, हुयो ही बडो चर्चित अर बाजतै ढोला ।

सुधा कचन-करमा नै बोली, "अवै एक काम और करो ।"

"बोली ?"

"आ दोना रो राजीनात्रो गाव रै होठा पर चौडो हु'र नाचणों चाई-जै ।"

करमा बोली, "जरूर नाचणों चाईजै बैनजी, पण रूपरेखा ही तो की बतास्यो जद हुसी नी ?"

"रूपरेखा काईं, सुजाव है, ध्यान मे ठूकै तो ?"

"ठूक्योडो ही है थे कहो ।"

"लुगाया रो एक आममभा हुवै, जादा सू जादा लुगाया पूगै बडै । इक्कीस-इक्कीस रिपिया, का की जादा-कम धे देख लैया, एक-एक डग रो ओढणो अर एक-एक फूला रो माळा सू सम्मान हुवै बारो । मार्गै जे माईक रो प्रबन्ध हुसकै तो सोने मे मुगन्ध ।"

कचन बोली, "बडो धटिया गोंच्यो बैनजी, द्रं मे आरो ही नी, आयें गाव रो हित है । गाव मे कळह कम पाघरसां, घास कर हरिजनो मे तो, मार्गै गाव मे मरीबी रा पण ही ओछा हुमी ।"

करमा बोली, "पण बैनजी, द्रं मे अमली दौड-धूष तो थारी है, सागै थारो ही तो की हुणो चाईजै ?"

"द्रं स्वागत-समारोह नै देग म्हारो हुणों चाईजै जीसरो ।"

"पण की हुवै तो ईंमे हजं काईं है बैनजी ?"

"भोळी रचना, ओ हुसी बो कीरो हुमी ? 'म्हारै' रै न्यारै छूटै सू बाध'र, म्हारी रोटी अर नीद विदा बरुहो काईं ?"

“तो सिरदारो बडिया रो तो की करा ?”

“क्यो वा कोई अन्तरिक्ष मे जा'र आई है ?”

“अन्तरिक्ष मू ही बेसी ?”

“किया ?”

“ऊमर, आख्या, अर माघो तीनू ही तीजं स्टेज मे है वीरा, अबे वण पाटी-यन्त्रो से'र पञ्चरत्नो टावरा सार्गे आपरी एक नुई जातरा मुरु करी है, बीरो बाळजो काट्टे, नी बघाणो चाईजे आपाने ?”

“निश्चै ही आ ममज्ञ धारी टाळवी है, गाव रे हित सार्गे जुडनी ।”

कचन बोली, “ओ स्वागत-मम्मान बैनजी, कोई समसै तो आगे नी, गाव रो है ओ तो, गौरव घारो कम, गाद रो जादा बघसी ईसू ।”

मुधा बी रे मू कानो देखती गदगद हुगी एकर । सोचै ही आ प्रतिभा जम्पर घमकमी बंगी ही, दीन-दुनियां रे आर्धे खूला मे । वा बोली, “पण ई सार्गे धाने ही तो घौड-धूप मोकळी करणी पडगी ।”

“फरमावो, नी क्यो करम्या ?”

“पैमी दौड-धूप तो आ करगे कं सभापति पद घातर मोघो, दीपती अर अनुभव रे आंग पनी बोई तपसण —आम चैनना सार्गे जुडती, दूनरी एक विनेम-मैमान रो जाग्या, च्यार आंठ्या री धिरियाणी फोई, दे अर देख'र राजो हुये इसी ।”

“बै म्हे टाई करलेस्या ।”

“नी-नी करतां काईमै-नीनमै रो थळ गी चाईजमी ईमे ?”

वरमा बोली, “ओ भार श्हार पर नाघो थे ।”

“मोक-हित मे देवन रो बोट आवे बीने ही तो मिर पर, नी आवे तो साग'र मू डीतो करण रो बोट आगाने नी—बिन्तुन ही नी ।”

“टोक है, समझगी म्हे ।”

“पण ई मोई फोट बी धाने घोवना पडगी, एर नै मगळी मू पैला, अर एर नै मगळी मू पळ ।”

“बाई ?”

‘आ ममा बुतावन रो जहेस्य बाई, या दोनां मुगायां गी ममज्ञ री मारीज, मिरदारी रो बाल अर बीरो आज अर गाव नै आ मू रिग ? छेकड

जावता, सगळी नै धनवाद ।”

“पण म्हे तो आज ताई कदेई, डया अर इत्ती बडी भीड मे बीली ही नी, अडंगो ओ तावै नी आयो जद हसड की रो हुसी ?”

“हंसड हुसी म्हारी पण ये तो इमी बोलस्यो कै सभा सगळी देवळी हुई थारै कानी देखसी अर लोन हुई मुणसी ।”

“आ किया, वैनजी ?”

“वद कोटडी आपणी सभा-मडप, हू सभा अर ये वक्ता, फेर ताकडी मे काण क्यो ?”

“की ये ही तो बोलोला ?”

“हू की नी बोलू, म्हारी जीभ ये हो, हू तो सभा रो सारती लैण मे बैठी मुणस्यू, जीवती रीन चालती देखस्यू ।”

दो दिना बाद सभा हुगी, वा तीना रो सम्मान हुग्यो—बाजती ताळघा मे । रूपा गोदारी सभापति अर जंबाला वैद विसेस-मैमान—ऊमर मे बण आधी सदी ओढ राखी हे । खाली पढी-लिखी ही नी, समै रै सागै टुरण-आळी ही, वा बोली, “गाव रै लम्बै-जूनै इतियास मे आ पैली सभा हुई हे—आपरै जात रो । ई देखता हू सोचू हू, कै आपणे आज रै गाव रो बारैमासी पतझड अर्ब घणा दिन नी ठैरै, बी जाग्या वसन्त थापरसी बँगो ही ।”

पत्रं-पुणं रो भार अण उठायो, अर ऊपर-सापर रो सगळो करमा ।

आ दोना लुगायां नै इसी मूई मोख कण दी हे, जिकै सू लाय रा पतगा बणता बारा घर बचग्या, लखदाद बानै अर बारै मात-पिता नै । “मुक्दमा-बाजी थापा टीबी हे, वा धीरै-धीरै परवार रो चामडी चाट'र, बीनै खोखलो करदै ।”

नथियै अर मोडियै री मावा खुमी में ही नी मावै ही । इसै माण रो कल्पना वै ही नी, बारै माय री कोई ही नी करसकै ही कदेई । मूझतै वगै री पगरछ्या री ठोड खडो हवणआळी वै गरीबण्या, गाव रो अणमावनी भीड मे ट्यां फूलमाळवा पैरमी, ट्यां हसता अर मुरगा ओडणा ओडसी, इतै लम्बै मोड नै बँगो-सो वै किया सावटे ? बारै साय री एक लम्बी सैण बानै देखै ही अर मूझती भीड सोचै ही, “देखो, मेपवाळघां रा भाग ?”

सिरदागे रा तो पग ही पूरा नी टिकै हा । सोचै ही देख काई बुडापो

मुधारघो है अण ? बीरी आंख्या ही भरी ही अर चेतना ही । भगणा सगळी सोचै ही, 'देखो दादी-सा रो दिन घिरघो है ?'

घरे आ'र, सुधा नै बा भर्नाई आवाज मे बोली, "बाई ।' सो बिरिया माग्या ही कोई बोदो पूर गैण मे देंवतो दोरो हुंतो मर्न, बीन लडा-लडा'र, काबळो, इक्कीस रिपिया, गळ मे मँकती माळा, रामायण री आ मोटी पोथी, बीरै धरण खातर आ रँळ अर म्हारै वँठण नै ओ ऊनी आसण । सन्तोसी-माता घर मे काई तँ तो काळजै ही ला वँठाई म्हारै ।" आख्यां नजळ ही बीरी—ई सम्मान नै चेतँ कर-कर ।

सुधा बोली, 'मा, ओ माण थारो नी ?'

बा बोली नी, पण सोच्यो 'तो' ? अर सुधा सामी देखती रही अण-समझ-मी ।

मुधा भळे बोली, "ओ माण है थारी लगन रो ।"

"हा बाई ।"

"बा थारै मे सूती पड़ी ही जुगा सू, वेअर्थी हुयोड़ी, तू बीन जगावण मे सचेष्ट हुगी ।"

"तू जाणै बाई ।"

"पण ई माण नै तू उगावै जद स्वाद है ईरो ।"

"कियां उगाळं, बता तू ?"

"इसी ही लगन तू थारै आगै बँठतै बाळका मे जगावै जद हुवै, थारै मी अघेड़ां मे ही की ऊपर आवै लगन बा—चेष्टा कर इसी तू ।"

"म्हारी तरफ सू की कमी नी राखू ।"

"पण मा तू मान-अपमान अर हरख-सोच रँ पचडै मे मत पड, बानै राखण अर रूखाळन नै आपां कनै कठै टैम अर कठै जाग्यां, वै तो तू दीन-बधु नै सूप अर तू रह अछूती वा सू ।"

"भूल्योड़ा ही है बाई, पण जीवड़ो इसी ही बळै है नान्हों अर अघ-पाव रो ठाव" अर फेर बा सोचै है कै जे—म्हारो रं-रं भोळै अर भूखँ टाबरां घातर खचँ हुंतो सेस हुवै, जीवण री मौज अर बीरो माण जद ही है ।"

कचन-करमा केई वूढी-बडेरी सेठाण्या कने गई, विसेस-मैमान रे आसण पर बैठावण खातर । एक बोली, “भंगणा अर ढँढण्या नै फूला री माळावा, क्यो और लुगायां खूटगी गाव मे ? क्यो मार्य मूं चालो ए ?”

दूसरो बोली, “कळजुग रा चाळा देखो थे, हूं चालू बठै, हियो गाव गयोडो है म्हारो ।”

तीजी आंसू ही ऊपर कर बोली, “बाब्या, थाने दोस नी, खंडे री पुन्याई खूटगी ।’

कचन बोली, “दादी-मा, भंगी कोई, तळाव मे डूवत वामण-बाणिये रे टावर नै जे काढले तो बीरो माण करणो चाईजे का नी ? माण तो काम रो हुवे है, मिनख रो नी ।”

“बाई, माथो खर्च करण री फुरसत म्हारे कने नी, थाने आछी सागे ज्यु करो, हू बीने मू करू, घर मे मने रेणो नी ?”

कचन-करमा सम्मानित तो नी हुई, पण ई भागा-दौड़ मे वारी जाण अर अपणायत रो दायरो झूपडी मू हेली ताई हुग्यो ।

सभा री आ विसेसता रही के अ तीनू लुगाया, कागद मे कोरी-सी देखती ही न रही, दो-दो मिट की बोली । माण ले 'र, कृतज्ञता नै ही पाछो प्रकामी ।

लारले महीना जिके होटां पर मुधा खातर बिस उफण्या करतो बा ही होटां पर आज इमो उठळै ही, पण सरपच अर बीरा साथी भादवे रे आक-सा, बरसत मे ही पीळीजे हा ।

10

दिन री वारे नैडी हुई हुसी, मुधा कोटडी मे बैठी की लिखे ही । जोर-जोर मू बोलती सिग्दारी री आयाज बीरे काना सूं अचाणचरी टकराई । या वारे आई तो देखे है के एक हाथ मू बण, एक बकरी रो भान भान राम्यो है अर दूजे हाथ मू एक छोरी री । बकरी रह-रह बोवाट करे अर

सागँ कान छुडावण री चेप्टा ही । छोरी ही ऊं-ऊं करती बसवसीजँ पण कान छुडावण री कोई चेप्टा नी करै । आठ-नव बरसा री है बा । एक डोकरी खड़ी है—सिरदारी आगँ हाथ जोडचा । दण देख्यो, 'ओ कार्द तमासो है ? ठा तो करू,' बा ही आ पूगी अठै । डोकरी नानूडी नायकण ही अर छोरी बीरी पोती ।

नानू बोली, "सिरदारी बाई, बकरी किसी ममझै है कै ओ नान्हो पीपळ चरणो चाईजँ का नही, जिनावर ही तो ठैरी, मारलियो मूढो, कमूर माफ करो, आगँ सारू ध्यान राखम्यु ।"

"पण बकरी नै कूटी कठै, ज्ञाली ही तो है, बा इं खातर कै धणी रे की आख हुवै अर छोरी रो ही कान ही तो ज्ञाल्यो है, खँच्यो कठै ?"

"बकरी तो बेसमझ है ही, इसी ही छोरी नै ममझो ।"

"गळत बात है आ, छोरी नै बिसी ही किया समझू ? बिसी ही हुवै जद बकरी सागँ आक अर बोरटी तो, नी चरै बा ?"

नानू सिरदारी सामो निरुत्तर-सी देखण लागगी ।

सिरदारी भळे बोली, "हियो थारो ऊधो हुम्यो, छोरी री भीड बोलता विचार ही नी आवै तनै, बरस ले'र धूड में ही नाख्या ? बकरी ऊभी उजाड करै अर छोरी बँठी गड्डा खेलै—टीगरघा सागँ, फेर ही बीनै की मत कहो; इसी दोरी लागै तो बकरी लारै तनै खुद आणो हो । बकरी जिसी ही टीगरी है तो, बीनै क्यों करी बकरी लारै ?"

मुघा ही बोली, "पीपळ अर काई दूजा पेड, वाता सू थोडा ही लागै है मा-सा ? ठा है थानै कित्ता दिन हुया है आ, बाळ-बिरवां री खेवट करता मा नै ? इसी चिंता अर लगन, अबार आम लुगाई आपरै टावरां री ही नी राखै ।"

नानू सहमगी, बोली, "खेवट तो करै ही है बाईसा—टावरा सू ही बेसी, धन है आनै ।"

सिरदारी बोली, "इसी रीस आवै है तो सुणलै कान खोल'र, बकरी नै हूँ पालम्यु फाटक, दो-च्यार रिपिधा रो जूत लाग्या बिना तनै चेतो नी हुवै ।"

डोकरी बड़ी नरमाई सू बोली, "माईता, म्हारै कँण रो मृतदव हो,

छोरी है बेसमझ ही, पण है थारी, कूटो-मारो हूं की नी बोलू। आज-आज गई करो तो, भाईतपणो है थारो, आगे सारू हू चेतो राखस्यू।”

“चेतो तू धूड़ राखसी, आ बकरी परसू आई, नीमां रो नुक्साण करगी, बी दिन छोरी नै समझा 'र बात नै आई-गई करदी मैं, पण अण देख्यो बड़ी पोल है अठै तो, आज सागण सेरी भळे आ दूकी आ तो। अब ईनं डराऊं का डरू ईं सू?”

“डरावो नी काई करो? पण, आज-आज ई नै एकर भळे वक्तो म्हारै कर्ण सू, आइन्दै चूक हुवै तो म्हारो माथो अर थारी जूती।”

छाटी नाख्या पछै जगत बयारी, सिरदारी रो पारो एकदम दळग्यो। छोरी अर बकरी दोनू ही छोड़दी बण। गई बै।

सिरदारी सुधा नै पीपळ दिखावती बोली, “देखी बाई, दोडी-दोडी जितै, दो पत्ता रो नास तो कर ही दियो बकरडी। कानी डाळी किसोव कोझी लागै? जी तो घणो ही बळै पण, किसो मास बाढीजं कीरो ही?”

“आगे सारू बा तो नी आवै, पण दूजै रो काई भरोतो? फळतै रो ध्यान तो अत-पत आपानै ही राखणो पड़सी।”

“राखस्या नी काई जोर करस्या बाई?” अर बा दूजै पेडां री देणभाळ में लागी। आ पेडा घातर बण केया सागै माथो लगालियो अर ओजू ही त्मार बंटी है लगावण नै। छोटै छोरं नै तो बा पालती ही दीसै, “छोरं, पीपळा रै कण ही हाथ लगायो तो हू कूटै बिना नी छोड़तो।” तो ही एक दिन दो छोरा दो पत्ता तोड लिया पीपाड़ी बणावण पातर। सगळै छोरा सामा बांरा कान धेंच्या बण।

सर्दी में टाट अर खाइया ओढाए राखै बानै। छोटा-छोटा जाळीदार गट्टा है बारै तो ही काटा भळे लगादिया बारै बारकर। एकर कण ही कह दियो, ‘भुवासा ऊचा आवता पीपळ, हवा सागै नाचता-मूमना बडा सुहावणा लागै।’ चिट्ठी बा, बोली, ‘बयारा सागै है, घुषकारो नाग, ऊगता नै ही नारंवी निजर सू।’ घुषकारो घलालियो। अबार आस्मी री ताळ नैडा ऊंचा है बै।

सुधा बोली, “मा, केई पेड़ अंसकै और धरा आगे ही सगवावा?”

“सगवा भला ही बाई सेवट हुणी मुश्किल है।”

“लगाया पछ करसी ही कोई तो ?”

“तो लगवा ।”

“दो-एक पेड़ आपणै ही और लगवा ?”

“पेड़ ही लगवा अर लोगा साथै मायो ही ? म्हारी तो इत्ती सरधानी
माई ।”

“इया मा, जुवा रै डर सू, गाभा थोडा ही नाखीजै है ?”

“तो जरूर लगा । पग-पीटी करस्या तावै आसी जिसो ।”

टाबरा री छुट्टी हुता ही, सिरदारी कोटड़ी में आ'र एक मंचली पर
आडी हुगी । लार री लार, सुधा ही आ पूनी । वा बोली “मा, आज आ,
बेटमी सेज किया पकडी ?”

“काई बताऊं बाई, कमर मे जी निकळै है ।”

“आज ही निकळै है का दिन हुग्या निकळता ?”

“थोड़ी-घणो तो केई विरिया दूखै है, पण हूं धारूं नही, सोचलू पडी
दूखै है, आपणैही मिटसी । आज दोपारै पछै, बैठी तो रही, पण रही छाती
रै जोर सू ही ।”

“छुट्टी रै दिन, इत्ती सायत ही दूखतो हुसी ?”

“नी दूखै ।”

“ईरो मोटो कारण एक समझ मे आयो म्हारै, बताऊ ?”

“माईताळी करसी ।”

“काठ, पत्थर अर लोह जिसे ठोस आसण पर लगातार बैठणो जवान
रै हक मे ही नी पडै तो तू तो की बूढ़ो है । बियां बैठघा पेट री वायु
रुक'र गैस अर पेट री गड़बड़ सुरू करदै । लम्बी ताल ताई सीधो बैठण
रो अभ्यास आपानै नही, आ तू जाणै है ?”

“हा ।”

“अर झुक 'र बैठणै मे बड़ी घाटो ।”

“घाटो किमा, बाई ?”

“छाती, रीढ़ अर कमर धीरै-धीरै सै रोगला हुवै ईं सू ।”

“तो एक जग्यां टिक'र बैठघा बिना, टाबरा नै पढ़ाईजै किया ?”

“नही बैठघा, पढ़ाईजै तो और ही आछा ।”

“किया ?”

“छोरा कनै सू बचाव की तो एक-एक नै बचावती आगे बध । निघाव की तो बोलती चाल अर देखती चाल टाबरा कानी । छोरा मर्त लिखता हुवे बतयोडो की तो ही क्लास में फिरती-घरती रह, पाटी खाली है की री ही तो घाळई दो आक बी पर । ई सू पग, पेट अर कमर से नीरोन रंगी थारा, हां, दो-च्यार दिन पैला-पैला अळकत तो की लखासी, फेर आशत पडो 'र पडो । बिया पाच-दस मिट बैठे तो सौगन थोड़ी ही टूट है थारी, बैठ भला ही जीसोरें सू ।”

“आ तरकीब तो ठीक बताई तै, इया ही करसू अबे ।”

“सागे टाबरा नै ही सिखा सीधो बैठणो ।”

“जरूर बाई, वां खातर तो खेल ही है सगळो ।”

अर इत्तै कण ही आवाज दी “सिरदारी भुवाजी मायं है काई ?”

मुधा बोली “मा कोई हलकारो आयो थीसै है, मुणीज्यो' क नी ?”

“नी तो ।”

सान्तड़ी थळी रै वारनै पामं वंठी, अखवार काढे ही आख्यां माकर, आवाज मुणतां ही पून घीसती, आवाज री दिस में बधगी । ईनै देखतां ही आदमी बोल्यो, “बाई, भुवाजी माय है ?”

“हां”, सान्तड़ी बोली ।

“बारै भेजोनो एकर, कहदेया गोकळियो अर बीरी बहू आया है ।”

सान्तड़ी जिया ही केयो सिरदारी नै, वा कमर पर हाथ दे'र उठती बरामदे कानी टुरपडो, बोली, “पेमी रो बेटो है बाई ।”

दो दिना पैला, मुधा अर सिरदारी इरै घरे गई ही बतळावण बरग नै । केई लुगाया बी वेळा आई ही पेमा नै 'हर रो हिडोळो' अर हरजत गावती । अवार आरो आणो मुण्यो तो बीरी जिजासा ही की जागगी वा ही मा रै लारोलार बरामदे कानी टुरपडो ।

सिरदारी नै देखता ही, धणी-बहू दोनू गडा हुग्या एकर । वा बोली, “बैठ भाई बैठ”, बारै बैठना ही सिरदारी भळे बोली, “गोकळ, ईं तैयै नो भाई, पेमी बडो भागण ही । एक ही तो तू बेटो बीरै, बहू-बेटै रै हाथां में गई बाना करती-करती, न भोगी न दुय पाई, इसी सोरी मौत पुन बिना

थोड़ी ही मिलै है? खेती आपरी जिसी खड़ी करी, बिसी री बिसी छोडगी हरी भरी, पान ही भळे खांडो नी हुयो। हीड़ो आछो करदियो थे, बीरै आसीस सू फूलस्थो-फळस्थो भाई।”

“एक फजं तो म्हारै सू तावै आयो जिसो बजादियो भुवासा, पण पहाड-सो मोटो एक ओजू ही बाकी पड़घो है। गाव मे की आस लागी, बठै-बठै सगळै फिर लियो, पण सगळा हाय शडका दिया। लाज अबै आपरै हाय मे है। फामी सू कढावो कियां ही, गुण जोळ जितं नी भूलू—पइसा देस्यू दूध मे धो-धो।”

बीरी बहू ही बोली, “भुवासा, पराए माडे मे बैठी हू, झूठ वोलू तो खोटा भुगतू। सगळै, कोरो उत्तर मिल्यां पछै, तीन दिन हुग्या, न रात नै नोद आवै, अर न स्वादसर टुकडो ही कठा उतरै। खाली एक ही चिंता है कं, फामी आ किया निकळै, अर नाक गवाडी रो किया राखीजै?”

सिरदारी बोली, “दाम तो ही कह, हूं समझगी थारी बात पण देख, न तो म्हारै कनं अगाणै-पगाणै अणूतो रकम कोई, न अबै कीरै ही लारै फिरण री पोख अर न पैला दाई कीरो ही गळो पकडन रो पुरसाथं।”

“महीनै रा महीनै, ब्याज रा पइसा घरे आ'र पुगाऊ तो असल री कैया, नी तो कैया फिरती लाई है मावड़ती मनै।”

“देख, जाश लम्बी-चौडी हूं नी जाणू, कनं की अडाणगत है तो बोल?”

“अडाणगत मे तो म्हारी काया है भुवाजी, बा राखलो भला ही?”

“काया तो म्हारली ही नी सभै म्हारै सू; कदेई कमर जरू तो कदेई गोडा, धारनी भळै राखलू, चेतो गाव गयोड़ो है म्हारो?”

“भुवासा—” बीनै पूरी बोलण ही नी दी, सिरदारी बोली, “भुवासा ही भुवाना है, आपणै तो साची कैणों अर सुखी रैणों, बिना अडाण हू तो रातो पाई ही नो दू”, कह'र या टुरगी, आपरी कोटड़ी कानी।

मुधा आरी बात बडै ध्यान मू मुणं ही, पण इत्ती ताळ बण बारी बात बिचाळै होठ आपरा नी खोल्या। अबै बोली चा, “गोकळ री बहू, थारी बात नै की हूं ही समझो चाळं।”

“बाईसा, माजी रामसरण हुग्या, आपनै ठा ही है?”

“हां।”

“मरी तो माजी मरी है, लारै म्हे सगळा तो जीवता हा ?”

“हां ।”

“भाई-विरादरी मे सिर ऊचो कर'र बसणो चावां का नी ?”

“हां ।”

“तो बारै लारै लप गूधरी खिडावा का नही ?”

“सावळ समझा ?”

“की औसर करणो चावा, बारै लारै ।”

“औसर मे काई करू चावो ?”

“सीरो-चिणा का बूदी-पकौड़ी ।”

“आमे किताक रिपिया लागं अंदाज ?”

“डोढ हजार नैड़ा तो सझझो ही ।”

“ढाई-तीन रिपिया सैकडै सू, डोढ हजार रो चाळीस-पँताळीस तो ब्याज ही हुग्यो महीनै रो महीनै ।”

“हुवै बो तो देणों ही पड़े ।”

“अर औसर नी करो तो ?

“तो नाक जावै ।”

“नाक जावै इसो काई थे महाखोटो काम करदियो ?”

“माईतां लारै धूड़ उडै जद, नाक नै जाग्या कठै ?”

“की कर्नै ही जे साव ही सरतर नी हुवै तो ?”

“और नही तो घर तो हुवै ही ।”

“औमर खातर, बेचदो बीनै ही ?”

“और कोई उपाव नही तो बेचणों ही पड़े ।”

“घारै पर ही लै, से पछै बर्मा कठै ?”

“गोरवै की सरकी नीचै ।”

“मैसी-साटियां दाई ?”

“टैम तो कियां ही काटणी ही पड़े ।”

“बमूर तो थे करो जाण-बूझ'र अर भोगे अवोध टावर ? क्यों दादी इसो काई थाप दे'र गई है बाने का मा-बाप पागल है वारा ? हू, इनै औसर रै पय मे नही, छोड ओ विचार ।”

“बाईसा, आपनै तो इसँ मौकै की मदद करणी चाईजै म्हारी ।”

“मदद आ ही है कै, हँ थारी ईं भुवासा नै हाथ जोड'र अर्ज करस्युं कै थानै वा ईं लेखँ नुवो पइसो ही नी दे ।”

“बाईसा, आप सन्तोसी-माता रा अवतार, आपरै मूडँ आ घात ओपै ?”

“तो आ ओपै म्हारै मूडँ कै थे टापरो बेच'र, टैम काटो काजरा दाई की सरकी नीचै ? आ ओपै है म्हारै मूडँ कै थे थारै अबोध टाबरा रै पेटा पर लाता मारो आधा हु'र ? काई ईं खातर ही जण्य़ा हा वानै ? काई ईं खातर ही घाळी बजई ही वा खातर ?”

“तो आप फरमावो काई करां ? करणो तो तावै नी आवै अर नी किया नाक जावै ?” वा बडी उदासी सू बोली ।

“कित्ता दिन घटै है औसर आडा ?”

“च्यार दिन ।”

“काल सिझ्या हँ आऊ हँ थारै घर कानी, फेर कैस्यु थानै की ।”

“ठीक ।” अर गया वै घणी-बहू दोनू ।

मुघा, मा कनै आई, बोली, “मा, ओजू ही समझी नही तू, औसर खातर रिपिया देवै अडाणै पर ? मूळ काटै अर पत्ता सीचै ?”

“आज ताईं तो दिया बाई—तावै आया ज्यू, अवै नी दू थारै जचगी तो ।”

“मा, दिन ऊगता ही जिकै रा भूखा टाबर, हाडी खुरच-खुरच'र खावै, पाळँ मे ही जिका रा डील अघ उघाड़ा, ओडण नै पूरा गूदड नही, चूल्है आगँ जिकै रै चकळो-चोपियो नही, न चाकी-चौको, एक आधँ झूपडै मे काईं ठा किया रात काटै, वानै खाली टंक, दो टंकरै खटपटै खातर डौढ हजार रिपिया ? वानै अंधविश्वास रै अजगर सू बचाणा । कुअँ मे नही नाखणा, समझो ।”

लुगाया निझ्या, रोज आवै ज्यू ही आई, घाई-घूडी अर नथियै-मोडियै री मा समेत । छोटी-मोटी सँ, चाळीस नैडी हुवैली, औसत सू पाच-सात जादा ही । प्रार्थना हुगी, सँ बँठगी । मुघा बोली, “तो करां काम सुहू ?”

“हा करो बाईसा”, मोकळी ही आवाजां एकै सागँ निकळी ।

“आज तो एक सवाल पूछण री जी मे है ?”

“जरूर पूछो।”

“ठा करू धारो, मूती होक जागती ?”

“करो नही क्यों ?”

“तो सुणो ध्यान सू फेर। समझलो आपण मं ही एक परवार है। जीव बीमे आठ-नव पण झूपडो एक ही। वो ही बूढो अर बेमारं। घणी-बहू दो कमाऊ। दिनभर खटै फेर ही न पूरो पेट भराई पार पडे, अर न पूरो पूर-पल्लो ही सरै। कोई-कोई टैम तं चूल्हो दिनभर मे एकर ही जगै। परवार री बूढी मालकण मरगी। बेटो-बहू औसर करणो चावै, डौड हजार नैडा खचं करैर। पण गाव मे वानै की हालै ही, न रकम ही उधार मिलै अर न चीज-वस्त ही। झूपडै रा बानै डौड हजार कोई दै नही, अर बाया बारी अडाणै कोई लै नही। फेर ही औसर करण री चिंता में, घणी-बहू नै न पूरी नीद आवै अर न सावळ रोटी भावै, दिन सूकै, रात नै बीसू जादा। सुणली बात ?”

“हा।” सगळी आवाजा भेळी हुई फूटी।

“तो बतावो ओ परवार मुख रा सास कियो लेवै ? है उपाव कोई ?”

एक जणी बोली, “औसर करै ही नही तो ?”

मुधा बोली, “नही कियो न भाईपो ही राजी हुयो अर न वै घणी-बहू ही, सोरा-सास कठै आया बानै ?” सगळी ही मौन हुगी।

भळे बोली मुधा, “और सोचो, साप ही मरै अर लाठी ही नो टूटे, मनै भरौसो है, जागती हो थे।”

फेर बोली एक जणी, “औसर वारै दिना में ही हुणों जरूरी थोडो हो है ? आगं हाथ फुरै कदेई, जद ही सही।”

“कद हाथ फुरै अर कद औसर हुवै ? ईमू न भाईपै रो चक-बक ही रुकै अर न घणी बहू रो असतोस हो।” मौन और गैरो हुग्यो, पण जादा देर नही।

घाई काईताळ सू सोचै हो, वा बोली, “जवाब दंरो हू बताऊ बाईसा ?”

“बता, आर्घं नै तो दो आख्यां हो चाईजै।”

“औगर करै तो भाईपै नै जिमावण घातर ही है नो ?”

“हा ।”

“भाईपै नै रसोई कित्ती कराणी, आ तँ भी पांच भाई मिल'र ही करै—अगलै रँ घरे बैठ'र ?”

“हा ।”

“वै सगळा जे दिना पैला ही, हाथ जोड़'र, अगलै रँ काना मे घालदै कै बीरा म्हारा, धारै हर दुख-दर्द मे म्हे सगळा थारँ सगँ पण औसर मे बिल्कुल ही नही । अगलो अर्ज करँ कै औसर आजताई तो ये सगळा रँ जोम्या, खाली म्हारी वेळा ही इनकार, किया ? उत्तर मिलै कै ईरो आज ताई रो सगळो नफो-नुबसाण म्हे फळावट कर'र आना-पाई समेत देख लियो, अबँ सूझती आख्या, न तो म्हे कुर्व मे पडा, अर बस-पडता न म्हारै की भाई नै ही पडन दा ।”

मुधा रँ उडोकतै नैरँ पर, उल्लास लैरीजग्यो एकर, वा बोली, “क्यों माया-बाया, ओ जबाब धानँ, जचतो अर जागतो लाग्यो'क नी ?”

“एकदम फिटोफिट”, रळता-मिसता मुर ऊपर उठथा ।

“पण भाईपै नै सूझ-बूझ रो इमी एकट मे बांधण नै मोरचाबंदी रो की तप तो तपणी ही पडै ?”

“साचा बाईसा, साचा धे, साब सीधी आगळी धी निकळन रो रीत ही काई ?”

मुधा फेर, पेमी रँ परवार रो पूरो पाठ वारँ आगँ बांच्यो । केई बोली, “दाय तो ही बाचो, म्हे तो आपरी बात मुणतां ही समझगी ही कै ओ इसारो कठै है ?”

“और जागतो कीनँ कहोजै है ?”

घूडो-घाई बोली, “संकं ही मत बाईसा, चाळीसेक तो म्हे जीवती-जागती बँटी हां धारै आगँ हो, घटै है एकाधी कोई तो और मोघ लेस्या, काल दिनूगँ ही लो धे, एक जुट अर एक नैचँ मे बंध, पैलां जावा गोकळ रँ घरे, पछै भेजा पचा नै ।”

“पचा कान नी दिया तो ?”

“नी दे, म्हे काई संप्रियो देवा हां वानँ ? जोमण रँ नातँ न म्हे जावा अर न म्हारै जाव नै जावण दा, मोटघार म्हारै ऊपर कर जीमण जावँ,

कयो चेतो वारो चरणनै गयोडो है ?”

केई और बोली, “बाईसा, आ तो डाई है, आज तुमां तो काल हमा, मगळा नै काठणी है, मौड़ी-बैगी, फायदो मगळा रो है ईं मे तो ? कूट छावता कदेई तो बढ हुवा'क नी ?”

आं रै आत्मविश्वास रा अँ बोल मुण, मुधा रो उत्साह दूणीजग्यो अर आमा बीरो चौगुणीजगी । बा बोली, “टूटतै नै सांघणो समाज रो पंतो फत्रं है पण मूतै समाज रो नही, जागतै रो । मुणनी में आवै है कँ आमँ आपणँ अँ केई गाव-खँडा इसा भी हुया करता कँ वँ आपरँ नुवँ बसतै भाई नै, पाच-पाच, दस-दस ईंटा अर एक-एक रिपियो घर दीठ देंवता । ईंटा सू तो छडो करलेंतो आपरो घर अर रिपियां सू चलांवतो आपरी एकर री आजीविका । आवतै नै ही, आपरँ धरावर रो करलेंवता भाई सै ।”

सिरदारी बोली, “साची है बाई, ईमें गाव-खँडां रा डगळिया ओजू जियँ है, में देख्या है केई जाग्या ।”

खासा सुर मर्तै ही ऊपर उठचा, “लखदाद तो बाईसा, आं भायां नै है, अबार तो भाई मरै है आपसी ईसकँ मू, घामा ही नी धारँ एक-दूसरँ नै ।”

मुधा बोली, “ठीक है, पण आपानै तो मुधारणो 'आज' नै है ।” पडरँ गई वँ ।

अगलँ दिन सिझ्या, मुधा गई गोरुळ री बहू कर्न । बोली, “बोल, रिपियां रो इंतजाम कराऊ दोरो-सोरो कटँ ही ?”

“करावो बाईसा, पण रिपिया लैर जिमास्य थाप नै ? भायां तो ओसर रां किर्नां ही काट दियो ।”

“तो घारो ईमें काई दोम ? ईं सू घारी मोभा नै तो आच नी आई कटँ ही ?”

“नही बाईसा, घारँ धर्मं नू म्दारी सोभा नै कयो आवती ? म्हे तो हाम जोड-जोड जीमण रा न्यौरा काठनिया, पण मगळा रँ झूडँ एक ही सुरसनी आ बँटी कँ न तो म्हे ओसर करा अर न जीया । न्याल ही हुग्या म्हे तो. साची पूछो तो—ओसर रा छडपा ही कटँ हा म्हां कर्न ?”

“दूध अर दुदारी दोनू ही बचग्या, मगळां नै ही साम है ईमें”, बहरँ

सुधा बीरै सामो देख्यो । आत्मगौरव अर निश्चितता बीरै चैरै रै पाणी पर तिरता छाना ही नी माबै हा ।

11

होळी आई अर गई; अर जावती-जावती हरिजन बस्ती पर की भय अर विपाद बिखेरगी । पण सागै, हिम्मत अर आसा रो एक अध्याव ही जोडगी—बीरै बणतै-बघतै इतियास मे । होळी सू एकदिन पैला, दो सडकछाप टीगरा, भंवरी सू छेडखानी करली । सूरज आयणी क्षितिज ढळतो, आपरं घर मे बड अदीठ हुग्यो । बीरै बै टीगर ही पडतै अघेरै रो, नाजायज फायदो उठावता, अदीठ हुग्या, कीरै ही । भवरी बिचारी रा पण भारी हा पाच महीनां सू । न भागै जिती फुतीं अर न सामनों करै जिती शक्ति । सागै एक छोरी ही मात-आठ बरसा री । गाव मे सू, घर कानी आवै ही । चूठियो बोडग्यो कोई टीगर । गाळ काढण मे पाछ वण ही नी रापी, पाच-मात लुगायां अर टावर भेळा तो हुया पण 'कुण हा', 'कुण हा' कर'र बिखरग्या । एक-दो लुगाया पूछघो, "है ए बीनणी, साप-खाघा, कठै बोडघो चूठियो, दोरो तो नी बोडघो ? बुगी नी झाली बारी ?" आ सवाला री अणचाही सहानुभूति ओढती, वा आपरै घरे आ पूगी ।

चर्चा दो-ब्यार घड़ी तो गर्मी पकडै राखी, फेर कजळाईजतै खीरै-सी धीरै-धीरै बुझगी पण भंवरी मुलगती रही—बरसती रही । वा सुधा कनै आई, रो-रो गळै ही, चीणी री भीगती पूतळी-सी । बोली, "बैनजी, बोलतै गाव अर चालतै रस्तै इया हरकत करै कोई तो घटै बसेपो किया हुबै ? तुळी नी लागै इसै गाव रै ?"

सुधा समझाई, "स्पाणी है तू, जीवण लम्बो है, मुरू ही हुयो है ओजू तो, अर तू अवार ही फीसै है, तो वो कद सधसी, कियों निभसी ? न रोया निभै अर न गाव रै तुळी लगायां । समस्या रोया नी, हळ हुसी वा, पण रोप्यां । मिट-दो मिट ही सही, वणै तो बाधण वण, गादडी कांई, अर

सूकी ही नी, बीमू पैला ही, विसो ही दूजो खत लिखीअणों और मुह हुयो ।

जेठ-असाठ सूका गया, पण किसाना नै चिगा-चिगा'र । बारा वाळजा सूकणै पडग्या । बाजरी री माख तो गई ही समझो । सावण लागतां, पाच-पाच, सात-सात, आगळ ही घरती भीगी, तो ही लोगा ऊपरलै री आम पर मोठ अर गवार बीज दिया । नागोरण चाली तीन दिन, रात-दिन एकसी, ऊमरा घणखरा बगावर हुग्या । भादवो लागग्यो, आभै मू टोपो ही नी पडयो । गरीब सोचै हा मण-दाणा घर मे पडघा मुहाया नी, रामजी नै, रेत मे रळा'र अळगा हुया । आधै भादवै दस-वारै आगळ छंत्वारो भळे हुयो, उठनी कळावणा दोलै च्यारा कानी । एक दाणै रा सैस दाणा हुवै, किसान मू रहीजं फेर, की मोठ-गवार भळे नाख्या लोगा कदास ही पणनी छुटै तो । कनै नी हा वा मार्ये-घोटी कर'र ही तरळो कियो ।

भम्या ही, आपणे वाडी एकर नी, दूसर बीजो । वाड-खाई ही किया । पैराडा मावा याद आवै हा । धान अध-अध बिलान नैडो ऊचो उठयो, पण तिम मरतो किताक दिन काडै ? घणखरा रै वैठग्यो, केया रै जमीन ठडी ही, बडै जोजू ही खडो हो खासो-भलो । सराध लागग्या । शोसा दो ही दिन बाज्या, लोग आप-आपरै घरे आ बैठा ।

मुश्किल भिनघा नै ही हुई, पण घणी मुश्किल हुई घन नै । सावण मे घरती फूट'र घास-पूस री जडा आगळ-आगळ ऊपर आई हुसी, एवड तो होठ भळे हिलाया पाच-सात दिन पण गाय-भैम्या रै पल्लै, तिणा पाव अर रेत अध बीलो । मोटी बीमारी वारै आ, कं लीलै री दास करता बां, सूकै रै मू लगाणो और छोड दियो । पेट मे भूखा, अण लीलै री हर जादा । अठै-नी, की और आगै, बडै पूर्ण पण बडै टण-टण गोपाळ, भळे सोचै की और आगै, इयां करता डामरा दो कोस जा पूर्ण पण, चरै काई, जडा मू मे ही नी आवै, भूखा अर पक्कोडा, रो-रो घर नैवै । आठ्या री वाडां सारै; आमुवा री आल मे चिप-चिप रेत चैडै । रेत मू छेरा और मुह हुग्या वानै, पेट चिपग्या, पांनळघा निकळगी, माव मरघा टूट हुग्या वै । किता ही बैसकै पडग्या, अर किता ही गया आनीनै । गात रै मंसी रै रुजगार घोणो चाल पडयो ।

मुघा री गात ही बीमार पडयो । रोही रुपतो भर ही गई, छेरा मुह हुग्या, वै ही भळै सोहीठण । घरे राखनी बीनै । बूटवी बाजरी घर की

छाछ, दिया बीनै । दो-एक बिरिया फोगलो ही दियो छाछ मे, पण छाछ कठै ? अध कीनो दूध ला'र जमावती, खुद नै तो, दूध होठा रै लगाया दिन हुग्या आसा । पाच-छव दिन, सेवा करण मे, पाछ नी राखी बण । करमा आपरै अठै सू एक लाद कुत्तर नखवाई । बोली, “पइसा नी लू बँनजी कुत्तर म्हारै घर री है ।”

मुधा बोनी, “पइसा, म्हारै कर्न है जद कयो नी लै बाई ? एक टैम इसी ही आसकै है, जद पइसो ही नी हुवै म्हारी जेब मे, अबार मुपत लियोड़ी नै, बी वेञ्जा, कैवता ही सरम आवै मनै, का नी ?”

“ई मे सरम क्यारी है वँनजी ?”

“देवणियै नै नी लेवणियै नै ।”

“नो थे म्हारै सू पढाई रा किसा पइसा लेवो हो ?”

“कुत्तर ठोम चीज है, तोल है बीरो, भार है बी मे, विद्या मे इसी कोई बात नी । बा तो खरचँ जितो ही बर्ध । कुत्तर थारी खचँ हुवै ज्यू-ज्यू बघती हुवै तो एक कयो, दो लाद नांखदै ?” करमां मुधा कानी निरुत्तर-सी देखण लागणी ।

मुधा बीरै दुविधावै चेरै कानी देखती भल्ले बोली, “वहनडी, थारै कर्न सू लेवण रै मौकै नै मै गमा थोडो ही दियो, सकडीजँ क्यो इत्ती, आपां कायम हा जितै, लेणां-देणों ही कायम है आपणों ।” पइसा बण चुकादिया ।

गाय रै तो जी सू झगडो लाग्योडो हो औटाळ पडी, साम खँचीजता लेव । कुत्तर कीलो-डौढ कीलो, एक छाबडकी मे घाल'र धरी मू कर्न, बीनै मूघणों तो दूर, देखै ही कुण ? वेधती अर वेवस निजर सू वा धिरियाणी कानी देखै कदेई, अर कदेई आख्या मीचलँ अधमिट । मडै मे ही पाणी अर आख्यां मे ही । एक पाणी बीमारी रो पडै, दूमरो हेत रो, पण बस बीरो दोना पर हो नही । गाय दुखी अर मुधा उदाम । जीवण अर मरण विचाळँ जूझती छेकट बग पीजरो छोड दियो । बचग्यो खाली मा-बारी टोघडियो । मुधा री उदामी जीर गँरोजगी ।

सिरदारो बोली, “टोघडियै नै बाई, वरामदै मे ले चाला एकर ?”

‘कयो ?’ बा बोती ।

“आपरी मा नै, उठाईजनी देवनी ओ, तो ममता ईरो बडी तड़भइसी

एकर।" बांधदियो टोघड़िये नै बरामदे मे—गाय नी उठी जिते तारे।

टोघड़ियो दो दिन तारे न पूरो चरचो अर न पूरो पियो। मा नै चितारतो ईने-बोने आख्या तीखी-निजर फाडतो, खाली खूटे कानी विमेष। सुधा, दिन-रात मे पाच-सात विरिया बोने सभाळती, हाथ फेरती बी पर, दिनूगे-सिझ्या रोटघा रा टुकडा ही देवतो बीने। हफते भर बाद, बीरो दाढ़ ही कम पडगो अर झाक ही। सुधा कानी चितारतो कदे-कपास, बीरो बूकियो चाट लेंतो, जाणू आत्मीयता अर आसर री दिस सूझगी हुवे बीने। सुधा री घिसकती आस नै विश्वास री एक टग मिलगी।

मिन्नी रो आणो अर छोके रो टूटणो, सुधा रै आवते ही भंग्या रै जमानो हाथ लाग्यो तो इसो के बीरे जस री डुगडुगी जोरा सू बाज उठी पण चानणी राता रोज कठे, आ ठा सुधा नै अबे लागी। तृण-काळ, डागरा, दो दिन ही दात-रुगड़ सावळ क्यो करले? सुधा उदास हुगी, आप खातर नी, बीन बणाया बा खातर। सोचे ही बा, के टावराने नै तो उठता ही पैला चाईजे रोटी, बूढ़े-बडेरा नै सेवा अर सेवा री सामग्री अर जवाना नै मजूरी। मजूरी मूळ है, बाकी से बीरे तारे। पढाई-लिखाई ही पछे, पेट भराई पैला। समस्या सौ, समाधान एक रो ही नही। बार-तिवार गांव सू छोदो-माडो की मिलतो, बीरो रैयो-सैयो किन्नों सिरदारी काटदियो होळी पर। गाव मे नगद खरचतो आदमी, भंग्या नै तो गारै-गोवर ही नी लगानो चावे, अबे? रमाये रो नांव तो गयो, रोवार्य रो तो सामो पड़यो है। भंग्या मे ही मायं-बिचाळे केई होठ हिलावे के घर रा रैमा न घाट रा, ई भली आदमण रै कैया-कैया पावडा दिया जद गावसू ओर गया, कोई भाभी कहरे ही, नी बतळावे? अबे का तो गांव छोडो, अर बा पग सूत्रे मरो। दो-एक डेण-डोकरघां मे कमजोरी अठे ताई के आगे सू पीछो भनो, आपणो सागो घंधो करता नै तो कोई नी रोके? गाव अर आपणं बिचाळे खाई इत्ती ही तो है? गाव नै आपणी जरूरत अर आपाने गाव री, गेटी तो सेफी-सेकाई मिलसी।

भीत रै ही कान हुवे है, सुधा तो ममहादार ही, लिफाफो देघर समचार पिछाणती, लघली बात नै। बण मिदर मे एक दिन सगडां नै घेडा किया, बोली, "काळ पड़ चुक्यो बा कसर है की?"

“कसर है अब मरण री बँनजी,” वै निरास हुता बोल्या ।

“हाथ-पग नी सामस्यो तो वा ही पूरी हुज्यासी ।” एक पल रुक'र वा भळे बोली, “बिरखा रामजी खीचली ?”

‘खीचली जद ही तो रोणों है ।’

“पग हाथ-पग तो आपणा नी खीच्या वण, आ वीरी कम मँर है कांई आपण पर ?”

“मँर कम तो नी, पग हाथ हिलावण नँ हीलो ही तो चाईज की ?”

“हीलो न कदेई बन्द हुवँ अर न बिरखा सागँ बरमँ वो ।

“काळ मे म्हानँ तो की नी दीखँ बँनजी ?”

“अकाळ, वाढ, भूकंप, अर महामारी आदम्या नँ रोवता-मरता देखण नी आवँ ?”

“तो ?”

“वै आवँ है वारँ धीरज री परीक्षा लँवण नँ, वै आवँ है वारी लँण अर लगन देखण, वै जे वामे खरा उतरग्या तो वारँ जीत रो सेवरो मतँ ही बंधँ । वै ही थे, वा ही जमीन, अर वा ही अणअळसाई लालसा, भळे ही नी मुळकसी आपणो संसार ।”

“किया मुळकसी, थे ही जाणो ?”

“नारँ दिन देख्या है, अँसकँ वामू सवाया देखो थे, पण बँठा रँ बाकँ मे, ठाकुरजी ही नी दाबँ ।”

“आप सीध करो, म्हारा मूढा बीनँ ही तयार है ।”

“पैनां तो बाड़ी तयार करो । मृळी, गाजर, गूदळी तोपस्यां, बीज मगा-मोडा है । एक-एक, दो-दो ब्यारी आप-आपरँ घरां मे और लगावो, की बेचस्यां, की खास्या, मौको पङ्ग्यो तो आपा बडला, एक टैम जीम-जीम ही मुळकस्या पण अळमावां नही ।”

“राजी हा ।”

“राज ही तो खोलँ लो की वाम ?”

“खोलँ ही लो ।”

“खोलसी तो आपां किसा टळस्यां, लारलँ साल सोरा रँया'क दोरा ?”

“बडा सोरा ।”

“तो अबक दोरा क्यो ? माता सामा बँठ'र सकळप करो कं मा, पळ तो थारै हाथ है अर मँनत म्हारै हाथ, वीमे सळ राघा कठ ही तो चोरा मे करै वा म्हारै मे करै, हा, वो ध्यान जखर राखे कै थारै बेटी-बेटा मत्र-मूत मिर पर ढोणो अब छोड दियो है, अर छोड दियो वो छोड ही दियो, थूक्योडो अबै नी चाटे वै ।”

“थूकदियो वीनै वाईसा, हनिज नो चाटा ।”

“क्यो चाटा ? समस्त री जमीन औरा जिसी ही तो आपणी है, ई पातर औरा अर आपणै बिचाळै न कोई भीत अर न कोई घाई । आग सगळा एक ही मा रा बेटा-बेटी, एक मसालै सू, एक ही कारीगर रा घाग कियोडा । न कीरै ही दो मूढा अर न कीरै ही च्यार हाथ । मार्ग न बोर् लावै अर न लेवै, सास सँ आप-आपरा लेवै । फेर क्यो की सागै ही ईसको अर क्यो की सागै ही लडाई । आपा न कोई जुवै सू रोटी खावा अर न की जाळ-फरेव सू । नीरोग धधो करण रो अधिकार सगळां नै एरतो है । आ ही धरती री मनस्मा है अर आ ही आपणी ।”

सगळा मे नुई आसा अर नुकी बळ ऊपर आवै हा ।

12

सुधा पूजा-पाठ कर'र, बस्तो सावटपी ही हो का कचन आवती दीखी । बस्तो एक कानी घर'र, वा कचन नै बोलती, “काल तो मजी रो दोरो कियो मुण्यो ?”

“आपनै कण क्यो ?”

“धारी साधण करमां ही, और मुण कंवतो मनै ?”

“गई ही बँनजी, एकलो गो मा-बेटी दोनू, पण जापो बटो मूषो पड़्यो ।”

“कियां ?”

“गई तो म्हे सात न्यौरा नू अँर्व्वेमेडर मे ही, अर आई पद पीतरीं

उपाळी । हू तो खंर की धारी नी, ख-निकळी, पण, मा रो सोच ओजू आवं हें घकर चूर-चूर हुगी वा तो ।”

“चढाई रो कोई साधन नी ठूक्यो ?”

“उपाळी-सागो तो हो ही, एक छोरें रो बळघ-गाडियो ही हो सागें, बण विचारें म्हा दोना नै कैयो ही हो, “वाई, थका गाडें मा-सा अर थे उपाळा क्यो ?” मा नै मीं घणो ही कैयो, “हू नी सही, पण तू तो बँठज्या गाडें पर, दो रिपिया लेमी वँ दे-देम्या छोरें नै,” पण बळघ कानी देखती वा बोली, “वाई, बळघ विचारें सू, खाली गाडो ही दोरो खीचीज, देखनी हाडा रें पीजरें कानी, पण किया गिण-गिण आगीनै राखें हें, हू भळे टगू ईं पर, म्हारो किसो वँर हें ईं मार्ग ? चालू हू, सगळा सागें धीरें-धीरें, दो-च्यार घडी मे इया किसो सास निकळें हें म्हारो ?” छोरो बोल्यो, “थे चढलो मा-सा हू उपाळो चाल लेस्यू” मा, बोली “उपाळो चालसी तो तनै आसीस मिलसी लाडेसर, हू तो ईं पर आज चढू न कास ।” दरअसल वात आ ही वैनजी कै, बळघ री जीवती-जागती उदास तस्वीर मारें काळजें मे उतरगी ही, वा नी चढी गाडें पर । दोरो-सोरो, घर नँडो तो बण लेलियो पण अबै सागी चाकै वा, तीन दिन ही नी आवं ।”

“गई मोटर मे अर आई उपाळी, मोटर छोटी हुगी ही काई ?”

“मोटर छोटी नी, छोटी तो म्हा मे हुई ।”

“तो इसी काई वात हुई ?”

“वात काई हुंवण नै ही संमार रो धारो ही, इसो ही है वैनजी, दोस देणो फालतू है कीनै ही ।”

“तो ही, साच तो की है ही ?”

“म्हारा सामु-मुसरो काल भोराभोर ही आया हा कार ले'र । पूजजी म्हाराज रो चौमासो मंडी मे है असकै । परबार रा च्यार जणा और ही आयोडा है म्हाराज-सा री मेवा मे । पाच-सात दिनां बाद केर्द दीधावां हुंवणआळी है अठै । दीशा री पात मे मनै ही खडी कर, म्हारा मानु-मुसरो ही पुन अर प्रतिद्धि नूटणी चावै हा, अवार मू ही नी, म्हारें लिलाड री हींगजू पूछीजी बी दिन सू ही समसो आप । वात तो वा म्हारी मा रें कानां मे मू ही काडी एक्-दो बिरिया । मा न कोई हां ही भरी अर न कोई

विरोध ही कियो, कही बा सुगली संज-भाव सू। अवार बां आंवता ही मा, री प्रससा रा बडा पुळ वाध्या, ई खातर कें वीरें लिलाङ पर विरोध रो कोई सळ नी उभरें। सम्बन्धा में और घण्ड दिखावण खातर बें बोत्या, "सगीजी-सा, आप अर बीनणी, आज दो-च्यार घड़ी तो पधारो गुरुदेव रें दरसण-लाभ में। लोग तो हजारुं कोसा सू चला-चला'र आवें है, अर आप, घर आयो नाग न पूजिये, वधी पूजण जाय, हाथ पूर्ण जितें आतरें पर ही बँटा हो, फेर ही नी जावो। मोटर आपनै मूरज छिप्यां मू पैला ही पाछा अई छोड देसी।" मा त्यार हुगी अर हू ही वीरें सागें। म्हे दोनू बँठगी मोटर में। बडें म्हाराज-सा रा दरसण किया, म्हारें सुसरें वारें सामनै म्हारी वधी सोभा बखाणी, घर रें काम री नी, म्हारी वैराग-वृत्ति री।"

"बडा म्हाराज-सा ही तो फरमायो हुसी की?"

"हा फरमायो नी कें, काई ठा किर्त्त-किर्त्त भौवा रा पुन मिल'र एवें मार्ग उदै हुवें जद ई मार्ग कानी मू कर्रें है कोई, मँज काम थोडो ही है ओ, खाडें री धार दौडनो है नी?"

"फेर?"

"बजी तीनेक धुलो अधिवेशन मुरु ह्यो—बडें म्हाराज-मा री अध्यक्षता में। केई जिज्ञासु सवाल पूछे हा, अम्यासी अर जाणकर संत बेंई, आप-आपरें डग सू उत्तर देवें हा, गांठ कठ ही पूरी नी सुळमती दीघती, बठें होठ थोडा बडा-म्हाराज-मा ही गोल देंवता।"

"एकाघ सका-समाधान तो अवार ही ध्यान में हुवेंता धारें?"

"जादा संका-समाधान तो बैनजी, तप-उपवाम, का अगलें भी सम्बन्धी ही हुवें हा। एक जणें पूछ्यो, "गुरुदेव! मूळी-पालक अर गोभी-गूदट्टी जिमी लीलोती आपनै तो विमम वर्जनीक बताईजें पण विज्ञान तो बाने जीवणी शक्ति बता'र, कानै अरोगण पर जोर देवें, आप इन्नै की खुलामा करे तां बडी मँर हुवें?" एक मन्न बोत्या, "मखाल शक्ति रो नी, सवान है वियेक रो। शक्ति राबडी-रोटी में किसी नी हुवें? नम्वाई में नी जार हं इत्तो ही पूछू हं कें मूळी-गूदट्टी की हुवें, नीसोती मात्र है तो घेतन ही?"

"हा गुरुदेव, मोक्ळी आवाजा पटाळ में गुजी।"

"बेचन है, जद, बानै गुग्ग-गुग्ग ही तो की हुनो हुसी?"

“ब्रह्मरु हुवै विज्ञान-सिद्ध हे आ बात तो ।”

“जीवतै नै जाड नीचै दिया का ओग पर चढाया वो रोवै क राजी हुवै ?”

“रोवै ही वो तो ।”

“तो अवै आप लोग ही पाप-पुन रो निरण करलो । बच सकै बित्तो बचणों चाईजै । मूळी-गाजर, कीनै ही थे धारै कानी सू अभय कर सको तो करो, धर्म री आज्ञा तो आ है, विज्ञान री थे जाणों ।” आवाजां पंडाळ में बिखर उठी घणी हु'र, 'बहुत सुन्दर, बहुत बढ़िया, धन हो प्रभु,' ई ढग सू ही और-और संका-समाधान ही चलै हा ।

“फेर ?”

“मैं सोच्यो हू ही पूछू की पण की भीड रो सको अर की बोलण रो, टोकदी कणही तो जीभ फेर उचळीजणी ही ओखी, हंसड हुसी, सोचती रही पण, उठी नी ।”

“तो नो पूछ्यो फेर ?”

“फेर सोच्यो बैनजी, साधपणों जद लेंवण नै ही सभगी तू तो होठ वद राख्या कियां निभमी ? भीड बाध तो नी जिकी बोलतां ही तनै मू में घाल लेसी बा तो आत्मीयता री बिरादरी है अर मन्त सगळा रा हित्तू, अर हू किसी कीनै ही गाळ काढू हू, म्हारी सका अर दुविधा ही तो राखू गुरुदेव आगं—घोडो गणगौरां नै नही तो फेर कद ?”

सका मुण'र सन्त राजी अर समाधान मुण'र म्हारै सँ बिचारा री भीड मगळी । हिम्मत कर'र खडी हुगी हूँ अर माईक कनै जा पूगी ।

मुधा रा होठ मतै ही खुलग्या, “बडो बढ़िया कियो, डमै मौकै तो पूछणो ही चाईजै ।”

“एकै कानी सन्त अर एकै कानी सत्यां बिचाळै, गुरुम्हाराज रो बिरा-जणों । सामनै आप-आपरो व्यवस्था में श्रावक-श्राविकावां री भीड़ । सगळो विश्वास भेळो कर हाथ जोड़ती हूँ बोली, “हे महापुरुष गुरुदेव, पूजनीक सन्त-मत्यां अर माईत समान भीड़ मगळी । पढाई म्हारी फळमँ ताईं री ही है अर अनुभव एकदम आंगण ताईं रो, कगूर हुवै माफ अर आप सगळा हुवो राजी तो होठ दो मिट हू ही योतू ?”

“जरूर खोलो. आज नी तो फेर कद ?” मडप मे आवाजा गूजी ।

हू बोली, “म्हारी, साधपणों लेवण रो दच्छा हे पण बी मू पैला म्हारें मानस मे केई सवाल उफण-उफण ऊचा आवें, उचळ-पुचळ सू रूथीयें मानस नै दिम सावळ नी दीसै । ईं भार मू पैला मुक्त हुज्याऊं तो म्हारो मानस नीरोग हू उठें, रस्तो म्हारो सोरो कट्टे अर आप सगळा नै जन मिलै ।”

केई सन्त ऊची आवाज मे, बोल्या, “साधु जीवन मे असन्तोस रो भार उतार'र ही प्रवेस करणो चाईजै, जरूर पूछो ?”

ईं मू बडी मदद मिली मनै योणप मे ।

“मन्त हिम्मत बधावें जद मदद तो मिलै ही ।”

“हू बोली, गुरुदेव, साधपणों लियोडी नै मनै कोई भाई-बैन पूछतें कै साध्वीजी आपरें साधपणें सू देस अर समाज नै काई फायदो ? तो हू बानै उत्तर दू कै हू लोगानै उपदेस दू, तप-भयम रो दिम बताऊ बानै, ईं स समाज सदाचारी बणें अर सदाचारी समाज सू देस बलवान, क्यो इया ही कहू का और की ?”

सन्त केई बोल्या, “विल्कुल ठीक, इया ही कौणों चाईजै । ‘ठीक’ बह'र गुरुदेव ही पुष्टि करदी, पाटी मू ढकयें होठां पर परसतो मुम्बान तो मनै नी दीयो, पण बारें चरें रें पाणी मे ऊची उठती बा छांती नी माई । गिर हिला-हिला कित्तें ही सन्ता समयन कियो, भीड रें घणघरें होठा पर ही नाच उठयो, “उत्तर गूणतो है ।” म्हारो उत्साह और बघयो । हू फेर बोली, “अगलां फेर कंसो, जिकें समाज मे इत्ता-इत्ता सन्त साध्वी, योनि घोर, तरकर, स्तंक्रिया, अर मिलावटिया रो जाळ दिन-दिन यधे, मनघन नही, हबीकत है आ । सत्य, अमृत्य, अहिमा, अपरिग्रह अर शहापणें सै बिलग्य अर उदाम है । ईरो मुनञ्ज है धारा उपदेस घोषा अर असरणीन है. हे पूजनीक सन्ता, अब हू काई बहू योने, दिस दो मनै; गुरुदेव ! मुगार बिद आप गोलो तो ओर ही बढिया ।” मिट भर तभा मे साणाटी पेंययो ।

मुधा बीरें मू मागों देखें हो अवाक-गो ।

बा फेर बोली, “हा-तो बैनजी, फेर महीन-महीन, आपगो यथां गुरु

हुवण लागगी, केई ऊची पाघा मे सुळबुळाट हो कै, वंठावो वयोनी, ई अघे नै, किसी सका पूछ'र न्याल करै है आ ? केई करै हा, नी-नी, पूछण दो विचारी नै, पूछणो अधिकार है ईरो । आपमे की सभळता-सा एक सन्त बोल्या कै, 'आ कहो धीनै कै उपदेस दिया ही कोई कल्याण रो पथ नी पकडै तो अगलै री ममझ, पण म्हारै कल्याण मे तो भोळ नी, हू भी तो नमाज रो ही एक अग हू, हू बोली मन्ता, अगलो कै'सी मनै कै 'साध्वीजी-मा, हाडे-गोडे आप नीरोग, ऊमर जवान, समझ मूझती फेर खुद रै कल्याण खातर आहार-पाणी नै घर-घर डोलता फिरो, काई ठा किसै-किसै तरीका मू कमायोडो अन्न हुवै बो, कुण जाणै किमै-किसै जागतै बुझतै भावा सू पोर्देजै-पुरसीजै बो ? ई लेणै मे न आपरी मैमा न आपरी मैनत री मक अर न डैमे जागतै जुग री सहमति । अन्न अर मन, पाणी अर वाणी रो बडो गैरो मम्बन्ध हुवै, आप मोग ही तो फरमाया करो हो । दूजी आज री ई वावळी-उतावळी सदी मे, गाव-गाव विचरण मे काळमिस कोई पूछीज जावै कठै ही तो सिवा रोणै अर सरकार नै ज्ञापन भैजण रै और काई चारो है की कर्न ही ? इसी केई अप्रिय घटनावा ई सदी री आधी छात नीचै घटी है, तो फेर क्यों नी घट सकै ? आ हाला, आत्मकल्याण घरे रह'र कोई करै तो नी हुवै ? वारे सभव, वो घरमे वयो नी ? सण्णाटो एकर भळे फैल्यो ।

घुस-फुम मे सुणीज्यो मनै कै हुगी सकावा, वंठावो-वंठावो, पण जवान अर जागती चेतना किस्ती ही, और ऊची आई, "पूछणों गुनाह नी, बोराण दो, मन्ता रो दरवार है ओ ।"

एक सन्त बोल्या, "पण कुतकं रो कोई अन्त नी ?"

हू फेर बोली, "सन्ता, पूछणियै नै हू तो, आपरै फरमाए मुजब, कुतकं रो ही कह देमू, पण म्हारै कैया वो मन्तोम करलेसी काई ?"

फेर म्हारी बात मुणी-अणमुणी हुवण लागगी, भीड़ रो तर्क-वितर्क की ऊंचाई पकडन लाग्यो । ताळवो म्हारो की मूकै हो वैनजी, पण मै टूटतै उत्साह नै एकर और सांध्यो, बोली, "आप मनै इत्तो समै दियो, म्हारी मकावा मुणी अर समझाई मनै, हूँ ई मैर नै वाणी मे नी बाध मकू, इतम हूँ आप सगळों री । म्हारो इत्तो लाड राख्यो आप तो, सिफं दो मिट

री ओर मँर करो, हू भीड़ री ही माळली हूँ, बीसू वारें रह'र कोई जीवण री कल्पना नी करू ।”

युवा आवाजां एकर ओर जोर चढ़गी, “हा-हां कहो, दो मिट मे अब किसो अँटम-बम पई है ।”

उत्साह की धिर हुंतो लाग्यो मन हूँ बोली, “गुरदेव ! हूँ चाऊं कँ आप मगळा एक ही टोळें री सम्पत्ति नी वण'र, आबै राष्ट्र री वणो तो कित्तो राजी हुवै राष्ट्र आप पर, अर कित्तो ऊचो पूगँ म्हा मगळां रो उत्तात ? पण जिकै ही घमं मे, शस्त्र अर शास्त्रां मे समन्वै नी, बीनै न प्रकृति स्वीकारै अर न पृथ्वी । हूँ मोचू, ईं खातर आपरै मुखारविद सू घरती रै ओर-छोर 'राम' प्रसारित हुणो चाईजै, संको अर संकडाई छूट'र ।”

“अर महावीर ?” किस्ती ही गरमीजती आवाजां फूट पड़ी मंडप मे ।

हू बोली, “महावीर नू विरोध कीनै ? वँ राम रो ही एकहाय है अभं-बाटतो पण घरती नै चाईजै पूरो राम, दो हाथा रो, एक मे अभं, दूसरै मे धनुष, पूरो कृष्ण बसी अर सुदर्शन सेतो । भूको ज्ञान सेपा न राष्ट्र री रक्षा हुसकै अर न वीरी समृद्धि री । पजाव मे खतरो तो भाग'र हरियाणै बढग्या, हरियाणै हुग्यो तो राजस्थान मे पण राजस्थान मे हुया बढे जावै कोई ? भागणो अभं नही, अभं आइमी नै करो, मूळो-गूदळो नू दुनिया नै कोई खतरो नही, वा नू आपेही मळट लेसी बा ।”

“बँठो-बँठो, लीक उनामणी बेजा है, बस... बस, रँणदो आगँ, लगाम रागो जीभ पर”, घटी टण्णा उठी केई विरिया, फेर ही उगळती-उगड़नी, मै कह दियो, “अँ सवाल म्हारा निजू है, पण है मगळां रै हित मे, अहित मे कीरै ही नही ।” पण ओ भधूरो निवेदन म्हारो, वण ही नी मुण्यो. बघनै रोळें रो अजगर गिटग्यो बीनै । म्हारो लाळवो मूकण लाग्यो, जीभ पहन लागी जाओ अर एक अणचीती उदागी बघती नागी, म्हारै चँरै पर मनै ।”

“उदामी बघनै बयों ? मारै कँवण रो मुतळव ओ ही तो हो नी बँ, पूमते-पळनै राष्ट्र नै चाईजै बारैमामी नैरो, ऊंचा बांध, बिमाम बळ-काग्याना, यानायान रो जाळ, मोनो उगळती घरती अर शक्तिमाटी

राज-व्यवस्था, अँ सँ एक हाथ है, विवेक अर आचरण री पूरी ऊचाई ओ दूसरो, आ दोना री समन्वै भूगोल रो आदर्स—वीरी मनस्या ?”

“हां।”

“तो इमे काई बेजा कही तँ कीर्न ही ? साच नै नी सुणै कोई तो, बो मरै थोडो ही, बोलणो बढ थोड़ी ही हुवै ? अनतमुखी है बो, काई ठा कित्तै-कित्तै होठा पर भळे नाच उठसी बो, -एकै सागै ? हा फेर आगै ?”

“भीड फेर बिखरण लागगी । चर्चा आप-आपरै ढग सू उछाळै हा लोग ।”

“एकाध तो धारै काना रै लवै ही लागी हुसी ?”

“केई तो म्हारै कनै ही, बखिया म्हारा ही उघेडै हा कै, इसा जे दो-च्चार पुर्जा ही सघ री मसीन मे आ लागै तो बीरा चक्का जाम करदँ मिटा मे ।

दो पांवडा आगै, कोई पड़िताऊ प्रकृति रै आदमी री आवाज सुणीजी, “उसने कोई, बेजा बात नही कही, धरती पर यदि जीवन की पूर्णता प्रति-ष्ठित करनी है तो, मनुष्य का उपासना केन्द्र राम का आदर्श ही हो सकता है ।”

इत्तँ सुसरो दीखग्या, मा, बोली, “मालका, पुगवावो तो दिन थकी पाळी पर बँटलू घोडी ।”

पारो की ऊंचाई पर हो वारो, बै बोल्या, “हा, पुगवास्पू, सावळ जाया म्हारै भरोसै ।”

मा होळै-सै बोली, “क्यों मालका ?”

“भोजूँ ही भळे क्योँ ?” सगै-परसंग्यां री भीड मे भाजनां तो म्हारो माटी करदियो अर सागै आपरो ही । गुरुदेव कर्न जावण नै, म्हारा तो पग ही नी उठै, बँटै-सूतँ ओ काई कर बँठो हूँ ?”

“करैर काई हत्या करदी आप ?”

“बात नै अवं जादा मत बघावो धे, टुरो अठै सूँ, म्हारी मोटर भरोसै मन रैया ।”

“तो इमँ भाजनै रा धणी म्हानै लाया क्योँ ?” मा की गरम हुँती बोली ।

“लायो म्हारै वडेरा रो नाव निकाळन नै ।”

‘म्हानै काई ठा हो कै, हाथी रा खांण रा दात किसा ही अर दिखा-
वण रा किसा ही ?’ कह’र मा, टुरपडी ।

“तू की नी बोली ?” मुधा पूछयो ।

‘बोलण री जी मे तो नी ही बँनजी पण फेर चुप रँग मे ही की लाभ-
नी लाग्यो । टुरती टुरती मै ही काना मे निचो नाथी कै इत्तो कूडो नाटक
रचण रो बयों तो फोटो देख्यो आप अर बयो म्हानै घाल्यो ? मनै न तो आप
कनै मू कोई पाती लेणी अर न आपरै ईं कुडकै मे पग राखणो । जिजासा
बस म्हाराजा नै मै दो वात पूछनी हाथ जोड़’र, तो किसी तो प्रलै हुगी अर
काई आप सरमा मरग्या ? दिन-रात तस्करी करो थीसू आपरो सरम नै
पून ही नी लागै ?’ बडबडावता वा ही पूठ फोरली अर मै ही ।

मुधा रो रू-रू मोठो हुग्यो, थीगी वात मुण’र नी, थीरी हिम्मत, मूम-
बूझ, थीरी कथनी री थापना अर थीरै पारदरसी विवेक नै विचार-विचार ।
गगाजळो विचार सेवतो, विना गिही बँटो, एक अनूठो आचार्य बीमे जिदै ।
जद विसाल राष्ट्र री मुबन धरती थीरी चेतना मे बसै तो वा टोळै रो
माकडो धरती बयो मेवै ? वारा दोनू हाथ कचन रै सिर पर अनानास ही,
जा पूग्धा, वा बोली, “बाई, ममझ थारी निश्चै ही ऊंची अर धरती लागै
जुटती, थीरी चौमुग्री आसीस बरगमी थारै पर, अर मँरु थारी बीमे घप-
घुप निघरसी तर-तर । थी मा रै तै मी वेटी ही हुणी घाईजै ही ।” अघ
मिट रल’र, वा भळे बोली, “और तो हुई तो ठीक है, मा-सा रो रघ बाई
रयो ?”

‘बो आप मा नै ही पूछ लेमा, मिलणो ही हुजामो अर पूछणो
ही ।’

इत्तै करमां ही आ पूगो । पडाई मुद हुई, दोनू ही बोली, ‘बँनजी,
मसूतन मो दोरी है, अनुवाद म्हारै तो नावै ही नी आयो ।’

‘नो आयो हुमी पण मसूतन नै दोरी मो धे ही बनाई. ईं जिनी सोरी,
अर पूगी-नमरो भागा तो धरनी पर ही बाई नी । अपेजी बिचां लागी
थानै ?’

‘मसूतन थिये तो थो गोरो ही लागी !’

“उत्तर देणू मू पैलां थे सोच्यो ही नी, अर ईरो अनुभव ही नी थानै ।
कोई ही भासा हुवै, लिखीजै वै आखर बोलीजणा चाईजै का नी ?”

‘नी बयो, बोलीजणा ही चाईजै वै तो ।’

“अँन ओ, ‘नो’ अरके, अँन, ओ डबलू ही ‘नो’ कठे गयो ‘के’ अर कठे
अर कठे गया ‘ओ डबलू’ ? कठे ही के, कठे ही पी, कठे ही टी, अर इया ही
और घणा ही लिखीजै तो सरी पण बोलीजै नी । पी, आर, आई कठे
‘प्राड’ अर कठे ही ‘प्रि’, सागी आखरा मे उच्चारण भेद किया ? पी-यू-टी
‘पुट’ अर सी यू टी ‘कट’, कठे ही यू नै उ गिण लियो अर कठे ही दूध री
माखी-मो काढ’र अळगो फँवयो, ओ काई ?”

वै दोनू, वात नै पियै ही सुधा कानी देखती ।

वा भळें बोली, “सस्कृत अनुवाद मे लिख’र लाई हो थे, “अयम् पुरुष
अस्ति”, यह आदमी है, बयो ?”

“हा ।”

“अग्रेजी मे यह खातर दिस हुवै है, दिस मँन, दिस वूमँन अर दिस
बुक, मिनख, लुगाई अर जड पोथी सगळा एक दिस सू ही हाकीजै ?”

“हा ।”

“हा आपेही, भडार मे तोडो है, आगै-लारै ‘दिस’ विचारो एकलो ही
उचाम्पा लेवतो दीछै, दूसरी दिस ही नो दीछै बीनै । ईं मू तो आपणी राज-
स्यानी ही भलेरी, आदमी-लुगाई रो काण-कायदो को समझै, ‘ओ आदमी
अर आ लुगाई, एक ‘दिस’ री जाग्यां ओ अर आ दो, पण सस्कृत रो तो
ठाठ ही न्यारो, बीरी तो छटा ही दूसरी । समाज अर शास्त्र मिनख, लुगाई
री जिया अलग-अलग गरिमा राखै बिया ही संस्कृत, स्त्री, पुरुष अर अपुण्य-
याची शब्दा री । अयम् पुरुषः, इयम् स्त्री, अर इदम् पुस्तकम् । एक दिस री
जाग्या अयम्, इयम् अर इदम तीन, गुड-गुड एकै भाव नही । लिताउ
सारु टोका ओपै, विशेष्य रै उणिपारै सारु विशेषण ।”

“जिया वैनजी, गुलासा की सावळ करो ।”

“यानि अनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि, नो इतराणि” ।
(नाम जिका निरदोस है, सेवना वारी ही करणी चाईजै, दूसरा री नही ।)
कर्माणि अपुरुष वाचक बहुवचन अर विशेष्य है, क नी ?”

“हा है।”

“अर वीरा विशेषण ?”

“बिल्कुल वीर अनुरूप ही।”

‘वीन जिसी ही फूठरी जान किसीक फर्क ? शब्दा छातर आ योजना रिसि लोगा जानू समाज री सुघड व्यवस्था सू प्रेरित हूँ ही आपरें साचा मे ढाळी हुवें । एक सोरापण सस्कृत मे और है, औरा मे वो नही ।’

“वो काई वैनजी ?”

“राम गोज टू स्कूल नै थे, गोज स्कूल टू राम लिख सके हो काई ?”

“इया किया लिखीज, गळत है ओ तो।”

“पण सस्कृत मे रामः पाठशालाम् गच्छति नै थे आगै-लारं जधं त्रिया लिखो, सही है । उपसर्ग-प्रत्यया री मंमा ही अलग है, हार शब्द है, वीन नै थे आहार, विहार, सहार, परिहार दाई जरूरत मुजब रच्या ही जावो, काई छेडो है ? ढाचो थोडो समझ मे आणो चाईजै पर्यायवाच्या री काई ठिकाणो है सस्कृत मे, और भासावा मे वीरी, रिपिये मे पावली ही नी मिले, कात थे याद करे ही—

हरि गरज्यो, हरि ऊपज्यो, हरि आयो हरि पास ।

जद हरि हरि मे मे मिल्यो, तो हरि भयो उदास ।

इया कोई भासा मे नी । अठे तो विष्णु अर गोपाळ रा हजार-हजार नाव है—पूर्ण-वचूर्ण नो जगत्-प्रसिद्ध, इया ही और-और ।” वं मामने देखे ही ।

वा भळे बोली, “उमे पढना चाहिए री काई हुयो अमेजी अनुवाद ?”

वं दोनू ही बोली, “ही मुड रीड ।”

“अर सस्कृत मे ?”

एक टूजी नै देखती वं बोली, “आप ही फरमावो वैनजी ?”

“सः पठेत् ।”

“हा ।”

“मुड, ‘रीड’ आं दो री जग्या एक पठेत् मू ही काम निबळें तो अभि-
व्यक्ति री गूधी माड पर डवल भार क्या छातर ? दो री जाग्या एव हुया

सोराई'क दोराई? "

"सोराई, आंधै नै ही दीसै है आ तो ।"

"तो संस्कृत सू उवास्या किया लेवो हो थे ? अठै तो एक जमानो इसो हो कै भारी वेचगिया ही संस्कृत जाणता ।"

बांनै अचंभो हुयो, बै बोली, "किया, समझाओ बैनजी ?"

परियां बैठी, सिरदारी अर सान्तडी हो कनै आ सिरकी ।

सुधा बोली, "एक बूढो अर जरजर लकडहारो सिर पर लकडघा री भारी लिया धीरै-धीरै राजधानी कानी आवै हो । रस्तै में घोड़ै पर चढयो, राजा मिलग्यो बीनै । डोकरै नै एकै कानी उवाणो अर अधनागो, दूर्ज कानी दूबळो अर दोरो चालतो देख, दुखी हुतै राजा पूछ लियो, "भो बूढ ! भार. त्वाम् बाधति" (डोकरा ! ओ भार तनै दुख देवतो लागै) । धोण में राजा की गळत बोलग्यो, बाधति नी बोल'र, बाधते बोलणों चाईजै हो, 'ति' री आग्या 'ते'—जिपां भाप् सू भापते ।

"हा समझगी ।"

सकडहारै राजा कानी एकर अचंभै सू देख्यो, फेर एक गहरी उदासीं ढकलियो बीनै । बडी करुणा सू बोल्यो बो, "राजन् भारः माम् न बाधते, यथा बाधति बाधते" (हे राजा, भार मनै बिल्कुल ही दुख नी दै जितो बाधति दुख देवै) ।" बीरै कंवन रो मुतळब हो कै जद राजा ही अणुद्ध बोलै है—अजाण है भासा सू तो प्रजा रो कांई हाल हुसो ? राजा री आख्यां खोलदी बण ।"

बै सगळी ही संस्कृत घातर बडी आसावान हुई अर सागै बडी राजो ।

बां सोच्यो, "आपां चोटी री पडिताई कानी नी बघां तो टाळ मही पण लकडहारै री दिस-दसा देखतां जातरा की मुष्ट तो करा, थका साघन, साब-गोडीढाळ कांई हुवां ?" अर संस्कृत रै विसाल मैदान कानी, मंद अर माठी चालतो, अन्तरघारा बारी अबै बीनै मतै ही मुडगी, लम्बाई आपरी पूरी ताकत सू तै करण नै ।

स्कून री छुट्टी कर'र बा, कंचन री मा कनै जा पूगी । कंचन री मां,

गाय रो कूडो त्यार बरै ही अर कचन रसोई-पाणी। रामा-सामा हुण्डा, कूडो गाय आगँ घरदियो अर फेर बै निरबाळी वैठगी—एक घाती बोरी पर।

मुधा बोली, “काल तो मा-सा, बडी तकलीफ पाया मुणी?”

“ठीक ही मुणी बैनजी, पण, रामजी करे मो ठीक, चोखो ही हुण्डो।”

“चोखो ही किमा मा-सा?”

“कचन रै सासरै कानली हर मिटगी अर म्हारै म्हाराजां कानतो।”

“घास रुख-रखाव काई देवरो वठै?”

“देह्या वठै, गतां अर पडदा रै चैरा पर चमकता उपदेस अर मुनै काळजै रो भीड घणपरो। कचन नै मै पूछघो, “है ए काई, आ पहदो पर कठै ही मिलावट, तस्करी, काळायजारी अर खोटी-तोसपी नै साव माओ धतांवन रो उपदेस ही कोई चितकै है काई? घर रै आगँ कादो-कचबडो नी करण घातर ही सीध है कोई आं मे? आपरो मळ-मूत हुसरै रै सिर पर नी दुवावन घातर ही है आं मे की?” पांच-सात मिट, निजर आपरी दीडांर बोली बा, ‘नही मा, दमो तो की, नी आं मे।’ बैनजी, सगळो नै भीदी रो ऊचतो पगोथियो ही दीयै है, आगण सागँ जुडतो पैतो नहीं।” पल भर रकमी बा मतै ही, पनो नहीं क्यों? मुधा धी कानी, आपरा कान ही नहीं, आपरो ममझ ही करदी मगळी। निजर आपरी बडी थळा मू जमा राखी ही वण बीरै चैरै पर।

भठे बोली बा, “साधुवा कानी देवती हूँ सोने ही बैनजी, कः बै ही मूडा, अर बै ही मूछ, पण साधु बैम बरण किमा पछै बै इसा किमा हुण्डा है कः बैवळ-जान रो कूची रो टा, जाणू आनै हो हुबै अर घरम पर मोचण रो मगळी ममझ ही आं करै ही। एक वाने म्हारै पीरै रा ही हा सीमी पार पगता। काशी है बारै। बाने कदेई बा गोरी रै जिपाण ही राखती—दिन भर। मूडै रा कवा दे-दे बाने, बडो फूलीजनी बा, देण-देण बाने मरी जोवनी. आज बा माव एकावी अर आमरैहीण है न सावळ मूमै, अर न मरोर रो घांटयो ही सावळ निपळै, बडी दुय पाई, करणा ही पसोजै बीरी दना देण, पण उपाव काई? पण म्हारो मन इया ही मोचै हो आपरी मूण के कः थै, जे, दो दिन ही जा पुगँ काशी रो की टैसचाकरी मे तो टोर रो है

सन्तोस रो काई चाको ? अर इयां करलै अँ तो हाथ-पग आर काई पसीज उठै, का साणी नही रहै र फुरज्यावै ? का केवल-ज्ञान रा किदाइ आ खातर फेर सदा खातर जडीजज्यावै ? वा कर्न पूग, जिया मै मधे-वदण कियो, बानै, वँ मनै ओलखता-सा, एक हाथ आमीस री मुद्रा मे करता बोल्या, 'दया पाली, अरे ! धानै तो आज ही देस्या सेवा में, किता दिन हुग्या ज्ञान-गागर मधीजता अठै, अलगै-अलगै मू लोग आ-आ, दरसण लाभ लूटै अर ये हाथ पसरै जित्ती दूर बैठा, नी आसको ?'

हू बोली, "ठीक फरमायो आप, पण घर रै गोरख-धंधे में, काई बताऊ निकळनो ही नी हवै ?'

"पण इसो अमोलो अवसर तो बरसा उडीक्या ही, हाथ नही आवै । सता री सेवा अर धर्म-लाभ लूटीजै जिता ही थोडा । इसै मीकै, घर रै गोरख-धंधे कांती सू तो आख्यां मोचो अर इनै आवण नै खोलो, जीवण, खाली घर रै धंधे मे गालन खातर ही नी मिल्यो ।" सुणलियो वारो कैयो, हाथ जोड़ै र मै । म्हारै लारै, एक अमीर परवार और पड़ो हो दरसणां रो जनावळो । हू टुरु ही, पण कुण जाणै, मन रै काई वापरी, म्हारै होठो पर मतै ही नाच उठयो, 'म्हाराज-सा, आपरी काकीमा, बडा भुगतै है अवार तो ?' आगै हू की बोनुं, दोसू पैलां ही, वा फरमायो, 'मनै सुणायै सू मुतळव ? भुगतै है तो भुगतै ।' बोली में वारै लुखाम हो अर चैरै री सरजता मे की उभार । मनै की झटको-सो लाग्यो, हू एकदम सभळगी, टुरपछी चुपचाप, मन नै सताइती कै, कुमाणस, इया काई नू माव गुंगो ही नरै है ? तनै ठा नी, भारो मागै ही और है, आनै काई तो काकी रै मुप-दुप नू अर काई और कीरै मू हो ? पण साची बात मनै आ लागी बैनजी कै अँ लोग खून-पमीनों एक फरैर पांवता सू, अळगा, अछूता पडै, अर मुप-रख्यो बात सू राजी दोसै । महाव्रता सू अणुव्रत निचोवै, मोगन-सयारा, जीव-अजीव पर महीन चर्चा करै अर सिनेमाइँ तजै पर ढाळा ही बपावै अर धारी-म्हारी ही, पण गेज री ई सागण घाणी पूम्या, नूळ-जातन कोरी ही थोछो थोडी ही हवै है, ऊनर ओछी भलां ही हवो ।"

मुद्रा मोचै ही, 'कंचन री ई जलमभूमि मे धरती रो गुग्गुध खूब है अर आदमी रो औसत समझ मू, समझ मोरळी ऊंची । बीरी थडा और

गैरीजगी बीं कानी, बीरी निच्छळ कथणी सू । बा बोली, “मा-सा, बहर ये कोई पहाड़ पटकदियो बां पर, काकी है, गोदी किचरी है बां बीरी—दिना नही बरसा । अनाथ, असहाय है अवार बा । इयालकी मरणामन री, सेवा नही, परमसेवा बजै है बा, अर परमसेवा रो लाभ ही परम हूवै है, पण कृतज्ञता रो बो तप, दीपै घरती री की विसेश बाल्ही आत्म पर ही । अवार तो करीब संगळै एकसो ही हाल ही है, मा-सा, सँ आप-आपरो उकाळी धर्म रँ अनुपान सागँ समाज रँ गळै उतारी चावै । पंथ में बडग्यो कोई वो असलियत उघाडी चावै नही, नी बडग्यो बीने चीणी रा धोरा दीखँ, वो बडनों चावै बी मे । जुग है अवार मुविधाभोगी । राग में विराग दूढै । सोचँ, सोरो-सो, गुर कोई हाथ-मल्लै पड़ै तो मौज ही करता अर मोक्ष रो पायो ही पकड़ला ।”

“पण इया बो पकड़ीजै काई, अंगतोड़ तप नै पीठ दिया ?”

“अग तोड़'र तप, (खूब खटै) बी कनै इयालकी भीड़ नै आपरो सम्मो समै सुपण रो बेल्ह हूवै काई ?”

“नी हुंती हुसी, म्हारे धर्म मे तो डंग-ढाळो हूँ इसो ही देखूँ बँनत्रो ।”

“धर्म धारो अर म्हारो एक ही है मा-भा, बात कानी कान देवा पोड़ा ?”

“पोड़ा क्यो, पूरा लो, फरमावो ।”

“दया, छाया, पंचमहाव्रत अर अर सर्वभूत हिते रताः मू भीता. भागवन अर रामायण सँ कूट-कूट भरघा है अर आं सू ही मैं जैनग्रन्थ । मिनघ री अँ अणमोली आस्थावा संसार रँ किसे धर्म नै बाल्ही नी माने ? मुग्घी संसार रो ढाचो टिकयो ही आं पर है । आदि-तीर्थंकर रिममदेव नै घाली ये ही मानो हो, म्हे नही काई ?”

“मानता ही हुस्यो, मनें ठा नी ।”

“भागवत म्हारो नूठो, प्यारो अर पूजनीय ग्रंथ है बीमे रिगभदेव रो बडो पवित्र धरित्र दीपै । धर्मनिष्ठ अर पूजा-पाटी सनातनी बडो भाव-भक्ति मू रोज पाठ करै बँ, ‘इन्द्राद् भयादुपमो निजितारमा पातु माम्, इन्द्रियजोत भगवान रिमभदेव शुभ्र-दुश्र रँ भयवारी शहाटी मू म्हारो रघाळी करै’ । है ई में सीमा-रेखा कोई, आपन विघाळै बठै ही ?”

“नहीं तो !”

“आपां एक, आपणा सिद्धान्त एक, आपणी घरती एक, आपणों निकास-विकास एक, आपां अमंध्य वूदां रै विराट सागर-सा एक । फेर आपा मे क्यों धिर हुई दलगत आसण री इकलखोरणी ममता ? एकता मे जिको आनन्द-उल्लास हुवै वो बिखराव मे मिलै कदेई ?”

“बिल्कुल नहीं ।”

“मा-सा अलगाव, आपणी एकता री कामधेनु नै कूट-कूट कमजोर कर दी । आपणी समझ रै पाणी पर ज्यू-ज्यू अज्ञान री काई बघती गई, मोह पसरतो गयो, आपणी एकता रो सरूप सांकडो हुंतो गयो अर ओजू किसो रुक्यो ? दुख री बात इत्ती ही है कै एकता रै ई अभाव नै आसण-लिप्सु तो आपरै होठां पर राखै नहीं, अर्ध-समर्था नै आपरी परिग्रही ऊंचाई बघावण सू फुरसत नहीं, बुद्धिजीवी आपरै वादां मे उलझ्या है, अर लाई-खाई करणआळा विचारा है आपरी रोज री जरूरता रै घेरै में, काम फेर वणै किया ?”

“बैनजी, बातां आपरी जचै है म्हारै, हालात अवार इसा ही है ।”

“साधुवा रो फंटवाड़ खाली इत्ती ही तो है मा-सा कै, आपरा साधु गाभा घोळा राखै, अर म्हारा भगवां । आपरा राखै पाटी अर पातरा, म्हारा कमंडळ अर खप्पर । न भगवा पर परमानंद बरमै अर न घोळा पर केवल-ज्ञान । सिद्धि-सफलता गाभां नै थोडी ही मिलै है ? चारो सम्बन्ध तो मन री स्थिति सू है । केस उपाहो, मूंडा बांधो, उयांणा फिरो, धूणा तपो, राय लगावो, बेस अर बस्तु रै बदळाव सू न भूख-तिस बदळै, न चेतना री एकता अर न बीरी सैज आवश्यकता । एक ही इमारत पर न्यारी-न्यारी मजिन बण्या, इमारत री नीव थोड़ी ही बदळगी ? जिको साच सदा अर सगळै एकरस, जिको सगळा रै नैडो सगळां नै सुलभ, सगळां नै प्रिय अर सगळा रो हिनू बीं सनातन तत्व नै मत-मतान्तरां रै घेरा मे घाल आप-आपरी छाप लगावै बी पर, कांई वो कारखाने री चीज है ? का, वो एक देश, वो एक काळ अर एक समाज री निधि है कोई ?”

“नहीं तो !”

“पण मा-मा, झूठी शिक्षक अबै इसी पैदा हुगी आपां थावकां मे तो हूं

इत्ती नही, जित्ती है कर्णधार साधुवा में, न बारी आट्यां मिले अर न बारी आवाजा । मिले वं नहीं, अळगीजा-आतगीजा आपा । अणसमझी री ई जाणे फंटवाडसू उदास धरती, न साधुवा न आसीस दे, अर न आपा थावका नै।

“ई हिमाव तो साधु वणनी ही गळत है फेर ?”

“वणीजै वो साग हुवे मा-मा, साधु नही । साधवणों तो जलने है काळजै में कीरे ही । टावर सू से'र कीड़ी-कुजर ताई में जलमें है, वणं नही । भीड री भीड वणन लागगी साधु, ओ रोग है समाज में । घर छोडणो एव बात है, राग-द्वेष छोडणो दूसरी । ई वणतो भीड नै, नागी-भूणी अर अज्ञान-अशिक्षा में ऊधती-अमूजती बतारा री बधतो नमार नी दोगे । बीनै दीखें, नी दीखें वो, मुणीजै, नी मुणीजै वो अर बीनै ही बा भागै अर सागै आपानै हेला और मारै के म्हारी दिम ही थे पकडो पण आपा आ, नी पूछों वो साधुई-भीड़ नै के पेट आपणा थोया है बाबाजी, मगळा दौडपा ठोकस्या काई ? अर डील किया लुकोस्या साज मू अर किया पाळै-उताळै ? ससार री रिण संसार मू भाम्या नी चूकै ?”

“बैनजो, आज तो भला ही आया, म्हारी आधीजती दिम, यामी मूझती करदी थे ।”

“दिस तो आपरी पैला ही सूझती ही, मैं की, नी कियो, बिचार री एकता में, म्हारी बात आपनै जचती लागे अर आपरी मनै । कंचन री सुणावो अब तो, बा कियां रही बडे ?”

“जडे ताई, बीरी आपरी समझ मे मयाल है, बा मनै दावआई, आरते सग बीनै फळसो ।”

“अर मनै बीरो नी ?”

“नी कयो ? रळायो हाथ गवग धुपमी, मगळां मू मोडो घमं हो ओ है ।”

अब बा धणी देर नी रुरी, आपरै आवास री दिम पकटनी ।

दियाळी गांव में घोबीजी जरूर पण पणगरै सुमी अर सुगी ही । बाई हुयो, आरम-मन्त्रोम ग्रातर वण ही जे डाळटा री बीई साळ मारणी मे

कोर पर नाख'र सुगन कर लिया हुबै । लिछमी पूजा ही हुई पण लीलोती रै नाव, लोगां काणी टीडसी हो, बी आगै नी राखी, काई राखै हुया बिना ?

बिरखा खातर लोगा, गांव रै वारकर काचै दूध री कार ही कढाई, गाव रा तळाब-तळाई ही दिखवाया, टीटोडी रो कोई ईडो तो नी हुबै वां मे । भोमियैजी रै सवामीटर धोळी धजा ही बाधी, सवाकीलो पतासा अर वा मळा ही चढाया पण आभो नी पावस्यो । दो-च्यार विरिया कळायण की जरूर उमडी पण वरमै वी सू घडी-दां-घडी पैला धरती री जड सू आधी उठी, अर देखता-देखता वादळ रो चूयो ही नी रैण दियो—आभै पर । अबार चाळीसू कोसा ताई जमाने रा कोई ममचार नी ।

घनवाळ केई आप-आपरो धन ले-ले, कस्वां रै काठै जा लाग्या । हरि-जनां मे भंग्या नै छोड, आधै नैडे लोगा, ईनै-बीनै आपरो ठाइयो पकड लियो । बाणिया रा पाच-सात दीपता घर तो, जेठ-असाढ मे ही, मना गणेशजी नै विदा हुया; की घटै हा वै दिमाळी धोकर'र चढग्या । हवेत्या में आप-आपरा विश्वासी बामण-स्यामी राखदिया । घणखरै कमरा रै ताळा अर ताळा पर टाट रा वटका सीड दिया, आवा जद छोड'र जावा जिसा ही साधै, ई खातर । दो-एक नाई-बामण इसा भी है जिकानै सेठ लोगा, बारै घेटी-घेटां रै ब्याव का कीरै ही औसर-मौसर मे डौढ-दो हजार री रकम साजदी; सेठा रो ब्याज गयो अर सांवणिया री गई सुवाई पण अभाव री लका मे मूळ अगद रै पग मो आपरो जाग्या है ज्यू ही रैसी । रुखाळीदार रात तो हवेत्यां मे ही काडै पण दिन आपरै घरू घंघां में—हेत्यां सूं बारै ।

गांव री धरती उदास, आदमी उदास, आदम्यां में भगी और ही जादा अर वा सू ही जादा विचारा पमु । चेळकै जे कोई है तो जीमुख साध का सरपंच, पटवारी अर दो-च्यार वारा चमचा । जीमुख साध रै आए मंगळ-वार भोड रो ताजो टूटै ही नी । सरपंच अर वीरै साध्या नै तळाब-तळाई री माटो निबळवाणी, सडक रो कांई टुकड़ो वणवाणो, गरीबा नै केई रकम रा लोन पास करवाणा, गायां नै मन्नी चूरी रो इंतजाम करवाणो, सौ लेटा है । गांव-हित में आंगळीं टिकाव कोई न कोई जाग्या दीयणी घाई-जै वानै, फेर कोचरै रो रो बघारो हुना ताळ नी लागै । अकाळ मे इमै लोगा रै, पूछ अर पदमा दोनू बधै ।

मोटी समस्या अबार पमुवा री है, महीनै, दो-महीना मे सस्ती बूते अर तूड़ी री व्यवस्था करण खातर गाव रा केई स्याणां-समझदार चर्चे बिहूँ खातर बारै जावण री सोचै है ।

13

मुधा अर सिरदारी खंडी देखण गई । एक ठिरड्डे पर जा खड़ी हुई ब । डैरी कानी देख्यो बां, बीरै तळ पर खिची, हळ री उदाम लोकां दीपी बानै, एकदम खाली काळजै । निजर भागै गई, धरती दूर-दूर तांई उदाम अर उषाडी दीखै ही । गाय-टोघाड़ियो घणी बान, भेड़-बकरी ही बोई फिरती-घिरती नी, दीखी बानै । चुगती रोही मे कांई लेवै कोई ? मुधा सोचै ही कः लारलै साल आ ही दिना, आ धरती सोनो जगळै ही अर इरै सागै कित्तै-कित्तै तोगां रा मुय-सन्तोस बुळ-बुळ पडै हा ? आपरी सन्तान रं फळतै थम मू मा कित्तो फूलै ? लेवै बीसू संसगुणों देवै तो ही घोडो लागै बीनै । धरती अर आदमी रो सम्बन्ध कित्तो अटूट अर एक हुवै, ई खातर ही तो 'पुत्रोऽहं पुषिव्याः', धरती म्हाारी मा, अर हूँ बीरो बेटो, रिती-समझ घोषित करगी, उपामाना री सर्वोपरि ऊंचाई वैठ'र ।

खंडी में पाच-सात झाड़िया यडा हा अर तीन सूटा कैलिया । मुधा बोली, "मा, अँ झाड़िया कटा'र बोरो, पूण-बोरो पालो तो घर में नाग्रभा, एवड़ फिरम्यो कदेई तो, काटा ही लापैला, बां पर, पतो एक ही नही ।"

"नेरी अर पूछ-पूछ, तँ कह दियो तो आज ही लै ।"

"अर कैलियां रो सूख ?"

"सूख सारै क्यों रागस्यां ?"

बाज करती-करती बै खंडी री निवाण मे उतरयो । ऊमरां रो माटी रा दो-एक डगडिया हाया मूं ममळती सिरदारी बोमी, "देख बाई, पीठी माटी आ, चौकणी किसीक है ! एक बिरघा ही जे घोषी हुग्यावनी तो खंडी ग्याली नी जावनी ।"

“हां,” अर बण ही माटी नै हाथा सू मसळ'र देखी, बीरै एक और ही विचार ध्यान मे आयो, बा बोली, “माटी तो बडी बढिया है मा, हाथ-डोढ-हाथ ताईं खोद'र और देखा, रबो, ठेठ ताईं इसो ही है का छरों है आगं।”

“ईं खातर आपांनै किसा सस्थ पाती सांभणां है, कसियो आपणै कर्नै है, अबार ही खोदलां।”

माटी की नीचे जांवता और ही चीकणी आई। सुधा बोली, “मा ईं माटी री जे, ईंटां काढी हुवै तो।”

“ईंटां तो एक ही लम्बर कढे बाई, पण पाणी नी पौसावै अठे ताईं लायो।”

“हां आ तो समस्या ही है, पण निवांण में कच्ची कूड तो एक खोद ही सका हां आपां, मांयलो-पासो राख अर सीमट सू खुद ही लेपला, और नही तो चौमामै-चौमामै पाणी री सुखदाई तो हुवै आपणै ?”

“हां, एक घडियो लावां बी मे ही, काधो दो विरियां बदळनो पडै आपांनै, हुया तो ठीक ही है।” बातं करती-करती बै, दो घड़ी नै पाछी ही घरे आ पूगी।

सुधा री दिस मुताबिक भंग्यां री एक समिति बणगी। घरू उद्योग-घर्घे खातर रिण रूप मे वानै आठ हजार रिपिया मिल्या सरकार सू, दो हजार बा मे अनुदान रा माफ। डोका अर डोरी मगवा लिया, मर्की, खारिया अर मुद्दा बणना मुरू हुग्या। लुगायां ही सृटर, आसण सुरू कर दिया, अर सामे की कताई ही।

सुधा कर्नै लुगाया रात री आवै तो है पण पैलां सू तीजी पांती ही। कंचन अर करमां रात री मौडें ताईं पडै। राम अर रमा रा रूप ही रटै बै। भाप् अर गम् रो लम्बो गोरख-घन्घो ही होठां माकर काडै पण अवै घड बँठगी, गाडी लैण पकड राखी है। मिरदारी रोज वानै वारै घर ताईं पुगावै। कदे-कणास रात सुधा कर्नै ही काढणी पडै तो, बी दिन बा बारै घरे कह'र आवै कं आज बाईं नी आवैली। बठें सोवै बी दिन झाझरकं हेलो ही बा करै वानै, ‘जठो बाया, टैम हुगी है।’ जाणै वारी पडाई री की चिता सुधा नै है तो की बण ही ओढराखी हुवै।

अगूणी छित्तज रै झरोखें, नूरजनारायण घरती नै नमन कर आपरो जातरा पर जिया ही बैगा-बैगा टुरै, ठीक बिया ही सुधा अर सिरदारी ही आपरो खँडी कानी । सागें वारें कंचन अर करमां ही हूवें । मीठो-मीठो सी पड़े पण खायो-खायी, खँडी पूगें दत्त, वारें तन-मन में नुई ताजगी बापरै । अँ जिया ही पूगें, इँरै पाच-सात मिट आगै-तारै, मान-आठ छोरा, पाच-मात छोरेधा, अर छव-सात आदमी, इया पञ्चीस-तीस रों एण काफलो रोज भेळो हूवें । आदमी माटी खोदें, याकी सँ नायें । हरेक रँ चँरें खुसी अर मन में उत्साह । कुड खुदें ।

सुधा सगळा सागें सलाह-मूत कर'र, हपतें भर रों श्रमदान-आयोजन राख्यो है अठै । घणो नी, मुबै-मुबै अध-घटा ही खाती । दस-बीस तगारी कंचन, करमा ही नायें सगळा सागें—सगळा सूं आगै । श्रीगणेश ई रों कंचन-करमा मू ही करवायो । आ दोना जद रेत री तगारी सिर पर ऊचो तो बूढी-बूढी भगणा ही नी, जवान बीनण्यां ही दोली, "बाईसा, म्हा थका, आप तगारी उठावो, आ कीकर हूवें ?"

"क्यों म्हारा हाथ कचकडै रा है, काई तगारी उठावता ही बिडक उठसी, अर फेर सघणां ओखा हूमी ?"

"बाई जी, मालिक आठ रों अर मजूर साठ रों हूवें तो ही, मालिक मोटो हूवें, थे मालिक हो म्हारा, अन्न धारो दियो ही खावां हं ।"

"म्हारो दियो ही खावो हो जद अबे क्यों नी खावो गाव में टुकडा हो कोई दियाबै है तो बोलो ? देवणआळो सगळा नै एक ही है, पण देवें बो हाथ-जग हिलाया ही है ।"

सिरदारी बोली, "तो हाथ-जग हिलायण नै म्हे थोडा हं मादें ।"

करमा बोली, "बडिया, दसी दूर चलार आ, म्हे धारा चँरा निर-यणनै नी आई, म्हे आई हं, एण अपनायन में बध'र अर वा हूवै है मन री एदता में, ऊंच-नीच री भौत नी हूवै बीने ।"

सगनी हीं कंचन बोली बानै, "बैनजी तो धारै सागें बूढा नायें भाग-भाग, अर म्हे पडो-गडो, धमगूगो-गी देया, घूड म्हारै तो बिना नायें ही पडगी ।" सगळी ही हगण लागी ।

गुधा बोली, "आ बूड, गिरदारी का मधें-मूटै की एक रँ नी बनी,

या ह एक पूरे समूह खातर, समूह रो आधार हुवै है मेळ अर मेळ हुवै धरती रो मनस्या । आपा तो धरती रो मनस्या सागै काम करा हा, आ तो कुड है, सामिल श्रमदान मू तो बाध रा बाध खडा हुसकै है ।”

‘पाचा रो लकडी, एकै रो भारो,’ हपतै भर मेकुड त्यार हुग्यो, ऊपर एक छवणो राग्रीजग्यो, काई दूर मे, पायतण ही कुटीज’र त्यार हुग्यो ।

माघ रो जातरा पूरी हुवण मे पाच ही दिन बाकी हा, का अचाणचकी बिरखा हुई पच्चीस-पच्चीस आगळ । सागै की गटा ही पडचा, पण लोगाँ रो चेतना मे खुसी रो एक लहर दौडगी कँ अबै की चैतवाडो वापरसी, धन की जीवण पडज्यासी । खंडी रो कुड भरीजगी, पाणी पायतण सू बारै ताई चिलकै हो । सिरदारी बोली, “बाई ओ जरडो-पाणी आपणै काई काम रो ? चौमासै भरीजतो इया तो, वँटा राजस नी करता च्यार महीना ?”

मुधा बोली, “आपणै तो सोनो बरसग्यो ओ, इँटा नी निकळ सकै काई ईसू ?”

“निकळ तो सकै है बाई, पण हाय तो ईरँ लागता ही सूना हुवै है ।”

“मा, पोह-माघ रो ठारी मे, आखी-आखी रात खेता मे पाणी लगावै, कोई नी मरै वां मे, बारै प्रताप ही आपा चावळ अर चीणो जीमा । आपा दिन मे काम करता ही मरम्या तो फेर जीवण रा ही नी ।”

मुध हुगी इँटा निकळनी । मुधा बोली, “सरकार राडाई रँ दिना मे काम पूरा करै बियां ही आपानै करणों है ओ । छोरो-छोरा नै कहदियो, छाणा, मीगणा, आरु, वूई, सिणिया, फोग, बोरी, झुरकम अर कोझा कागद-चीरडा मिलै ज्यूही खंडी मे लेजा नाखो, फेर ही कम पडै तो बळीतो की मौ-मचास रो मंल ले-लेस्या, इँटा पकावण नै चाईजमी ।”

अठ्ठारै-बीस आदमी-नुगाई, आठ-दम कामआळा छोरा-छोरी लागग्या तो इँटा त्यार हुती ही दोमी । अम्मी हजार नई इँटां निकळली । मडी मू एक चिमनी किरायै ली, आग देवण नै गाव रो ही एक जाणवार मेध-वाळ राप लियो । रिपिया पाच सै’ क लागग्या ।

दिनूरी रो आठ-मवा आठ बजी हुमी । मुधा आपरै ही की मेरहा-छोर्डे में व्यस्त ही । बीसू, हाथ दो-एक परिया कचन अर करमा गणित डपड़ै ही । डोढ घटो हुग्यो हुसी बानै सवाला सागै जूझता । मन की धारोने करै हो । अचाणचकी सामली खेजडी पर एक कमेडी गीत छेड़ दिपां कु, कू-कू । दो मिट बाद ही सामलै बाडै में रह-रह, तरुं-तरु करता तीतर सुणीज्या । आरा अँ, फूटता-उभरता मीठा सुर-मुण, बारी मनः स्थिति ही सागण नी रही । वा किताबा आपरी बढ करदी, पैसिला काप्या पर राख, कान अर मन आवती आवाजा कानी कर दिया । सुधा दो मिट देखो रही बां कानी, पण बां नी देख्यो वों कानी । वा उठो, अर कनै आ'र बोली, "क्यो, बाया ककगी काई ?" अर एकदम, बारो ध्यान टूटयो । करमां बोली, "दो उदाहरणमाता तो कर ली बैनजी ।" लार-री-लार कंचन ही बँयो, "उदाहरणमाला दो और रही है बैनजी, बँ आज सिझ्या पूरी कर नांछम्पा ।"

मुधा बोली "इंया आपानै घास थोडो ही काटणो है, सिझ्या बर-लेया, पण गणित, विज्ञान अर व्याकरण हुवै की सिरचाटू अर मुना बिनै ही है । एक ही दिमागी काम करतां मन जे ऊबम्यो हुवै तो, बोनै एकर भासण बढला देणो चाईजै, मुँई शक्ति वापरै बी में ।" वाक्य पूरो हुयो ही हो का 'गवर गिणगौर माता, घोल किवाडो, बारै ऊभी भारी पूजण-आळी...' हवा में विद्यरती गीत सहरी, बानै तरतर नैडो आवती मुपत्री । करमा बोली, "गवरआळी छोरघां आवै दिमै है ।"

कंचन समर्थन कियो, "हा बँ ही तो है ।" गीत घघतो गयो; 'जल-हर जामी बायो माणा... कान कवर-गो बीरो भागां, राई-सी भोजाई ।'

मुधा बोली, "छोटो-छोटो छोरघां री कामना देखो ये—घरतो पर स्वगं रचणआळी—हे गवर माता बाप हुवै पणपाणो मूं टप्याटोळ बाड्य-सो बरभनो, भाई हुवै मावळमाह-मो अणगिन ऊंघावणियो । परिवार सण्यो ही दातार हुवै, घेटी री सानगा तो जद ही भरीजे ।"

गिरदारी बोनी, 'कन्यावां नै बाई, गवर-पूजा रो वित्तो बोड हुवै है, कोई बाणो नी ।'

करमा बोली, 'गवर तो बरिया सै हीं पूजी हुमी ?'

'मै तो बाई की पूजी न पूजाई गवर नै भाटो ही मारघो, मुय न पोरे

देखो, अर न मासरै ।”

मुधा बोली, “तारली कसर अवै ही काड सकै है मा ।”

“किया वाई ?”

“आ निरदोस कन्यावा नै देख-देख एकर आपा ही बा जिसी ही हू उठा ।”

“तो फेर चालो बांरै सामनै, बारी अगवानी मे,” सिरदारी उमगती बोली । टुरगी च्याहं ही । आनै फळसै आगै देख, छोरघा आ कनै आ'र, मतै ही रुकगी । मान्तड़ी ही बांरै सागै ही नेता-सी, एक पांवडो सगळा सू आगै । सै छोरघा बीरो माण राखं अर वा सै रो । बीरै पग नी हा, ई री उदासी बीमे कठै ही लुकी हुबेली, ठा नी, पण अवार बीरै चैरै पर खुसी खेलै ही—इकाराही अर अणलुकी, जाणै समूह रै पगा मे ही, बीरा पग है कठै ही, ई समूह रै हाथा मे ही बीरा हाथ है, अर ईरी चेतना मे ही, बीरो मन—समूह रै सागर मे डूबी समूह सागै एकाकार ही बा ।

एक बडी छोरी रै हाथ मे गवर ही—समूह रै सगळै हाथां मू रची । कीरो ही कडिमो, कीरी ही हंसली, खांटी साकळी कीरी ही, तो कीरा ही पीतळ रा मूर्त-मादळिया, चीड-पोयो पूर रो बोरियां, अर खोटी बीटी, लोटो-कळसियो, फूल, पत्ता अर फोगा री कंबळो कूपळां सू गूथी, गवर ही मुळकै ही अर बारी मैनत मिली चतराई ही । सै री लगन, मँ री सामग्रो तो प्रकृति तारै बयो, बा ही रळगी आं भेळी, गवर वणगी मंसार-सक्ति सरूप रो प्रतीक । मैनत रो हिमाचळ ईरो पिता है, एकता ई री मा, मैना है, अर सगळां रो हित ईरो वर शिवजी है । अँ च्याहं गवर नै गौर मू देखती रही । गवर नै बा हाथ जोड्घा, छोरघा नै सावासी दी, बडी राजी हुई बँ, टुरगी आपरी दिसा मे, ‘गवर गिणगोर माता,’ रसमय मुर, भळै तिरण लाग्या हवा पर ।

मुधा बोली, “छोरघां रो ओ संज मिल्यो-जुत्यो यज्ञ आंरै जीवण रै अगनै चरणा मे जियै, मजो जद ही है ।”

सिरदारी बोली, “बाई कांई हुवै फेर ?”

“तो एक-एक हाथ मिल, किरोडू हाथ देस री उदास अर रंगउठी तस्योर नै जीवती गवर मे बडळई, एक-एक कंठ मिल, किरोडू कंठ, देस रै

मृत जीवन मे नुई जाग भरदे, आ री आ बाल-साधना जीवती रीणी चाईजे पण ।”

कचन पूछयो ? “पण काई बैनजी ?”

“पण साधना आ बिर रीणी मुश्किल लागी, आंरा घर संस्कार अर आरो अगलो वातावरण प्रबल हू उठसी आं मे तो, अगल चरणा मे मन आरा हूसी छोटा, हाम तोखा अर नैण बुझता, आगणा मे ही उलझसी अं, कुइछी चीपिया, अर बेळण आपस में ही वाजसी अर फेर घणखरा पर आंरा असान्ति अर ईसके रं अधेरं मे हूवसी, आ रो ओ बाल-पाठ भूल री परतां मे बैठ, बेअर्थो हूसी, जिया आ घरा मे अनूमन आपां देयां हां ।”

करमा बोली “बात तो ठीक है बैनजी पण इरो उपाव काई ?”

“आरी लगन पडाई कानी मूडै तो मानसिक धरती की तयार हूवै आमि । लडो अं भलां ही, पण लडे अज्ञान अर अभाव सामे, लड़न रो मजो ही जद है ।”

कचन-करमां दोनु ही बोली, “बैनजी, परीक्षा दिया पछे निरबाली हा म्हे, घारें सामे जुतस्यां जी-खोल'र ।”

गिणगोर रं आमै-सामे इंटां तयार हूगी । इंटां पकी ही बडिया अर बेठी ही बडिया । तीम हजार नां खंडी मे पडो ही बेचदो डौडगै रिपियां हजार मे, बाकी एक-एक कमरियो बणै इत्ती-इत्ती, सगळां ही आप-आपरे परां आगे जियां-तिया कर'र नागली ।

गुधा सगळां नै बोली, “इंटां तो भनवान भेजदो आपाने, पट्टी, सोमट अर बिणाई रा रिपिया च्यार हजार आया पडपा है, बाकी पचप मे, अंग-तोड काम आपाने मूद ही करणों हू । आगतीज रो अगं घीचडो, सतोमी-माता रं अपेण कर, नुबे कमरा मे बैठ-बैठ जोमणों है—गाड बाधतो इंने ।”

सगळां रं जचगो, अर गुमी एक जमूटी, सगळा रं घेरा पर बिरब उटी ।

गणगोर ही । गिरदारी, गुधा बनें बेठी ही सरामदे मे । अघाणपणो वेमू आवणो दीम्यो । गुधा बोली, “मा, आत्र सो भाई आवे दीमै है ।”

“भावे तो बोधी ही बात है बाद, भावण दे ।”

पेम्मा माँ र पना लाग्यो, सुधा नै नमन कियो बण, बैठ्यो चुपचाप ।
सिरदारी पूछ्यो, "टावर ही आया है काई ?"

"नहीं, हूँ एकलो ही ।"

"रुकमी एक-दो दिन ?"

"आज सिइया ही जास्यू, एक जरूरी काम आयो हूँ ।"

"इसो जरूरी काई हुग्यो भळे ?"

"महीनै डौडे'क बाद, म्हारै सा'ब री नौकरी पूरी हुवणआळी है, बगाल कानडा है बँ । म्हारै पर बारी मैर की विसेस है । परसू बोल्या मने, 'पेम्मा तुम हमारो बडा सेवा किया, हम तुमारो क्या मददकरने सक्ता है, बोलो ?' मैं कैयो, 'सा'ब आपका मैरवानी है ।"

"अरे सूखा मैरवानी से आटा आएगा कि दूध-2 नौकरी पूरा होने के बाद तुम क्या करेगा घर पर ?" बाँ पूछ्यो ।

मैं कैयो, "कुछ नहीं सा'ब ।"

"गाव मे जमीन नहीं है तुमरे पास ?"

"नहीं सा'ब ।"

"थोडा बहुत भी नहीं ?"

"बिल्कुल नहीं सा'ब ।"

"तो दिनभर मकखी मारेगा, दिन कटाई कैसे होगा तुमरा ? छतरगड, घाजूवाला की तरफ सरकार बिना जमीन वाला को जमीन खोल रखा है, ओ जमीन बाटने का बडा ऑफिसर हमारो दोस्त है, चाही तो तुम्हें भी एक टू मुरबा दिवाने सकता है उधर, पानी लगता है, पैले तीन साल कुछ नहीं देना होगा, दस साल मे सारा किरत पूरा हो जायगा, सब मिलाकर सोला-सतरा हजार के आस-पास बैठेगा, फिर चातेदारी का राईट तुमरा हो जायगा, लाख से कम का जमीन नहीं होगा तब, लखपति बन जायगा समसे ? हम भिन्वेगा कभी तो बात करेगा कि नहीं ?"

हूँ बोल्यो, "सा'ब, यह आप क्या परमाते है, पेम्मा तो आपमें, मरेगा तब तक नहीं बदलेगा । आपका अजल (अन्न, जल) बहुत धाना है, मरीर मे बहुत सारा घून आपका ही दौडता है ।"

"अरे नही बाबा, ऐना मत दोलो । घून सब लोग को धरती माता का

दिया हुआ है, लेलो जमीन, लास्ट जीवन धरती माता की सेवा में बटेगा तो बड़ा सुख मिलेगा।”

मैं कैयो, “साँव गाव जाकर मां से पूछ लू, इस बारे में?”

“अरे बुढ़ू हो क्या, मा इसमें कोई भना करेगी, फिर भी चलो मा का राय मागना बुरा नहीं।”

पेम्पू री बात सुधा, मन देर सुणै ही, एक-एक आखर बीरो, बीरै काळजें में मडै हो। वा सोचै ही जाणू ओ समचार, बी साँव रै काळजें बँठ, दीना-नाथ ही भेज्यो है अठै। ईं हिसाव प्रभु जरूर बीरी मनचीती करसी। बण देख्यो आ बात सुणैर, मा ही बडो राजी हुसी पण बीरी आ धारणा गज्जत निकळी। सिरदारी बोली, “इत्ती अळगी जमीन तो पंम्पू, आपणें सू सभणें में कद तावें आई? आपणें तो अठै ही दुखम्-सुखम् करैर पेट भरौ।”

सुधा बोली, “मा तू स्याणीक गूगी? अठै कठै तो है जमीन आपा बनै, अर कठै अठै आए साल जमानो? दो साल सू एकर त्रिपजें तो ही राजी, पण बो ही कठै? जीवण घाली पेट भराई में ही हारणों है तो बा बहू?”

“बाई, पेट भराई हुपा पछै, और आपानें काईं चाईजें?”

“मा कोरी पेट भराई सू, माचलो उदगर नी उतरै। आपरो पेट तो कुत्ता-कागला ही भरै है। आदमी बा सू ऊपर हुबै है—मोकळो ऊपर। पाठमाळा आपणी चालणी चाईजें का नी?”

“जरूर चालणी चाईजें?”

“हारी-बीमारी घातर छोटो-सो एक दवाघानो ही अठै हुणों चाईजेंक नी?”

“बाई बीरी तो बडो जरूरत है।”

“अर वाचनार्ल-गुस्तकालै?”

“बां बिना तो अधरो हो है, ये तो हुणा ही चाईजें।”

“अर आवै-गवै नै ठैरण घातर विश्राम-पर कोई?”

“बां बिना तो बडो फौडो है।”

“ओ कोटो तो आपणो हुयो, मजेंदारी तो ईं सू आगें बधणें में है।”

“है तो बाई, बीं आगें बधणें में ही।”

“तो मा, आख्या पेट पर राख्या तो अै बीं नी हुवें। रोम, मीनग रा हाप

की लम्बा किया ही पार पड़सी ।”

“तो बाई, तू जाणै, हूँ तो भंगण हूँ, इसी लम्बी मूझ रो मनै काई ठा ? पेमू नै तू ही समझा सावळ ।”

बा बोली, “पेमू, तू ओ कोई मामूली समचार ले’र नी आयो है, आ तो भगवान रै भेज्योई वरदान री इत्तला है कोई तू तो डाकियो है बीरो— तू ही नी आपा सगळा ही । ई हिसाब, ‘सा’ब’ थारो, घरती रो प्यारो अर बडो भलो आदमी लाग्यो मनै । हाथ जोड’र, धारी बात धीरै कंठां सावळ उतार कं, ‘सा’ब’, एक ही बाप-दादै रा म्हे, छव घर हां, जमीन म्हा लोगा कर्न जागळ ही नी, गाव री बिरत म्हे छोड राखी है, पेट भरण रा ही सात्ता है, सामलात मे मैनत करणी चावा, पण जमीन बिना करा कठै ? म्हानै आप जे सौ-पचाम बीघा रो कोई एकल चक दिरवा सको तो बडो भाईतपणो हुवै आपरो । ई खातर जिको ही रस्तो आप मुझावो बी पर म्हे पावडा राखण त्यार हा मेघवाळा मे समचार म्हे और करदेस्या, बिना सेत रो कोई, दोड़-धूप बीनै करै तो आछी ही बात है ।”

बात पेमू रै रू-रू मे बँठयो । वो बोल्यो, “बाईसा, घरा आगै ईंटा पडी दोर्म है, अकाल मे अँ ?”

सुधा बात सगळी सामनै राखदी धीरै । वो बोल्यो, “बाईसा, पक्का कमरा म्हे, साचेली तो काई, सपनै मे ही नो चिण्या, अवं वास करस्या बा मे, आप हुबो न वै सुनभ हुवै म्हानै ।”

“आपा तो निमित्त हा, मैनत फळाणी हुवै बीनै तो सरजाम सै त्यार करदै वो ।”

वो बी दिन सिङ्गा ही गयो—आपरै धान-मुकाम ।

14

टावर दिनुगै सूणापाटी, छोह अर छोड़ियो सेतै हा, मुधा अर हिरदारी बँठी रग लेवै ही । सहसा मुधा बोली, “कदे-कदेई मा, आपां नै ही तो

खेतणों चाईजै टाबरा सागै ।”

सिरदारी बोली, “मा तो खेलसी अयें लकड़ां में, हां धारें में पीब है तो तू खेल भला ही, हू पालू थोड़ी ही हूँ तर्न ?”

“खोह तो तू ही खेल सकै है ?”

“सास तो इंया ही नी भावै गळै में, खोह भळे खिलवा, पापो बंधो कटै ।”

“खोह में तर्न दौडनो थोडो ही है ?”

“तो दळियो पीणों है का सोणों है तकिया लगा'र ?”

“तर्न तो खाली खूटो बणनो है खोह रो न दौडनो अर न होउ हो हिलाणा ।”

“हा फेर तो भळे ही तावै आमकै है की, पण थो सू मर्न पायनो बाई, बाई ?”

“टाबरा सागै खेल'र, धारो मन ही एकर वा जिसो हुग्यासो अर टाबर, तर्न आपरै सागै खेलती देख, हस-हस दोलड़ा हुमी, बांरो उत्माह बघसी, सागै, वा सागै धारी अपणायत । फामदो तर्न-मर्न एकसो ही है, खोन आब तो ?”

“तो सलाम मटे, मिये नै क्यां नाराज ? धारो कैयो ही सही ।”

मुधा कर्न घड़े टाबरा नै बोनी, “टाबरा ?”

“हा वैनजी ।”

“आज म्हे गिसस्या था सागै ।”

टाबर केई हस्या, केई मुळबया अर केया अचभो कियो, बोल्या, “हां सलो वैनजी ।”

“तो भीहू एकै कानी सिरदारी वैनजी नै संबो अर एकै कानी मर्न ?”

“वैनजी म्हारै कानी, वैनजी म्हारै कानी”, दोना पाळा में आवाज हुई पण सिरदारी वैनजी रो बोई नाव ही नी नै । जाणबूझ'र धान रो बोरी नै कुन हाथ धालें ? टाबर में ममसां । छंन इ र्थ मर्तै ही बटणी एक-एक तरफ । सिरदारी जिवा ही खूटो बण'र चैटी, टाबरा खळधळी दो, बटमाळ रो भापो एकर सागै ही मूजण्यो । छंन मुग् हुग्यो ।

एक छोरें धून में सिरदारी रै ममगा पर दोनां हापो मू धक्को दे'र

क्यों, 'खो:' विरोधी टावर हथाळघा पर थू-धू: करता बोल्या, 'खूटै नै 'खो.' करदी, ओ गळग्यो, गळग्यो, पण सिरदारी रै धक्को लाग्यो तो ही टस-सू-मस नी हुई, जवान धक्कै सू ही नी सिरकै वा, ओ तो टावर हो। न बोरी उठण री पौच अर न उठण री जी मे बीरै, पण बोलण री सरघा तो ही, बोली, "ओ गळग्यो किया रे, हू उठगी थोडो ही", 'खो:' करणियै छोरै नै मचकावती भळे बोली, "खूटै नै खोह किया दी रे हियै फूट?"

टावर ही हस्या अर सुधा ही हस पडी। केई टावर बोल्या, "देखो-देखो खूटो ही बोलै है?"

भूल मे कनलै छोरै रै धरती सिरदारी भळे बोली, "सिरकू नी तो बोलू ही नी?"

सुधा बोली, "छोरां, सावळ खेलो, ओ खूटो बोलै ही नी, गड़बड़ किया कूटै और है?"

टावर हमै हा, इसै कंचन-करमां ही आ पूगी। परीक्षा दे'र काल ही आई है वै। पर्चा वै ठीक हुयोडा बतावै है। चैरां पर बारै मुस्कान खेलै ही अर रमण री रळी बारै मन पर। सिरदारी नै खूटो बणी देख, मुस्कान बारी हसी मे फूटपड़ी अर रळी उत्कठा मे। एक ही क्रिया में एक दीठ अर दूजी अदीठ।

सुधा बोली, "हसो काई हो, मिदर रो खूटो, खोह रो खूटो ही बणसकै है कदेई?"

"जद ही तो छोरा नाचै है बैनजी?" कंचन बोली।

"अै तो छोरा है, खूटा लूठा हुवै तो टोघड़िया नी थर्म नाचता", करमां क्यो।

"विचार अर विवेक रै खूटा पर तो दुनियां टिकी है बाई", सुधा बोली।

"हां बैनजी, अर धानं रमता देख, म्हानै ही रळी आवै है रमण री।"

"टाबरा सागै रमण री रळी आवै बांरा उमंग अर ऊमर दोनू बधै। नही क्यों, ये ही खेलो काल सू।"

गाच-भात मिट बाद, घंटी लागी, खेन पूरो हुयो, टावर आप-आपरी जाग्या जा बैठा।

सुधा, कचन-करमा सू बात करती बोली, "साव निरवाळी किमास्त्रि हो ?"

"निरवाळी कठै, घर रो घंघो तो कीं करां ही हा ।"

"वो तो करणों ही चाईजै, पण की और ही तो हुणो चाईजै ?"

"करमावो ?"

"अपणायत रो दापरो कीं यधतो करो ।"

"किया ?"

"आप-आपरं बास में, घरे का घर रंकरन ही, दो-च्यार, दस-बीस कितो ही हुवै चावै, 'एक घड़ी आधी घड़ी, आधी में पुनि आध', पाच मिट ही वैंठो चामे पण वैंठो जरूर । दो आक सीखें तो सोनै में सुगन्ध, नी तो कां-ताळ वानै देस-दुनिया अर गाव री सुभचर्चा में ही बिलमावो की । बारं दुख-ददं में की पाती ही बंटाओ । देस अर गाव वणांकरण में बारी ही को योग है काई, का 'दळियै रा ठाव' ही है कोरी ? भेडा तो नी वै, टोरी जीनै हो टुरपडी । वा में स्वाभिमान अर दायित्व री अं भावना ही जगावो की ।"

'ठीक है वैनजी ।'

"यानै हू, प्रेमचंदजी री दो-च्यार पोथ्या दू—उपन्यास अर कहाव्या री । 'बूढी काकी' अर 'पूस की रात' जिसो कहाव्या गुणावो वानै । 'मैरनी काया:मुळकती घरती' जिसो पूरी पोथी गुणावो वानै, थोड़ी-थोड़ी रोज, देस री जाणकारी जागसो वा में, गरीब री पीठ सागै स्नेह बापरमी वा में अर धारै सागै बारी आत्मीयता । हा एक बात थीर, आपानै आम पडनो ही है अर बडणो ही । पास हुया पछै गणित रो झाड धारै धनम, अर सागै मस्हत हवा रो लेठो ही । कचन नै 'वैद्य किशोर' री परीक्षा तो जरूर ही देणो है । ठीक है अवार तो में जावो एकर ।" अर वै आप-आप परं वानो टुरगी ।

सुधा जीमनी, टोपटियै नै घोबन रो पाणी पा, छायां में बाघडिनो बन । हमें दाईं वा, दो-नीन मिट बारी पीठ पर हाथ फेरतो रही । बोरी बोनी

चाटते टोषडिये नस ऊंची करदी अर बी कानी देखण लागग्यो—एकटक । वा बोली, 'हा समझगी, समझगी, नस नीचे हाय नी फेरघो, ओ ही तो है मुतळव थारो ? लै फेरूं । पीठ छोड, हाथ वण कांबळ कानी करदियो । हाथ बीरो जिया ही, ठोडी सू नीचे सिरकयो, झाडखे री कोई सूळ, बीरे हाथ रै रडकी । वा बोली, "ओ, अवे समझी रोग असली ओ है, आ कठे बगाई रे ? नस जमी पर टेकी है, जद चुभी दीसै है आ ?" इच नैडी सूळ, आधी माय, आधी बारै, वण खीच'र बारै काढदी । कढता ही खून रा मुणमुणिया की सुरू हुग्या अर वारै सागै-सागै ही, आत्मीयता मे डूबता मालकण रा बोल । "ओ हो ! आ तो दोरी बँठी रे, काल तो, नी ही, रात नै गडी है कठे ही ?" ठोड़ी सू ले'र कावळ रै तोरै ताई, पाच-सात बार वण हाथ फेरघो । काछा सू दो-एक चीचड ही तोडघा । पीठ पर थापी देवती फेर बोली, "अबै तो हुवा, का भळे ही की कसर है ?" टोषडिये बी कानी आपरी घाई-घापी अर राजी आढ्या करदी, खुली किताब-सी । वारी आख्या री भासा पढण रो अभ्यास है बीनै । आख्या रै ऊजळै पाणी पर तिरता बीरा अबोल जाखर पढती वा बोली, 'तो लै, अवे तू ही आराम कर, आड-टेढ अधघडो हू ही करलू', अर टुर पडी वा ।

आ'र जिया ही बँठी, एक जवान, 'अति आधुनिका' कोई, आ खडी हुई, बरम तीसेक री हुवैली । एक हाथ मे ऑफिस बैग, दूजै सू गोगलस उतारनी बोली, "नमस्ते बहन जी ।"

मुधा हाथ जोड़, फेर मुड्डो बी कानी सिरकावती बोली, "नमस्ते जी, बिराजो ।" बँठगी वा, अर रह-रह आपरी कळ्हाई री घड़ी कानी इयां देखण लागगी जाणै, आपरै वध्योडै टैम सू मिट ही बेसी रकण री फुरसत नी हुवे अठे बीनै, पण वा करै ही डया, सुधा पर आपरो रीब जमावण घातर ही, जर मुधा अंदाज मियो ईनै । सुधा कानी देखती, वा घीरै-नै बोली, "आपत्ति न हो तो, थोडा समय दीजिए ।"

"नही बयो, फरमाए, अहोभाग्य है मेरा, आपसे बात करने मे ।"

"निरीक्षिका हूं मैं प्रौढ़ शिक्षा मे, उर्मिला गर्ग कहते हैं मुझे ।"

"धन्यवाद, मेरा नाम सुधा है ।"

"बाई कास्ट ?"

“शर्मा हूँ मैं।”

सुधा कानी बण की अचंभूँ सू देखयो, सोच ही बा, ‘शर्मा, मयिमें मैं कैसे जरूर गडबड है कही, पर अपने को इससे क्या?’ बोली, ‘मुना हे आप यहा रात्रि-पाठशाळा भी चलाती है?’

“हा करती हूँ प्रयास कुछ।”

“औरते किन्तीक आजाती होंगी?”

“अभी तो पन्द्रह के आसपास ही समझे, पहले तीस से भी ऊपर ही जाती थी।”

‘गरीब लोग अकाल में कही चले गए होंगे?’

“हा जी।”

“क्या लेती हैं आप उनसे?”

“आशीर्वाद।”

बी कानी की अचंभूँ सू देखती बोली, “कोरे आशीर्वाद से तो पेट भरता नहीं?”

सुधा पल भर बी कानी, एक गडती निजर नांखी, आ देखा नै के पालिस कियोडो कोरो पीतळ ही है का की सोनै रो भेळ ही है कडे ही? कसौटी पर घिसू की, ठा तो जद ही सागै। बडी नरमाई सू बोनी बा, “श्रीमतीजी, एकाकी हूँ, और एक ही समय घाती हूँ, रुघा-मूषा जैसा मिलजाय टीक है। निर्वाह किसी तरह हो जाता है तो सोचती हूँ, पंडी हूँ यही।”

निरीक्षका बी कानी रोव सू देख्यो, अर सोच्यो, ‘नितान्त गरीबिनी, दुखियारिन है कोई, घर में निकासी हुई।’ इसी ताठ बा भाग-आप सम्बोधन करे ही, अब आपरो अफगरी भू जागगी बीमे, अर तुम-तुम करण लागगी। बोली, “सो-पचाम रूपल्ली से क्या पार पटती होगी मात्रान ? भरपेट आटा-दास में टोटा रहता होगा। मोटी-मे-मोटी गाडी भी पत्रों तुम, तो साठ-मातर से कम में नही मिलेगी।” फेर आपरो गाडी कानी इगारी करती बोली, “और मास भर में दो ऐंगो गरीबगो तो, तुम जैसी को तो अन्न की जगह हवा खाकर ही रहना पड़े।”

“गरी है आपका मांगना, पर बगडों की पूर्ति में कुछ, काग-तुन कर

करलेती हू; जल लाऊं थोडा ?”

“बस, पीकर ही आई हूं सीधी ।” एक पल रुक'र भठ्ठे बोली, “शिक्षा तुम्हारी ?”

“मैट्रिक और संस्कृत में प्रथमा ।”

“तो तुम्हें योजना बताऊं एक, बढ़िया खाओ, बढ़िया पहनो ऐसी ।”

“बड़ी कृपा होगी, अहसान नहीं भूलूंगी ।”

“बिजली तो तुम्हारे यहा है ही ?”

“हां जी ।”

“माठ रुगए मासिक हम दे देगे तुम्हे ।”

“फिर चाहिए ही क्या ?”

“इतना ही नहीं, कुछ और भी ।”

“अधिकस्य अधिकम् फलम्, और ही अधिक कृपा होगी ।”

“दो पीपे किरासीन, चार डिब्बे चाक, चार पेटी बरते, झाडू-झाडन अलग । ये हर महीने खर्च होने वाले हैं ।”

“समझ गई जी ।”

“दो लालटेन, दो बाल्टियां, दो लोटे, श्यामपट्ट, पाटिया, चाटं और कुछ टाट पट्टियां, ये स्थाई हैं, एक बार ही मिलेंगे ।”

“जी ।”

“किरासीन न तुम्हें लाना, और न जलाना । चाक और बरतो के दस-दस, बीस-बीस पीस रख लिए कभी, साल भर बहुत हैं ।”

“पर्याप्त हैं जी, झाडू तो रोज वैसे ही निकलता है, फिर झाडू लेकर क्या करना है जी ?”

“निकलता है तो ठीक है फिर, लेकिन भरपाई तो सबकी हर महीने करनी पड़ेगी, मंडी आओ कभी तो ठीक, नहीं तो बाबू या मैं कोई-न-कोई अपने-आप पहुंच जाएगा यहा । फिफ्टी परसेंट तुम्हें, अपने-आप मिलते रहेंगे, ठीक है न फिर तो ?”

“महोदया जी, ठीक क्या, ठीक से यह कितना ऊपर है मैं कल्पना ही नहीं कर सकती, गुजर-बसर मेरा चैन से होने लगेगा, आपका परिवार सुखमय हो, आपका जोड़ा दीर्घायु ।”

“अरे हमें मालूम है, सूखी माठ खपली में क्या होता है आजकल ? इसमें मरकार का काम भी हम करेंगे, जन-कल्याण भी होगा और साथ में तुम्हारा-हमारा भी ।”

“साथ भी मरजाए और लाठी भी न टूटे, आपका सोचना, ठीक ही नहीं सामयिक भी है । मेरे जैसी कितनी-कितनी जरूरतमंद आपको हर माह आशिषती होगी, ऐसी उदार हृदया और दूरदर्शी अफसर बिरती ही मिलती हैं किसीको, आपका अभ्युदय निश्चित है ।”

बा फूटगी, अफसरी नशे ऊपरकर फिरण लाग्यो बोरें, बोली, “इस समय एकसौ दस स्कूल हैं मेरे अडर में, सब खुश हैं ।”

“भगवान करे, इनसे दुगुने स्कूल और हो आपकी रेख-रेख में ।”

इत्तै में मिरदारी आ पूगी, पण बा की टुरण मतै ही । मिरदारी पूछयो, “बाईसा, पधारणो आपरो कठै नू ह्यो ?”

“मडी से”, निरीशिका बोली ।

“अठै क्रिया, हुकम करो ?”

मुधा सोच्यो, “चुळू ह्यो पछें, राम-राम है, अवे आपा ही क्यो चूको ?”

बा बोली, “मा, आप श्रीमतीजी अधेरो बेचण नै आया है, माहक दूइता फिरै है कोई ?”

निरीशिका चमकी चूठियो बोडीजतां ही । पण मुधा कानो आट्या रो मूडो एकर इसो पाडघो जाणै बीने साबती ही गिटसेसी । बीरें बेराई-पर्मापीटर रो पारो चडतो माग्यो पण होड बीरा बफें रै पणो नीधें बड हा ।

मिरदारी बोली, “बाई हू नी समझो धारो मुतळब ?”

मुधा बोली, “मने, गळो रो मंजहटी ममझा अे की अंठ नागण रो मंर करण आया”; अर .कोई पंठ-मुग्गटं धारी रो आवाज आई, “उमिना जी ?”

रोहीडे रो फून थापो-गापो टुरग्यो, बिना मारीने टेल्या ।

मिरदारी बोली, “पण बाई, ईने आ ठा नहीं के पूर अठै पाटघोरा है, पण पर दिल्ली है ।”

“ठा-ठू री तो चलो कोई वात नी, धोखो इत्तो ही आवँ है कै कूडो-साचो बिचारी नै चाय रो न्यौरो ही नी काडसकी ।”

“आ कसर जवकँ कदेई आवँ जद, ब्याज समेत काड लिए ।”

“आ तो आ चुकी, फेर तो आ मूडो ही नी करे ईनै ।” अर बण सामने देहयो, बीनै फळसँ निकळती निरीक्षिकाजी री पीठ ही दीखी थोडो-सी ।

15

सूरज हाय-सवा हाथ चढचो हुसी । मधरी पून मिठास भरै ही जीवण में । पेड अगलै दिना रँ संघर्षं खातर सावठीजै हा । वा पर तो सलाह करै हा पनेरू अर मिदर री चौकी पर करै हा गाव रा वूढा-वडेरा ।

एक समझदार बोल्थो, “हुती विधवा अर पड़तो काळ, सुरू-सुरू में बढा दोरा । सुरू में तो आपा ही आ ही मोची ही कै धन ऐसकँ इक्को-दुक्को ही भला ही बचो पण सांवरियँ सुणली, भावट आछी करदी तो धन ही आजताई मौज करली अर वीरँ लारँ की आपा ही । पण ऊरळती रा अगला दो-ढाई महीना धन नै ओखा लागै, पछै'स वीरँ घर री कुण जाणँ ? फेर ही आपणी स्वाणप, पाणी आढी पाळ पैला बाधण में ही है ।”

केई बोल्थो, “बिल्कुल ठीक, कुवो तो आग लागण मू पैला ही खुदणो चार्जे पण विध ईरो क्रिया बैठै, आ मोचो ?”

दाडी पर हाथ फेरतो एक जणों बोल्थो, “विध आ ही कै दो जणा दीपता कोई कळकतँ जा'र, जे दस-बीस हजार रो चंदो टाच लावँ तो, धणो ही सोरा अर धन ही । जाया कुण नटै ? दस-बीस हजार तो एक गवाडो ही देसकँ है, मन में धारँ तो ? इत्ता ही करदे राज, की गोसेवा-सघ-बाळा अर की पूण-पावलो भोगलँ धणो तो चूरी सेवतो धन, न डील छीजँ अर न दूध में ही ।”

यात सगळा रँ जचणी, भेजणा कीनै आ तँ भी बठै ही

गोपाल म्हााराज अर हरधनजी गया कलकतै । गया पछे चिट्टो तो भरोजण रो ही हो पण डैरे मागै-सागै आं-शेना आप-आपरो पेटियो ही पूरो करलियो, गळै ताई । गोपाल म्हााराज रै ब्याव हो छोरी रो छेरुड़लो, अर हरधनजी रै पई हो माहेंगे पैलडो । बहू-वेटघां अर बूढक्या नै लडा-लडा'र दांता ही $32 \times 20 \times 10$ " इची, एक-एक ट्रंक दाव-दाव भरली कपडै-नत्तै अर भेट-पूजा सू । आनै नी देवणिया मे खाली दो ही जणा हा मेठ सिवदासजी अर जानकीलाल । सिवदासजी रो सभाव तो अमरीका दाई परायें काधें गडको किया राजी अर जानकीलाल रो पकडघं पइसै नै नी छोडघा ।

सिवदासजी, हरधनजी नै आपरा ग्रह-गांचर हों पूछघा अर की गाव रा समचार ही । गोपाल म्हााराज बिचाळै ही बोल्या, "सेठा, जलमभूमि है छेकड, माल मे महीनो-दो महीना, कदे-कणास गाव ही तो पधारघा करो ?"

कदेन री भेली हुयोड़ी, सेठा रो लालमा जाणै इत्तै नै ही उटीकै ही । मौकै रो वार करता बँ बोल्या, "गाव आवां, पण आवा कीरै भरोमै ?"

"आ किया कही सेठा", हरधनजी, बा कांभी देपता बडै अवभै सू बोल्या ।

"आ कही, भीडू तो पातो आवा है था जिमा, ई पातर ।"

"कयो मेठमा, बाडें छोट है म्हारै मे, करमावो ?"

"छोट घामें कयो, छोट है मगळो म्हा सोगां मे ।"

"बात रो तावळ टा, गाठ नै की खोल्या लागै ?"

"गाठ खोल्याही ही है, गाव है म्हारो, म्हारै बाप-दादा रो, आवण री रळी हो आवें अर प्रेम मू पांच पदमा लगावण री ही ।"

"लगावो नी बाई करो, लगावण जोग हो ।"

"मगळा मू मोटी बात है, आपरो दिन है मगावण रो", पुत्रागी जो प्रगंता रै गुळ नै और ऊंचां कियो ।

"तो दिन है जद, गाव मे आ'र बुंधी रो बादो ही म्हे बागं बाई ?" मेठ की अणगई मू बोल्या ।

"नही तो", हरधनजी होळै-मँ जबाव दियो ।

“पाखाना माफ ही, म्हे ही करा काई?”

“थे क्यों?”

“तो कुण करै?”

“भगी।”

“नही करै वै तो सोट मारां धारै का कुशती करा वा सागै?”

“पण ई मे म्हे काई करसका हा सेठ साव?”

“तो थे खाली म्हारे पर ही खसम हो काई? सवा रिपियो अर नारेळ

कळम में, इग्यारै-इक्कीस गणेश पूजा मे अर इकावन-एक सौ एक दिखणा में, कदेई काति म्हातम, कदेई इग्यारम री कथा अर कदेई पूनम री, सराध, होम, अनुष्ठान, जप अर काई ठा कित्ता-कित्ता लाग-दापा लगा राख्या है म्हा पर, सिर ही सुंवों नी करण दो म्हानै तो? अर गाव री बेगार और बाकी, अस्पताल, स्कूल, मिंदर, लाइबरी अर गौसाळ, हाथ सगळा आगै ही मांडै राखै। ओ सगळो भार म्हे ई खातर ही ढोवा हां काई कं आवा जद, सुविधा इसी देवो थे कं भळो, गाव कानी आवण नै मूढो ही नी करां।”

वै दोनू सेठा कांनी देखै तो हा, पण की कंवता संकै हा। मोचं हा, “दुधारू घेन, पावसी छडी है सामनै, की कंवता ही चमक छडी हुई तो, मंनत मगळी बेकार। आसागीर री आत्मा में स्वाभिमान री उजास कठै? ऊंदरी सिध नै जीमगी। वै खाली इत्तो ही बोल्या, “काई वतावा सेठ साव?” अर पछै कूडी उबास्यां लेंवता, होठा पर जीभ फेरण लागग्या। सेठ पुजारी जी नै जाणै है कं ओ आदमी हां-में-हा मिन्नावण रै सिवा, बाढो पर मूनण-जोगो ही नहीं, अर जाणै पुजारीजी ही है कं सेठ गुड़ दिखार, अगलै री गळो करवा नाखै, पण एक है दाता अर दूसरो है जाचक, धरती अर जाकास रो फर्क।

सेठ भळो बोल्या, “भंग्या री चूळो बिपा ही चलै है, का कम है की?”

“वै मू ही तेज है सेठा।”

“मिंदर मे आयोडी ही, वा ताय गई क है?”

“है।”

“वा क्यों जावै, जावण नै म्हे घोडा हा काई? साची पूछो तो धा

लोगा सू बा, लाख हाय आठी । थें वामण, भजनानन्दी, अर कर्मकांडी हूँर, किसोक मुधारघो हे गाव नै ? पण चोखो म्हारो काई लँ, मुख धे ही पा लया ? म्हानै सरीर तो मुधारणो हुसी तो, कनै ही म्हारै जसंडी पडै है, हवाघोरी च्यार दिन बठै ही करलेम्या—गाव सू आठी । पाच पइसा घमै-पुन मे लगाणा हुसी कठै ही तो, तोर्य घणा ही है, वामण-स्वामी जिमावण री जी मे आसी तो अठै ही एक नै हेलो मारचा दस आवै है । गाव मे लगाया ही सिट्टो की घणो निकळै है काई ?” अर बिदागरी मे वा आनै, नुवो पइसो ही नी परछायो । इया ही जानकीलाल करी । वो बोल्पो, “म्हाराज, सवाड हुवै धारै तो म्हां पर, व्याव-मावो अर माहेरो आ पडै कोई तो म्हां पर, इमो काई कुबेर बरमे हे म्हारै ? ठीक है, मनै देणो हुमो की, तो थानै घर बँठानै ही भेजदेस्यू” अर एकदम ही घेरग टोरदिया बानै, पाच पइसां री टिकट ही नी लगाई कठै ही ?

वामण विचारा उदास तो हुवण रा, ही हा, पण करै काई, किसो फोर्स ही बा कनै ? आरै सारै तो इत्ती ही हो कै आ आपरी आमीस नै काटो राघो, आखर ही धारै नी काडघो पण सेठा पर, इरो काई अमर हुवै हो ? थें तो डरै ही एक सेलटैकम अर इनजम-टैकमभाळा सू है, बागी तो परमात्मा सू ही नही, वो सामै तो थें, पाठ, प्रमाद अर अग्रवत्ती रो मरोनार ही राधै है, आचरण रो नही ।

बा, दो जणा नी दियो तो ह्री, म्हााराजा रँ एव-एक बाँटी, डोरो मोनै रा, छिन्नी, प्यानो अर पायल तीन-तीन नग चादी रा अर हजार नैडो नगदी, बापरम्या । पाच-मान दिन फिर-फिर घाँघी तो चरी रोटी, जाडा नाचै दिया पान-फिरचा अर चोधा चडघा मोटर-ट्रामा पर । चैरां पर एवर तो वी चमकी चाचरगी ।

मइसा अर एक छावडरी पूठी-मीठै री मे, मिट्या रा एव दिन गाठो पकटनी आ । बाना कग्ना-बरता, रात नै धारै बची जावता थें मोया हुमी । दिनुर्ग मान पूणो मान, ‘मुगलमराय—मुगलसराय’ रो रोडो मुगँर, आरया गुनी आगे । भिटना ही पैरा लो आ, आप-आपरै हावा रा दरमग विदा, पडै निजर करी मोट मोर्ये मंडूका बानी, पण मडूरा निजर नी आरै । गोपाळ मरगण आरया नै सावळ मनळी एवर, फेर देघो बानै, पण नी

दीखी बँ । वँ वँल्या, "पडजी, म्हारी आख्या सागण नही, का सडूका लुकगी, सावळ देखो तो सरी, संडूका नी दीखँ ?"

"आ ही बात हँ पूछू हो थानै, इरो मुतळब है सडूका उतरगी कठे ही ?"

"उतरगी आपे ही ?"

"आपे ही तो काई, उतारी है कण ही ?"

"तो अबँ ?"

"काई करा अबँ थे ही बतावो ?"

'कूका डव्वे मे जोर-जोर सू, कोई सुणै तो', आ कहू हा, पण होठ बढ ही राख्या । संतरा-वैतरा हुग्या दोनू ही पण गोपाळ म्हाराज रो हाल और ही भाडो । गोडा आरा दीग्वण मे सावता, पण सरधा बारी एकदम टूटगी । जीभ ही सूकगी अर निबटण री सका ही । काळजो हो तो वारो सागण जाग्या ही हो, पण नाड रो ठा, वूकिया कर्न आवता ही लागै हो । क्या पूछयो वानै, "क्या खो गया बाबा ?"

धीरै-मै कैयो बा, "काळजो ।"

"इसका मतलब, कुछ नहीं बचा बाबा ?"

"मायो बचयो है, बो थे चाटलो पिंड छूटे ।"

हरधनजी बा लोगा नै समझावै हा, गोपाळ म्हाराज तो गूंगा-सा लोगा रँ सामान कानी देखै हा । दो मिट बाद हरधनजी बोल्या, "पुजारीजी, छाबडकी ही उतारली दीसै है कण ही ?"

"पाप कटयो, कोनै सूअै है छाबडकी ? आपा नै ही उतारलँतो कोई तो अधै मिटती ?"

आरै कर्न तो टिगटा अर पीतळ रो एक-एक लोटो, का नीचँ बिछायोडा गूदडा ममलो चाबँ बीटा, अँ बच्या । जेवां मे रिपियँ-पूण रिपियँ री रेजगी अर जरदँ-चूनँ री एक-एक भूगळी, वँ ही भाग री घणखरी खाली । पग घीसता, घर आ ले तो लियो कियां ही, पण बडो दोरो, क्या आ, लम्बी है, आगँ पर छोडो इँनै ।

बाई-तीन महीना खातर, फेमिन-वर्क खोल्हो राज । सिरंपंच, पटवारी अर ओवरसीयर, खँच्या-खँच्या फिरै है अर सामे पाच-सात बारा पिछलगू ।

गाव रँ दिवणादँ गोरखे री जड सू एक फाटो मुरु हुवे है—कोई दो कोस लम्बो । बी सू तीन वास जुडे है—रामपुरे सामे । जलम ई फांटे रो आज सू बीस साल पैना हुयो हो—एक अफाळ मे । ऊमर देखतां आज ओ समतल मन, समतल सरीर, छकः जवानी मे हुणो चाईजे हो, पण है ईरो उरटो ।

उदाम अर रोगलो, पग पागळा अर सरीर घणखरो घायल, तो ही सहनसील ओ, आपरी पीड आपरँ मू नी प्रकारँ । पण ईरा सत-मत अबोल घाव, विना जीभ ही बोलै अर सारकर निकळते बटाऊ रो ध्यान आप कानी खोचै । कुण जाणँ, सरकारी कागदां मे ईरो नाव, काई है पण फेमिन मे जलम लेवण रँ कारण, ईरो नाव लोगा फेमिन-फाटो काडदियो, वो आज ही चालै है ।

आ पछलै बीस-बाईस माता मे ओ गाव छव बिरिया अकाळ री फेट मे आयो. आ मातवी बिरिया है । छवू बिरियां ही सडकडू, लुगाई-आदमी ईगे चंगे चमकावण अर सगीर मुघड बणावण मे लाग्या, दस-पाच दिन नही—महीना । राज कर्मचारघा री बघती फतार अर अफमर-टपसरा री दौडनी जीपा देख, ओ (फाटो) मोच्या करतो फँ, “कूटीजतो-पीटीजतो एक दिन हू ही, घरती री मोटी सडका सामे जा मिलम्यु अर वा सामे कार्य-मू-बांधो मिला राष्ट्र री प्रगति मे पुरो महयोग देम्यु । म्हारी फोलादी छाती पर, मुळकता भाडी-गाडा अर हंसती साइफला ही नही, टूफ अर टूँकटर ही दोडमी । बारी गति अर दिम-दोठ मे म्हारो सरीर टूटे तो ही हँ रात्री ही नही, मार्फक भी, पण हर धार मनभूवा म्हारा धूड मे मिलना गया, म्हारी घेनना घरती पर ऊगनी हरिपाली नै सरकारी टीडी घरगी, हाथ-पग माभन जोभो ही नी राख्यो मने । पण म्हारी छाती पर नाटक करणिया आरँ मोरँ तीन-प्यार महीना खोवणो तो गेटी घाई, घूब पियो अर गूद ही उगायो की दुर्गन्ध बोरी गाव रँ झुगडा में ही जा बटी । अफमर अर ओवरसियरा रँ टी बी अर फिज फिट हुया, बंगला अर बघाटर बगना अर देखना-देखना रँ रगीन टयूब-माईटी रँ प्रकाश मे जगमगा उठ्या ।

विसेसता आ कै बां मे सू म्हारो कोई ही कृतज्ञ नी । हू भारत मा रो अभिन्न अग हू, म्हारा कृतज्ञ नहीं वे भारत मा रा काई हुसी ?

आ छवू बिरिया मे हू हस्यो खाली एक ही बिरिया हू । जाटा री एक जवान पण गरीब छोरी नै एक मनचल्यै पटवारी बीस रो लोट दिखा यतलाई ही—बीरो गरीबी नाजायज फायदो उठावण खातर पण बात उल्टी पडो ! सिर पर खाली कूडो लिया, वा घर कानी जावै ही । कूडो बण परियां फँक्यो; एक हाथ मे बुग्गी पकडली, दूसरै मे आपरी एक फीडी जूती ।

लाड करण लागगी बठै ही । सरीर री ही सतोल अर मन री ही । बिचमं पड'र केई नी छुडावता तो पटवारी री टाट वा मा रै जलम्यै री सौ काढ'र छोडती । पटवारी बी रात ही सहर मे बड़ग्यो, वो तो आज ताई जात-झड़लै रै मिस ही ईनै नी आयो । हू आज ही, राष्ट्र री मूळ धारा सू मिलण री सोचू हूं पण पेस पड़नी मुश्किल लागै है मनै ।”

काम चालू हुग्यो । भगी आ पूग्या । पाच-सात आदमी अर इत्ती ही लुगाया ।

आवता ही दो-एक वृक्ष-बुझाकड़ बोल्या, “आज हाथी हळ किया जुतग्या रे, ये घूड ढोवण किया आयग्या ?”

“म्हे तो छोटा-मोटा ही घूड-फूस में हुया अन्नदाता, घूड ढोवण रो किसो मँगो है ?” मधै कैयो ।

“मँगो किया नी, घराणों लाजै है नी ?”

“आप दावै ज्यू कह सको हो अन्नदाता, म्हे तो चाकर हा आपरा ।”

एक दूसरो बिचाळै ही बोल्या, “चाकर पैसा कदेई रैया हुस्यो, अबार तो ये ठाकर हो म्हारा ।”

लगतै ही तीजै एक, और होठ खोल्या, “अबै तो वामणी आ बर्मा घरा मे, दुर्गन्ध ही मेटदी अर दळदर नै ही बिदा कियो । आगणा मे अबै होम रो घुवों मैकसी अर मशा रा मुर सुणीजसी; घूड सू मायो बाळन नै लगावो ? ओपै है वा ढोणा ?”

भग्या री टोळो उदास-उदाम मुणै ही । मधो सोचै हो ‘आ बळघ, मार मनै’, राड आनै तो घिमाणै मोल लेणी पण आपा नै अबै, पाछो बोलणी

ही क्यों है ?" बँ सगळा ही, चुपचाप काम पर जा लाग्या ।

पावडा बीसेक परिया, गाव री पचासू लुगाया न्यारं-न्यारं झूमका मे बंदी, कूडा मन बारा कदे-कणास नाखँ ही । आदमी घणखरा सोचँ हा कँ घडी-दो घड़ी मे हाजरड़ी लिखलँ तो लारो छूटँ, मूढा घरा कानी करा । परिया, एक गँरँ खंजडँ नीचँ, सरपच, पटवारी, अर एक मास्टर सोह री कुर्स्या पर बँठा हा । दो-एक माचा पर च्यार-पाचेक चापलूसिया ही अफसरी पूछ मे हालँ हा—कुर्स्या सागँ । गप्पा उडँ ही, बा सागँ बोड़ी-सिगरेटा ही ।

सरपच अर बीरी पूछा, काम मुरू हुवण सू पैला ही एक जाळ गूय राख्यो हो कँ भगीडा नै श्रीगणेश मे ही इसा ताचकावो कँ, फँर बँ तो ईनँ बुलाया ही नी आवँ ।

मघलँ रँ छोरँ नै ग्राम-सेवक हेलो कियो, "सुरजिया अठँ आ तो ?"

बो जिया ही आया, ग्राम-सेवक बोल्पो, "आधो है चाल्टी ठुनरा नाखी ?"

छोरो भीचक्को-सो बोल्पो, "हू तो बीरँ परिया कर आयो हू अन्न-दाना, पत्तो ही नी लाग्यो म्हारो तो बीरँ ?"

इत्तँ मे मास्टर की रीस मे आवतो बोल्पो, "एक तो कमूर अर ऊर मू कूड और । म्हा देग्रणिया री आख्या मे घूड नाखँ है ?" घण अणजचती ही, एक ओळाष री घरदी छोरँ रँ । छोरँ बाको फाड दियो । ग्राम-सेवक बोल्पो, "गाव सुपावण नै ऊपर मू जलटा और ?"

एक पिट्टू बान नै सारी, "जलडा करणा मिघाणा थोटा ही पडँ है ?"

पटवारी की बुजुर्गी बाणी मे बोल्पो, "इत्तो बाको फाटँ, फाटँ तरवार निक्ळगी चारँ ?"

पण छोरँ आरी की नी गुणी, जोर चड्यो । बीरी रोवनी आवाज पुन मे फँसनी, कूडा नाखती भीड ताई जा पुगी । भीड रा बान अर आख्या आवाज कानी हुम्पा । पण ही कट्टदियो—घटँ ही, "थो तो मर्घ रो सुर-जियां दीमँ है ।"

इत्तो मुग्गा ही, भनी अर भगनां हा जू ही टुर पडँपा—घापा-घापा । भग्ना री टोळी-गी-टोळी नै दोडनी देण, आगँ-आगँ री पलघगी और

लुगाया ही, आपरा पग खाथा करदिया । अँ सगळ्या, पलक झपँ जिती ताळ मे खेजई नीचँ आ पूग्या ।

मघँ री बहू आवती ही बोली, “माईता रोंवण जिसी क्योँ राख्यो इँनै, कंठ टूंप’र, रोणँ रो दुख हमेसा खातर ही मेट देवता ? क्यो दी इँरँ, काई भंस खोलली अण थारी ?”

लगती ही रूपँ री बहू और बोली, “हँ सागँ काई वँर काढँ हा ? का खडो आदमी मुहावँ नी थानँ ?”

लार-रो-लार रूपो बोल्यो, “ठोकी वा तो चोखी, माईतपणो है थारो, पण आ तो वतावो, थारो उजाड काई कियो अण ?”

ग्राम-सेवक बोल्यो, “पाणी री वाळ्टी ठुकरा नाखी अण ।”

मास्टर बोल्यो लगतो ही, “ठुकरायो पाणी कुण पियँ ?”

रूपो बोल्यो, “पाणी अन्नदाता किसो घी रो घडो हो ? जे लागग्यो भूल मे पग तो मत पियो ढोळदो, पण कूटण रो किसो कायदो है ?”

केई भगणा सागँ ही बोली, “कूटघा ही को बडा आदमी बजो तो कसर क्यो राखो, कूट’र और काढलो मन री ?”

पटवारी बोल्यो, “इसो काई घाव घालदियो इँरँ, सँ ही कपडा सू इत्ता वारँ क्यो आवो ?”

रूपो बोल्यो, “घाव ही नी मालका, थे घालदियो डर इँरँ, इँरँ ही नी, म्हां सगळ्याँ रँ कै म्हारो अठँ आणों खतरँ सू खाली नी ।”

मघो बोल्यो, “आ तँसीलदारी थे राखो अन्नदाता, हाथ-पग हिला’र रोटी खाणी है म्हानँ तो ! अठँ नी मुहाया थानँ तो दो कोस आगँ घटस्या कठँ ही ।”

छोरो रोवतो-रोवतो बिना पूछघां ही बोल्यो, “वावा, वाळ्टी रँ पग छोड तो म्हारी छाया ही नी पडी वी पर ।”

लुगाया आरा सवाल-जबाब सुणँ ही । संकाळू केई काणँ गूवटा सू देखँ अर आकँ ही वानँ ।

आ सगळ्याँ री अगुवा रूपां अर करमा री काकी ही । ‘चाला, आपा ही देघां, काई तमासो है ?’ ओ सोचती, जवानी री थळी पर खडी दम-बारँ छोरघां परिया सू और आ पूगी । सास गळ्यां में, हांफँ ही ।

रोलै नै की मौळो घालण नै, सरपच बोहयो—मघै कानी देखतो, “की उजाड कियो तो ठोकदी कण ही माड़ी-भी, तो काई मौती छिरग्यां इरो?”

मघै री जीभ उयळीजी नी वीमू पैला ही रुपां बोली, “पण ठोकीजणा तो थे चाईजो सगळा, ओ गरीब, विचारो क्यो?”

“म्हे क्यो?”

“थे अठै करो ही काई हो मिवा उजाड़ रै? रंम्यत सू टळो न राज मू?”

सरपच आपरो मायली धरती पर सोधै हो कै, “जवाब मे पाछो काई कैवणो चाईजै इने?”

सरपच नै अणमाग्यो योग देवनो ग्राम-सेवक बोहयो, “भुवाजी, थोड़ो-सो डरायो ही हो, ठोकी इरै कण ही?”

रूपा डोळा की ऊपर पंचती बोली, “बिचाल्ले सपर-धपर कण री जरूरत नी है, कोई पूछे न पूछे, हूँ लाडे री भुवा, कण पूछपो हो थानै?” ग्राम-सेवक रै होठा रै ताळो लाग्यो अर चाबी जाणै गमगी हूवै। बीरी तो फेर हिम्मत ही नी हुई बोलण री।

रूपा सरपच कानी मू करती बोली, “सरपंचा, मरबानी कर परमाया देवा कै इरै दी किमें मिर्दार, दरमण तो सावळ म्हे ही करा बीरा?”

धूक गिटतो सरपच बोहयो, “पाणी री बाल्टी टुकरा नांयी बतावै है अण।”

“चेतो तो आपरो घर मे ही है नी? पूछपो थापनै कै इरै दी कण? आप फरमायो हो कै बाल्टी अण टुकराई। पूछा दियाळी री अर गाथो होळी री, म्हारै पूछण रो जबाब टो कै इरै ठोरी कण?”

सरपच रो धूक मूक्यो अर गानै परो हो। मोच्यो ‘नाव मू अर अँ वानै जिमारण लागगी तो नाय मे हाप देवण बीने सुहायँ ही किमो?’ अर “अर पछे काई टा, बाट री दिम बीने पुरै?”

कनै गडो मटपोनी गूण बोली, “भुवाजी, बाटँ पूछो हो थानै, गिरपच कानी तो त्रोन लाग्योडा है कदेन रा ही?”

धरमा री राणी बोनी, “पाणी टुकरा नाक्यो पण पाणी है बटै, देड पाचोई ठीरगं मे?”

घेरो बर्ध हो, खेजडी रं स्टाफ री हवा उडे ही ।

रूपा मुरजियं नै बोली, छोरा कण दी रे धारै, तू बता अँ तो लुगायां है सँ घणी रो नाव नी लँ ।” लुगाया सँ हंस पडी, पण अँ पोरंदार सगळा, माय रा मायं भुसळीजग्या ।

छोरो बोल्यो, “मास्टरजी ।”

करमा री काकी बोली, “किमो मास्टरजी है, मनै बताए तू, छोरां नै कूट-कूट, हिल्योडो दीसै है बो ?”

छोरो भळ्ळे बोल्यो, “म्हारो कूडो नांव लगायो गाव-सेवकजी ।”

रूपा बोली, “लगावै तो सरी ही, अठै तो लूण ही आरो घाल्यो पडै है ?”

दस बजगी दिनूर्ग री । तावडो कान काढै हो अर हवा करै ही पग खाया । परिया मू सुधा, सिरदारी अर कचन-करमां आवै ही । करमां सुधा नै कैयो हो, “बैनजी, अकाळ-राहत काम सुरू ह्यो है गाव मे—चास-बास तो की घे ही देखो ।”

बा बोली, “मनै घोस'र काई करस्यो, घे ही ठीक हो ।”

“तो यानै इंयां किसो कोई पकड़ै है । सागी पगा आपा पाछा टुर पढस्या ।”

अर टुरपडी आ सागं ।

जिया हो बै आई, कचन अर मुधा, ई घेरियं मू दो पावडा परियां ही पडो ह्यो—एक फोग सारै । करमा अर सिरदारी भीड़ मे आ मिली । सरपंच मन-ही-मन जगदम्बा नै याद करै हो—‘मा, कड़ाही करस्यु घारी, ग्रह नै टाळै, पण बीनै ओ ठा नी कँ अठै भगवती घणी हैं अर है ही सगळी उबाण पगा नी ।

सिरदारी मरपंच कानी भुजरो करती बोली, “किया माईता, आज अगाळ हपती चुकावो हो काई ? भीट किया घेरो दे राख्यो है ?”

कैई बोची, “एकनै तो चुकादियो, तू और चूकलै मिरदारी ।”

रूपा बोली, “सरपंच कानी मृ तो हपतो चूख्यो, ह्यो हो जिकं दिन ही ।”

बात रो सीध बघी जद, सिरदारी बोली, “माईता, मुटाकरी है आप

लोगा री तो नी आवा काल सू ?”

रूपां बोली, “आरी ठाकरी-कुठाकरी काई ? अ आप ही चाकरी र चिप्या फिर है । अफसर आवै कोई तो बी मू बात करा की ।”

कण हीं कैयो, “अफसर कोई आऊ तो बतावै है—घड़ी-दो घड़ी मे ।”

‘तो आपण घड़ी-दो घड़ी मे किसी खाटी-मौळी हुवै है ? घरे नही अठे ही सही ?”

करमा आवै आई, “रूपां ने बोली, “भुवा, ई छोरै रै ठोकणआळै ने मनै बत्ता तो ?”

“कीनै-कीनै बताऊं ?” कहैर वा एकर की चुप हुगी ।

मास्टर सोचै हो, ‘वेकसूर टाबरा ने आज ताई कुट्या है, बोरै नावै री सै कलमा अवार सागै ही चूकसी दीसै है—“हे भैरुनाथ बाबा, सिद्धर अर माळीपाना, बकरो अर बोटल सै, ई आई वलाय ने टाळै ।”

डरै तो पटवारी अर गाव-सेवक ही हा, पण सरपंच रो काळजो जाग्या छोडैर की नीचै जावतो लाग्यो बीनै । कण ही होळै-सै करमा ने कैयो, “बाईसा, मास्टर हो देंवणआळो ।”

करमा ने किसी मोल लागी ही, जूती कानी हाथ कियो ही हो बण, अचाणचको जीप रो हरडाट सुणीज्यो । सगळां ही सोच्यो, ‘अफसर आवै दीसै है ।’ कान सगळां रा खडा हुग्या अर निजर बीनै लागी । सरपंच सोचै हो, लै भई जीवड़ा, ‘आज ओळभो ही मिलसो अर बदनामी ही ।’ होठ सूकै हा अर ब्लड-प्रसर बधै हो । दो ही मिट हुया हुसी काकर दोवण-आळो एक टुकड़ो हो, देखता-देखता सगळां रै सामनैकर निकलग्यो ।

करमा जूती काढती बोली, “कठै है मास्टर वो ?” पण लोगा री आख्या जद, टुकड़ै कानी लाग्योड़ी ही, वो चुपकै-सै काई ठा कद सिरक्यो, लोगां ने ठा ही नी लाग्यो । करमा जूती तो पण मे पाछी घालती पण रीस पाछी नी पड़ी बी री । जोस घणा ने ही आयोड़ो हो, पण सगळी श्रीगणेश ने उडीकै ही ।

तोया ने पाणी झलावण ने, परतू बामण आयोड़ो हो । घरस पचासेक रो है वो । करमा ने बोल्यो, “तू स्याणी है बाई, धीरज राख थोडो, इया जूती काढया गाव री बदनामी हुवै नी ?”

“गाव री बदनामी सू डरै वो चेतो ठिकाने नी राखे ? बकालात करण लाम्या घणो ही—होस हैक नी, की ?”

म्हाराजिये देख्यो, ‘कावळ पजग्या दीसा हा, अर्ध आ धिगाने खंचर क्यो ली, काई कमीसन सौधे हो अठे ? चालू करदी कीने ही तो पछे मन-वार क्षणो ही ओखी हुवेली । सकपकायो एकर तो पण फेर दिस दीखगी की । वीने ठा है के आ मिदरआळी कने पढण जाया करे है, वीने माने ही मोकळी है, अर वा भाग री अवार अठे आयोडी है, वो दो पावडा वीने टुरर, मुधा ने बोल्यो हाथ जोड़तो—“बाईसा थे थोडी मर करो नी ?”

“हू काई मर करू वावासा ?”

म्हाराजिये एकर वी कानी देख्यो अर सोच्यो, “आवे नी कुवे सू निकळर खाड मे पड़ वैठू । आ ही वीरे माथे बाघणजोगी ही नी हुवे ?”

मुधा बोली, “बात काई है वावोसा, सावळ फरमावो नी आप ?”

आवे की जी में जी आयो म्हाराजिये रो । बोल्यो, “करमा ने ठडी-मीठी घालर, ओ महाभारत खिडावो नी आप ।”

“आप तो सगळा रे भाईत समान हो, आपरो कयो कुण टाळं है ?” वण कचन ने सन करी । कंचन-करमा ने बोली, “वैनजी ने देरी हुवे है, अर करमां एकदम सू टुर पडी । सागे, भीड ही छटणी मुरु हुगी । न्यारा-न्यारा झूमका आप-आपरी दिस कानी खिडग्या ।

म्हाराज सगळां सू बात करतो सरपच ने बोल्यो, “ठाकरसा, हू तो ई मिदरआळी रो गुण मानू हूं, साय अर लडाई रो काई, किसी दिस चाले ? लुगाया रो की नी बिगड़तो, रम्मत ही सही, पण केया रो मात्रानो माटी भेळो जा रळतो, फेर काई करता ?”

एक दूमरो बोल्यो, “ई लुगाई कने है तो कोई स्याळ-मांगी ।”

“हां जचे है ।” घणकरा वी री बात री हा भरी ।

16

भग्या विचारों पच-पचार किया ही आप-आपरे घर आगे एक-एक कमरियो खडो करलियो । न बा पर, बारें टीप, न मायं, अर न किवाड-कूटा ही, खाली द्वाचा-ढाचा ही खडा हुया पण ईसकेबाजा नै तो काणकी रो काजळ ही नै सुहायो, वै अचभो ही करे अर ईसको ही । ईसके री पुष्टि मे वै चर्चा करे के आरा घरिया नथिये सुनार री जाग्यां पर है, वो आस-ओलाद-बारो तो हो ही, सागें हाथ रो मेल ही नै परखावतो कीनै ही । लारें वीरें, लप गूधरी ही नै खिडी, खुरचण बीरी ही बा जमी मे ही रही । नीव खुदाई मे अबार, बीरो कांड हाडकी भंगीडा रै हाथ लागी दीसै है अर का, फेर ई लुगावडी (मुधा) कर्न मोवनी-विद्या है कीई । अबार मायं-माय लोगा रै इसी घाटा-फासी लाग्योडी है के, टक टाळन मे ही फेफी आवै है अर आरें कमरा चिणीजै हैं इसो काई आभो दुसै है आरें ? पण मन रै होठा पर आ राखण री तकलौफ कीई नै करे के आ, दाह-मास तो घणी बात है, छोड-छिटकाई बीडी-चिलम नै ही, च्यसन है आरें रोटी रो अर हेत है काम रो । रोटी न्यारी-न्यारी सेके तो काई ? दिस सगळा री एक, पण सगळां रा सागें, अर हाथ सगळा रा जुडवा, चावें ती अँ दिना नै भीच'र भेळा करदे घटा में अर घटा नै चुटक्या मे, कमरिया किमी चवारो मे है ?

अकाळ-राहत काम रो फायदा ही आं उठायो, तावें आयो जिसो । पाखरिया री पार पडती तो, वै आनं, काम कानी मू हीं नै कारण देवता, पण भलो हुवै विचारी करमा रो वण आं कानी टेडी आंख ही नै उठावण दी कीनै ही । बांरा मला मनसूजा बारें ही छीलरां में डुब'र पूरा हुया । भंग्यां मे ई मू वारी आस्था अर अभयता री ऊमर वधी ।

जून रो पछलो हपतो हो, नौ वजी ही रात री । हवा में अमृजणी ही, तिस अर पसीनै रो जोर हो । मिरदारी रै काळजें दाह उठै ही । बा धजूर रो पखी भिगो-भिगो हिलावै ही मू आगे । मुधा बोनी, "मा, खामी ताळ हुगी तर्न, हाथ हिलावता, हाथ धकग्यो हुसो, ला मनै शला पखी, हवा हूँ घालू काई देर ।"

"हूँ तो दुष्ट पाऊं हूँ, म्हारी आई, तर्न फोडा ओर घालू — सूधी बेंठी

नै, इया अधघड़ी मे पिघळू तो पिघळन दै", सिरदारी पाछी बोली। अर ई सागँ ही कंचन अर करमा आ खडी हुई सामनँ। सुधा बोली, "बायां ये अवार किया?"

करमा बोली, "भाई, पाले री झाल ले'र मडी गया हा, आवता अखबार ले'र आया है।"

मुधा सैज मे ही समझगी, बोली, "रिजल्ट आयग्यो काई?"

"हां।"

"मुणा फेर किया रैयो?"

"आप ही देखो, म्हारै तो समझ मे काँ बैठी नी?"

अखबार ले लियो मुधा, नम्बर देखती बा ज्यू-ज्यू आगँ वधे ही, बिया-बिया कचन-करमां रँ चैरा पर कित्ती ही तरँ रा भाव डूवँ अर तिरै हा। बै मुधा कानी एकटक देखती सोचँ ही, सावरिया, सुरसती मुभ बोलँ डँ रँ मूढे। आख्या, सिरदारी ही मुधा कानी तेडे ही। बा पखी चलाणी ही भूलगी अर दाह नै ही। अखबार आख्या आगँ सू अळगो करती, मुधा अचाणचकी बोली, "बायां, अबे तो, मिठाई त्यार करो वंगी सी?"

"आप हुकम करो जद ही", दोनू ही मुळकती बोली।

सिरदारी बोली, "आरी मिठाई नै तो, एकर छोड बाई, पैला हू करू मिठाई त्यार, सावळ सुणा तो सरी मनँ, काई समचार छप्यो है छापँ मे?"

"दोनू ही सँकिड डिबीजन पास हुई है मा।"

दोनू ही मुधा रँ पगा पर निवण लागी पण, वण बानँ पल भर पैला ही रोकदी, बोली, "आपा नो ऊपर री एकसी घरती पर हा, निवो, धारै मैज कल्याण मे लागी ई मा रँ पगा पर', अर कैवना ही दो मुळकतँ कमला री पसरती नाळ दो काळे-बूडे अर घूड भरघँ पगा पर मुकगी। "अरे बायां ओ काई करो हो?" सिरदारी खमक'र बोली पण बुण गुणै, जिकै पगां पर बारी वैनजी (गुरु) मुकँ रोज, चेल्यां बा पर आज ही नही तो फेर कद? मन रँ वेग नै बुण रोकै?"

वै केई बिरिया पूछती, "बाडिया, अग्रेजी री किताब रान, वैनजी री कोटही मे छोटी का घरे, म्हे तो, सगळँ मोघ धापी, मिली ही नही?"

सिरदारी कँवती, “वाया किताबा ही नही, सागै काम करण री दो काप्या और ही, सामलै आळें मे राखी पडी है, छोडगी थे वरामदै मे अर सोधो घरे अर कोटडी मे, कठै नू लाधै वै ?”

झाझरकै वा कहदियो कदेई, “बैनजी आज तो बिजळी ही, नी, किया पढा, सूती हा, अर सिरदारी फट उठती, रजाई परिया फँकती, कँवती सूत्या रँ पाडा जणै, सूतै सासा रो काई बटसी बायां ? गयो वखत पाछो वावडसी काई ? की तो दोघडी आख्या माकर काडो पोथ्या नै, लालटँण माज्यो-पूछघो त्यार है ।” अर वा बी बेळा ही चास लालटँण, तिपाई पर ला मेलती । अबार बीरो निस्वार्य सेवा-भाव वा दोना रँ मना पर बधतो गैरीजै हो । खुस ही वै पण सिरदारी री खुसी अबार दूण मे दौडै ही । वा बोली, “मिठाई थानै, हू जिमाऊ घपा'र, धानै भावै जिकी ?”

सुधा बोली, “तू ब्यारी जिमावै मा, पास तू थोडी ही हुई है ?”

“की फौडा आरा सफळ हुआ है तो की म्हारा ही, मिठाई फेर किया नही ?”

वै बोली, “बडिया, म्हानै तो म्हारा फौडा नही, थारी आसीस ही फळी है, मिठाई म्हे खुवास्या, धपा-धपा'र ।” अर मुळकती वै टुरगी आपरै घरा कानी ।

सुधा बोली, “मा दिनूगै आपा ही चालस्या, वारै घरा कानी, ई मिस बघाई अर मिलणो दोनू हुज्यासी ।”

“जरूर बाई, इसँ मौकै ही नही तो फेर कद ?”

पण बारी मावा अर वै, सूरजनारायण छितिज पर सावळ खडा ही नी हुया, बी मू पैला ही, आ पूगी सुधा कनै । वा वानै आसण देंवती बोली, “मा सा, ओ आप काई कियो, आप दोनां, इत्ती दूर आवण रा फौडा बयो देख्या ? म्हे आवै ही ।”

करमा री मा बोली, “फौडा म्हे तो खाली जणन रा ही देख्या हा, बै जिनावर किसा नी देखै ? फौडा असल मे देख्या है थे, बिना लोभ, बिना लगवाव । फौडा थे छोरघा रा ही मेट दिया अर म्हारा ही । जाट री बेटो सहरसर हुती तो वात और ही, ई गोभू गांव मे अँ दसवी पास हुगी, सुणै बो हूी दाता मे आगळी घालै है—अर भजो ओ, पइसो लाग्यो न टक्को । लख-

पति बाणिया री बेट्या तो अठे और ही बस है, कुण हुई है दसवी पास देया । बेट्यां नै बेटा करदिया थे । म्हे तो थानै मूको धनवाद देवण नै आई हां, और म्हारै कनै की आणी-जाणी नी, लूखो लाड, घणी खम्मा है ।”

कंचन री मा बोली हाथ जोडती, “बैनजी, म्हारो घाको ही दोरो धिक है, हूं ही जे पढावणजोगी हुंती तो, दसवी पढा'र ही फेरा करती नी ? काई तो दू आपनै, अर काई देवणजोगी हू ? आ तो नांव री कचन है, आप ई मे विद्या री सुगन्ध भरदी—कंचन मे सुगन्ध, कचन सू ऊची हुगी आ, ई सागै ही दोना, दो ऊनी गाभा सुधा आगै राखदिया अर रिपिया की, जेबा सू काढण लागी ।

मुधा बोली, “मा-सा, ओ काई करो हो आप ?”

“कर'र काई करां हा, आवा जद खाली हाथ थोडी ही आवा ? फूल-पाखड़ी की तो देवा ही ?”

“अं फूल पाखड़ी मत दो, मनै तो देवो आसीस अर स्नेह, हू नी लू बै ।”

“म्हारो जीसोरो तो की लियां ही हुबै ।”

“अर म्हारो जीसोरो की नी लिया हुबै, बोलो किया करां ?”

“मैर करो, हाथ पाछा मत मोडो म्हारा ।”

“आपरो कैणों ठीक है, पण की ऊडी सोचो आप ।”

“काई ?”

“अवार ताई म्हे तीनू, सागण बैना सू ही बेसी, हेत री जिकी इकसार हरियाळी पर खेलती रही, ओ अडंगो न थी हरियाळी नै रुचै अर न बोरी संज सुगन्ध नै । आ तो पीसणै री पीसाई हुगी अर हूं हुगी पीमारी ।”

“थे इसी बात रो सकोच विल्कुल ही मत करो बैनजी ।”

“मंकोच तो मा-सा अस्वाभाविक है, हू तो संज स्वाभाविक बात कहूं हूं । दुनिया जाणै है कै लेण-देण री बतरणी मू हेत री चादर नै की-न-की खतरा ही हुबै ।”

बै दोनू ही बी सामों निरुत्तर-मी देणण लागी ।

बा भळे बोली, “इत्तो ही धारो मन, नी मानै की दिया बिना तो, सिरदारी मा नै देसको हो की ।”

“सिरदारो मा नै हो देस्वां, नी क्यों पण थारी जान्यां तो थे ही हो।”

“हू तो बी आगै की नहीं, बताऊ किमा ?”

“जरूर बतावो।”

“एक दिन मोठी रात गया, आ पुगार आई आ दोना नै, आर, की डर-फर-सी बोली, ‘बाई, आज तो रामजी राखी, जमारो नी तो नुबसर ही नेणों पडतो’, काई हुयो में कैयो। बोली, ‘कुत्ता फफेडर पूरी कर नाखता, देख नैगलिये रँ तीन-ब्यार जाग्या बचरका दे’ नाख्या, मरण-जोगा, हाथ मे भाग रो घोचो ही नी, करू ही काई, विचारो रूपो नायक हुवै न लारो छुडावे, आगै सारू तो वाई, हाथ मे लकड़ी बिना पावडो ही बारै नी निकळू।’ ई मा दाई, चाया खातर, मैं इया, प्राण संकट में कदेई नी नाख्या, मोठी आ हुईक हू ?” वै सुधा कानी देखती सुणै ही।

वा भळे बोली, “मूढे आगै बडाई करणो मा-सा ठीक नी, और बताऊ धानै, भियाळै री ठाठरती रात मे अँ नीद रा गुटका लेवती जद, आ उठर हेलो मारती बाया उठो, टैम हुगी, अँ कैवती, बडिया तू हेलो मारै जद म्हारै डाग-री-सी लागै, पण काई करा उठणों पडे।”

कचन-करमा बोली, “विचारो नै मचकावती म्हे तो, पण बडिया होऊ पाछा नी खोलती।”

“पण अबै बडिया किसीक लागै साची बताया ?” सुधा बोली।

“म्हारी मा-सो मोठी”, दोनू ही बोली।

“मा-सो मोठी” सुणर सिरदारी री आख्या मतै हो छळछळा उठी।

वा दोना, दोनू गाभा सिरदारी रँ आगै करदिया, बोली, “सँ बाई सिरदारी तनै देवा—बडे जोसोरै मू।”

सिरदारी सोच्यो, “मा-सो मोठी मनै बताई, अँ गाभा लेर मोल कराऊ की कियोडै रो ? ऊपरले पगोथिये पुगार, पाछी ही आगणै मे आ ठेरू, इसी काई पाळै मरू हूँ का ऊमर निवळसी आँ मू म्हारी ? लेणा तो अळगा, वण वा कानी आख्यां ही नी उठाई। वा ही, नी, कचन-करमा ही न्यौरा काठधा वीरा पण एक ‘नन्नो’, मी दुख हरै, वण साफ बहदियो, “ठाकुरजी म्हाराज, थे धिरियाण्यां देवणभाग अर हू लेंवण जोग, पण बैना री बधाई बैनजी नी लँ तो वेठधा री बधाई मा किया चूकै ? देवा और घणा

ही मौका आमी, पण अं नी लू", अर नही लिया वण ।

वा नं सुधा रो इत्तो अचंभो नी हुयो, जित्तो सिरदारी रो, पण कोई नी नै तो किसो धिगाणो है ? वं रामा-सामा कर'र टुरगी । चालती बात करे ही । कचन री मा बोली, "चौधरणजी, पाच-सात वरस ही पूरा नी हुया, आ ही मागण सिरदारी, केई बिरिया, गळी-गळी री रेत फटकती. झाडू अर छालो लिया, म्हारी गळी मे ही आवती । घटा, छान्पो फटकर म्हारे कर्न आवती । डोळा अर भाफणा ताई छख री परत चढघोडी, पूरा मे पसीनो चूवतो, कंवती, 'बाई री मा, आज तो काई ठा, किसै कुमाणम रो मू देख्यो हो उठते ही, छाले मे काणी कोडी रा ही दरमण नो हुया, मरती री आता तो हुवे है भेळी अर कंठ मूकै, भलै भाग, की चावो-भूवो करावो, दो गुटका पाणी तो ऊपर नाखू, नी जद, घर लेणो ही ओखो हुग्यो । आज बा ही सिरदारी दो गरम गाभा, माठ-माठ रो एक, आपा धामा हा, न्योरा कर-कर, लेणा तो अळगा, सामने ही नी देखै आ, इसो काई घर फाटै है इरो, गाभा मू ?"

चौधरण बोली, "सेठाणी, लोह रो काई माजनों है कै पाणी पर मिट ही तिरै बो, पण तकडी रो सामो किया, समदर पर नाचतो चाले तळै छोडदो भला ही, काठ डूवै तो वो डूवै ?"

"हा साची है बाई, संगत मू सभाव तो बदळै ही ।"

असाड सूको गयो । आंधी हफतभर एक-मी चाली । सिद्ध्या की मौट्टी पढती फेर बेग चढती, पाछी ही आपरी मागण चाल पकडती भाग छूटती । कित्ती ही जाग्या सडका पर रेत चढगी, रोडवेजा री टैम ऊरू-चूक पूरू, रत्तनगढ अर महाजन कानी, रेल री लेणां जाग्यां-जाग्यां रेत जगो बारैमामियां रा टोळा दिन-रात एक करता, खमता मुणीजता

सावण रो पैसो पय वीतण मर्तै हो, न हीड रा दरसन अर मे हरय रा । उतराधी जटां कानी देगता लोंग, रात नै आभै पाडता, नैटी अळगी बीजळी पळको मारै कीने ही तो ? चाद बागर जळेरी । गोपाळ म्हाराज टीपणो

किसान अर घर्म-प्राण लोग नै समझावै हा कै, पाणी रो कोटो तो अंस और साला मू दूणों मजूर ह्यो है पण घणघरो बंगाल-बिहार एकला ही खंच लियो, ई खातर आपा जिसा केई ठोकर्यै भाग ही रैवता सारै है।”

एक कण ही कैयो, “तो दादा, ऊपर ही भले, आपां दाईं भाई-भतीजा-चाद अर अंधेरगदीं ही है काई ?”

“व्यवस्था अबार, ऊपर-नीचै सगळै एकसी ही है।”

“तो आ सिकायत ही कीनै करा अर कुण सुणै ?”

“मुणै क्यों नी ? रोया बिना तो बोबो, मा ही नी दै, होम अर हरि-कीर्तन करावो”, अर केई खास आदमी ई व्यवस्था मे जुटग्या। कीर्तन खातर मिदर मे मडप बंधणो सुरू ह्यो।

मुधा, बरामदै मे बँठी सान्तड़ी नै समझावै ही की। सिरदारी पढती-पढती चश्मो उतार, धीरा काच पूछण लागगी। करमा आ पूगी, ताजो अखबार लिया। आवती ही बोली, “बहन जी, आपा तो, आभै कांती ताटक (शाटक) साधता-साधता, थकग्या, टोपा आदियां सू भला ही पड़ो, आमी तो नी नाचै एक ही, पण बंगाल-बिहार मे देखो थे, बिरछा रो बिकराळ रूप, बादळ फाटै है। केई जिलां मे, सडकडू गावा बारकर, पाणी घेरो देराख्यो है। पसु मरै है, अर बेघरवार लोग आसरे खातर, तरघता फिरै, बडी दुर्दसा है बठलै देहाता रो तो ? केई जाग्यां तो हैलीकॉप्टरा सू पैकेट नाखीज्या हा, फौजी नावा, बचाव मे ब्यस्त है—फोटू देखो थे।”

अखबार लेवती मुधा बोली, “बाई, केई अति सू मरै अर केई अभाव नू। प्रकृति जड है, बा कांई समझै बोरो ही दुख-दर्द ? आदमी जूझ सकै जितो ही जूझै, पण ऊपरकर फिरचां पछै, हाथ ऊपर नै ही करै। प्रकृति नी सुणै तो दूर-दूर रा आदमी सुणै-मझळै की, बा मे हुवै है धिवेक, ई घातर ही दिनघ नै मोटो मान्यो है।”

सिरदारी बोली, “बाई ? बाड, भूकम्प, अर काळ-कुसमों लारै लाग्या पछै कांई छोर्ड ?”

“आज हमा तो काल तुमा, आफत तो इसी की पर ही आ सकै है, बिना सूचना, बिना मदेशे।”

“आयोडी ही पडी है बाई, लारलो साल तो टशक-टसक'र काढणो हो

किया ही, अर असके रो किसी ठा पड़े है ?”

करमा बोली, “बडिया, बंगाल-विहार रो हाल देखता, आपा तो किता ही सोरा हा ?”

सुधा बोली, “सोरा हा तो की अर्थजोगा हा का बेअर्या ही ?”

“बेअर्या कियां बँनजी ?”

“आप सू आगे नी देखसके वो बेअर्यो ।”

“तो आपा ही की अर्या बणा ?”

“अर्या बणां तो कीरै ही अर्थ आओ—बाड पीडित है अबार ।”

“ई खातर अबवार मे ही की लिख तो राख्यो है—देखो ये ।”

सुधा देखण लागगी अखवार । दो मिट देख'र बोली, “हा, है, बाड-पीडित-कोस में कोई आधिक मदद भेजे तो मनियाडर अर ड्राफ्ट फीस नी लागै सरकार आ अपील कर राखी है देसवाम्यां सू । तो करमा, आपा फेर तारै क्यों ?”

“तारै रैणों तो नी चावा, पण पटडो किया बैठावा, सीध करो की ?”

“देखो, ई खातर न तो की पर ही जोर न कीरो ही निदा, समझ है आ तो, की में ही जादा, की मे ही कम । आपा तो समझा ही सका कीनै ही, हाय ढीलो तो अगलो ही करे । आखो देम गुस्दरै री एक संगर है, वो में न भेद न भीत ।”

“आपणों काई लियो, पूण-पावलो हुसी वो ही चोखो ।”

सिध्या लुगाया आई रोज मू दूणी नैड़ी । कंचन वाने बाड री एवर पड'र सुणाई । सुधा बोली, “दिन हुग्या पाणी घेरो दियां, आभे सू पाणी पड़े वो न्यारो । चूण, चाय सै पाणी भेजा । एक लंघलियो पैरण नै है कीरै ही, दिन हुग्या बीनै, बदळें तो दो मीटर मूको पूर तो कोई चार्ज का नी ?”

“हा वाईसा, चार्ज नी काई करे ?” घणी ही आवाजां एक सागै निकळी ।

“न चूल्हो जग सके, जे जगै ही किया ऐ तो चढावे काई बी पर ? नाग्यां अर अबोध धालक मावा री चामडो चूसै पण मावा रै पेट हूवे जद नी ?”

“ई मू बेसी तकलीफ की पर ही और काई हुसी बाईसा ?” केई जणी बोली ।

“पण आपणै, खाली इया सोच्यां तो, धानै कीनै ही सोरो सास आवण सू रैयो ? की आपा ही जुडा वा सागै, काम तो की, जद बणै ।”

“जरूर जुडो, तयार हा ।”

बण सगळी वात वानै समझाई, वं वडी राजी हुई । दो-दो, च्यार-च्यार, रिपिया आपरै पेटा रै गाठां दे' दे'र ही, दिया वा । एक वूडी मेघ-वाळी आपरो गुप्त खजानों सूपदियो सुधा नै—पाच रिपिया अस्ती पइसा रो । रिपियो एक ही नी, सगळी रेजगी । सुधा बोली, “मा-सा, दो रिपिया घणा, वाकी ले जावो थे ।”

डोकरी की उदास हुती बोली, “तो पाछा कोथळियै मे ?”

“काई हर्ज है ?”

“कोथळियो फेर नी खुल्यो, अर हू पैला ही बिदा हुगी तो ? भळे कद आम्हू पाछो खोलण वीनै ?”

“बहू-बेटो है नी, आपे ही खोलसी वै ।”

“पण इतै सू किसो काळ निकलसी वारो ? टक ही नी टळै । आं मे तो थे बोलो ही मत वाईसा । न अँ चोरी कर'र लायोडा अर न ठग'र । छार्ण-बलीतै मे दस-पाच पइसा की बचग्या तो कोथळियै मे नांख दिया । अडो मे च्याराना-आठाना कदेई काळ ही लिया, तो ही इत्ता तो बँचहीग्या ।”

“बचग्या तो, रापो कोथळियै मे ?”

वा पूरै नैचै सू बोली, “कोथळियै मे राखस्यू राम-राम अबै, मेठो कोथळियै री ममता एकर तो ।”

सुधा वी सळ पडी, निमधी देखती, मानवी देवळी कानी देखती रही, गदगद हुगी वा । जावती-जावती डोकरी बोली, “थे तो दे'र राजी हुवो अर हू ई नै लुको'र, इसी हू गूगी नी, धान खाऊं हू”, गई वा ।

एक डोकरी उठ-वैठ राखै है सुधा कनै की । एकसी है वा । हाथ बसू अवार पइमो ही नी हो । सोच्यो, ‘मगळी देवै सरधा सारू, घाली हू ही नी, बाईसा, कद-कद कहसी, मौको है निकळ्या पछै काई ?’ एक कीलो सागरी ही, वी कनै, बेच'र पाच रिपिया बट लाई । ‘टुकडो पाच-सात

दिन, बिना लगावण ही कुडक लेसू ।'

मुधा नै ठा लाग्यो तो वा बोली, "मा सा, मुट्टी सागरी रोज उवाळता तो पन्द्रें दिन गुजर चालतो सागीडो, ड्या देणो कोई जरूरी थोडो ही हो ?"

"बाईसा, एक साव बूढी खेजडी ही जद देसकै है मैं जिसी नै अर हू बी कर्नै नू ले'र ही की देवणजोगी नी, तो दिरकार है मर्नै ।"

मुधा, सिरदारी अर कचन-करमा, काईताल देखती रही बी कानी टकटकी लगायां ।

आ दोना लुगाया री चर्चा, खासा दिन चाली लुगाया रै समाज मे, सरीर बारो नही पण मरी वै ओजू ही नी ।

आपरी साईनी छोरधा मे सगळा नू घणा सान्तडो दिया । ईरै वचत-यात मे सताईस रिपिया पचास पडसा हा, सात-पचास राख्या, बाकी-सै दे दिया । पडसा तो खासा हा, पण टैम-खेटैम भा-बाप नै देदिया वण । देवण लागी जद मुधा अर सिरदारी बोली "इत्ता नी, लेवा बाई, धारा दो रिपिया ही घणा मोकळा ।" पण वा नी मानी । और क्यो बीनै, तो सायत बीर आत्मसम्मान नै ठेस पूगी हुवै, उदामी नू हकीजती वण आख्या भरती । सरल वा जहरत नू जादा है, अपग-अनाथ वाळका मे आपरी दोराई देखे वा ई खानर वा मार्ग बीरो सैज हेत है; वो किसी मौमा समझै, किसी जान ?

मुधा बोली, "सान्ति, बीम रिपिया एकै सागै ही देवै, कित्तो एक ही दिन रो काम है बाई ? इसी ही जरूरत वाल ही जे भळे पड़गी तो ?"

"अर काल ही जे हू नी रही तो ?"

मुधा अर गिरदारी बी कानी छोई-भी देखण लागी । "देखो, छोरी नै टिन चड्यो है ?"

वा भळे बोली, "बैनजी, काम पडमी अर हुगी तो और दे देसू, हुया बीरै बापरा देसू ?"

मुधा बोली, "बाई तू साची, जगत तो माल पर है, माल ही नो कुन मागसी ?"

सिरदारी बोली, "बाई, पग पागळा है ईरा, पण मन

ईरो, सग रो रग, चेली थारी है नी ?”

छोरी रँ चैरँ पर एक आत्मगौरव त्रिखरम्यो अणमावतो ।

हजार रिपिया हुग्या सगळा । च्यारसँ नैडा, हरिजन बास भे, बाकी कचन-करमा फिर-फिर कर लाई आपरै धरा सू । डाफ्ट बारै ही हाथा भिजवा दियो । सुधा रँ चैरँ पर खुसी अर चेतना मे मन्तोप हो खाली ई खातर कँ अछूत हाथा ही लम्बाई राजस्थान री थळी सू बगाल-बिहार ताई बधगी अर विसेसता आ, कँ बै आत्मगौरव समझै है ईं मे । अँ बधता हाथ, कुण जाणै और कित्ता आगँ बधसी कदेई, धरती रँ धी पार ताई ।

17

आठ-सवा आठ हुईं टुसी दिनूगै री । सिरदारी जियां ही आपरो बस्तो ले'र बरामदै मे आई, बीनै बरामदै रँ एक खूणै मे बैठै बालियँ री पीठ दीखी, किताब वण आख्या आगँ कर राखी ही, की गुणगुणावै हो वो, पण काई, आ सीध बीनै सावळ नी बधी । बा, होळै-होळै पग राखती, बीरँ लारँ जा ऊभी पण छोरँ न लारँ देख्यो अर न पोथी मू ली ही डिगाई आपरी । बोलै तो हकडा-हकडा'र हो पण बोलै साफ हो, न आखर कोई चावै हो अर न कोई अधूरो ही काढै हो । भू-भू भारत माता, मू-मू सबकी माता; भू-भू-भारत से है सबका नाता । मिट भर सुण'र वण, पाछी ही आपरी जाग्या आ संभाळी । बैठी-बैठी सोचण लागगी, “रामजी, ईं लुगाई सागै, म्हा भंग्या रँ सीर-सस्कार री गाठ कित्ती काठी लगाई है तँ, तू ही जाणै ? म्हानै तो, न लारली ठा अर न ईं भौ री । मैं जिसँ साव बळीतँ नै अकूरडी मू उठा'र, पोथी रँ उजास पर लेजा टुकोई, ओ अचभो कम नी, पागळती गळी-गळी मे सिर पर सिलोर रो वाटको ओडे पून घीसती फिरती, अबार वा उडता कागद बांचै, म्हा खातर तो ओ अचभो ही कम नी पण ईं गूगै टीगर री जीभ उथळा'र, पोथी रँ ढव घाल दियो ईं नै अचभो माना का जाडू ? आ तो खँर भानणी ही पडसी के खेवट करण में पाछ अण नी

राखी, पग गूँ पर भेवट ही तो की समझ नी आवै । पीपळामोळ री पीठी कर-कर केई दिन इंरी जीभ रँ धेयही, केई दिन धृटियँ री मालिस करी, जीभ पर कदेई ओरीसँ पर विदाम घिस-घिस चटाया इँने । बोलण रँ नानँ तो फेर ही भेड जिसो हाल ही हो इँरो, पण आ, टँ भंड सागँ हो काईताळ भेड वण'र रोज बोलती—वा—ss.. ss...वा वा, आ...ss आ ss .. आ वावा, वावा आ, इंया छपत किया, गूगो स्याणो हुवै'क नी हुवै कीनँ ठा ? पण, स्याणँ नँ गूगो हुवण रो खतरो तो जरूर है ।” इत्तँ मे. मुधा, कोटही सू निवळ'र वारँ आई तो, सिरदारी बोली, “वाई. झिखत दिद्या. किस्त खेती ।”

“किया मा, हूँ नी समझी ?” मुधा बोली ।

“वालियँ री जीभ इसी उयळीजण लागगी, मनँ तो अबार लाग्यो सावळ ठा । पण वाई खेचळ करणाआळी ही तो तँ जिमी सोधी ही लाघनी कोई, भाठँ मे जीभ घालदी तँ तो ।”

“जीभ तो मा, रामजी री घाल्योडो ही, धेतना अर शक्ति ही बी मे, बापा की नी घाल्यो बी मे, धार बीरी माँठी अर चेट्टा साव माठी ही, आपा तो अभ्यास रँ भाठँ पर घिसदी बीनँ, दोरी-सोरी की लँग पकडली बण तो बो ही राजी भर आपा ही । पण इँरँ बोलण री असली चावी मा, इँरो मा री जीभ मे ही, वा जे टावर-थका बीरँ दो पडी प्यार मू लागती रोज, तो जीभ बीरी खुल पडती बोलण नँ, आज न इँ छोरे नँ इत्ती तकलीफ उठानी पडती अर न आपानँ ही उळक्षणो पडतो इत्ती माथापच्यो मे ।”

“मा-बाप तो टेरो नाखण रा आडो हा, नाख दियो । कुत्ती नँ ही रळी भामा करँ है आपरा कूरिया चाटण री पण वा बंदा तो छोरे कानी मृ ही बदेई नी कियो पण आज ‘वालू-वालू’ बग्ता वां ही मारँना री जीभ मूकँ है. ममार रो उणियारो तो देघ तू, वाम प्यारो है, वाम नी, वाई ।”

“उणियारो नी, ओर मसार रो सभाव है मा ।” अर इत्तँ, पेम्नू आवतो दोस्यो । लारँ कुतो, साकळ बीरी बण एक हाय मे पकड राखी ही । पण मू लवकावँ ही । तमावू-रंगी, अलमेमियन, सरीर मे मे की पाकी पई हो । पेम्नू रामां-सामा करतो आ धँठो एक .

सिरदारी बोली, “पेम्नू. ओ नुवो घन, बढ पछँ धारलियो

“हू क्यान धारै हो मा ? ” वण पडूतर दियो ।
 “तो ?”

“सांव री नौकरी तो पूरी हुई, गया वै तो । कुत्ती आ, बी पाकी, की कजायल पग सू, बोल्या, ‘इसको तुम रखो पेम्, रखवाली करेगी तुम्हारे घर की ।’ एकर तो हू नटू हो पण फेर सोच्यो, मीठा खावै बीरा, घारा ही खाणा चाईजै कदेई, कह दियो तो सामे मूई कियां नटू ? हा भरली ।”
 सिरदारी रै चैरै पर की रुम्माई वापरगी, उदास भाव सू बोली,
 “चोखो भरली तो, लायो है तो ठडै-वासी सू पेट भराई तो की करानी ही पडसी इनै ।”

“बडी स्याणी है मा ?”

“स्याणी है, पण है तो कुत्ती ही, स्याणी बीनणी तो कोई हुती तो दौड-दौड दो काम करती म्हारै भागै ? पग ही दबावती की ?”

“रुखाळी रा बसी घारी ?”

“रुखाळीआळै दिना ही रुखाळी नी राखी कण ही, तो अबै कुण भूत खावै है मनै ?” कुत्ती टुकर-टुकर सामनै देखै ही—बात करता मा-वेटे नै । बा की समझी का, नी, वा जाणै पण मा रोओ लूखापण सुघा नै जरूर की कम जच्यो, तो ही अबार बा की नी बोली—कुत्तीआळै दाई बा ही देखती रही वा कानी ।

सिरदारी भळे बोली, “पेम्, सांव री कुत्ती है आ, सोरी रंयोडी, रजसी अठै ?”

वो बोल्यो, “अघपाव दूध का चाय मे एक फलकियो भोरदिए, घणो इनै तो ।

मुघा बोली, “मां, ‘आ रजसी का नही’, आ जे सांव सोचतो तो वो आपरो घर इनै थोड़ी ही छोडावतो ? जाय्या छूटचा पछै, रंजणै अर नी रजणै रो कोई मोल नी । हूं, अठै रंजीक नी ?”

“तो चोखो बाई, गाय गई तो, अबै कुत्ती ही सही, बाघ इनै”, मिरदारी बोली ।

मुघा कुत्ती रै सिर पर हाय फेम्पो, पूछ हिलावती बा, मुघा सामो देम्पण लागगी एकटक । वण बुचबारी बीनै, चू-चू करती कुत्ती नत जमी पर

टेकदी । सुधा आपरो हाथ बी आगँ कियो—पजो बण आपरो सुधा रँ हाथ पर घर दियो, जाणँ दोस्ती रा हाथ मिलाया हुवँ बा दोना ।

सुधा पेम् नै बोली, “जमीन रो काई हुयो भाई ?”

“तँ हुगी बाईसा, हु ई खातर ही आयो हू था दोनां कनै ।”

“किया काई हुई ?”

“म्हारँ भरोसँ तो बाईसा, काई नव चूल्हां री राख हुवण नै ही ?

जमीन रा दररुण ही नी हुता । भाड़ैआळा पइसा जुळै हा जेब मे, नाख'र निरवाळो हुयो, एकर ही नही दो दफँ ।”

“इया क्रियां ?”

“बिना पइसँ बठै कोई बात नी करै बाईसा ! अलग-अलग कमरा, हर कमरँ मे अलग-अलग मेज, हर मेज पर अलग-अलग हाथ अर हर हाथ री अलग-अलग मांग, कीनै-कीनै देऊं अर कित्ताक देऊं ? और ही घणा ही धूमँ हा बठै, हाथ जिकां रा की पोला हा बारा काम तो फटाफट हुवँ हा, बाक्या री अवस्था म्हारँ जिसी ही । तंग आ सा'ब नै अजँ करी मै 'सा'ब, जमीन हम लोग के कर्म मे ही नही लिखा है तो कैसे मिलेगा ? 'क्यों,' सा'ब बोल्या । मै सगळो इतिहास उथळदियो बा आगँ, 'अच्छा हम जाएमे तुम्हारे लिए,' बा कैयो । वै गया विचारा, भागा-दौड़ी कर-करा'र दो दिन मे काम पार घाल दियो क्रियां ही । जमीन अबँ दाय-आवण नी आवण री बात तो पठै चाल'र आंख्या मांकर तो काडो एकर ?

“जरूर चालो ।”

“जमीन है, पाणी है बाईसा, घटण री आमना हुवँ सगळां री, तो है रेत मे सोनो घणो ही, अर नी जद रेत पडी है आपरी जाग्या, अर आपणी पगत, आपरी जाग्या ।”

“एक रेत तो बा ही जिकी मणांबघ निकळती आपणँ छाजला मांकर, हाथ उत्तर देवता तो ही चावळ रो चौथाई सांनो ही, नी दीपतो बीमे कठँ ही अर एक रेत आ, जिकी मे रेत कम अर सोनो जादा, बीरी उपासना ? छोडा गुगा हां काई ?”

“सो बीधा रो एकल चक है, च्यार जणां रँ नाव ।”

“घणो मोनळो इत्तो तो ?”

सिरदारी बोली, “पण, देखणो अबे काई है, मिलग्यो वो ठीक है।”

“देख्या बिना ठा काई लागै, वैठी ही सटको सारै ?” सुधा कैयो ।

“तो चाल बाई, कद चाला ?”

पेमू बोल्यो, “थानै सुविधा हुवै जद ही ।”

“तो काल भोर मे रही ?” सुधा बोली ।

“विल्कुल ठीक, ।”

कुत्ती नै बठै ही छोड, पेमू गयो अर बोनै लारै-लारै सिरदारी ही टुरगी आपरै घर कानी ।

कुत्ती नै कोटडी मे लेजा'र, सुधा बीने, बारी रै एक छड़ सू बाधदी । वा अर सुधा, अवार दोवा-दो ही हा खाली । सुधा बीने सम्बोधती बोली, “बाई, थारी अर म्हारो अवस्था एकसी है अठै, खोळियै री दिस्टी नू नी, चेतना अर परिस्थिति देखता । तै मे ही की कसर समझ, मालिक बिदा करदी तनै, अर की कसर समझ'र ही मनै कण ही । तू कठै ही रजसी'क नी, आ क्यो भोचै हो मालिक, अर आ ही म्हारै सागै हुई समझ, मलिका री टैल चाकरी कम तै ही नी बजाई हुसी कम में ही नही । जाग्या आ, थारै ही ओपरी अर म्हारै ही, बिखै रा दिन तनै ही ओछा करणा अर मनै ही, आई है तो स्वागत है थारो, एक सू दो हुई आपा, विस्कुट अर डबल-रोटी तो म्हारै कनै नी, पण बस पडता दोरी तनै नी राखू, मैनत थारै खातर दो घडी जादा करणी पडसी तो करम्यू ।”

कुत्ती पूछ हिलावै ही कदे-कणास, आट्या अर कान बण बी कानी कर राख्या हा बडी एकाग्रता सू । सुधा री बात कुत्ती रै पल्लै की नी पडी पण बीरी बोली री बारीकी, ओळखाण बीरी, कुत्ती री चेतना -पर टाईप हुती गई बीरी समझ रै टाइपिस्ट सू । अबे सुधा री बोली रो वायुयान जिया ही कदेई बीरी जीभ री धरती छोडतो वारै निकळसी, कुत्ती रै काना मे फिट हुयोड़ा रैडार, बीरी आवाज नै पकडता ओळखलेसी कै आवाज कीरी है आ । कुत्तै रा अँ रैडार आदमी सू किता ही तेज अर सजग हुवै है ।

आज तो पैलो दिन है, ईनै आयां, सुधा मीठा चावळ करलिया सिंध्या । प्लेट मे चावळ घाल'र, कुत्ती आगै धरती बोली, “लँ बाई आज तो गुगना रा मोठा चावळ जीम”, चावळां रै हाथ लगा'र बण देख्यो, वै खासा गरम

हा। दो मिट ठैरगी वा, इत्त सिरदारी आ पूगी, बोली, “कहाँ नाँव है ईनें आज ?”

“नाखू नी, जिमाऊं ईनें—मीठा चावळ।”

“भावती रो ही क्यो सभाव बिगाडै है ईरो, पछै ठडा टुकडा पांवती नाक सळ घालैली, कुमाणस जात है नी, लाड किया ईतरै।”

“आज पैलै दिन तो सुगन मनावे ईंग ?”

“तो जिमा, आज क्यो रोज ही।”

कृत्ती री भुळावण सान्ति नै दे अगलै दिन भोर मे खाना हुंर, बजी दो-एक बैं छाजूआळै पूग्या, अर बठै सू तीन-चार किलोमीटर ‘दकसठ हैड’। पटवारखानै गया पटवारी कने—निसाणबंदी रो पूछण नै। ट्राजीस्टर बाजै हो, तास खेलै हो पटवारी, आपरै कोई मनमेळू सागै। पेम्नू रामरमी करतै, निसाणबंदी री पर्ची दिखाई पटवारी नै। पेम्नू कानी हळकी-सी निजर नांखतै, पर्ची बण पकडली पण पर्ची कानी गौर नी करंर, अध मिट ताई पैला बण सुधा रै चंरै कानी देख्यो; फेर बोल्यो, “आज तो हूं नी चाल मकू—बतावण नै धारै सागै, सरकारी काम खातर मंडी जाणों जरै है, काल आओ थे।”

पेम्नू बोल्यो, “काल दिनूगै तो म्है जाणो चावै हा, आंठो आज ही निगाळो तो बडी मँर हुवै आपरी।”

“नहीं ना, आज खातर तो हूं माफी चाऊ हू”, कहंर पाछो ही आपरी जाग्या जा बैठो। अँ मा-बेटी वारै खडी रही, पेम्नू मायं जांर बोल्यो, “माईनपणो करो, आपरी पग बेगार नी राखू”, कहंर बण बीम रिपिया सामनें कर दिया। वो बोल्यो, “धारो तो की नी बिगड़ै, पण म्हारै ओळभै नै जाग्या कर देख्यो।”

“मांय मँर करो कियों ही, गुग मानस्यू।”

‘नो चालो फेर’, अर वो टुरग्यो।

बीम-बार्डम मिट रो रस्तो हुमी, निमाणबंदी बतांर गयो वो तो। अँ गडा-गडा देघता रेया बी जमीन नै। आरा रा जुंय मिल्योड़ा, बठै-बठै

ही तो इत्ता गैरा अर ऊंचा कै ऊभो ऊट नी दीखै वा मे । वूई अर खीपा जादा, अर खार में कोई-कोई लागो ही खड़ो हो । पाच-सात बीघा जमीन खासी-भली डकसार, फेर कोई ठिरडो, आगै छोटा-मोटा दो एक धोरिया ही, ऊपर सू साफ; ऊजळी रेत छोड और की नी वा पर, पण वारी ढाळा, आक-बूया अर बाठा सू ढकी । जाग्या-जाग्या ऊदरा रा बिल, काई ठा कित्ता अरू-कांटा दास करै । सिरदारी नै एक पाटडा गोह, एक बिल सू निकळ'र एक बोझ मे बडती दीसी, बीरा तो सै-रू खडा हुग्या एकै सागै ही । वा बोली, "पेम्न मनै तो अठै दिन मे ही डर लागै लाडेसर, कोई घोळै दिन रो ही जे मिणियो मोसदै तो हाड गोघ-कागला ही भला ही सभाळो । रात तो निकळै ही की मू ?"

मुधा बोली, "जमी त्यार करे वीनै खसणों तो पड़ै ही मा, इया सीधी आंगळी घी थोडो ही हाथ आवै ?"

"ना बाई, आपा तो सूकी-पाकी आपणी गाव मे ही कर लेम्या, पोता नै धन नी करणो आपा नै तो । अठै तो गोहा, परडा, पैणा अर सखचूडा दिन मे ही लूणाघाटो खेनै है, रात नै तो मेळो मडतो हुसी वारो ? पैणों पियां पछै, पाणी ही नी मागै अगलो तो ?"

"तो इया जी हिलाया तो आ घरती फेर कदई हंसै ही नी ?"

"हंसै नी हंसै आपणो कोई ठेको थोडो ही है ? अणमीतो धन भावै कीनै ही, वो आओ अठै, आपा नै तो नी चाईजै ओ नागो धन ।"

पेम्न उदास हुग्यो, बोल्यो, "नी चाईजै ओ धन तो टाळ सही मा, नी राखा आपा ।"

मुधा बोली, "ना भाई, आयोडी लिछमी नै धक्को देवा, गूगा हा काई ?"

"राख बाई, हूं तो ई अळसीडै कानी मू ही नी करू", सिरदारी बोली ।

"टाळ सही, मत आए तू, जमी आपा नै राखणी है", मुधा कैयो ।

"राख तो भला ही पण अठै रात काढण रो कोड किमै मिरदार नै आसी, आ तो बत्ता पैलां ?"

"पेम्न आसी, सामै आठ-दस जणा और, ऊखळी मे सिर दे ही दियो तो बिना धम्मीड खाया, मायो पैला ही काई काढां ? दिन अठै अर रात हैड

पर ही सही, दस-पन्द्रह बीघा जमी तो तयार करा एकर, आगे तत की दीखसी तो माघो भले माइस्या, नी तो अल्ला-अल्ला, खैरसल्ला, आपा भला अर आपणो घर।”

खाजूआळें मे रामपुरे रे एक वाणिर्ये री दूकान है धान-चून अर किराणे री। बठे आ टिक्या अे। जीमणो तो हो नही, रात काटणी ही आने तो, पर रे एक छोटै से बरामदे मे मा-बेटी आपरा विछावणा लम्बा कर लिया। ओपरी जाग्या, निधडक नीद क्यारी आवै, गुरवत करण लागगी बै। 'इकसठ हैड' रो जिकर करती सिरदारी बोली, “हैं ए बाई पाणी रो ओ दौडतो दरियाव कठे सू आवै है, अर कठे ताई जावै है?”

“मा, संसार री आ सगळी सू लम्बो नहर है, जिको जीवण-जळ गगा-जमना नै हिमालै रे अन्तस मू मिलै, वो ही मिलै सतलज-व्यास नै, सतलज-व्यास रो पाणी है ओ ठेठ जेसळमेर ताई जासी ओ, तिस्सा नै पोखतो उदास घोरा नै हँसावतो।”

“काम जद तो तकडबंद है बाई।”

“तकडबंद काई मा, सवा दोय से कोस मे तो ईरो पेडू (तणो) अर सवा दो हजार कोस मे ईरा डाळा है।”

“है।” अध मिट बीरा होठ भेळा ही नी हुया।

“है, नी हकीगत है आ। ई मे काम आवणआळी ईटां सू, सगळी दुनिया रे च्यारुमेर च्यार गज चौड़ी सडक बणाया पछै, घीस किरोड ईटा ऊबरती रैतो। आदमी री मँनत रो अचभो नी ओ? अरबू रिपिया लाग्या है ई मे।”

“बाई!” दातां मे आगळी घाले काईताळ बा डूबी रही अचभे मे। फेर बोली, “फेर तो आ आपणी गंगा ही ही हुई। घोरा-गगा?”

“हुई तो आपा नै ई रो आदर करणो चाईजे अर ई रो मनस्या पूरी करण मे मदद।”

“काई मनस्या है ई री, बाई?”

“आदमी री मँनत मू मिल, हर बूद हँमे ई री—किरोड-किरोड प्राणा सागे जुडे बा।”

“किया बाई, हूँ नी समझी?”

“जादा सू जादा पाणी ईरो, सिचाई मे दरतीजे।”

“ममझी बाई ।”

“अर बिया तू जाणै ही है कै पाणी अर पडसो चालता ही चोपा, रक्या राष्ट्र री विसाल चेतना मे बीमारी पैदा करै वै, का विनास । फेर हर आदमी नै भोगणा पडै ।”

“साबळ समझा बाई ।”

“ओ पाणी मा, एक बडै वांध सू एक प्रधान नहर मे पडै, आगै चाल बा ही नहर कित्ती ही उपनहरा मे बंटै, बा मू फटै कित्ती ही छोटी-छोटी नहरा, वासू और-और नाळा अर बा मू भळे अनेकू खाळा । हर खाळो हर क्यारी ताई, हर बूद हर दाणै ताई । फेर वो ही धान हर खळै सू निकळ, छोटी सू छोटी बस्ती नै पोखतो महानगरा रै होठा ताई पूगै, हर खळो आखै राष्ट्र री सम्पत्ति हुई क नी ?

“जरूर हुई बाई ।”

“ओ ही पाणी एक जाग्या रक्या ?”

“सिडै का से डूवै कित्ता नै ही ।”

“आ ही बात, धन रक्या हुवै मा ।”

“किया ?”

“धन आपा बूरदा, वद करदा, का लुकोयो-लुकोयो राखा बीनै, वो अमूजतो धन काई काम रो ? चिता अर बीमारी है वो, असान्ति बीमे सूती जियै । छुलै आभै नीचै निरभै सास लेवती अकूरडी आछी बी सू । बो-तो मा, गगाजी सो चालतो ही रैणो चाईजै महल सू ले'र झूपडी ताई, सिद्धि बीरी ई मे ही है ।

“इत्ती बडो नहर, धन है बाई आपणी ई धरती नै ।”

“ई धरती नै बरदान ही इसो ही मिल्योडो है मा ।”

“बरदान कीरो बाई ?”

“रामजी रो ।”

“कियां ?”

“रामजी लका पर चढाई करो तनै ठा ही है ?”

“हा है बाई ।”

“वा लका जावण खातर, समन्दर कनै मू रस्तो माग्यो हाय जोड'र,

बड़ी नरमाई सू। न्यौरा काढता तीन दिन निकलग्या, पण अरगीज्योई समन्दर आय ही नी खोली।”

सुधा जद, ‘तीन दिन निकलग्या’ रो कैयो तो सिरदारी री याद की सचेष्ट हुगी, आपरी परतां मे दव्योडी याद बीरी, सहसा बीरै होठा पण आ बँठी, बा बोली, ‘गए तीन दिन बीत’, अर फेर, ‘भय दिन होत न प्रीत’, पूरो तो नी बाई पण इत्तो-सो तो याद आयग्यो मनै ही।”

बीरी ई जीवन्त याद रँ आं मूर्तिमंत पगा पर सुधा रा मुख-मतोम पलभर खातर समपेण हुग्या। आसावान हुती बा बोली, “मा, रामजी फेर अग्निबाण चढायो, समन्दर नै मुकोंवण खातर। पाणी बीरो उरळन री ऊंचाई पकडन मतै हुवण लागग्यो, बीरै काळजै ऊमस बधणी मुरु हुगी, न तह मे ठंड अर न हवा मे। आकळ-वाकळ जळजंतु सै अमूजण लागग्या। सागर रो मालकी जीव बामण रो रूप धर, पूजा रो घाळ लिया, रामजी रँ आगै आ खडो हुयो, अर बडी भीगी वाणी बोल्यो बो, “प्रभु, मुकोवो मत मनै, जड करणी है म्हारी, हू म्हारै ही बडापण मे, म्हारी आँख्यां गमा बँठो पण आप मरजादा पुरमोत्तम हो, मरजाद म्हारी इया मत मिटावो, आपरी ही वाध्योडी है बा।” मानग्या दयालु रामजी, पण वारो चढायो वाण खाली क्रिया जावै, अमोघ हुवै है वो। वाण बा आपणी ई घरनी कांनो छोड दियो, समन्दर हुया करतो बी टैम अठै। नरभक्षी जीव पूम्या करना बीरै किनारै। जियां ही ममुन्द्री गाभो बीरो हटयो, चेतना बीरो प्रभु मू बडी कातर अर कापनी वाणी मे बोली, “दीनदघु, काटरीं कीनै ही, अर पडी कठै ही आ क्रिया? में तां आपरी अमुबिधा री कल्पना ही नी करी कदेई, रोस फेर ही म्हारै पण, हू ओजूं हों की नी समझी, मरजादा-पुरमोत्तम? ठकी पडी ही, नीग तरल आवरण सूं उघाड दी मनै, क्रिया झननी म्हारै सूं ओग सो धकरो अठनो तावडो, शळ-सी बळती पून, अर घरफ-मी मर्दो, ओडसू ही काटं? च्यारां कांनो म्हारै सूनी रेत ही रेत रँनी बा म्हारै ही पेट रा नागहा-मोटा अपगिण कंकाळ। म्हारी उदामी रँ नाय भग्गजाजो ही तो कोई नी अठै, आप सँदे म्हारै सामा, फेर ही म्हारै तप मे भंज?”

सिरदारी रा होठ मतै ही खुलग्या “भाची कहे विचारो”

करण रै सिवा बी लाचार कर्न और ही ही काई ?”

पण, मा, रामजी बडा ही विनीत हुँर बोल्या घरती नै, “माता, इत्ती उदास क्यो हुवै, अर क्यो करै मन नै इत्तो छोटो ? इत्ता दिन थारै तळ पर सख-सीप, अर कच्छ-मच्छ-मछलो जिसै असंख्य जळजीवां रो मृष्टि कित-बिलती । अधकार ओड’र ही आवती बा, अर अंधकार ओढे-ओढे ही पूरी हुंती । न बोमे थारो कर्ज चुकावण रो समझ ही हुती, अर न आपरो फर्ज भमझण री ही, न बी कर्न भासा री दिस अर न भोग री । प्रेम, दया अर श्रम री सूझ, ई भोग-जूणी मे कठै ? तपसण, अर्ध मानवी चेतना पग पखार थारा, आचमन लेसी, थारै विपुळ-स्नेह रो सखनाद करती बा, टोकी री समृद्धि भोगसी । थारै प्राणदाई वक्ष पर गोकुळ घूमसी । बीरै खुरा सू उडती खंख नै लिलाड़ पर धारण कर, दिसावा धनवती हुसी । वक्ष पर थारै दूध-दही री नछा दौड़सी—आदम्या री प्राण बेन अर बारी ऊमर-जड सीचती । यज्ञ-री सुगन्ध, थारै आगण सू जातरा करसी ठँट स्वर्ग ताई । थारै सँज-सिणगार खातर, साधारण-सी एक बिरखा ही मोत्या रो काम करसी ।” बा गद्गद् हुगी अर आख्यां मतँ ही बह उठी बीरी रामजी री ई देव-दुर्लभ आत्मीयता सू । सोचै ही बा, “म्हारी गोदी मे मानखो रमसी, गोकुळ विचरसी वक्ष पर, यज्ञ रो धुवो आभै री ऊचाई लाघतो, बघसी ऊपर ।” अघ मिट रुक’र बा बोली, “म्हारी करणी तो इसी नी ही प्रभु, आप बनायास ही, अधकार सू बारै काढ मनै, मोटी करदी, आप तो आप ही हो दीनवधु, सायंक करदी मनै—अमूजणी सू बारै काढ’र ।” बा घरती आ है मा ।

“बात आ, साची है बाई ?”

“ओजू ही भळे वैम ही लाग्यो तनै ? वैम री ओघद मोत है फेर । भोळी मावडो, आपरै अस्तित्व रा अँनाण, वण गमा थोडा ही दिया, ओजूं लिया वैठी है बा ।”

“किया बाई, हू नी समझी ।”

“ई घरती पर आज ही दर-दूर ताई, जब जिता-जिता संपिया, सीप्या रा खाडा-खोरा टुकड़ा, घोषा रा नान्हां-नान्हा घोळ, बजरौनुमा समुन्दरी रेत, खारापण सू ढवया लम्बा-चीड़ा लूणिया ताल, सूणकरणसर

ताई मौजूद है, आपरै आदि-आवास री कथा बत्तावत्ता ।”

“तू साची बाई, अँ वातां तो मिलै है थारी ।”

“इत्तो ठा, तो तनै ही हुवैलो कै ईं धरती रो घी नामी हुया करतो, कालताईं हजारां मण घी, रियासत सू वारै जाया करतो, आए साल ठेठ आसाम-बगाल ताईं । अठै री राठ अर सिधण गाया, ओजू ही आपरी साख नी गमाईं । ऊन अठैरी दूर-दूर ताईं जावती । फोग अर लागै रो अठै कोई चाको नही हो । चौमास मे इंच-डोड इच विरखा हुया पछै, मुस्कान ईं री वारै महीना ही नी बुझती ।”

“बाई, पूगळ-छत्तरगढ, गोडू-वञ्जू, छाजूआळा-अनूपगढ अर महाजन-मळकीसर रो घी जोर रो हुया करतो, खायोडो है म्हारो कदेईं । घास री चरणोईं, बी घी री सुगन्ध ही न्यारी अर स्वाद ही अलवेलो ।”

“रामजी रो दियोडो वरदान झूठो हुया करै है कदेईं ? अब तो बो और ही घणों फळती । धरती आ हरियाळी सू ढकी रैसी बारुमास । जीवन्त सोनो अर जीवन्त मोती उगळमी आ । ससार रो सगळा सू मोटो अन्न भंडार आ धरती हुसी, गिर्ण्यं वरसा मे ।”

“जद तो आ, रामजी री प्यारी धरती हुई ?”

“रामजी नै तो आ ही क्यों, आखी धरती ही प्यारी है, पण आ इकाईं रामजी सू सँदे मिली है कदेईं, तो पुन-प्रभाव निश्चै ही चमकती ईंरा तर-तर ।”

“फेर तो बाई, ईं धरती नै जरूर जोतम्यां, पैणा हुवै चार्व पाटडा, मिनख सू लडै वारी काईं औकात ?”

सिरदारो री आ बात सुण, सुधा रै मुरसावत मनोरथी बूटै नै जाणै, जो भर पाणी मिलग्यो हुवै, सोचै ही वा कै, सेत जोतण री ममता अब ईंरी चेतना मे गहरी रुपगी, न्याल हुगी हूँ । बोली वा, “मा, आज तो ग्रामी उपाळी चाली तू ?”

“काम पडघा चालणों ही पडै बाई ।”

“पकगी है ली ?”

“पक काईं गई, पीडघा कीर्तन करती धमै ही नी ।”

“तो दावडू थोड़ी ?”

“ना बाई, ओ सभाव मन घाल आनै, भोगण दै आनै, ई भाग री ही है अँ ।” अर नही-नही करता दम-वारै मिट वण, दाबी पीठ अर पीडघां दोनू । एक-दो विरिया तो बोली वा, “भौए-भौए-भलो हुमा थारो, जी तो निकळघो नही, पण वाकी की रही नही, पण पछै काईं टा रुद अचाणचकी नोद फिरी बीनै, की टा नी लाग्यो । सुधा ही आपरो विछावणो जा संभाळघो अर नोद भेळै हुई ।

ऊगतै मूरज इग्यारस ही । वंगी थकी दोना एक पुळियै सारै स्नान कियो । डोल पर पाणी नाखती सिरदारी बोलै ही, “हे गगा, मैर करे, घर रै खेत मे जळदी सू जळदी, थारै मे तन-मन ऊजळा करू”, अर फेर पाव-पाव दूध पेटा मे नांर, आपरी बस पकड ली वा तीना ।

18

मंतरा री गाडी कदेई घोरा-घरती पर हांफती-टसकती अर कदेई, सूई जमीन पर सोरै-सास चालै ही । काळ-कुसमो हुवो चावै जमानो बारी मैनत-प्रिय माटी म् आस्था अर आत्मविश्वास रा बूटा ऊचा आवै हा । जजमान रै पैरघोडै रेसम अर टैरालीणी कपडा नै पा, कोड मे नी भावता कदेई वँ, बानै पहर'र मामरो साजता अर रवाव मैसूसता आज वँ ही कपडा बारी चेतना रै चुभै, मामण मे हीणता री बदवू आवै बांरी मनझदार नास्या नै । कारी लाग्यो लट्टो अर नात्र रै मेघवाळ री वणी गाढी दोवटी ही रुचै वानै । वानै आत्मीयता लागै बीमे ।

अवार छोटा-मोटा आठजणा ग्राजूआळै कानी गयोडा है । कस्ती अर कवाडा अँ शरथ है वा कर्नै; आक, खीप, वाठ अर लागै सागै जुद्ध हँ बांगो अर का ऊबड-खाबड अर उदाम जमीन सागै । खीप अर आक ऊपर नाख, एक छपरियो खडो कर राख्यो है वा । बी नीचै, आर्ट रा पीवा, टीण री एक मोटी मन्दूक अर गौह रो एक डोमडो घर राख्या है, वारै नवो, चूल्हो अर दो घडिया । बठै ही रामरोट वणावै अर भेळा वंठ'र जीमै, मुस्तावै दो

घड़ी अर फेर रणभूमि मे । धर्म जुद्ध है ओ, आप अर लोक खातर । एकर एक दाही मारी, एकर एक गोह । पैणा बतावै है, ईं घरती पर केई । मन मे की डर बैठग्यो बारै, रात ईं खातर हैड पर जा'र काटै ।

आठ-दम बीघा जमीन त्यार हुता ही ट्रैक्टर चालसी, गोहू अर चिणा बीजणरो विचार पक्को कर राख्यो है वा । न घर दीमै, अर न लुगाई-टाबर, आख्या मे हरियाळी सपना लेवै—मैदे हमण खातर । कदे-कदेई मन की पाछो ही पडै, मोचै 'भूख-तिस की हुवो, वारली सावती अर घर री आधी', गाव ही ठीक है पण फेर आसै-पामै जमीन रा हसता टुकडा दीमै, मिनख जुद्ध मे रसीजता दीमै तो एक अणविस-ईसको उठै वा मे, अर बी सागै नुई आसा अर नुवां बळ जलमै वांमे ।

कंचन ईं माल आयुर्वेद विशारद री त्यारी करै । एक साल ठैर'र बै तीनू इटर रो इन्तियान देसी, मध्य प्रदेश रतलाम मे जा'र । करमा री मासी है बठै ।

ईं साल विधानसभा रै चुनाव है—कुण जाणै कद तारीख री घोषणा हुज्यावै । लोग मायं-बारै आप-आपरी लह-ढव रा खूटा सोधता फिरै है आगूच ही । सत्ता पार्टी रो टिकट बजरग प्रभाकर रो पक्को है । अवार ताई अंम अंल ए हो । लारै एकर स्वास्थ्य मंत्री भी रैयोडो है । ट्रामफरा मे वडा पइसा कूटघा बण, जोड़-तोड़ मे उस्ताद, कोठी है जैपुर मे । तीन कोम परिया फामं है । सामनै बराबर रो टक्कर रो गोपाळराम गोदारो है—निदंजी । केई जणां और ही है—अवार सगळा ही मेवा रै मुरा मे इया बोलै है जाणू सेवा खातर बारो जी अमजतो हुवै ।

'प्रभाकर' जी नै गाव मे केई जणा कैयो, 'हरिजना रा थोट तो सा, जे इकधारा नघाणा हुवै तो मिदरआळी मास्टरणी सू वात करो आप । कीरै कैया पछै अधघडी खातर तो तावला ही मतदान री पेटी पर जा ऊभमी ।'

कैवण री ही देर ही, जीप जा ठैरी मिदर आगै । सुधा अर सिरदारी, पौधां नै पाणी मोचै ही । जीन रो हरडाट मुण, सिरदारी बारै आई । अंम अंल ए अर बारै साथला कानी हाय जोड़ती घेली, "हुकम करो अन्नदाता जी?"

अंम अंल ए साव बोल्या, "हुकम कांई आसीस सेवण आयो हूं । है तो

खेरियत सब ?”

“आपरा दिया ही दिन है, मर है माईतां री !”

केई जणा बोल्या, “अम अल ए साव है सिरदारो बडिया ।”

“धन-घड़ी धन-भाग, अठै ताई कृपा करी ।”

अम अल ए साव बोल्या, “जाग्या तो देखा, बडी रमणीक बताईजे है ?”

“पधारो, आपरी ही जाग्या ।”

मुधा आपरो काम बिया ही करे ही ।

भिरदारो कानी देखता अम अल ए साव बोल्या, “पेड ही सीचीजे है भले ?”

“कळाप तो की करा हा अग्निदाताजी, कोई लागै तो ?”

“स्कूल ही चलै है अठै ?”

“हां चलै है थोड़ी-घणी ।”

“फेर तो आश्रम ही है थो ?”

“काई है आप ही जाणो ।”

“पौधा अर बालका री अवस्था एक ही है, दोनू ही सेवा चावै, बडो महात्म है आंरी सेवा रो । ओ मामूली काम नी, ऋषि-मार्ग है ओ अर सागै राष्ट्र री बडी भारी सेवा । खूर्ण मे आयग्या थे, ओ ही आश्रम जे सहरसर हुतो तो हजारुं रिपिया अनुदान रा मिलता आए साल ।”

“आपरा ही रिपिया है अग्निदाताजी, उदरपूरणा हुवै बा घणी ।”

हाथ रो सकेत करता बोल्या बै, “बाईसा अठै बै ही है काई ?”

“हा ।”

“भाफ किया बाईसा, काम मे हरजो तो पडसी को, दो मिट आपसू वात करणो चाऊं ।”

मुधा वाली राखदी, नमस्कार री मुद्रा मे आ खड़ी हुई कने ।

“आपरी तो बडी प्रशसा सुणी है, ऊमर छोटी, प्रशसा बडी, सैज बात नी ।”

बडी नम्रता सू बोली वा, “इमी तो कोई बात नो सा, आम आदमी है जिया ही, मने समझो ।”

“आ आपरी और ही जादा लायकी है, बडो बडाई ना करे, बडो न बोलें बोल, हीरेंआळी सी बात है आ तो।”

सागला सगळा ही बोल्या, “आप बिल्कुल ठीक फरमाई सा।”

“हरिजन तो सुणी है, आपरें आदेश पर मरणें नै मगळ गिणें है, आ मामूली बात है कांई?”

“सा'ब ईं सू ऊंची सिद्धि और कांई हुमी?” सगळा चमचा सागें ही ही बाज उठचा एक ही सुर मे।

सिरदारी हाथ जोडती बोली, “कुसीं लाऊ सा, अघ घडी बिराजो तो?”

“अरे नही नही, ईं आथम मे तो खडो रेंणें मे ही पुन है।” बात रो रख सागण सीध मे करता बै भळे बोल्या, “बाईसा, थे जिकें टावरा नै हियो दे-दे मिनख वणावो अर लेवो बा मू राती पाई ही नही, वारा माईत थारें हुकम सागें हाजर हुवें तो ईं में अचभो क्यारो?”

“हुकम नी, हू तो बानें अजं ही कर सकू हूं सा”, सुधा बोली।

“तो एक अजं फेर म्हारी ही करो बानें मीर कर'र।”

“फरमावो?”

“आपनं मालूम ही है कैं वोट पडन री तारीख दौडती आब है नैडी, कान खाली सरकारी हेली नै उडीकें है।”

“हां सुणी तो है सा।”

“सुणी है तो आंगळियो पुन, म्हारें खातर ही लूटो, अबार सू ही?”

लिफाफो देखता ही वीम तो बीन पैला ही हुग्यो हो, होठ खुलतां ही बो चौडें हुग्यो।

बा बोली, “आपरो आसव हूं समझगी मा, पण आ तो वारें खुद रें सोचण-ममझण री चीज है, बांगे जलम-जान अधिकार वें खुद समझें? बोट तो आज ताई वें, एकर नी केई बिरियां देखुव्या, हित-अहित वें आपरो अब ही नी जाणें?”

“हित वारो जितो आप जाणसको हो बित्तो वें थोडी ही जाणसके है?”

“किया सा?”

“वा वास्तु अई आछी स्कूल खडी हुसकै है, धरु उद्योग-धधा नै ले'र और भी केई रकम री आर्थिक सुविधावा जुट सकै है वा खातर, ई बारीकी नै, बै इत्तो नी समझ सकै जित्ती आप । च्यार आख्या है आपरै ।”

“इसी बात तो नी सा, इसा मामला मे अवार तो अ लोग पढचै-लिख्या ग ही कान काटै है । ई सु पैला ही तो आपरी दिराई सुविधावा भोगी है वा ?”

“भोगी है पण मै सोची जित्ती नी, वा लारली कमर हू अबकी बार काढणी चाऊ, ब्याज समेत”, अर सैप री एक हळक-सी काई प्रभाकरजी रै दर्पण पर फैलगी ।

“फेर तो आपरो विचार बडो सुभ है सा ।”

“अस्ती परसैट ताई एह आपनै भी दिराणी चाऊं, एक अर्जी लिप'र मनै दे दिया आप ।”

“बाबो डोला सू माथो फोडै सा ? हू जद मुफ्त पढा'र ही राजी हू तो कुण तो म्हारै हिसाब राखै, कुण कागद सार्भ अर कुण दफतरा रा चक्कर काटै ?”

एक पल वा बी कानी देख्यो, पण बीरै चैरै पर निश्चै री लीक कोई डिगती नी लागी अर न वानै आपरै आश्वासना री नसीली मूयां मू बीरी स्वाभिमानो चेतना की प्रभावित हुती, फेर ही वै आपरी सैप मिटावता बोल्यो, “ई वावत म्हारै सू पैला, और कोई ही आयो आप कनै ?”

“नी सा ।”

“तो पैला थुवै, गोरी गाव बीरी ? म्हारै आयै रो अधिकारो की तो रैणो चाईजै ।”

“की बयो, पूरो अधिकारो आपरो ही रैणो चाईजै, विश्वास दे'र विश्वास लेणो है ओ तो ?”

पारो बीरो चढाव पर हो, पण मौके री ठण्डक पा, होठा सू नीचो ही रैयो ।

“अच्छा”, अर गया वै आपरै चमचा नै सागै लिया । चमचा केई रस्तै मे बोल्यो, “लुगाई वडी चालू है सा, कड़ियो आधै सू धणै गाव पर फेर राख्यो है ।”

“की नगदी रो लोभ देवां तो ?”

“हाथ माडणों ओखो है सा ।”

“अर लडाया ?”

“मानणी मुश्किल है ।”

“तो फेर दुजो टूणों करणों ही आवैं है मनै, फेर आ भागती दीखसी का म्हारो जिदाबाद बोल, डडोत करती ।”

“इसो ही कोई टूणो आप कर्नै हुवै तो कील सको हो बीनै की ।”

“एक-दो विरिया बजा'र और देखलू, फेर म्हारा बख म्हे जाणां ।”

आ चापलूसी प्लास्टिक रै रगीन चमचिया, अम एल ए रै उम्मीद-वार नै एड़ी मू चोटी ताई काठो भरदियो । गई जीप ।

चमचिया बात करै हा, “‘प्रभाकर’ है तो पट्टै रो रमार कूटणों ही जाणै है अर बुचकारणो ही । लारलै चुनाव मे दो-ब्यार भला आदम्या ई रो विरोध कियो, घणखरो गाव तणखडो हुयो, अण दो-एक नागा कनै सू, बारी पागड़या उछळवा नांखी, ऊपरसू घमकी और दी नागा कं ‘सोच लेया चद्रमा थारो ।’ डरग्या विचारा । अण दूसरै ही दिन गाव मे एक मीटिंग करी—लूठी, बडै जोर मे आ'र बोल्यो गांवआळा नै कं, चुनाव हूं जीतू या नो, ई रो मनै जू जित्ती ही चिंता नो, मनै एकही चिंता है खाली—गावा मे पनपती गुडागर्दी रो । मनै जे ऊमर भर ही तपणों पडै बीनै मिटावण घातर तो हूं तपस्यू, मिटणों पडै तो मिटस्यू । मिनिस्टरी नै ठोकर मार सकू हू, पण तप नै नो ।” वा दोनू नागा नै ब्रुलवा लिया वण, मीटिंग मे खूब शडकाया । दोना हाथ जोड'र माफी मागली भरी सभा मे—सम्बन्धित भनै आदम्या सू । पासो ही पळटग्यो एकदम सू, जणै-जणै रो जीभ पर बाह-मा-बाह । चक्रव्यूह आप ही रच्यो अर आप ही खिडा दियो ।”

केई बोल्या, “नाटकियो तो जीर रो है ?”

ई रै मू आगै सगळा जीकारो अर पूठ पाछै अबार नै ही तूंकारो, दुनियां ही अजब है ?

प्रभाकरजी गयां पछै, सुधा सिरदारी नै बोली, “मा, अबै तो चीयो आधम नैडो आवैं है, सभाव रो चादर की ऊजळी कर ।”

“कियां बाई, हू नी समझी ।”

“अँम अँल ए हुवँ चावँ बडो अफसर, बात करण रो काम पडँ कदेई तो ‘आप’, कँणो वानँ, अन्नदाता कीनै ही नी ।”

“कयो बाई, बडी बोली है आ तो ?”

“अन्नदाताजी, दासता अर दागीजतँ सभाव रो बोधक है, ईं सू ठाकरो-जुग रो गध आवँ, बोलणियँ रो सभाव दवँ, हीणता हावी हुवँ बी पर ।”

“समझी बाई, पण इत्ती मैरी पूग म्हारो कठै ?”

“अन्नदाता मागँ ओ हुवँ का देवँ बो ?”

“हुवँ तो देवँ बो ही ।”

“तो ओ तो मागँ है थारँ कनँ सू, देवँ काई है ?”

“देवँ है ज्ञासा ।”

“अर बणावँ है भोदू ।”

“साची कही तँ ।”

“तो तँ घोट घातर नाटक करणआळै बहुरूपियँ नै अन्नदाताजी किया कँयो ?”

“सभाव है बाई, आज रो नी खून सागँ आयोडो ।”

“ठीक है, पण अयँ तो पैलड़ी व्यवस्था ही बदळगी, देम रो ढाचो ही बदळग्यो तो सभाव ही बी सागँ बदळनो चाईजँ ।”

“जरूर बदळनो चाईजँ ।”

“अँम अँले ए अर अँम पी घातर तो आज तूँ ही खडी हुसकँ है, जीत भी सकँ है, पण अन्नदाता नू फेर भी नी—का हुनकँ है ?”

“नही ।”

“मँदे अन्नदाता तो धरती माता है, कित्ती वित्ताल, कित्ती उदार ! बीरो दर्जो आदमी नै देणो सोभँ काई ?”

“नी सोभँ, अवँ हू ध्यान राखसू, म्हारो ही नी, आपणँ सगळँ साथ रो ।”

प्रभाकरजी री तरफ मू दो-एक पडी-लिखी अर चलती लुगायां सुधा कनँ आई, अपणायत मे बाधती बीनँ योजी, “बाईमा, वानँ घोट नपावण मे ये दिलचस्पी लेबो की थानँ तो थोडी-मी जीम ही हिलाणी पड़ती, अर हरि-जन विचारा न्याल हुज्यासी, ऊमर याद राखभी थानँ, ईं आदमी री पूग है

ठेठ ऊपर ताई, म्हारो तो कंणो है थाने कै, मौकै रो फायदो थे ही उठावो—
पद सू, पइसै सू, दावै जिया ।”

बा सुधा री काळी कांबळी नै लोभ री लाली मे घणी ही डुबाई, पण
आसकिन हुवै तो रग पकडै कोई ? बा आपरी आस्था पर अडिग रही । न
नफे री आस पर झुकी अर न घाटे री आसका पर भेळी हुई । बोट पडन मे
अवै हफतो ही बाकी हो ।

सिन्ध्या पड़े ही । अधेरो गाव री धरती पर उतरण री उतावळ करै
हो । कोठडी रँ आळै मे सेस हुंतो दियो, टिम-टिमावै हो निमधो-निमधो,
अर धूपवती चौथाई सू ही कम बची ही पण बा आपरै धूवटे सास सागै
अगर री मक ओजू छोडै ही । मिरदारी घरे गयोड़ी ही । सान्तड़ी जीम'र
किताव खोलू ही पण बीजळी गयोड़ी ही, अठै सू ही नी, सगळै गाव सू ही ।
रोसनीघर रो मेनस्विच ही बंद हो—अध घंटे खातर अबार, हो नी,
करवा दियो कण ही । बीजळीआळो गांव रो ही है—दरोगा रो एक छोरो ।

कुत्ती, कोठडी रँ एक खूण मे बैठी ही, बोदी बोरी रँ एक आसण
पर । मर्दो (जुकाम) लाग्योडी है बीनै । मुधा बी कनै जा'र बोली, “क्यों
रुग्नाळीदारणी, आज तो रंजो नी हुवैली, खाली खीचड़ी, बा ही को कम ?”
कुत्ती अगलै पगा पर खडी हू, लटवा करण लागगी, उदासी नी दिखाई ।
मुधा फेर बोली; ‘पण मूढो मत उतार, मा नै कौयोड़ो है, पावेक दूध
लामो बा आवती, गर्म-गर्म लिंक लिए, का चाय री पत्ती नाखू मायं ?’ बण
मुधा मामी देख्यो, की समझण री कोसीस करती, पूछ फेर पटकण लागगी
परं पर ।

अचानक बीनै मुनीज्यो, “वाईमा ईनै देख्या तो ?” बीनै लाग्यो,
आवाज कण ही वाड रँ वारलै पामे खडी हु'र दो दीसै है । बा मांय बैठी
ही बोनी, “कुण हुसी ?” पण उत्तर पाछो नी आयो । बण सोच्यो, कोई
लुगाई हुवैली, हारी थाकी, बा वारै आई चौकन्नी-सी ।
आगीनै चाल'र बा बोली, “कुण है ए, कण दियो हेतो ?” एव
मुन्गोरो खडो दो वाडकनै वारै ही हुवैतो कोई । चैरो की डक
काटे टा लागै अंधेरै मे अचानककै ही एरु पमवाडै सू नियळ, मुधा
री चेरो एक आवै जिसो, गिट्टे पर इमी दोरी लागी, ..

एकर तो ! वीरा होठ फूट पड़्या, ओय...मा ए । बा बठे ही पडगो अर देवणियो कूदग्यो वाड रे ऊपर कर, पण कुत्ती वी सू ही जादा फुर्ती करी, खौडी ही, जुकाम ग्यारो, अर रज्योडी ही कम पण आवाज रे सागै ही, ताकत सगळी भेळी कर गोळी-सो गई वाड रे ऊपरकर, दात पूरा बँठ दिया पीडी मे । 'ओय कुत्ती खावै रे', किरळी फूटी, बोदै पूर नै फाडै ज्यू फाड नाखती, पण सागलो एक-दो कनै हा कोई; एक जणै कण ही कुत्ती रे जचा'र चेपी कान कनली, कुत्ती एक मे ही गुडदापेच अर देवणियां पार । दात लाग्या बो खडो तो हुग्यो कियां ही पण पीडी रे तूरकी छूटगी । पीडी रो पायजामो ही रगीजै हो, अर रेत रो काळजो ही ।

पाच-सात आदमी भेळा हुग्या, वो बोल्यो, "अरे, हू तो म्हारै घर कानी जावै हो, काई ठा की लारै दीडी आ, वें तो भागग्या, पीडी म्हारी पकड़ली अण ।"

केई बीरै बळू हुता, बिना देखे ही थूक उछाळन लागग्या, "बिचारै निरदोस रो नुकसाण कर दियो, पाळी है कुत्ती तो आपरी बाघी राखणी चाईजै सिकायत हुणो चाईजै सिरदारी री ।

"सिकायत ही नी, दवाई पाणी रो सगळो खर्चो लागणो चाईजै बीनै ।"

"ईरी जास्यां हूं हुतो तो ठा घालतो कुत्ती अर कुत्ती री धिरियाणी नै ।"

इत्तै एक जणों बोल्यो कोई, "कुत्ती नै तो मारदी दीसै है कण ही ?"

लोग निकळग्या, खाईज्यो वो जावै हो खौडावतो—होळै-होळै । एक कोई बूढो-बडेरो समझावै हो बीनै, "बडी अस्पताळ में सुयां चवधे ले लिए लाडेसर कुर्तै रे जहर रो अवार की भरोसो नी है, उठाव करलियो तो फेर कारी ही नी है ।"

कनकर निकळती एक डोकरी बोली, "सूयां तावै नी आवै तो चूर जा'र झाड़ो तो घलवा लिए ।"

सिरदारी आयगी, देखता ही जीमे की बाकी नी । सान्तड़ी कनै बँठी, आसू नाखै ही । कंचन अर करमां ही आ पूगी, दीडी-दीडी । भंगी-भगणां घरों देलियो सुधा रे बारकर ।

बीजळी आयगी । सगळ्यां पग देख्यो, 'कित्तीक लागी है देखा ?' पून

तो नी आयो, पण गिट्टी अर वीरं आसपास री जाग्या मूज'र रोटियो हुता मूगा हुवं हा । पीड इसी कै हाथ लगाया ही जी निकळै । कचन बोली, "बैनजी थे आगळी ही साबळ नी राखणदो गिट्टी पर, इया क्रियां ठा पडै कै हाडो थोडो-घणी बिडकगी हुवं कठै ही तो ?"

करमा बोली, "बैम री बात बाळन नै राखो, आपणै तो अस्पताळ ही चानो सीधा ।"

कचन अर करमा रै कांधा पर हाथ दिया वा उठ खडी हुई बोली, "मा कुती कठै ?"

कण ही कंयो, "वीनै तो मारदी बतावै है कण ही ।"

"मारदी तो ही, दिखावो तो सरी ।"

शाले-शाले वा, लेजा खडी करी वीनै—कुत्ती कनै । मूडै सू निकळ-पोडो छून, पडो ही वा, रणभूमि मे काम आयै, जी खोल जूझजै को जवान-नी । मुधा री आख्यां गीली हुगी अर मोती मतै ही वीरी काया नमाधि पर चढग्या । सोचै ही वा, इत्तादिन कांई आ खाली ई अवसर नै ही उडोकै हो ?"

कण ही कंयो, "देखो कनै ही ओ खून पडघो, खाईग्यो वीरो ।"

कचन वीनै देखती बोली, "आदमी रो खून कित्तो कीमती हुवं है—ओ सोचणों जाणै है ई खातर, पण ओ मानवी खून मोखी रै पाणी सो घूड रै पेट मे घिगाणै ही मयो—वेकार अर वेअर्यो, माह्या रै ही काम नी आयो ।"

भिरदारो बोली, "कुत्ती मरी नी, कुण जाणै कित्ता बरस ओजूं और ओ सी ? बाड कूदणियो मरै जितै नी भूलै वीनै, अर भूतू हं ही नी मरु जितै वीनै, काकरै सटै पसेरी चुकाई है वण ।"

भिरदारो रा बोल मुण, मुधा री उभरती पीड मे कृतज्ञता रो एक चिनराम थिचग्यो जिकै मे कुत्ती रूपायित ही । वीरा होठ मतै ही फूटपडघा "मा तू नी भूलै वीनै तो हू किया भूलसू वीनै ?"

चुनावा रा दिन हा ही गाव मे जीप आयोडी ही । उम्मीदवार ईम आयै मौकै नै सूतो किया जावण दे ? इमारो .
मार्ग भिरदारो अर कंचन-करमा बँटगो, जीप

डाक्टर देख'र बोल्यो, "घबरावण री कोई बात नी, अवार तो मेक अर पट्टो हुसी अर दिनूगै निदान । जाणा हा दो दिन सू ब्रैसी अठे नी रकणो पड़ै आपनै ।"

सिरदारी रुकगी । कचन अर करमा गई पण दोरी । जावत्या नै सुधा बोली, "ताबै आवै तो स्कूल नै ही दो घडी देख्या ।"

"चित्ता ही मत करो थे, काल भोर मे म्हे और आवां हा एकर ।"

करमा सिरदारी नै सी रिपिया दिया, जरूरी खर्च-पाणी खातर, फेर गई व ।

आठ बँड और हा कमर मे । टैम इग्यारे सू ऊची हुगी ही । कमर रो ससार धीरै-धीरै अबे नोद री गोदी मे उतरै हो, खाली एक बँड मू, रह रह की रिणकण री आवाज आवै ही हाँछै-होछै । एक अघेड कोई बळगी सुणी, सरीर फलफलीज'र गिल्लोल निकळगी ही केई जाय्यां । चादी चिर-मिरावै तो नोद बिचारी नै किया आवै ?

अँ मा-बेटी दोनू जागै ही । सिरदारी होछै-सँ पूछघो, "बाई ! कोई दोराई तो नी ?"

"है जिसी पडी है, मा, रोया किसी मिटसी ?"

"गिट्टो चस-चस तो नी करै ?"

"दुखै तो बेजा है मा ।"

"बाई फूक-फूक'र पग राखता, देखलै, म्हारो तो मू काळो हुग्योनी छेकड?" सुधा सँज भाव मे धीरै सँ बोली, "मा भोळापण ओजू नो गयो धारो ऊंडो नी सोचै तू ?"

"किया बाई ?"

"ओ ही काळो मू है तो ऊजळो मू फेर किसो हुसी ?"

"हूँ नी समझी थारी बात ।"

"आ तो सजगी, पग रँ ही लागी, समझलै कनपटी पर पडती इयाल-की अर सरीर बठै ही पूरो हुतो तो हू आ ही समझती कँ इसी ऊजळी मौन हुवण नै कठै पडो है ?"

"किया ?"

"मा, हू न हाथ-पग अर न कनपटी । गरीर रँ थोट लागै चाबै तेल-

सवण, म्हारो सरूप अछूतो है वा सू । काळो मू धारो-म्हारो ही नी हुंतो, म्हारी जिक्र पर आस्था है साथे बीरो और हुतो ।”

सिरदरी बी सामो देखण लागी एकटक । वा फेर बोली, “काळो मू थारो क्रिया, म्हारै पाप रो हाथ लागतो जद नी ?

“हा ।”

“पाप रो हाथ म्हारै लागणों तो दूर, बीरो छाया ही नी पडो म्हारै पर ।

“आ क्रिया बाई ?”

“खाली लकडी ही तो लागी म्हारै ?”

“हा ।”

“लकडी मे तो बीजळी रो करट ही काम नही करै ।”

“हां, इत्तो तो ठा है ।”

“तो म्हारै ताई पाप तो दूर, बीरो पुदगल ही नी पूग्या ।”

“हां ।”

“आ तो म्हारै सभाव नै परखण खातर प्रभु री भेजी कसौटी ही एक, पण, हूं बी पर खोटी उतरी दुख इत्तो ही है ।

“क्रिया ?”

“सगळा सू दर्दनाक बेळा में, सगळा सू प्यारी चीज याद आणी चाईजें का नी ?”

“नी बयो ?”

“तो म्हारै मू सू तो बी बेळा निकळघो, ‘ओय मा ए’, ओ दीनबन्धु, ओ, इया की नी काईं ठा जीभ रै काईं चूची लागी बी बेळा, मा नै ही रोई । आफत आणी ही वा तो ओय मा में ही आई, हुसकै है, ओ दीनबन्धु कयां ही बित्तो ही आवती पण ओय मा मे म्हारी आस्था री भीत मे तेड चालगी, अभाग्य अघूरो साबित हुग्यो, आदत सामे जुडघो कठे बो ? बीनै ओळभो ही अबं क्रिया देऊ ? हेलो की ओर नै दू अर ओळभो की ओर नै क्रिया ?”

“बात तो साची है बाई ।”

“गोळी मारो चावै लाठी, मारणियो तो मारसी, सामनो क्रियां ही मारै जासी तो जासी तो फेर, डिग’र विश्वाम रा विश्वा बयो घोळं ?”

“ठीक है बाई, इत्ती में ही टळो हू नाख री।”

“बिल्कुल लाय री, धिगाणं ओढघं भार नै उतार।”

मिरदारी नै इत्तीताळ मायली उयळ-पुधळ अधावै ही, सान्त हुगी वा।
भार मुक्त हुती, धीरै-धीरै वा नीद री अदीठ पोखरी मे डूवगी।

नीद तो मुघा नै ही आणी चाईजै ही पण बीरी मानसिक स्थिति की
और ही बी बेळा। कुत्ती रो चितराम बीरी चेतना पर ताजो ही हो अवार,
आख्या आगे अणसोच्यो ही एकदम मू नाच उठयो। सोचै ही, “जुकाम
हो विचारी नै, न धपा’र जिमाई न दूध ही डे सकी, मगायो हो, देस्यू गर्म-
गर्म पण मनै काई ठा पीसी बीनै और ही कोई? म्हारै कनै सू लियो तो
वण काई, अर दियो म्हारै खातर काई? स्थूल टुकडां सट्टै प्राण अर प्राणा
सू बेसी कीमती और काडं हुवै है की कनै ही? दीनबन्धु; इनै तै, म्हारै
निमित्त ही भेजी ही काई? का तू प्रगटयो बीमे? थारै खातर नही, म्हारै
खातर। आदमी नी समझ सकै थारै लीता-विस्तार नै।

प्रभु, दीन-दुखी अर बाळका री सेवा खातर बीरी सी लगन अर
तत्परता म्हारै मार्ग री दिम बणै, कृतज्ञ हूं बीरी, चिरशान्ति मिलै बीनै।
उभार निकळग्यो, अर नीद धीरै-धीरै बीरी आख्या पर ही उतरगी।

19

सोजो तो बित्ती ही हो पण पोड़ की कम लखाई। अँवसरे हुग्यो, रपोद,
सिझ्या बजी पावे’क ताई मिलण री बात है।

आठ बजी है दिनूगै री। पाटा-पोळी करती एक नसं आपरो नाम ही
करै ही अर रह-रह मुघा कानी ही देखै ही। बांधदी पाटी तो की नैचं मू
वोली वा—“बैनजी, की सैधा-सैधा लाग्या, ओळखी मनै?”

इतो ताळ मुघा, आख्या आपरी अकारण ही, क्यो उळशावै ही बी पर,
जद वा, बीनै जाणै ही नही तो? इतो कंयां पछै, अण उत्सुक आख्या
आपरी, बीरै चैरै पर रोपदी, मन बीरो अतीत री रेत पर पछली पिछाण

रा पग खोजण लाग्यो। एक मिट रक'र बा बोली, "ई बेस-भूसा अर ई दांतडै डील-डौल में, आपसू पैला कदेई मिली ह, मनै तो याद नी।"

"अर, 'मेरे नगपति, मेरे विशाल', सागै-सागै कंठस्य करण रा दिन?" अर बीरा होठ मतै ही फूट पड्या, "अरे रतना?"

"एक तो सागण।"

बीरो हाथ पकड़'र आपरी आख्या पर राखती बा बोली, "आख्या तो गूनी बळै है, देखै है तो ही नी पिछाणै, आछी विचारी जीभ गम्योडा खोज उघाड़ दिया। धारी ई बेस-भूसा री में कल्पना ही नी करी कदेई, डील में तू पैला नू खासी भारी है। मिलणो कितै घरसां सू हुयो है? अठै कद नू है?"

"दो साल हुसी।"

"मंडी रै गोरवै बसू हूँ—रामपुरै बडै में पण ठा विना एकल आगणो ही बळगो।"

"मुजानगढ़ ही पैलां तो, घरआळा अठै दूकान खोल राखी है कोई?"

"आ कथा लम्बी है बहन, फुरसत में सुणास्यू कदेई।"

"सुणादिए, पण रोटी अर चाय-पाणी री व्यवस्था हू अपण आप ही करदेस्यु।"

"इलाज ही थारो अर चाय-पाणी ही धारा, आ लागणो तो फेर बरदान दुई म्हारे?"

"कियां?"

"आ लागै न तूं मिलै?" अघ मिट रक'र बा भळै बोली, "बहन, आह अर पीडरै होठां पर सन्तोष विखेरण रो काम सूप्यो है भगवान तनै, जात-पात नू ऊपर न होठा री कोई जात हुवै अर न पीड री ही, भागण है तू, 'मेरे नगपति, मेरे विशाल' री संचै कियोडी मानमिकता कुण जाणै कितो ऊंचाई पर नेजासी तनै?"

"है सो ठीक है बहन, सूप्यो है बी, नू असंतोष नहीं, अर अणसूप्यै नू ईसको नो, गाडी आपणों होळै-गुस्तै, ठीक गुडकै है।" ईसँ पाच-मान बीमार और आ पूग्या। बा, बोली, "थोटी माफी चाऊं बँन, बयू बी लम्बो हुवै दीनै है?" अर बा आर्य बीमारा री सेवा में लागगी। मुधा री बँनना

मे एक नुई खुसी दौडगी ।

सिरदारी सुधा नै पूछ्यो, “वाइ, थारै आ कदरी सँधी ?”

“म्हे दसवी री परीक्षा सार्गे ही दी, गाब कर्न री है आ ।”

“कुर्वै नै कुवो नी मिलै वाई, देख माँकैसर किसीक मिली है आपा नै आ ?”

दिन री दो बजी ही । सुधा री मुख-साता पूछण नै गाब सू अब ताई थीस-बाईस लुगाया आयगी हुसी—न्यारै-न्यारै झूमकां मे । नान्तडी ही आ बैठी उदास-उदास बोली, “आप कर्न ही रैस्यु ।”

सुधा बोली, “रह तो भला ही वाई, पण दळियो एक नै ही दोरो है अठै, दोना नै कुण घालसी ?” समझा-भुझा’र, पाछी बडी दोरी भेजी बीनै ।

सुधा सूती ही, सिर भारी हो, दर्पण अळसायो अर जी उकतायो । सोचै ही रपोट वँगोमी मिलै तो आज सिइया ही हाथ जोडू अठै सू । पड़े-पड़े न जो लागै अर न सरीर रै जचै, अस्पताळ भगवान कीनै ही दिखावै ही नही ।”

लुगाया मे मोडियै अर मघलै री मावा ही, अर विसेसता आ कै, वा सार्गे मोडियो, मघलो और । वा दोनू टाबरा धोक खाई बैनजी रै । सुधा वानै देख’र बडी राजी हुई बोली, “भाएला-भाएला दोनू ही आग्या रे ?” बारी मावां कानी देखती वा भळे बोली । “आ टाबरा नै विचारा नै क्यो फौडा घाल्या ए ?”

“अै मान्या नी बाईसा, घणा ही समझाया म्हे तो”, वँ बोली ।

सुधा टाबरा नै पूछ्यो, “आज पढण गया हाँक नी रे ?”

“हा ।”

“कण पढाया ?”

हाथ मू सीध करता वँ बोल्या, “कंचन-करमां बैनजी ।”

“लहो तो नी रे की टाबर सार्गे ?”

“नी, बैनजी ।”

“जद तो थे स्याणा हुग्या रे ? मा, आनै दे की, और नही तो एक-एक केळो ही दिरा ।” छोरां कानी देखती फेर बोली, “केळां रा छूतका सहक पर मत फँस्या भलां ? कोई गाय-गोधँ रै मू मे दे देया ।”

कंचन, करमा अर लुगाया केई खडी ही सुधा कर्न, जावण मत ही बै; भागसू प्रभाकरजी क्यों नी आवै? नमस्कार करता स्टूल पर आ बैठा बै। लुगाया कानी देख'र, जी मे बडा राजी हुया बै, सोच्यो, दिन सावळ है, मोको ठीक मारघो, भीड़ पर रो ओ असर पाच-सात दिन तो बिल्कुल नी अळसावै। मगरमच्छी आसू नाखता बोल्या बै, "अरे बाईसा, लागणी सुणी, मुणतां ही म्हारा तो एकर होस ही गुम हुग्या आ किया हुई? चाय तो कुअ मे पडी, पाणी रो गुटको लेणों ही नी सूझ्यो, जोपडी ले'र मूढां मे तो ईने करलियो। चुनाव रो रोळो, मांळो पडन दो की, फेर नाथ नी घलाऊ वदमासा रै तो म्हारो ही नाव प्रभाकर नी?"

वारी अध-बंद आख्या ही चवै, अर दुख नाखतो चैरो ही वारो। चुप हुग्या अध मिट बै। दरोगा रै छोरै नै भाई वीरो कर'र, मुधा रै लागण रा खोज, करमा इत्ती ताळ पैलां ही काढलिया हा। पूरो भेद वा दिनुगै ही खोलगो ही मुधा अर निरदारी आगै। अध मिट वाद, प्रभाकरजी आख्या ही खोलदी अर जोभ ही। बोल्या, "किया, जादा तो नी लागी बाई।"

सुधा धीरै-सँ बोली, "पुरमां जिनां मनै तो घणी मोक्ळो, आपनै केसर लागै की तो कृपा और करादेया।"

"बाईसा, आ आप कियां फरमाई?" की शेषता-सा बै बोल्या।

"आ कही, अंधेरै मे, तो आख्या लाल, अर चांनणै मे आमू, गळ-गळ पई हमदर्दी रो पूतळो, ईं छातर?"

करमा बोलौ, "इया चक्रव्यू रच्या, वोटां रो द्रोणाचरज नी जीतै।"

फक् पड़तै चैरै बै बोल्या, "बाई, थारो मुतळब हूँ नी समझ्यो?"

"थे तो क्यों नी समझ्या, समझ्यो तो इत्ता दिन गांव नही?"

"थानै कण ही गळत भर दिया", थूक गिटता बै बोल्या।

"प्रभाकर-सा, सीट रै सवाल पर आ तो जू जितो घटना ही नही, चुनाव रो आधी घुड़दौड़ मे, कीरा प्राण ही बदेई, टोकर रो दहॉ बण'र उछळ सकै है पण अँ दावपेच आम आदमी नी जाणै जितै ही है।"

हाथ जोडती सिरदारी ही बोली, "माईतां ईं गऊ नै किचरा'र आप काई बाउघो? इसी ही कोई घोडी बिल में बड़े ही आपरै तो मनै कर देबता तोण आगै, आपरै तो हुंतां मनचीती अर म्हारै छूटतो सारो, न्यान

हुती।”

आ चुभत बोलो सू, प्रमाकर जी रो पारो ऊचो घडै ही, त्रिसूळ विचै ही डोळा विचाळै अर आढ्यां री गफेदी मे उठै हा आगून रा डोर। ज्वालामुखी वारो फूट पडतो पण वै समझै हा कै अम्पताळ रो कमरो बोली री गर्मी छाटण नै नी हुवै। भीड घेर लेसी अवार ही, मुश्किल हुसी फेर। वै उठ खडा हुया, अर टुरग्या खाया-खाया। लुगाया बोली, “हाथी रा दात देखो, खावण रा किसा अर दिखावण रा किसा।” निकळता, अै बोल वारै काना मे पडग्या, पण वारी नस मे लारीनै देखण री आगळ ताकत ही नी बापरी। एक लुगाई बोली, “अै ही जे, की पूछण जोगा हुंता तो दरोगां रै छोरै नै नी पूछता नी की?” करमा बोली, “आं नै तो काधा चाईजै हा बहूक राखणनै, वै गया मिल।”

मिरदारी बोली, “वाई, रीसा बळतो ओ कोई और कुचमाद पड़ी नी करदै?”

मुधा बोली, “करण री काई, ना है मा आपरो बस लाग्या तो बो, कीरा ही प्राण ही जे सकै है अर फेर बोरी चिता कनै पूग'र, उदासी मे ढकीज्यो दो आम् ही नाख सकै है।”

मिरदारी एकर चितित हुगी—मन-ही-मन डरगी खासी। एक पल सोच्यो वण, ‘काईं भरोसो’, ई कुमाणम रो ? छोरो (मुधा) री जीवण-लीता ही पूरी करवा नाखै ओ कठै ही तो, काईं पूछ बळै ईरो ? फेर बोली, बा, “वाई, काम माडो हुयो।”

“किया ?”

“गरम खोरै रै हाथ लगयां, हाथ नै बाळदें वो अर ठडै रै हाथ लगया हाथ नै बाळो करदें वो, दुष्ट मागै तो ऊजळै राम-राम मे ही फायदा है, न हेत आछो अर न धैर, पैला नी मांच्यो, खारा तूया क्यों तोडती ?”

“आपणै जन-यळ मे ओ जे फटबाड री भीता छडी नी कर सकै तो ओ एडी मू चांटी रो जोर लगवो भला ही, की नी हुवै।”

लुगाया सगळी गई, करमा ही रहीं खाली। रपोट वण देगली मिश्या। न तो हड्डो टूटी अर न वा आपरी जाग्या मू अळगी ही हुई। पीड अर सोजो नां चांटी अर मांच मू हा। डॉक्टर कह दियो मेक अर हारो घरे हीं

हुसकै है, तीन दिना बाद चैक एकर और करवा लेया ।

करमा बोली, “बैनजी, हू भोरा-भोर ही भाऊं हू—ऊट-गाडों ले’र ।
त्यार रैया दोनू, ठहै-ठहै घरे जा बडस्या ।” अर गई वा ।

सुधा अर सिरदारी सूरज निकळन सू पैला ही त्यार हु’र, अस्पताळ रै एक नीम नीचै आ बैठी—खुली हवा मे । यानै बैठा दो मिट ही नी हुया, एक कागलै ऊपर सू बीठ करदी, सिरदारी रै सिर रै सुवै विचाळै । बीठ ही की लूठी ही, अर ही पतळी की जादा ही । वा चमकी अचाणचकी अर जीवणै हाथ रो आगघचा सिर पर अधर-अधर फेरी, भरीजगी वै । सुधा बोली, “कागलै बीठ करदी मा ?” सिरदारी ऊंचो देख्यो, बोली “अरे कुमाणम रोऊ तनै ?” कनै ही एक काकरो पड़घो हो, उठा’र फेक्यो काणं रो सीध मे, कागलो उडग्यो पण सिरदारी री रीस भळे ही नी उडी । बोली, “देख बाई, कुजात नै, जाग्या ईनै किसीक लाधी है निवटण नै ? म्हारै सिर नै तो बाळनजोगे अकूरड़ी समझ राखी है अण ?” एक ठीकरडी सू बीठ सूत’र वण परिया नाखी ।

सुधा मुळकी, चावै तो हसणों ही, पण काम वण की संयम सू लियो, बोली—“मा, यूकण अर मूतण रो विवेक अबार, अणपड नै छोड, पडघाँ-लिहयै मे ही कम है, तो ओ विचारो तो जिनावर है, समझै ही काई ?”

“नो समझै तो उडादियो बाई, पण आ लखणा घर कानी पण राग्रता नै सुगन मुहावणा नी हुया । कठै ही भळे तो की फद मे फसणो नी पड़े ? कमरै मे एकर पाछी चालां, कुमुगन रो जहर की घुपे तो ?”

“भळे कमरै मे, कांई कोई कोयळियां छूटग्यो यठै ? वै ही वैड, वै ही रोगी अर वो ही कमरो, कांई देखसी बारो ? सुगन ही है आपणै तो, अबार जा पूगस्यां गांव, गाडो आवणआळो है ।”

आया नै आनै पन्दरै मिट नैड़ा ही नी हुया हुसी, अस्पताळ कानी मू मूळी मंतराणी पण उतावळा मेलती आवती दीखी । सुधा बोली सिरदारी नै, ‘मा, मूळी बाई आवै दीसै है ।”

“मिलण नै आवती हुसी विचारी”, सिरदारी बोली ।

“देराणी-जेठाणी रात तो बँठी ही मौड़ें ताई आपनै कनै ?”

“अवार आपा दीखी हा, अठै तो, मू फेर कर लियो है ईनै—विदाई रा राम-राम करण नै”, अर इत्तै वा आ पूगी, की हाफ़ीजती ।

सुधा बोली, “आओ मूळी वाई, पधारो, जबरा आया दरसण देवण नै ।”

मिरदारी बोली, “लगन देखो थे, अँन टैम आ’र किसाक बापरचा है ?”

मूळी हाथ जोडती होळै-सै बोली. “माईता, न हूँ मिलण आई अर न दरसण करण”, सुधा अर मिरदारी दोनू ही एक पल अचभै मे डूवगी बी कानी देखती । ।

सुधा बोली, “तो कियां पधारचा फेर ?”

“हू तो आई हूँ. आपनै होळै-सै की अजं करण नै ।”

“फरमावो ?”

“फरमाऊं काई, आप हो पूगता अर नखतरी ।”

“कियां ?”

“किया काई, छुट्टी री ताकीदी रात नी कर’र अवार दिनूगै करता तो काई हुतो टा है ? आपनै की ?”

“काई हुतो, म्हानै काई टा, थे ही बतावो ?”

“वांट पड़ता बी दिन ताई बी सागी बँड पर ही पसवाड़ा फोरणा पडता, बिना बीमारी ही । आपरो की बडै आदमी सागै बैर-विरोध तो नी चासै ?”

“नही तो, किया सक हुयो थानै ?”

“पाच-सात मिट पैला ही अवार डाक्ट-साब कनै एक फोन आयो हो कठै मू ही । वां सामो कैयो, ‘साब, अवार-अवार ही निपळी है वा अठै मू फोन आपरो थोडो-सो-ही पैला आ पूगता तो काम हुयो ही पडघो हो, चुनाव ताई काई, हू धीनै महीनों ही नी खिसकण देवतो अठै मू ।” अगलै की भळे कैयो, डाक्ट-साब भळे बोल्या, “फेर हो देवो, पारपडी तो, बोसीम की करू हूँ । “अत्र म्हारी अजं आपनै आ है कँ कोई बुलावण आवै आपनै तो बीनै टुर मत पडचा,” कह’र वा ईनै-बीनै देवती, बडै नाटवो डंग मू सागो पगा ही निकळगी—आप्यो-चाथी ।

वै दोनू ही ममझगी कै फोन रे मूळ मे कुण हुसकै है ?

सिरदारो बोली, "इसा आदमी तो बाई, कोई मौकै मिनख मार'र ही हाथ नी धोवै ?"

"नी धोवै तो नी धोवै, कुण ओळभो देवै है बानै ?"

"पण डाकघर ही इसो हुसकै है बाई, आ हू तो सपनै मे ही नी सोच सकै हो।"

"आधै राज मे मा, सुविधा रो चिकणास थेथडनो कुण नी चावै ?" एक पन रुक'र की भुळकती-सी भळे बोली बा, "पण मा, थारै कुसुगन रो जहर की हळको करण नै जे पाछा कमरै मे जा बडता एकर तो ?"

"तो बाई, काई बताऊं, काईं ठा खाड मू निकळ'र कुवै मे जा पडता पाछा। आ तो भती हुई, तनै की सूई मूझगी; पण अबै अठै काई आखा देखांवां हां कीनै ही, सिरको वैया-मा।"

"इंयां किसा बम पड़ै है अठै, सिरकणो ही है आपानै तो," अर वै टुरपड़ी दो ही पावडा धरती पार करी हुसी, अस्पताळ रे चौकीदार भागतै-भागतै, वारै कनै आ'र आवाज दी, ? "बाईसा" वा दोनों ही लारीनै देख्यो।

"रुक्या थोडा," चौकीदार कैयो।

रुकगी वै, वो बोल्यो, "आपनै डाकट-साब याद करै है—दो मिट घातर।"

सिरदारी बोली, "याद म्हानै क्यो, याद करो ठाकुरजी नै, जिकै बानै ओ छौलियो अर आ कुर्सी दिया है मानखँ रे सेवा करण खातर, म्हानै याद कर'र काईं ठोकसी बै ?"

मुघा की धीरज अर मिठास मू बोली, 'आप कहदेया बानै कै अवार तो एक जरूरी काम है वारै, फेर केदई मेललेसी मतै ही," अर वै दोनू अस्पताळ रे हातँ मू वारै हुंती, एक भीत नी छाया मे जा खड़ी हुई। पाच सात मिट तो बै खड़ी रही, माडो आंखण रे दिस देखती, फेर बैठगी। बँटा-बँटा माडीनव बजगी, पण बाबो आर्य न वाटियो लावै। कमर ही धरणी अर दारी आटरा ही। पेट खाली, मिर भारी। मूटा वेस्वादा अर होडा पर फेपी। चैरां पर उदानी उतरै ही।

सिरदारी बोली, "बाई, काई बात हुई, करमा तो मेह-आधी मे ही, न चूकणआळी अर न रुकणआळी, की दूखण-पाचण तो नी लागग्यो विचारी रो?"

"आ ही हू सॉचू हू, आणी तो चाईज ही वा । अध-घटा और उडीकां हा, देखा, चान्ण खातर फेर, बंदोबस्त तो की कारणों ही पडसी । बैठा इया कितीक ताळ रैस्यां?"

बीस-बाईस मिंट हुग्या हुसी, वं बजार कानी जावण मत ही, का करमा आवती दीखी । सिरदारी रा होठ मत ही खुल पडधा, "अबकै तो चिलकी दीसै?"

करमा जियां ही बी कन आई, सिरदारी बोली, "बाई मौड़ी घणी वापरो नी ? उडीकता-उडीकता आख्या ही मूमी हुगी म्हारी तो?"

करमा की उदासी सू बोली, 'मौड़ो तो की हुग्यो बडिया—अणचायो-सो ही ।'

"है तो सगळा राजी नी?"

"राजी नै राजी ही है," बा की ढीली बोली ।

इं होळें अर ढीलें उत्तर मू सिरदारी रै अन्तस मे की गिरगिराट उठ-बैठ करण लागग्यो । करमा, सुधा कानी की सैन करी, बा उठ खडी हुई । वं दोनू की अळगो जा'र होळै-होळै बात करण लागगी । सिरदारी ज्यू-ज्यू वां कानी देखें, बीरो गिरगिराट सम्बो अर भारी हुवै, पण की प्रकास्या बिना पल्लै भी तो नी पडै विचारी रै की । रह-रह सोचै ही वा कै, 'बात म्हारें सू इयां लुकोवै है जठै, जरूर दाळ मे काळो की गहरो ही है?"

करमा बोली, "बैनजी, तातै घाव बताया, बडिया आधी ही नी रैसी तो?"

"पण लुकोया कितीक ताळ रावसो, अध घटै बाद तो वा मत ही चाँडै हुसी, फेर?"

:'तो ठीक है फेर, आप ही प्रकासदो है जिसी ।'

वं दोनू आ ऊभो सिरदारी कन । सुधा बोली, "मा, धारें सू छानै राखण री कोई बात नहीं, हुंवण मत ही वा हू चूकी । बी मू उदासी तां म्हा सगळां नै ही है, सुण्या तनै सायत सगळां सू येसी हुवै, पण हुयां बटसी

काई? समझलै लाल कोई टूटगी तो रोयां वा पाछी सधै काई?"

"संधै तो वा क्यांरी बाई?" सिरदारी बी कांणी देखती धीरै-मै बोली।

"बात नै तँ सू लुकोई राखां तो राखा कितीक ताळ? करमा विचारी रै मौड़ो ही बी कारण ह्यो।"

सिरदारी रै पल्लै ओजू ही की नी पडघो। एक अणजाण्यै-अणचोत्यै भार काळजो बीरो रूध लियो। वा मोचै ही, "कठै ही पेपू रै की ह्यो हँ तो हुवा'र हुवा, कठै लुकोस्युं जी नै फेर? बुढापों मत विगाडे प्रभु।"

बधीर हुती वा बोली, "बाई, साची बताए, म्हारी सांगन हँ तनै, मिनखां तो कुसळ है नी? बात नै लुकोए मत, है जिसी भाखदिए।"

"एक दम कुसळ, रू ही कीरो ही खाडो नी ह्यो," सुधा सजोरी हु'र बोली। सिरदारी रो हालतो पंखो धिर ह्यो, एक नुवो उजास चमक उठपो बीरी आख्यां में। उत्साह सू बोली वा, "फेर धाप'र कह भला ही, टापरो घुखयो है तो ही नी धारू।"

"पक्की है, नी?"

"पक्की...पक्की एकदम लोह-लीक, कहदियो बीमे फकं पड़ै तो समझ-लिए म्हारी मा मनै फिरती ही लाई।"

"रात नै मिदर मे बड़घो है कोई, सन्तोसी-माता री मूर्ति लेजावण नै, सीमट में जरू हुई मूर्ति है ज्यू ही है, पण एक हाथ बीरो खंडितह्यो परिया पडघो है। ठा लाग्या लोग-वाग भेळ्या हुया दिनूगै, ई भागा-दौड मे करमां नै ही मोरा सास कठै, मौड़ो ह्यो ई रै।"

"रोंवणजोगो, मा सू ही नी टळघो, इसो कुण हो ए?" वा उत्तेजित हुती बोली।"

"ठा बिना, कीनै बताऊ?"

"बाई, हुई वा सिर पर पण मा नै खंडित करी, बी बदळै जे म्हारा टुकडा कर नापतो कोई, तो ही घोखो नी हो; अबे हँ घणो नी जोऊ।"

"क्यों, ऊतर सू कोई हुकम आयो है धारै कनै का भावी, आगूच तनै, हयाळी रै बोरियै-सी सांमी दीनै है?"

"आमार छाना मावै है बाई?"

"पण ई मे धारो कसुर काई, आ बता? हाथ खंडित नै कियो?"

“नही तो ।”

“यारी रिछपाळ वा करै है का तू बीरी ?”

“रिछपाळ तो वा ही करै है सगळा री, म्हारो काई डोळ है, हू बीरी करूं ?”

“पण अबै बी आपरो ही हाथ टूट्यो तो रिछपाळ वा किया करसी आपां सगळा री ?”

“वा तो मूर्ति ही बाई ।”

“हा, इमा कह, अबै आई रस्तें पर तू, हाथ खडित मा रो नही, मूर्ति रो हुयो है अर मूर्ति भाठै री है । वा एक टूटै, दूसरी घडीज, का नही ?”

“नही क्यों घडीज ही है ।”

“पण तू जे बी आधी ममता मे, वंसके पड पूरी हुवै कठै ही तो तूं ही दूसरी घडीज सकै है काई बोलती-चालती ?”

“आगोतर में ही भला ही घडीजो कठै ही ?”

“तो बीरै लारै मरण जिसी अणूती बात मूडै सूं निकालै ही क्यों ?”

“नी निकालू, बस अबै तो ?”

“नी निकालै तो चढ गाडै, काई करणो अबै ओ घरे चाल'र सोचस्या, ठटै माथै ।

गाडै चढती-चढती वा रुकगी एकर, आफरो ओजू हळको नी हुयो बीरो, बोली, “वाई में तनै पैलां ही कहदियो हो कं खीरो ठडो हुवै चावै तातो, बीसू आतरो ही आछो, हाथ ई मे प्रभाकरिये रो नही काई ?”

“आधे नै ही दोसै है ओ तो, पण हुयो वो लोक नै दाय आवतो है काई ?”

“लोक नै दाय आवतो करै, इसो दूध बण कद चूघ्यो ?”

“नी चूघ्यो तो धीनै सगळा आगै उघाडन मे ओछ आपां ही नी राघा, रात रै अधकार मे सूता री पीठ मे चबकू अर दिन रै उजास मे हाथ जोड़-जोड़ गिडगिडासी थोटा खातर, ओ बहुरूपियो धरो अबै नी चलै, जनता-जनादेन आगै ।”

करमा बोली, “धे रस्तो ही मत संको धनजो आपणी जाण मे तो नाव ईरो ऊंधी करण मे आपां ओछ नी राघा, ओ ही याद राखसी जीवण-भर,

कै ताती खीर मे हाथ दियां इयां हुवै है ?”

चालणों ऊट अर बैगा पूगण री चिता, वै बँठ गाडै, कूकड़िया आप-आपरा उघेडती-सांवटती अर आ-पूगी, आप-आपरै धान-मुकाम-पूणघटै रै मांय-मांय ।

20

भंगी-भगणां दिनूगै भेळा हुवण लाग्या हा, ओजू विया ही लारै-आगै हुवै हा । टावरां नै छोड, अन्न रै ओजू कण ही मू ही नी लगायो । सै उदास, सै चिंतित । लोग इक्का-दुक्का ओजू ही आवै-जावै हा, लुगायां जादा, आदमी कम । मूर्ति नै देख-देख, सै आप-आपरो हिसाव अटकळे है पण साच री पकड़ सू सै ही अळगा हा ।

मुधा अर सिरदारी आ पूगी । सै भळे जमग्या नुवै सिरै सू । केयां अँफ आई आर दर्ज करावण रो कैयो पण आ मुधा रै नी जर्ची । वा बोली, “मूर्ति कद टूटी, किया टूटी, कुण हो अठै, खड़को ही सुण्यो हुसी की, बैम की पर है धारो ? सवाला रै लवै आंघळघोटै मे, आपणै पल्लै, सिवा परेसानी रै और की नी पडै, छोडो ईनै ।”

सिरदारी बोली, “और तो छोडो, नुई मूर्ति तो लाणी ही पडसी, हजार नँडा तो पैलां लाग्या हा, अवै तो बी मूं पाचमँ-सातमँ और बेसी समझो, किसे कुवै में सू काडम्या रकम इत्ती ?”

मुधा बोली, “लावो तो भलां ही, पण ईं लावण रो छेड़ो है काई, आ बतावो ?”

“छेड़ो कियां, म्हे नी समझ्या ?” सगळा ही बोल्या ।

“नारै ही लाग्योडो हुवै कोई तो फाड़तै नै सींइतो नावडै काई ?”

“नी नावडै ।”

“तो भळै कण ही, खंडित करदी का ममूळी ही ले संघ्यो तो ?”

“इंया पठै करता ही रैमी ?” सागी मुर भळे ऊपर आया ।

“अरे, जिकै मिदरां रै लोह रा सगीन किवाड, अर दो-दो कीला रा डब्ल-ताळा ठोक्योडा, हुबै, चोर वानै ही नी बहमै तो आपणो मिदरियो विचारो है ही किसी चकारी मे ? मिदरां सू मूर्त्या पार करणो, लूडो अर काळो बीपार है अबार रो । सरकार रै ही नाक मे दम है बी सू ।”

“तो फेर नी लावा वाई ?” मू डीलो करती सिरदारी बोली ।

“बात लावण-नी-लावण री नही, सोचण री है कै घटना घटी वा भळे नी घट सकै काई ?”

“घट क्योंनी सकै ?”

“घट सकै है तो आपनै ई रो ऊजळो पासो देखणों चाईजै, आंधो नही ।”

“म्हे नी समस्या ।”

“मा री मूळ इच्छा में पैलां ही भाखदो ही था आगै कै वा आपणै घरा में पगलिया करणा चाई है ।”

“हां,” सै ही बोल्या ।

“तो वा, वण कर दिखाई ?”

“किया ?”

“किया काई, बीरा हाथ आपणै हाथां मे आ मिल्या, पग, पगा मे अर आकार सू हट'र बीरो अर्थ मिलग्यो आपणो चेतना मे । अबै फेर याद राख्या, म्हारी कही कै, हाथ आपणा और खाथा चालसी सागै मिल-मिल, भूष अर गरीबी तोडन नै, पग आपणा और खाथा दौडसी कोई भुभ जातरा पूरी कारण नै, अर चेतना री चावणगत आपणी और पमरसी दूर-दूर ताई-नुबै हेत सागै जुडन नै ।”

सिरदारी मिदर री सम्भाषक ही है अर कर्ता-घर्ता ही । गडित मूर्ति तो उतार'र अळगी करी अर नुई लावण रो मतो ढा दियो । मिदर हग्यो एकदम सूनो अर अडोळो । सिरदारी एकर धिर आख्यां अर अधीर बाळ नै मिदर कानी देख्यो, बीरी उदासी अर सूनापण बीरो, सिरदारी री चेतना मे खांडै री धार-सा उतरग्या, चेतना बीरी कीलीजगी जाण मे कम अजाण

में जादा । जड़ सागै जुडाव बीरो घणीभूत, हुग्यो । वा उदास अर अधीर हुती बोली, “तो ई हिमाव मिदर अवै सूनो ही रैसी बाई ?”

“सूनो क्यो, धीमे विराजसी छोटो-सो एक-एक पुस्तकालै, बीरै सागै डाय कानी, अलमारी में सोभा देसी रोजीनै काम आवणआळी दवाया अर पाटी-पोळी रो समान । एक ज्ञान रो रूप अर दूसरो सेवा रो, नारायण अर लिछमी-मो, कीनै आछो नी लागसी रूप ओ ? एक ऊँचो उठासी आदमी नै जडता सू, दूसरो मुक्ति देसी धीरै पीड सू । मनम्या आ, मा री है । ई रूप छवि रै प्रताप, आवणआळा दिन आपणा, और चमकै तो, बात म्हारी मान्या नी तो नी ।”

“नी क्यो बाईसा, म्हानै तो नैचो पुरो है आपरी बात पर” सै ही बोल्या पण, सिरदारीबदी, एकर मुधा कानी अर एकर मिदर कानी देख्यो जरूर, पण होठ नी हिलायो ।

घडित मूर्ति, पुष्कर जावतै एक आदमी सागै भेजदी, झील में विसर्जन करण खातर । थाणैआळा उडीकै हा कँ मूर्ति रै नाव दांरी जेवा रा पेट ऊंचा आसी की, लिछमी जलमसी वांसू पण जलमी बारै निरासा अर उदासी ही ।

मुधा, कचन, करमा अर और औरजागतै लोगां प्रभाकरजी रो असली चैरो उघाडन में आप कानी सू कोई पाछ नी राखी । हरिजना रो तो रुख ही बदळग्यो, गाव में ही नही गाव सू बारै ही । हवा पूगता काई ताळ लागै । प्रभाकरजी जरूर जियै हा, पण जमानत बारी पूरी हुई ।

हार, गोपाळ गोदारो ही गयो । बीरै केई हूडीवादी पखधरां जाटां में प्रचार कियो कँ, जाट री बेटी जद जाट नै तो, जाट रो बोट जाट नै क्यो नी ? ईं सूँ और जाता चमक छड़ी हुई, चौडै कम, पडद लारै जादा । मुधा करमा नै समझाई कँ, “बोट बाई, न जात सागै जुडनो चाईजै अर न पडसां सागै । बो जुडनो चाईजै समझ अर योग्यता सागै । आपणै देन रो तन न एक जात पर अर न एक वर्ग पर । देस ही सगळो विविधता में बस्योडो है, प्राण एक, माटी री मीर एक अर लक्ष्य सगळा रो एक ।”

गाव में जाटां री गवाडघा मोबळी है पण करमां जात-पांत रै छीवरै सू निबळ'र, गाव रै मांवडै सरोवर ताई जा पूगी । सगळा नै बण एक ही दिग दी, नीरोग अर नैचै री ।

दस-बीस पाखरियां नै छोड, घणखरो गाव सुधा रो पखधर हुग्यो। आल्मीयता रा हाथ बीरा और फँलग्या, गाव रै काधा पर। घणखरा सोचै हा, कै, घाव तो बैरी रा ही मराणा चाईजै, लुगाई तो लुगाई ही है, टाळवी अर सोळवों सोनो।

सिरदारी केई दिनां सू अबार उदास अर अस्वस्थ चालै। अस्वस्थ कम उदास जादा। मोटो कारण ईं मे बीनै, सन्तोसी-माता री नाराजगी ही दीसै। बा आपरी हर प्रतिकूलता सन्तोसी-माता री नाराजगी सागै जोड, आपरै वम रो डील भारी करलै अर मागै आपरो ही। न निघड़क नोद आवै बीनै, अर न स्वाद अर रुचि सागै रोटी ही भावै। खानियो तो खा लियो, पडगी तो पडगी, बतळाई तो बोलली। जीवण बीनै घीसीजतो लागै मतै चालतो नही।

दो दिन पैला बटै तो फलको ही, देखै खीरां पर राखी दूध री बाटकी नै ही अर मन मे खयावळ ही सुधा कने पूगण री। काधै सू लटकतै ओढ-णियै रै पल्लै, बेवणी कने पडी कोई चिणख नै पकडली, पल्लो आगळ च्यारेक दाङ्ग्यो, जद ठा लाग्यो। हडबडा'र बीनै बुझायो जितै दूध निकळ-ग्यो, खीरा बुझग्या अर धुवो हुग्यो पण सन्तोसी-माता री नाराजगी सू ईरो काई लेण-देण ? पण बीरै आ जच्योडो है कै मा नाराज है, नी, जद इत्ता बरस लेलिया मै, ओढणियो तो अळगो, डोरो ही म्हारो नी दाङ्ग्यो कदेई।

ओग चूल्है मे घणों हो एक दिन चीपियो देखै ही छाणों बारै काडण नै, हटड़ी हटाई, बेराण परिया कियो, कठोती सिरकाई, कने ही घिलोडो पडी ही, घी हो टीपनी च्यारेक बीमे, टिल्लो लाग्यो हाथ रो, घिलोडती गुडगी, छांटो दुङ्ग्यो, खीरो तो नाखदियो धी पर पण सोचै ही, "घी दुङ्ग्या कष्ट आवै, कष्ट काई मा री नाराजगी रा लखण है अ अर सागै आगोनै जावण रा ही।" बीरा होठ मतै ही फूट पड्या, 'ईं टाळै तो आय लागो दीगै है।'

तीन दिन लगोलग, दो-दो फलका जादा घालिया भूप मू—अचार रै स्वाद में अजीण हुग्यो पण सन्तोसी-माता काई करै ईं मे, हाथ पकड़लै

का मूँडे में कोई पूर दाबै वीरै ? माथो ही दूखै कदेई, तो गोडा अर कमर ही । सरीर री गड़बड़ है आ तो । कठै-न-कठै की गळती हुई, सन्तोसी-माता कांई करै ईं मे ? गोडा दावदै का टेबलेट रो प्रबन्ध करै वा ? पण वीरै की इसीही बैठगी माथै मे कै आ सगळा रै मूळमे माता री नाराजगी ही है । ईरो प्राश्चित हुणो ओखो हुण्यो ।

एक बजी ही दिन री । सिरदारी घर कांनी सूं आई अर सुधा कनै आवैठी, लम्बै साम—लटकतै मू । अध मिट ही नी हुई, वैठी-वैठी वठै ही आडी हुगी । आख्यां खुली तो ही नी, पण नीद ही तो नही ही वामे । सुधा बी कानी, एक तीखी-तुलती निजर सू देखती रही फेर बोली, “मा ?”

“हां,” उत्तर दियो बण, पण अळसायो-सो ।

“बेल आज मुरझाईजती किया ?”

“आगीनै जासी ।”

“जासी वा रोकै थोड़ी ही रकसी पण इसो मूझतो समचार तनै दियो कण ?”

“समचार छानों मावै है ? चालूं जद सोचू बैठ ज्याऊं, बैठघां सोचूं आडी हुज्याऊं, अर आडी हुयां सोचू उठू ही नही ।”

“राम-राम सत हुवै जितै ताई ?”

“और नही तो ?”

“फेर जीणी मुश्किल है पण मिदर आगं वैठ'र, मा नै की अरदाम तो कर ।”

एक लम्बी सास छोडती वा बोली, “मिदर में अबै काई है वाई ? काळजो ही बीमें नही तो ?”

सुधा मूळनै समझगी कै कर्तापण रै मोह ही ईंनै, की कम नी दाब राखी है जाड़ा नीचै ।

वा बोली, “तो जीवण रा आसार ठीक नी लाग्या तनै ?”

“परसूं सपनां आयो वाई, जाणू लाय लागगी, पूर बडै है, ओय बडू रे, ईतो कैरतां ही आंध्या खुलगी । काल पाणी मे डूबगी सपनै मे, फेर पाडो दोस्पो, जम री सवारी । जंजाळ अँ, आया हीं मांझरकै, झूठा नी, जावै ।”

“सपनां तो मुणातिया और ही की घटघो है तो तुनो मत ।”

“तीन दिन हुग्या, जीवणी आख और फुरकें बळै है।”

अबकें वा मुळकी की, बोली, “पोरें आर पण रोप्या नै, बरस साठ मू ऊपर निकळग्या, पावणो (काळ) विचारो किताक दिन उडीकें, कदेई तो लेजावेंक नी ?” ‘फरुकें थारी आखडली,’ सुगन थोडा ही है ? आख्या तो फुरकसी पण, गोडा फुरकता ही तें सुण्या है कीरा ही ?”

“गोडा तो बाई नयारा फुरकें, वैं तो कुळो भला ही।”

“आख फुरकें, सपना छोटा आवें, अर माताजी तनै नाराज सखावें, एकर आ सगळानें छोडतू, हू पूछू बीरो जयाव सावळ दै।”

“पूछ बाई।”

“एक बात तो आ बता कें तू जे भूखी सोवें कदेई, अर सपनै मे लाडू-जळेवी जीमै गळै ताई, फेर आचाणचकी ही आख्या घुलें थारी तो, तू पेट पर हाथ फेरती अर डिकारा लेवती ही उठै काई ?”

“पेट घाली, अर डिकारा धाप री, आ किया बाई ?”

“आ किया तो, पूर बळना अर पाणी मे डूवणो अं साचा कियां ? पूर बळता चरडको थारै चीनो ही चिप्पो कठै ही ? अर डूवता, टोपो ही पाणी रो नाक मे गयो थारै ?”

“अं तो सपना है बाई, सैंदे साचा किया हुवें ?”

“मा ! न तो कठै ही मन्तोसी-माता ही नाराज, न सपना ही साचा अर न आख-ओठ फुरकें वैं ही। वैंम रो अणमीतो भार ऊंचाए मत फिर।

डूवण रो सपनों आयो है तो पेडू मे खरावी है की, पाणी सोंवतां कम पियो है का पोस्यू-पीस्यू करती सफा ही भूलगो है, पूर बळता दीस्या है तो पेट अर आतां मे दाह है, आव वणै है, तेल, लूण, घटाई अर मिर्च-मसाला जादा घाईज्या है, टक-दो टंक ही नही, लगोलग केई टंक, हाजमो ढीलो है, घून री चाल ही ढीली है अर ढीली है मन री अवस्था ही। मन ढीलो, बीरो तन ही ढीलो। ढोलापण मे मीत ही मूजै।”

सिरदारो धो कानी देखै ही ही अचंभें मू पण ही घुप, सोचें ही कां। मुधा बोली, “पैलां तो बंठी हू, अर फेर दै जबाव।”

बंठी हुगो वा, बोली, “ई लेयें तो बाई, तू मनै रामजी री बंटी मागी।”

“किया ?”

“किया काई, तै जाणू म्हारै हाल-हकीगत रो कागद-सो पढदियां हुवै, वारै सै पेम् आयो जद, कीलै'क रो एक टैणियो छोडग्यो हो, अचार हो बी मै करी रो, बील्यो, 'मा, खाटो मू कर लिये कदेई, बाई छव दिन हुग्या हुसी माग रै नाव मै तो पापड़ ही नी, छमक्यो । च्यार-च्यार आगळऊचो तेल तिरै हो बी पर, मिर्च-मसाला खूब, स्वाद इसो लागतो तू पूछ ही मत, रोटी रोज सू डोडी जीमती, सगळो मै एकली ही सूत लियो, कनै कीडी नै ही नी आवण दी वीरै ।”

“पाच-सात दिन, रोटी अबै म्हारै कनै ही खा, एक-दो उपवास कर हू वताऊं ज्यू । आंधो अर अणचाईजतो ऊर-ऊर, मादगी नै घिगार्ण तेडो मत दै । खराबी आतां मे ओळभो आख्या नै, अणभावती चार्व, दोस सपना नै देवै, आखडै असावधानीं सू, जोडै बीनै मतोसी-माता सागै ?”

“बाई, रोटी अबै पांच-सात दिन ही नही, जोस्यू जितै थारै कनै ही जोमयू, सुन्न वस तू ।”

मुधा सोचै ही कै मिर्च-ममालै रै ई प्रसग नै, अठै थांणआळी सगळी लुगाया रै गळै उतार, बीनै वारै जीवण सागै जोडनो है, अर बँम रे भून ही वामो ले राख्यो है कीमें ही तो बीनै हो बिदा करणो है ।

21

प्रभाकरजी तो धैर हार ही ग्या, हारघा ही मामूली नही सागीडा, पण, पडघा वै, आखडघा जिसा नही, कारण सरवार सत्तापक्ष री वणगी, वारै हक री । सत्तापक्ष रै हारधै उम्मीदवार खातर इतो नमो थोड़ो है ? वै तो करता-सा की करनी, पण थारा अनुयायी तो पैला ही सीधै अर इर पोक आदम्यां मे शांप पांवता नी चूकै कै 'अबै देखत्या विरोध्यां रो स. देवणिया नै, घाट वारी चढी नी करदा तो, म्हानै कैया ।” मुधा रै . . . तो, सी-बडग्यो अर नागां रै गर्मी चङ्गी ।

सरकार सोचलियो कै जन-हवा रो फायदो उदावण खातर, ८ *

चुनावी री रोड्या तातें तवें, लगतें हाथ ही सेक लेणी चाईजै । वण छोटा-मोटा चुनाव करावण री तेवडली अर देखतां-देखता तीन-च्यार महीना बाद पचायता रा चुनाव, आख्यां आगें आ खडा हुया ।

सरपच रें पद खातर, सुधा करमा नें कॅयो खडी हुवण नें पण वा तो अँन टैम खीली खोल छेडें जा खडी हुई । बोली, “बैनजी, बैठी-मुती डूमणी, घर मे घाल्यो घोडो, हूं गूगी हू काई, हू तो ई पचडें मे नी पडू ।”

सुधा एक पल बीरें चैरें कानी देख्यो, नँकारो अर ना-पसदगी रूपयित हा बी पर । हथियार ही नाख दिया वण तो रथ रो मूडो मैदान कानी कीरें भरोसँ मोडीजै ? सुधा रें चैरें नै ही, उदासी रुधलियो एकर । करमा नें बोली वा, “ओ, काई करै है वाई, म्हारें मने-ज्ञाने में तो तनै, कदेन री-ही सरपच धरप दी, चवरी री टैम अबै, चमक्या पार कियं पडसी ?”

“ओ बलघ ब्यावणो गाव है बैनजी, काई-काईं वातां गोडां पर घट-घट हुवा मे उछालदँ लोग अठै रा ?”

“पण इया जुवां रें भार सू गाभा नाख्या धरती पर हेत री सडक नी वण । गाव सगळा ही बलघ-ब्यावणा ही हुवै है, ढाळ कानी बै जादा दौडें, पण खोड मेटण नै, खटणो पडै हिम्मत राख'र ।”

“ठीक है अपरो कॅणो, फेर ही मनै तो माफ ही करो आप ।”

“माफ हूं करदेसू तो कांडें हुसी, गांव री सरल सूधी अर उडीकती चेतना नी करै तनै, अर नी करै तनै धारी खुद री प्रकृति ही । म्हारी समझ मे नी आवै कँतू इत्ती संकै क्यो है ? सरपचाई मे न तो आपणी अणूती आसकित अर न बीमू ईगको । द्वार-जीत कानी भी नी-देखणो आपानै ।”

“तो ?”

“देखणो इत्तो ही है कँ गाव जागतो है' क मृतो ? मृतो है तो अँळभो गाव नै नही, आपानै जगावण री कोसीस करणी है दीनै, अर जागतो है तो योनै ऊपर उठावण री । टावै जुडो चावै जीवणें काम आपानै करणो ही पडमो । धारी-म्हारी अर जागतें गाव री मूळ मनस्या एक ही है । आम आदमी रोटी आपरी कमा'र खावै पण खावै वा सोसण अर भय नीधै रह'र नही, अभयता बीमे वापरणी चाईजै का नही ?”

“वा तो वापरणी ही चाईजै ।

“पग बीरा हुवै, चाल बीरी हुवै पण सही दिस तो पगा नै मिलणी चाईजै का नी ?”

“बा तो मिलणी ही चाईजै ।”

“गुडाई रुकै, अर भाईचारो बघै'क नी ? हर आदमी गाव सागँ अर गाव आखै देस सागँ जुडै का नही ?”

“जरूर जुडै ।”

“तो जुडै किया, कोरा सपना लिया ही ? पैलडो कर्णधार तो निकमों निकलगयो अर दूसरो कोई भलो आगँ आणों चावै नी तो गाव री उडीकती चेतना डूवै अर आपा ? बीरो सिनेमा देखा—विना टिकट ?”

“इया तो किया देवां ?”

“तो पैलै सू ही पोचै नै सूपीजै गांव-नीका री पतवार ? गरीब फेर सोरो सास कद लेवै ?”

“हूँ समझगी वैनजी आपरी मूळ मनस्या, पण मा रै की कम जचै है, बा ।”

“हा, असली रोग ओ है, श्रीगणेश मे ही वयों बतायो नी ? तू तो मान मा नै हूँ आपै ही मनास्यू । थारो तो नांव है, काम तो थारी टीम करसो अर टीम सागँ कुण जाणै किता-किता हाय, थारै हाथा सागँ मतै ही आ-जुइसी ?”

काम दोरो-सोरो वणग्यो कियां ही । करमा री मा, मानगी अर मानग्या बीरा भाई ही ।

सुगाई सरपच, गाँव मे अचभो ही एकर तो कम नी हुयो । बान ही उछट्टी खासी-भली । बात विना पगा ही दौड़ै ही खायी, एक दिम मे नी घ्यारां कानी अर चौईसू घंटा । वंगाल-आमाम, गयोडै भेट-साहूकारा रै बाना ही जा चढी घवर तो । आपणी पंचायत रो चुनाव अर आपा नारै आ कियां ? ईं मौकै वैं ही घणखरा, गाव आ लिया । आप-आपरी हवेत्ती मभाळी । छव हवेत्यां मे चोरी हुई लाधी । जाघा'क तो यामे, अणर्चानी घाड मे डूवग्या अर आघा नै विना पाळै ही धूजणी छूटगी । एक दूजै कानी देघना सनाह करै हा कै ओ बसेपो गाव मे विंया हुती ? चोर कोई चारवा घोडा ही आया है ?”

मेठ सिवदासजी र ऊपरलै कमरै मे भारी-भरकम गोडरेज (तिजूरी) रो काळजो हो ज्यूही काढलियो कण ही । डौढ-दो लाख रो घाव, घोचै रो घाव नी हुबै, डिटोल अर गाज सू नी भरीजै यो । सेठ-सेठाणी आया तो बी सरीर मुधारण अर गांव री की चास-वास देखण नै हा पण तिजूरी देख्या पछै बन्द-प्रैसर हाई अर आख्या आडा तिरवाळा सुरू हुग्या । घणखरो नैणो दो छोरचा रो है, गयो बीरो सांच तो सिर पर है ही, बां नै बित्तो रो बित्तो करवा'र और देणो पडमी, ओ सोच वारो काळजो चूटै है दोना हाथा सू । दो हजार रिपिया भरी रो ओ आभो छूवतो भाव, घर रो जावतो तो रो-कूक'र थ्यावस करता किया ही पण अवै ओ दूसर डड किया भरीजसी, हे हडमान बावा ! अर मन-मन मे कृण जाणै या कित्ता हडमान-चाळीसा अर कित्ता वजरगवाण वोल्या, प्रसाद तो सागै हो ही पण बावो इया कठै-कठै पावसै ? गाव मे एक ही सिवदास थोडो ही है ?

सोवा-उठो घर मे, सिवदास म्हाराज करै है । ऊमर तो साठ री ही है पण सारलै साल सू ऊंचो सुणन लागग्या को । सेठ ऊपर सू नीचै आया हाफता अर उदासी मे तिरता-डूवता । म्हाराज नै थोत्या, "म्हाराज, डुवो दियानी, म्हानै तो ?

"को जोर सू बोलो सेठां कान बैरी हुग्या आजकालै को ?" म्हाराज बोल्यो ।

सेठ की तण'र भळे बोल्यो, "कान तो धारा बैरी हुग्या अर ये म्हारा ?"

"बैरी हू किया हुग्यो सेठां ?"

"ऊपर ओ काई कवाडो हुग्यो ?"

"ऊपरलो ही जाणै सेठां, काई हुग्यो ऊपर, बात नै खोलो तो सरी सायळ ?"

मेठ होळै-मै लिताड मे लैवता बोल्यो, "करमड़ा उदै हुग्या धारातो, सागै म्हारा ही कर दिया, यात्र करै है ओजू ही बेचेतै ।"

कनै मेठां रो बेटो खडो हो श्रीगोपाळ बीनै झाळ ही आई अर झूमळ ही । म्हाराज रो पुकियो झाल'र ऊपर गयो लिया-लिया, तिजूरी री छाती दिग्याई बिना काळजै रो, बोल्यो, "डाकोन री तामळी मे घालण नै, तुग ही भळे नी छोडो कणही अर आ एक दिन मे घोडी ही हुई है, अँ मिगरेटा ग

टोटा पड़घा, अर अँ पड़घा चरकँ अर मीठँ रा भोरा, ये काई करँ हा ?”

म्हाराज अर्धमिट ताई अवाक, फेर बोल्या, “बाबू दो माल सू गोडा मे की हार है, सधीणँ रो चैरो ही नी देख्यो, ई खातर ऊपर तो हू छठै-छमास ही आयो कदेई, पण नीचँ मे ओपरी माखी नै ही नी बडन दो, आ हुई किया ममस नी आई ।”

सेठ बडवड़ायो, कान कनै मू लगार रीसा बळतँ कैयो, “किया हुई आ हू वताऊ काई—हियँ-फूट वात करो हो ।”

उदास म्हाराज आख्या कदेई तिजोरी कानी अर कदेई सेठ कानी करतँ मळे पूछघो, “उजाड़ कितोक-काई हुयो बाबू ?”

“ये चुकास्यो काई ?”

“ऊंचा बोलो की ?”

“ऊचो बोल'र, कूकू गाव रँ ऊपरकर, हियँ फूटी वात करो हो”, आ तो धीरँ ही कही, की ऊंचो बोल'र कैयो, “नीचँ ऊखड़ो, मायो मत खावो ।”

बां तो थाणँ मे रपोट छोड, बीनँ मू ही नी कियो । और बाणिया ही इया ही कियो । सिकतँ काळजा पर हाथ राख-राख, पाछा ही बानँ जाग्या-सर कर लिया । बांनँ ठा है कँ रपोट लिखाया, पइसो एक तो आवँ नी, फौडा अर पूछताछ मे टुकडो की खावा वो और छूटसी । इनकम-टँकम-आळा हारी-बीमारी मे कीरँ ही नी आवँ पण खोट रो ठा लाग्या जान-जीमण रो-सो काम समझ'र वँ बिना बुलाया ही आ पूगसी अठँ । धन लारँ घूड़ फँतो, काळजँ भाठो मेल लियो किया ही । इसू सेठ-साहूकारा रो मन तो घटग्यो, अर गाव रँ उच्चवां रो बघग्यो, बघँ ही । चोरी हुवँ अर लिप्याई-जँ नी जद । पण करमा नै इसू पडघो लाभ लाघग्यो मतँ ही । आम बाणियँ रँ आ जचगी कँ ईं गोळभाळ री जड मे मोटो कीड़ो सरपंच नै ही समझो । आयो मोको क्या चूको, ईं कुमाणस रो किन्नों तो काटो, दूसरो करमा रँ लारँ मिदरआळी है, बी सुगाई नै उछाळो चावँ किया ही, पण मूळ मे वा कानी नी, करतूतआळी है । गाव रो अहित वा नी सोच गरँ बी हासत मे ही ।

करमां घातर मेळ-जोळ री पगडाडी तो मुजा महीनां पैना ही सुरू करदी ही । गाव री मोकळी-मोकळी सुगायां सागँ बीरी उठ-बँठ है । कंचन अर करमा कित्यां नै ही पडावँ-लिप्यावँ अर आपरँ घूतँ सारू वारो सहयोग

ही करै—खट ही नी, कटै ही है की। वा मे सू कोई ही, पच-सरपंच बणै तो वारो रू-रू राजी।

दो-एक बूढे ठाकरा अर पाकै बामणां सलाह करी कै गांव मे इतै मिनखां थका सरपंच लुगाई हुवै तो गाव री श्री खतम ही समझो, बारलो कोई सुणै तो, गांव री किस्ती हेठी लागै ? इया कांई तोडो थोडो ही आवग्यो गाव मे मिनखा रो ? एक जण कैयो, “ई छोरी नै धणी तो छोड राखी है, रस्ती ही की हुती तो आपरो घर नी साभती ? करम फूटच नै भाग फूटघो अवलाई खा'र ही आ मिलै, ईनै आ मिदरआळी मिली, वीरी पकड़ाई पूछ मू ईनै ही घाटो अर गाव नै ही।”

गोपाल म्हााराज वोल्या, “हुसी तो हुणी है ज्यू, पण धर्म अर नीति ईरी मजूरी नी दै।”

ठाकरा नै न आप पर विश्वास अर न आपरां पर। हरधनजी नै यीन वणायो किया ही। हा तो वा भरली, पण घर री बिना मजूरी लियां ही। भिडते मोरचै ही, लुगाई बदळ बैठी। बोली, “स्याणा हो का गिट्टा ताई सुन वापरगी ?”

“कयो, आ किया कही तै ?”

“कही ई खातर कै धान अबै बाड़ो लागण लागग्यो अर मन नै बूबी आवण लागगी।”

“काई देख्यो तै ?”

“पेरवा पर अंगूठी राख-राख, ग्रह-गोचर बतादिया, फायदो-कुफायदो अभाग अगलै रो, हीग लागी न फिटकड़ी थे तो पइसा टाच लिया। कोई टेबै-कुडळी री दो लीकां खीचदी का सेठ-माहूकारां रै की पूजा-पाठ कर-दिया, जाणै हडमानजी, माताजी कर्न धारी ही चलै है, हाथ दो घडी गोमुखी मे घालदियो, सरपच-पंच हुयां, वै सगळा छूटी टागणां पड़ेला, रोटी ही छूटैली अर नीद ही।”

गोडा देराहयो है जवाब, छोरा सै न्यारा, मैं नाराज, पचायत मे साता कानी लडभइनों, है इती हिम्मत ? उठता-बैठता गोडा बोले, वै हू गोज गुण ही नही दो घड़ी वानै हाथा माकर किया काडू हूं, म्हारो जी जाणै है। गोडा नवा मिलै है कठै ही तो पइया, ई पचई मे ? थे तो ग्रह-गोचर देखो हो

मुल्क रा टीपणो देख'र अर मनै थारा दीखै है बिना टीपणै ही । जाण'र कादं मे पड्या तो, चतराई चीखलै मे हुवैली ?”

वामणी रै मूडै सामी देखता व' की दबता-सा बोल्या, “तो गाव रो कंयो, नी करू ?”

बडोडो बेटो आलियो, वो बोल्या, “गाव थारै कानी कितोक है धानै ठा नी, बी सू जादा मनै है । बोट आपानै न हरिजन दै, न जाट अर न घण-खरा घाणियो । घणी में तो काई है, चौथाई सू जादा न्याल, आपानै बामण ही नी करै । गवाड़ी री तम्बीर जाणता-बूझता कयो बिगाड़ो ? जमानत जब्त और हुवैली ? गाव री पगेलागणी में घाटो, अर घाटो आमदनी में और । सरपच, करमा हुवै तो थारै दौराई कठै ? ओ तो गाव है, बाटकी रै पीदं जितो, आखै देस रो सासन लुगाई ही तं साभ राख्यो है, आभो फाट्यो तो नही ? घरतो घसी है तो बत्तावो कठै ही ?”

मूछ ऊची नी, नीची ही सही, घर री पचायत रो फँसलो मान'र हरधनजी लारै सिरकग्या । करमा नै बीरै घरे जा'र, आसीरबाद देदियो बा, “बेटी केन्द्र मे थारै गुरु, अर मनि है, ऊंचै घर मे । धिरता, मान-सम्मान अर राजजोग सै, थारै हुवम नै उडीकै है, वाळ ही थारो बाको नी हुवै, “अर्जुन रथ नै हांकदैं, भली करै भगवान, जा फतै है थारी ।”

बुझत भोमिया दो-एक सेठा नै सिल्ली और चढाया, पण व' अगम बुद्धि, भूड रै खंदेई नीचै मायो मांडे ही कयों हा ?

खड़ी हुवण नै मू तो पछलै सरपच रो ही बळै हो पण आखर बीरं काळै इतियास रा ओजूं गीला ही हा, खड़ी काईं सिर हुवै ? ‘हाथ आपणै नी आवै तो काईं, अगलै री तो दुळ्हावो’, केई ईं कारवाई मे ही लाग्योडा हा, पण कारी की लागी नही । सरपच रो चुनाव छेकड, करमां जीतणो निविरोध । गाव नै हजार रिपिया राज मू सम्मान रा और मिल्या । गाव मे ही नही आमै-भामै बाहवाही री हवा ही फूटगी अर अचभै री ही, के लुगाई जीतणी ? काँपसन मे कंचन अर सिरदारी हो आ मिली । सिरदारी बोली, “बाई, म्हारो जणूतो भार कयो घीमो ?”

करमा आत्मीयता मू समझाई. “तू बडिया, म्हानै पैला हो जगमा करती—ट्रेम पर, अधेरो हु तो लालटण करती, वो ही पाम

अबै है धारो, जाग टैम पर नी आवै तो चोटी खीच दिए म्हारी, अंधेरो हवै तो दिस दिखा दिए म्हा सगळा नै, पावर है तनै, साच मे न सरपच सू सकण री जरूरत अर न की और सू, तनै न की आगै ही धाळी माडणी अर न की आगै ही हाथ पसारणो, बाजै जित करतब नै बजाए राख, ओ गाव अर आ पंचायत अगलै खोळियै मे, भळे नी मिलैला ।”

सिरदारो बडी राजी हुई अर की करण खातर बडी उंतावळी ।

झुकतो पालणै रो सीरी हुणो, सभाव है दुनिया रो । करमा रा पख-घर तो बघाई देवण आया पछै, पुराणै सरपच सागै पूछ-सा चिप्या फिर-गिया आया सगळा सू पैला । करमा नै बघाई देवता बोल्या, “बाई, म्हे ही नही, आखो गाव ही सुख री नीद सोसा धारै आणै सू । अण सरपच तो एक ही काम कियो, ‘नागा नचाया अर गाव निचोयो । गरीबा तो दिन काडघा गिण-गिण, अर समझदारा समै नै उडोक-उडोक । लूठै रो डोको डग नै फाडै, सामनो कुण करै बाई, अर जे माथो मांड ही लै कोई तो घर रो काम छोटी करैर कद पोसायो बो ?’

केया मौकै-रखी बात कर-कर, आगै-सू-आगै टोरदी बात नै, “कै सिरै-पच अर बीरै पापरिया नै ठा, अबै ही पडसी । अगली तो चौड़ै-चौगान हेलो मारै है कै, डाकीपण मे खायोड़ा, पाछा नी बढाऊं तो जाट री बेटी मत समझ्या मनै । खाल रा कस्सा वा कडा'र छोडसी ।”

ठाकर तो आ जीती, बी दिन सू ही, बाबुवा रै चक्कर मे टाइसैर जा पूग्यो, गडघा मुर्दा पाछा नी निकळै किया ही—ई खातर ।

किती ही लुगायां माय-माय ईं खातर घणो राजी है कै, “लुगाई अबै लुगाई री सावळ सुणमी अर बै बीनै खुल'र कह सकसी । मिनखा मे इत्ता दिन कैणों तो दूर बटीनै टुरता ही पग पाछा पडता वारा । मूल पी-पी अबै नाच्या देवा, गवाड-गळी मे, काई भाव री बीतै, अर टोक्या लुगाया नै गाळा, अकल ठिकाणै आवैक नो ?” आसा अर आस्था, बारी हिम्मत सागै जुडगी ।

लुगाया दो-चार नही, जत्या-रा-जत्या वारा मुघा कर्न ही पूग्या । बोली बै, “बाईमा जीत आ, लुगाया री नी, आपरी है ?”

मुघा की मुञ्जकरै बोली, “बाईमा, लुगाया मे नी, डगरा मे हँ

मे है काई? जीत आ आखँ गांव रो है। गाव हुवै चावै देस-दुनिया की, दोपै सँ दोनां सू ही है। आदमी-लुगाई रो एकता में, भेद रो भीत खट्टी, न कदेई हुई अर न हुवै। संसार रो निर्माण चक्र, दोनू हुया ही पूरो हुवै।”

कचन करमा ही आ पूगी, सिरदारी बठै पैला मू ही जमी बँठी हो। मुघा करमां कानी संकेत करती बोली, “बाई, इत्ता दिन तो, ‘दो पोई, दो काय मे, धारै सिर पर धारो आपरो भार ही हो, पण अयँ है आखँ गाव रो। बजनाई रो घूड धारै धोबा-धोबां पडो तो मुट्टी-खंड, म्हारै ही पाती आमी पण वा, जे धारै-म्हारै ताई ही हुई तो खे निकळस्या किया ही। सगळ्या मू मोटी चिंता तो तद हुसी जद वा गाव रो आखी लुगाया पर पडसी।”

“आखी लुगाया पर किया बाईसा?” केई की अचभीजती-सी बोली।

“किया काई, रुडा अर रुळा-खुळा बात करता थोड़ा ही चूकसी के नुगाई रो डोळ है गाव रो सरपंची माभलँ, गोडै मू गोडो जोड'र गीत थोडा ही गाणा है? तू अर धारी सागवाळना ही नहीं, आखँ गाव रो लुगायां ऊपणीजैली अर गांव मे लुगाई-जात भळे वरसा ताई सरपचाई सामो मू ही नी करैली। बांरै राजनीतिक उत्साह नै केई बरस लकवो हुयो ही समझो। आगँ सू पीछा भला, लोग पैलडै रा गुण गावता नी धकैला?”

सगळो बोली एक सुर में, “बाईसा, बात बिल्कुल ठीक कहीं थे, म्हारा तो फेर बोल ही नी फूटै मिनखां आगँ, ताळा समझो म्हारै होठा रँ तो?”

करमा बोली, “बैनजी, दिस धारी, अर चाल म्हारी, रवा तो म्हानँ कैया।”

“आपणी नीयत ही आपणी दिस है, आपानँ न तो गळन अर न पय रखतो करणो कीरो ही अर न कीरी ही घमकी आगँ शुकणो। छोटा आपणै भाई-भतीजा, अर बडा काका-वादा। न घमंड ब्यारो ही, अर न आट की सागँ ही। साधना-काळ है ओ तो, आखड़या आपणै ही सागनी अर बाळा छाटा साधना रँ ही। मन अर जीभ लगाम, परिग्रह न पदमँ रो अर न कीर्ति रो। मोटी बात वा है के आम जादमी नँ ओ मँसून टुणों चाईजँ के गाव रो डग-डाचो पैसां विचाळँ बदळन मतँ है अर वो मे बीरो ही की भाय है। चादर आ, गांव ओडाई हैं, टँम आया बा है ज़िमी-री-जिसी पाछो गाव नै ही मूप देणी है।”

22

रात की साढ़ी'क सात हुई हुसी । मुधा अर करमां कोठड़ी मे बैठी, आपस मे की विचारणा करै ही । मुधा बोली, "सरपचां, गांव मे केई छोरा-छोरी है आधा अर पागळा, पांच-सात तो हुवै ही ला ?"

"गाव रो पेट है, इता तो समझो ही बंनजी ।"

"वै माईतां रै ही भार, अर खुद रै तो है ही ?"

"कठै जावै विचारा ?"

"पण पचायत गाव की का और कठै रो ?"

"गाव रो ही है वा तो ।"

"अर वै गाव की चेतना रा ही अंश ?"

"ई मे काई गोळ है ?"

"वा नै की हुनर जोग करण रो बंदोबस्त पचायत आपरै हस्तूकै करै तो ?"

"तो मोनै मे सुगंध, पचायत की मार्थकता बघै ।"

"धीरी आ जिम्मेदारी नी ?"

"समझे जद तो, बीरी सबसू पैलां ।"

बात की आगे बघै, ई सू पैलां ही, एक लुगाई, सागै बीरै एक डावडी, वरम दनेक की धारणै आगे आ खड़ी हुई । लुगाई रै ओठणै पर जाडो-सो एक लुकार और । देखता ही वा दोना ही सोच लियो, 'लुगाई आ, बोई रावळै रो हुणी चाईजै ।'

करमां बोली, "ओलट्या नही, माय पधारो ।"

माय बडती-बडती वा बोली, "धारै तो हू नी निवळो अर मिळण नै कदेई, आप नी पधारघा, कसर दोनां बानी, ओळखां किया ?"

कुर्मी पर बैठणी वा, तो मुधा बोली, "पडदो है आपरै ?"

"भूख-तिस तो म्हारे सागै-सागै उघाडी फिरै है, पण म्हारे पडदो है काई करा, कूटीजां हां तो ही पडदं नै तो धीमै ही फिरा हा ओजू ?"

मुधा बडी प्रभावित हुई बीरी गाफ कथणी म्, स्पानी लागी धीनै वा ।

'आप बीरै घर मू हो ?' ओ पूछणों मुधा ठीक नी समझ्यो, बण

डावडी नै ही पूछयो, “बाई, काई नांव है थारो ?”

“चंद्रावळ”, छोरी बोली ।

“अर बापूजी रो ?”

“बापूजी नै नी जाणो आप, सरपंच सांव री बेटी हूं ।”

“जाणग्या बाई, अर अ थारा, मा-सा ?”

“हा ।”

मुधा हाय जोडती बोली, “धन-घड़ी, धन-भाग बड़ी मँर करी आज तो, फरमावो किया हुयो पधारणों ?”

निवति-निवति, करमा ही बोली, “माफी देया सा, आंधो अर अजाण बराबर हुवै है, हूं गांव री सरपंच तो क्षट बणगी, अर ओळखू नी पचास पावडा परिया बसतै सरपंच सांव रै परिवार नै ही, आ-म्हारी कमी-नी तो काई ? दरसन आप किया दिया आ फरमावो ?”

“दरसन काई, आप दोना नै बघाई देवण नै ही आई हूं अर की म्हारी गजं ही ।”

करमा बोली, “बघाई ईमे क्यारी ? आप सगळां जितार्ई तो जीतगी, म्हारो ईमें काई ? हां, आप लोगा रै दियै विश्वास नै जे है जिसो रो जिसो ऊरळो राख सकूं ठेठ ताई, बघाई री बात फेर तो की बण सकूं है, पण बा ओजू अळगी है, घणों खाया आसी । आप तो सेवा फरमावो पैलां ।”

“आप जीतग्या म्हारो बडो जीसोरो हुयो, आप पूछस्यो क्यो ? क्यो क्यारी, म्हे अबै जीण पढग्या समझो ।”

मुधा बोली, “आ कियां, जिये तो आप पैलां ही हा ?”

“पैला बँनजी-सा, जिये नही भोगै हा ।”

“किया ?”

“किया काई, पूछण ही रागग्या तो तारै क्यो राखू, मुण ही तो । पाटक मे रउँ-गुळै टोषडियै-पाडियै मू ले'र ऊट ताई कोई लिताम(नीताम) हुयो तो, बारी जेब मे तो की न की आ ही पड़तो । कीरी ही गवाही दी तो बा तो बोतलआळा पइसा पैलां पटका लिया अगलै बनै सू, लोन पाम हुयो की रो ही तो बारै बापरत पैला हुई, फँमिन रो काम खुत्यो बदेई तो बां एरु हाय मू नियो अर दूसरे मू पायो, कीरो ही एवड़ इतग्यो पाटक मे तो

बारी सेवा मे तो घेतियो-बकरियो की-न-की त्यार । कीरो ही खेत मिणायो, बाडो छपवायो तो बा आपरी भूर पैला ही धूकली, किताक बताऊ आपनै ? हू न कास करण मे पाछ राखती, अर न कँवण मे, पण बै न कान माडता अर न आंख्या ही उघाड़ता, बताया, हूं कांडै करती ईं सू जादा ? अबै न-बांनै बिया मिलै, अर न अबै बियां नाचै बै । तो बताओ, जीवणै पडयांक नो ?”

“फर्क तो जरूर पडसी ।”

“पण आप जाणो हो, चोर रा पग काचा हुवै है, सरपच हुवो, चावै प्रधानमंत्री । बांनै कह दियो कण ही, कै ठाकरा, सैठा रैया अबै, पोत लारला सै उघडैला, अर खायोडा सै पाछा घिरैला, जाटणी है आ, चढती ही ढाण घालसी आ तो । हालत बांरी खस्ता हुगी । काल रात लटकतै मू मनै बोल्या, “अबै तो थारी टूमड़ी दियां ही पाणी बचै ।” ‘टूमड़ी क्यो’, मै कँयो, बोल्या, “बाबुआ री जेबा में की दाब’र, जाळ सू निकळू किया ही ?” मै कँयो, ‘म्हारै कनै किसी तो टूमा अर किसी मनै करवा’र दो व्याव पछै, आपरै घर री दो ही तो टूमा ही, आप ठडै-ठंडै कदेई अडे लगाई बांनै, म्हारै माईता रै घर री दो टूमा है, बांनै काळजै नीचै देराखी है किया ही, आपनै बै ही नी सुहावै, पण बेच्या बारा पूणां ही पल्लै नी पडै आपरै । दो महीना छेडै, छोरी नै घोरियै चाढणी, हू तो खैर अडोळी ही सही, पण बै कनै हुसी तो आपतो पाच मिनघा मे फूठरा ही लागम्यो । मू लटकाया बात तो बां मुणसी पण मुण्यां काईं हुवै समझण रो मन ही नी हुवै जद ?”

सुधा बीरी बात मुण’र पसीज उठी, एक सैज सहानुभूति बीरी चेतना मे उतरगी बीरै प्रति । बा बोली, “वायां कित्तो ?”

“एक आ, अर दो और है ईं सू बडी ।”

“अर कँवर ?”

“एक है सगळा सू छोटो ।”

“अर फेर हीं बै घर कानी नो देखै ?”

“नो देखै जद ही रोणो है वाईसा, बोटल दीखै, बीनै घर घोडो ही दीखै ? लुगाई, लुगाई रै दुख-रुदं नै जादा समझै, अठै आवण रो मोरो कारण तो ओ ही समझो, लुकोऊं क्यों बात नै ?”

करमा बोली, "आप आया, म्हारै सिर पर, म्हारी तरफ सूं आप बे-फिकर रहो, आप सागै न म्हारो जातगत ईसको अर न मनै बारा गड़घा मुर्दा काढ-काढ, पंचायत में प्रवरसणी लगावण रो कोड । न वीसू गाव रै सिट्टा उपजै अर न म्हारै ही कोई सिद्धि । पण एक अजं है म्हारी, गाव हित में इत्तो समझादेया बांनै कै अबै बै लत पर कब्जो राखै की, गवाइगळी न आप नाचै अर न औरां नै दिस देवै विसी । हूं बंधी हूं गाव रै विश्वास सू, वो टूटयो तो आख्या हूं बंद नी राखूली ।"

"वाजिव है आपरो कौणो, म्हारी कोसीस आ ही रैसी", ठकराणी बोली ।

मुघा बोली, "आप आया, म्हे बडी राजी, दुख इत्तो ही है कै इत्ता दिन आपसू भेटा नी हुया । आपरो डावडी म्हारी डावडी, आपरै दुख-ददं नै ओछो करण मे म्हे ही की पांती बंटा सकी तो म्हारो भाग मोटो समझो । आप जिमी जीवत दिम बारै सागै, फेर ही बै भटकै, दुख ही है अर अबभो हौं पण मेकीसेकाई मिलै तो ओग रै नैडो कुण जावै ? मंनत कानी मोडो बांनै । सेत-खळे से सागै खाटो फेर लूखी-सूखी सगळा जीमो कनै बँठ'र फेर सारु नी, मीठी लागसी रोटी, अर मीठी लागसी नीद । त्याग अर मंनत री नीव पर उठतै घर री मँक छांनी ही नी भावै ।"

ठकराणी भंग्या रै घर कानी संकती-संकती अर काठे मन टूरी ही । सोचै हौं, 'आज ताई जाणों तो दूर मूं ही नी कियो बीनै, पण आपरो गजं गधं नै वाप, आणों पडघो । पण वातचीत कर'र पाछी बिदा हुई जद, ससै मू मांकडोजतो भीतां बीरी मतै ही टूटगी, आसा अर आत्मोपता मे डूबी पर सन्तोस रमै हो—नीरोम अर निरवाळो ।

कुनी घाई बी छौरै नै पंचायत में बुलायो एक दिन । करमा बोली बांनै "घारै सागै और कुण हो-रे बी दिन ?" वो सामनै देखप लागम्पो । वा की आंगरा बढळती बोली, "देखै फाई है, बात अवार तो अठै ताई ही है, हाप नू निवळे पछं, न हू की करसकूं अर न घारा हेमायती ही की ? जेठ हूवै नी हूवै, पण चामडी नुई आवतां, महीनां लागैला ?"

महमको-सो बोल्पो, "सिसपाल निप हो ।"

"बीरी है वो ?"

“हुकम सिध हवालदार रो ।”

“हवालदार जी है का आगीन गया ?”

“दो बरस हुग्या, गया नै ।”

“दारू खूब पीवता वै ही तो ?”

“हा ।”

“और भळे ?”

“दीपलो सुनार हो ।”

“मिल'र थे, बैनजी रो पापो ही काटू हा काई ?”

“नही ।”

“तो धोक देवण नै गया हा बठे ? चोरी री तो वा टैम ही नी ही अर चोरी करण नै बठे हो ही काई ? वात तो की और है ।”

कदेई वो सामो देखे अर कदेई आपरें पमा कानी ।

बा भळे बोली, “इंरो मुतळब, भूत याने, की दूसरे ही बणाया है । वात नै लुकोई तो चंद्रमा सोच लिए थारो, थारें जोगो थाणैदार तो म्हारें पग में ही है, गवाही ही नी लागैली ।”

“सरपच कैयो हो,” होळें-सै बोत्यो यो ।

“अर सरपच नै ?”

“प्रभाकरजी ।”

“अठे ताई तो ठीक है, हू राजी हू थारी वात सू, काई कैयो सरपच थाने ?”

“चोट-फेट तो घणी देया मत, डर पैदा करणो है आपाने तो बी लुगावढी में ।”

“बलि रा बकरा सूका ही बण्या का मिल्यो ही बी ?”

“दो-दो घोटल दारू ।”

“नसो अर्वे तो उतरग्यो है लो का है ओजू की ?” यो नी बोत्यो ।

“आतंक अर दबदबो पैदा कर'र, छाप जमाणो चाबो हो गांव री गरीब अर सूधी चेतना पर, भे बसणदो वै ही बसै, बाकी नही, बाग भा-ही है नी ?”

वो सामो देखतो रैयो, पण होठ बण नी खोल्या ।

सिसपाल अर दीपलै नै ही बुलवा लिया बण । होळै अर बडै मिठास नू बोनी बा, “भाईडां, मिनखा दांइ बसो गांव मे तो थारो ही फुठरापो है अर गाव रो ही ।”

दीपलो, आपनै दूध घोयो-सो दिखावतो बोल्यो, “आ क्रिया कही बाईसा, म्हे तो फुठरापै सूं ही बसा हां गांव मे ?”

करयां फट तौर बदलघो ही । भवा विचाल्लै सळघालती बोली, “आ क्रियां, कह'र बताऊं का कर'र ? गुडाई ये नी करो, करवावै है थारै कनै नू तो कोई । हाय-पग थारा पण माथो परायो है, देखस्यु देखा, माथो कितोक बचावै थानै ?”

बै सामां देखण लाग्या ? सोचै हा, आ जे अठै ही इलजाम लगा'र दो-ब्यार मेलदै फं-फा तो आपां कांई पूछ बाडा ईरो ? “आ पटवारो रै सामनै ही जूत ले'र खड़ी हुगी एकर ।”

बा बोली, “मनै ठा है, गाव रै बद घरां रै गैणै-गांठै कानी ही निजर है थारी अर गांव रो सीधी-संकती इज्जत कानी ही, पण ध्यान राह्या गाव मे बांदरा नी बसै, राया रा भाव राते गमा । कमाई कर'र छावो तो बमो गांव मे, गाव है थारो, हारी-बीमारी मदद हुसी थारी । दिस उल्टी झालणी है तो जाग्या और कठै ही सोध लेया थारी, हवा गाव रो साथ नी दैली ।”

पांच-सात जणां रो एक गिरोह हो, चोरी-बदमासी रो रपोट बण खुद करदी । थारैआळा तो इतै नै ही उडीकै हा अर की बै जाणै हा कं ई सुगाई रा हाय लम्बा है । मंजाई करो जी छोल'र, गांव मे एकर ठंड बापरगी ।

दो मास्टरा पर आय ही, सारळै केई महीनां नू । बानै ही बुनवाया । तेडै मार्ग ही ममझ तो बै गया कं सेखै नै भातो आभी की न की । आवता ही बुरम्या दी घानै, बोली, “गुरुदेवां, नियुक्ति आपरो गाव रो चौधर करण थानर हुयोड़ी है का टावर पढावण नै ?”

“बयो सा, टावर ही तो पढावां हा ?” बै धीरे-मै बोल्यो ।

“किनाक पढावो हो अर किताक पढावो हो, आप ही सोचली । मुन्ती है कं बैनजी नै धमरी रा कामद आपरो ही मर है ?”

चैरा फक्, होळै-सै बोल्या, “आ झूठी कण कही सा ?”

“कही है वो आगे वतासी, कागद दोनू ठाया पड़घा है म्हारै कने, हू तो वानै भेजस्यू इटलीजैस नै, आपरो हाथ नी है वामे कोई तरै रो तो आप चुनौती कर देया वानं । गांव मे आप और गोळमाळ ही खासी करी है, वो सगळो कच्चो चिट्टो मनै ठा है । अँ काम ही करणा है आप नै तो छोरा पढावण जिसी जिम्मंदारी नी ओटणी ही, ट्रक-ड्राइवरी करणी ही कठै ही का दारू री ठेकंदारी ।”

वा सोचलियो, ‘लुगाई वड है, अबै अठै सू रस्तो नापण मे ही फायदो है । वदळी करवा’र वै बीस-बीस कोस आगीनै गया । महीनो हुग्यो गया नै, पणसी, बारो ओजू नी गयो, कारण अगलै महीनै वा तँसील री उपप्रधान और वणगी । वणता ही वा रावळा री बूढी ठकराण्या, हेत्या री सेठाण्यां, फूटी साळ अर टूटी टापत्या ताई ही नही गाव रै बूढै-वडेरा सू ही मिली । गाव बीरो अर वा गाव री ।

बूढी ठकराण्यां केई अपणायत पसारती वीनै बोली, “वाहू ए करमां तू सरपच केई वणी, जियाळ दिया म्हानै बाई, केयां नै । सुणी है, गुटको ले-ले गवाड मे नाच्या करता वै, खासा कम पडग्या अबै । केया रा की टूणा ही करवाया है तँ । चोखो बाई, केया रा आधी भूष काढता टीगर विचारा, दळियो तो की घाप’र खासी, आसीस लागसी तनै । दूजै-चौथै, मायं-मायं केई जरकाईजती किसी नी ही, वँ विचारी ही की जीणं पटसी । बाई, घर रो बात थारै आगे प्रकासा, म्हारी आख्या आगे छोटी सू मोटी हुई है तू ईं खानर, वारै ठाकर, मूछघां रै घट, मायं घणखरी भूष, काम करण नै जी नी करै, उधार तोलतो बांणियो सकै, बता काम क्रिया चलै ? ऊत-चूणं रो काम की चालु करा, मँगत हुवै, माया वापरै ।”

बाणिया ही कम राजी नी हुया । साफ नोयत अर बधती अपणायत वीनै आछा नी लागै ?

23

स्कूल की छुट्टी हुआ, अघ घंटो ही हुयो हुसी। घरस चाळीसे'क री पाकल-सी एक विघवा आई। आढयां रै चीक पर चिता री मटमैली-नी चादर विछघोड़ी अर चैरँ पर उदासी री। होठा पर हळकी फेफी, जाणै बी नीचँ वण आपरी कोई दर्दभरी लंबी कथा ढक राखी हुवँ। वा बोली, "अठै एक बाईसा बिराजँ बतावै, नाव सुधा है बांरो?"

सुधा बोली, "करमावो मा-सा, सुधा तो अठै हू ही बजू हू।"

"रतना वैनजी नै जाणता हुस्यो आप, नसँ है मंडी री अस्पताळ मे?"

"हा जाणूं हूं आछी तरँ सू, हुकम करो आप?"

जैव मूं एक कागद निकाल्ल'र, सुधा रै हाथ मे थमादियो वण। पढण लागी, सुधा लिख्यो हो, "बहिन, में यहा आई जमी से इस औरत के पडोम मे रह रही हूं, आचरण मे बड़ी भली, पर आर्थिक स्थिति बड़ी दयनीय है इसकी। जान-अजान कुछ ही ममझो, यह तुम्हारे गांव मे ठगो गई बुरी तरह। गुना है सरपंच तुम्हारी ही शिष्या है कोई; अस्तु इस सम्बन्ध मे मदद करना इसकी—भर शक्ति। अगले सप्ताह, मिलने आऊंगी किसी दिन। योग्य सेवा, जेप शुभ।

सुम्हारी ही अपनी
रतना

सुधा बोली, "सुणावो मा-सा, फाई बात है, वण टग लिया पानै?"

"ओमवाळी हूं बाईसा, जात थोथरा है। बड़ी-पापड बेच'र गुजारो किया ही चलाऊं हूं। एक बेटी है परपायोड़ी। तीन साल हुया है, परण्डा। तारै-सँ नान्हियो हुयो हो बाई रै पण करम पतझा हा, मायो नही करमा में—हाडयो दिन थोसे'क पैला ऊमर री डाळी मू।" वा बोली।

"ओर टाबर ही आपरँ हुवँता?"

"दो छोरा है, पढे है तीजी अर पाचवी मे।"

"ठीक है आणै करमावो?"

"छोरी रै चिणविणाट गुरु हुम्यो, नोद कम आवँ ही अर भूष ही कम

लागती। दवाई-पाणी मोकळा दिरवाया, रतना वैनजी बडी मदत करी, पण करन साथ नी दे तो वै विचारा काई करै ? केया सू झाड़ा ही धलवाया पण फायदो की नी हुयो। आखा दिखाया, पाच-सात रिपिया वानै ही चटाया, जी रो उकळी। एक नागोरी मिये नै दिया तीस रिपिया, काई हुवण नै हो ? कण ही चेडो बतायो अर कण ही चकारै मे पग। उतारा ही किया। सासरैआळा कँवायो, सगीसा, मौ-पचास कानी मत देत्या, चेडै-चाडै रो जावतो करा'र ही बोनणी नै भेज्या। बाईसा, सगा कनै सू तो मागती सक, अर खुद कनै टक रो सरतर ही दोरो, फेर ही सोचै ही सौ-पचास माथै कर'र ही, ईनै जे राजी सू रवाना करदू आपरै घरे तो हूँ लाख री हू। एक दिन कण ही कँयो कै, 'रामपुरं मे एक बैरागी है बडो पूगनो। रिपिया तो मू माग्या लेसी वो, पण रोग री रात काटदेसी।' जी रो उकळी काई करती बाईसा, आपरै ई गाव में, हप्तै भर पैला हू आई छोरी नै ले'र। इग्यारै रिपिया कळस मे घात्या, फेर हड़मानजी आगै जोत कर'र, बोल्यो वो, 'ई मे तो नायण है कोई, आ बाई हाय ऊजळा करण गई है, त्रिकाळ सिझ्या री, बाँ वेळा वा, ई मे बड घैठी। वा बालगोपाळ हुयै नै पूरो करदै, अर आगै लगण नी दे। ईनै विदाम खुवावो चावै गूद रा लाडू, रस तो वा चूसलै, अर आ, तर-तर छीजै। वा ईनै न पूरी नीद ही लेवण दे, अर न की सागै सावळ बात ही करण दे, जची तो जवाब देदियो, नी तो उदासी में ढकोजती गुमसुम।' आ बात, म्हारै बाईसा फिटोफिट वैठगी। मै कँयो, 'म्हाराज, हूँ तो माव मरीवणी हू, ये समझ लेया आ थारी ही बेटी है—धर्म री, म्हारी अर ईरी आसीस मू थे फळम्यो-फूलस्यो।'।

वो बोल्यो, "बाई, रिपिया पांचमै लागती, मँतत ई प्यार पूगी करणी पड़गी।"

मै कँयो, "बडा आदम्या, इत्ता तो म्हारै सू हेला ही नी हुवै।" वो बोल्यो, "ये इत्तो ही कँवण लाग्या तो मी रिपिया कम दे देना।" बाईसा, छोरी रो एक टूम अटार्ण घर'र, रिपिया च्यारमै मै पक्का दिया बोनै, पाच-मात दिनां वाद वण लाल डोरे मे पोयोडो, ओ तावै रो माइजियां मनै दे दियो। घुप मेर'र बांध दियो मै छोरी रै, छव दिन हुग्या, पान्नी

तो बीर अल्लगो रैयो, व्याधि की ओर बधगी। छोरी न अवे सँवण आसी तो टूम तो बा आपरी मागसी का नही?"

"मांगसी क्यों नी, बा नी तो बीरै सासरैआळ्ळा मांगलेसी। शासै मे लेलिया वण धानै।"

"लेलिया नी, हूँ आयगी समझो, पण फायदो हुतो की तो सहसेवती आ मार दोरी-सोरी। च्यारसै दे दिया, च्यारसँ और हुवै जद या टूम पन्नै पई। कादँ मे फसगी हूँ तो, कादिसको किया ही तो गुण आपरो जीऊ जितै नी भूलू।" चिंता अर उदासी बीरै चैरै पर और घणी हुयी।

मुघा समझाई, "चिंता थे छोडो एकर, या करण मे पाटो ही पाटो अर छोडण मे लाभ-ही-लाभ तो छोडो ही नी?"

"जाणू हूँ बाईसा, पण जी सारै नी।"

"धररावण री जरूरत नी, आपणी तरफ मू आपा, पूरी दोन्नीग करस्यां अर जाणा हा, राव सूका नी आयां— बी कर्न सू, पण रिपिया मू ही जादा कीमती, म्हारी एक बात मुणो।"

बीरै चैरै पर एक आसा बिचरमी, जाणू जायती खेल मे पाणो मिलग्यो हुवै की। बोली, "हा फरमावो बाईसा?"

"धारी बाईरै केडो-वेडो की नी। माळक सवाड मे बीरो ही जावे, यासकर पैली सवाड मे तो थी सवाडती मा रै मन री सगाम बीरै बस री नी हुवै। हियो उल्ट पडै, मोह री मार अर बीरो उठवो वेग, एसा तपडा हुवै है कै एकर तो वै ज्ञान अर समझ नै भूत रै कर्न सातण-गा तोड-मरोड नांयै। दूध सू भरधा बोवा बुझती मा रै बित्ती यही ममम्या हुवै या जाण सकै है? म्हारै मे बीत्योडी है आ। बीन न धन भावै, न नै अर न बीरो मन लागै। खुद मे खोयोटी बीनै निबळन नै फोर्ड र दोखै। आदम्या मे ही नी, मोह रो ओ वेग जिनाकरा मे भी पण आदम्या जिन्तो लम्बो नी। गाम रो बाछटियो-बाछड़नी दो-बाच दिन रो हु'र पूरा हुवै तो आदमा देगता गाय बीनै। आगं मू उठावण नी है। एक दो दिन घरणो-पीणो छोडदे! आळो हुवै है, बो परायँ नै दुखी देग्र'र ही आमू नी रोक योत्यां बीरै दुख

चाको? जयान बेदो मरणा

आधा हुयोडा ही नी, प्राण गमाया भी सुण्या है।”

सुधा री कही, बीरी चेतना मे उतरयी सीधी। बा बोली, “बाईसा थारा बचिया जियो—लम्बी ऊमर, विल्कुल ठीक कही थे, पण अबे काई करू, कोई रस्तो बतावो मनै ?”

“ओजू की मोडो नी हुयो, बीरो मन बी ममता सू हटा'र और कीनै ही मोडो।”

“किया ?”

“सगळां सू बढिया तो आ है कं पास-पडोस मे इसो ही कोई टावर हुवै बोवा चूघतो तो बीनै बा चुघावै—पुन ही हुसी बीनै, तुष्ट अर पुष्ट ही हुसी वा। की बूढी-बडेरी कनै सू ज्ञान अर बैराग री मन लागती बाता सुणवावो बीनै। पढी-लिखी ही, की है काई वा ?”

“हां है चौथी ताई।”

“बीनै कथा-कहाणी री सोरी पोथ्यां देवो, रामायण पढणदो बीनै अर्थ देख-देख'र, बास रै दो-च्यार नान्हें टावरा नै घड़ी-दो घडी की सिखावै वा—नैम सू। गावण री की कोड हुवै तो कबीर, सूर अर मीरा रा दो-च्यार भजन कंठा करलै, गावै मस्त हुए। मुतळव, मन बीरो की न की काम में उलझयो रैणो चाईजै केई दिन।”

“पैलां थारै कनै आवती तो क्यांनै? पण दिनमान म्हारा ऊंधा हुवै जद कियां आईजै ?”

“कोई बात नी, रामजी आपा पर अबै ही राजी है।”

“घणों ही आछो, आपरी जवान पळै।”

“पण रात-रात रकणो तो पडसो थानै।”

“राजी-राजी रक्सू बाईसा, श्या कोई हेल् सार्न रिपिया थोटा ही आया करै है, आमों-सामों तो की हुंणो ही पडै।”

बान री ठा मिरदारी नै ही लागयो, बा आप ही तो पंच है। इमी पागळी पचायती तो बा मोधती फिरै है, आ घर बैठे ही हाथ लागगी, की हकी-नकी हुयां बिना बीनै तो रोटी ही स्वाद नी लागै।

दिनूगै भाग री कंचन-करमा ही आयगी। बान गगळी समझाई मुधा वानै, अर अर्जी एक और घरदी करमा रै हाथ पर। माजी ही बोली हाथ

जोड़ती, "हूँ तो मरवानां आ ही समझस्युं कै सिध री जाडा नीचै गयोड़ो हाय म्हारो, ये निकाल दियो, नीद अर रोटी ही छूटग्या म्हारा तो ।"

पचायत मे बुलवायो जीसुख साध नै । कुर्सी दी बैठण नै ।

वो बोल्यो, "फरमावो बाईसा, किमां याद कियो आज ?"

"आपनै तो रोगआळो ही कोई याद करसी ।"

"हुकम करो, मिटणआळो हुसी रोग कोई तो जरूर मेटस्यु", चैरै पर एक खुसी बिखरगी बीरै ।

"दस-पन्द्रै दिनां पैलां, च्यारसँ रिपियां मे डोरो बणा'र दियो हो आप कौनै ही ?"

"बाईसा ध्यान नी, बणावतो ही रहू हूँ ।"

माजी परियां बैठी ही, बीनै उरिया धुला'र करमां बोली, "आनै ओळखो हो आप ?"

बी कौनी देखण रो नाटक-सो करतो बोल्यो, "धूरो ध्यान नी ।"

बा की आख बदळती चाली, "अवार आप कठै बैठा हो, ओ ध्यान हैक नी ?"

"आ किमा बाईसा, ओ ध्यान तो है ही ।"

"अठै बाईसा अर भाईसा रो नातो नी है, पंचायत है आ । आ कीरी तो बाईसा अर कीरी माजीसा ? बा तो दूध रो दूध अर पाणी रो पाणी बरण नै बैठी है । आपनै तो सगळा ओळखै है अर आप कौनै हो नी, इसा काई प्रधानमंत्री साम्योड़ा हो आप ?"

आसा रै विपरीत, एक अणचीती गर्म हवा बीरै चैरै री आल पूछती निकळगी । वो सामो देखतो सोचै हो, "आ तो अणतेड़ी तूमत आंवती माणी ।"

माजी नै देखतां ही जाण तो वो गयो, पण बी सोच्यो एक नन्नों सो दुख हरै, आपां बयाना रै लम्बै उलझाड़ में पड़ां हो क्यों ? पण अबै निकळन रो ओर कोई पगटांडी नी दीखी, बी थुक मिटतो बोल्यो, "हा ओळखली, अबै ध्यान मे आई म्हारै ।"

"रिपिया च्यारसँ लिया हा आंसू ?"

"लिया ।"

“बदलें में काई दियो आने ?”

“मादलियो कर'र ।”

“पण वो बाधे पछै, बीमारी तो और बधपी बोरें ।”

“बैद तो दवाई देवण रो आड़ी है सा ।”

“पण मादलियो तो दवाई नी, ठगी है आ तो, अर ठगी करे तो माफी
बैद-डाक्टर नै हौ नी ।”

वो सामो देखे हो भीत अर लाठी बिचाले आयो-सो ।

वा बोली, “डोरें मादलियो में एचं कित्तोक हुयो आपरो ?”

“मोल चीज रो घोडो ही है मा ।”

“तो ?”

“हू दो रात आठ-आठ घटा जोत करतो तप्यो हूं ।”

“तो दो रात आप ही नी गोया अर हडमानजी नै ही जघघड़ी आख्या
नी मीचण दी । पण आ बनावो के आपरो जोत सागै, अगली रें रोग रो काई
मबन्ध है ? चारें जोत कियां, म्हारें छेत रो कातरु मरें तो हूं ही करवाऊ
जोत आप बनै सूं । बिना चौर-पाड़, पाली डोरें सूं ही, कोरें ही पेट रो
पपरी काढ गयो हो आप ?”

आपरे ही आळ में फम्यो निरुळन रो रस्तो देखे हो वो बोई ।

वा बोली, “साधां, हडमानजी सूं ही नी टळो ?”

कधन बोली, “हडमान बाबै नै जिता परमंट देवे है, आ तो पूछो
आने ?”

मिरदारी बोली, “डाकण घेरा तेवेंक देवे ? हडमानजी नै देवे है
अगरवर्सा रो धुवो ।”

करमा बोली, “दस-ब्यास पइसां रो डोरो मादलियो हुर्यता, बारें
पइसा में याट भिजोई है नी, च्यार भोरा धूप रा नाख दिया हुर्यता घोरें
पर, इत्तें रा रिपिया च्यारमें घरा लिया, इगो मोदो तो आयर-पीयर में
हो नी ऊपै ।”

कंवन बोली, “अर इग्यारें रिपिया कळम में घतवाया वै ?”

करमा बोली, “वो परमटेंत्र बाबै रो । मोलो बयो नी माघा ?”

बोने होठ की घुने तो ?

करमा बोली, "जात साध, काम असाध, थांमू न थारै जी नै सुघ (जी सुघ) अर न की गरीब-गुरबै नै, तो फेर आवण री उतावळ क्यो करी मानघा देह मे ? आप पर च्यारसै-बीस रो कैस चालसी, आ माजी सागं जा हू आपरै विलाफ अँफ० आई० आर० दर्जं करवास्यू । सगळें पचा नै बुला'र पचायत जोडस्यू, बो जुर्मानो और लागसी आपरै । एक बात और, म्हारै कांती देखो ।"

साधा, लिलाइ मूं आठ आगळ जंचें ताई साफ टाट पर हाथ फेरतां, अणचाया-मो देख्यो—करमा रै मामने एकर ।

वा बोली, "साधां, साल मे आपरै पचास हजार सू बेसी आमदनी हुवै वनायै है, टं धंधं मे ?"

"नहीं सा ।"

नहो किमा, धापरै अठै मालासर, मंदीपुर अर पूनरामर आ सगळा रा दपतर लागै है । पचं खाली च्यार टोपा तेल अर चिबटी धूप रोज रो, न कागद-कलम अर न वावू, दपतर दौडतो घालै । चाळीस पदसां न च्यारसी सेवो तो कमाई रो काई चाको ? "मालाना इनकम-टैपग ही देवता हुम्यो की ?"

होठा पर जीभ फेरतो बोल्थो बो, "दत्ती आमदनी कठै पढी है गा, गुजारो हुवै है किया ही ।"

"गुजारै री तो आप फरमावो हो, पण पंचायत तो सिकायत करनी कः आरी आमदनी देखतां अँ सरपारी इनकम-टैक्स घोरी करै है, इनकम-टैक्स-भाळा फेर आपरो बारणो बिना दत्तना ही पढ़पढ़ा संसी ।"

"हा मा, फौडो घाल मकै है बै ।"

"हृदमानजी रै दिव्य जीवण री पवित्र शांकी रो अग आप गाव रै जीवण मे उतारता कठै ही तो आप गाव रो ही नी, घरमो री मनम्या रो सन्मान कर्ता । 'कुमति निवारहि, मुमति के मगी', हृदमान-पाळोमं मे ही है का पडो ही रो बदेई ?"

"पडू री हू सा ।"

"दत्तो ही पढो हो काई ? देव-मुसंन-पाठ मुलमीदागजी तो दत्त-रम पदना मे बांठ्या, आग्ये ममार नै अर मुलजवानी वरसै थोई तो पदमो ही

नी लागै अर काम पक्को, पण आप बाबै सागै सीधी लैण मिला'र, की दूजै नै बीनै मू ही नी करणदो, बात तो कठै ही वानै ब्लैक मे और उलझा लिया। बा आपनै नियुक्ति-पत्र देराख्यो है का आपे ही नियुक्त हुग्या आप?"

बीरा होठ चिपग्या। बा भळे बोली, "पचायत की नी करै, वो कनै तो सिकायत आई है आपरी, जबानी नी लिख्योड़ी, आप फरमावो तो कारवाई आगै चलाऊ?"

वो मन ही मन सोचै हो, तू ही जे कारवाई चलावती तो इत्ता बरस अठै ही, ही नी, चलावणआळी और ही है कोई, बोलो थे नी, बोलै मिदर-आळी है। वो बोल्यो, "राज मे तो सा, आला अर सूका सै बळै है, कारवाई आगै चलाया, मनै तो तकलीफ ही है।"

"तो एकर आ भूल सुधारण रो मौको देवा आपनै?"

"आपरै इसी ही जचगी तो माजी रा पइसा सूप देस्यु—है जिता।"

"तो देवो च्यारसै इग्यारै रिपिया अर दस रिपिया आरै दो बिरिया आवण-जावण रा, भाडो विचारी नै घर सू कयो लागै? अर ओ साभो आपरो डोरो-मादळियो।"

"आरो हू काई करू सा?"

"च्यारसै री चीज है, फिपटी परसैट बटनी तो ही, आधा तो लै पडस्यो, बजार इत्तो थोडो ही गिरग्यो हुसी?"

एक पल वण सोच्यो, "म्हारो वस तो चालै की तो हू च्यार चूडावण घाल दू सरपचणी मे, अर आ अवार ही नाचै शीटा घिटा'र अठै ही।" वण उदाम-उदास मादळियो लेलियो। करमा बोली, "वास मे कोई कुतिरै रै बाघ देया, भूत नी लागै विचारै मे—ओर तो ई पात रो काई हुमी?"

ओ करमा आगै रिपिया राखण लाग्यो तो माजी बोली, "बाईमा, मनै तो म्हारा च्यारसै ही वणा-मोकळा, जावण दो बाकी रा।"

करमा भावाज की जोर री करती बोली, "चुप रहो माजी, विचारै बोलण री दरकार बिल्कुल नी है, पचायत है आ, ओ घर नी है पागे-म्हारो। कैसलो वानै ही करणो हो तो अठै कयो आया?"

वण तो टुरी जितै, जीभ नै ताळुवै मू छेष्टै ही नी करी भळे।

करमा साधा नै बोली, "सन्ता ओ गाव जितो म्हारो है बित्तो हीं

आपरो है अर वित्तो ही है और रो। दिस ठीक देवां लोगा, नै घट'र खास्यां तो बरकत करसी। इयालको संचै, राजी हुवो तो मरजी धारी, है कोढ़ ही, परवार रै मूळ मे चँठयो वो तो बिना ओंग ही उफण पडैलो कदेई अर परवार रै हित नै सायट सै लो।"

जीमुख म्हाराज विदा हुया उदास-उदास पण घणी उदासी वाने ई बात रो ही के पचायोडा रिपिया पाछा कढग्या। माजी रिपिया आपरा पल्ले वांघलिया, चैरै पर छुसी वापरगी पण सिरदारी रै मगळा सू जादा। माजी करमा आंग हाथ जोड'र मने-जाने मौन धन्यवाद तो दे दियो पण जीभ नै ओजू ताळवै रै चिपी ही रैण दी। धन्यवाद दिया काई ठा भळे चिड़ वँडे के पंचायत रै काम मे धारो धन्यवाद काई भाग तो फेर किसीक हुवे ?" माजी मुधा सू मिलती गई, बोली 'बाईसा, आ सगळी मंगवारी आपरी हो है।"

बा बोली, "मैरबानी, आ न म्हारी अर न और कीरी ही, ओ तो पचायत रो फँसलो है, पइसो ही धारै हाथ नो आवतो तां काई ये करता अर काई करती हू ?"

"बाईसा, लुगाई लूयी अर करडी जरूर है पण है बिना छान रो सोनो, आ नी हुवे तो रिपियो म्हारो आवै नी एक ही। मने तो भाटे रा पदसा ही पर सू नी लागण दिया, दिरा दिया आज ताई रा।"

"दिराणा ही चाईजै, लाग्योडा आपरा।"

"पण हू आपरो बदळो किया चुकाऊ, मने हूबी नै बाडी है आप।"

"उवागणआळो वो एक ही है, आप तो एक ही चेष्टा राघो, बेटी वास्तै कोई जरूरतबन्द बाळक देग्यो—वास मे, पास-पडांस मे का परु अपनायत रो। को रोगली, गरीबणी मा रो बाळक पळग्यो तो नितो आसीस-मो बा मा अर कित्तो आसीससी वो बाळक। आरणी दाई रो रोग घतम अर मागणो बीरो पाछो सरस।"

गई बा आनीसती, नुधा अर मुधा रै सारै साथ नै।

24

पुस्तकाले रो निरणे ही जद लेलियो तो 'चट-रोटी, पट-दाळ' सुधा रें खटाव कठे ? दो दिना बाद ही, पोय्या दोयसै नैङ्गी परोदली। नन्दन, चन्दामामा अर बाल-भारती मुहू कर दिया। एक मेज अर दो बेंचा बरामदे में राखदी। पोय्या मे पाच-सात धामिक नै छोड़, वाकी सै ही बाळ पोय्या। मोटी-मोटी सै विधा धामे, ऊपर सू फूठरो-ओपती, माय रोचक अर मीठी। रिपिया तीनसै नैडा, पोय्या रा तो दे दिया सिरदारी, कैंयां नही, राजी हु'र आपरें मत अर मेज, बेंचा रा पाचसै नैडा दे दिया करमां। पुस्त-काले रो नाव राख दियो, 'मां सन्तोपी पुस्तकालय।' करमां रो अध्यक्षता मे उद्घाटण लाडे-कोडे करवा दियो सिरदारी कर्न सू। आ नुई दित पकडती, ममता बीरी और स्वस्थ हुगी अर आकांक्षा और ऊची।

सुधा तो हाय जोड़'र खाली इत्तो ही कैंयो सगळा नै कैं,' देखो, मा सागी, मिंदर सागी, प्रार्थना सागी, अर आपां सै सागी, पूजा रो तरीको खाली बदळदियो, मा अर मानखे नै जादा नैडाई सुं समझण खातर, हेत रा हाय आपणा जादा लम्बा करण खातर।

पोय्या देवण-लेंवण रो काम मूप दियो सान्ति नै अर व्यवस्था सगळी रही कंचन रें हापां मे। कण ही कैंयो, "अर थे बैनजी?"

"हू बिना कैंया नाचणआळी, या पढतां नै देख'र मुळवणआळी" बा मैज भाव सू बोली।

पोयी की पढणी जाणें बरें तो हुयो बडो कोट अर नी पढणी जाणें बरें पढणों सीपण रो लागणी लगन। नांव लिखा'र, पोयी घरे लेजावण रो गुरवात हुई पैवां सिरदारी सू ही, पोय्यां घरे पढण नै अवार तो दो-ब्यार लुगाया ही ले जावे है, रंग चढणों गुर ही हुयो है पण आसार देखतां मैगई बीरी बघ ही भी। पाटसाळा रें ही जीवण मे नही, बाम सगळें रें जीवण मे, नुंदे हलचल गुरु हुई है आ एक। लुगाया अर टावर दोनू ही राजी, दोनू ही उरमुक।

अदोतवार है आज, दो-दाई बजी हुसी। वाचनाले रो बेंच पर तीन टावर बंटा पत्र-पत्रिका देखें हा। सुधा योने देखो, मोटियो ही हो बां मे।

बा मेज कने पूग'र बोली, "आज थे तीन ही किया रे? धारो भाएलो मघलो कठै रे?"

"वीनै तो ताव चढयो वैनजो", मोडियो बोल्यो पण चैरो वीरो ही की उदास हो। मुधा हाथ लगायो वीर डील रै, होठा पर वीर पापडी अर डील की न्यायो।

एक जणों और बोल्यो, "वैनजी, म्हारै वास मे ही, बीमार है केई।"

"जद ही कम आया हो थे", बा बोली। "पण छोरा पढती बेछा एक चौपनियों अर पैसल राख्या करो, पढतां-पढता कोई घणों मुहाबणो वावय लागै थानै तो शट लिप लिया करो, वो कण्ठस्थ ह्युयां, बागै काम आसी धारै।"

महसा निगर वीरो ऊपर उठी, कोई भानवी पगचाप सुण'र। पेम् अर मिरदारो आवता दीस्या वीनै। कने आंवता ही बा बोली, "आ, भा! आज तो भाई नै सागै और?"

मिरदारो बोली, "भा तो रोज ही आवै है, भाई नै पूछओ त्रियां आयो है?"

पेम् मतै ही बोल्यो, "वाईना, घेत लागयो, छोला अर कणक पकान पर है, आपणो टुकड़ो ही, देयो तो मरो चाल'र? तूण-नखण की सागै है का कोरा फोडा ही देया? आप दोनू ही पधारो, आपरै जचसी तों दो दिन बडे एकलेम्या, नी दूरै ध्यान मे तो घोड़ा घूम-फिर, बसही वो दिन हो पाछी हो पकड़ लेन्या।"

मुधा बोली, "कपो भा, त्रिया जचो धारै?"

"भा तो धारै लारै है, तू कंसी ती कुवै मे ही टुरपडनी।"

"आपा बांनै भेज्या है वठै तो, सम्भाळनो बानै आपणों फर्र है।"

"फर्र है तो फर्र पूरो करो वार्द।"

"तो भाई, चालणो फेर आज ही वार्द?"

पेम् बोल्यो, "टुरणो तो वार्दना, घडो-दो-पडो मे अवार हो चार्दने।"

"अवार हो चार्दने तो, अवार ही सही, आपणे वार्द नामणो है भा? नू जा, धैतिये मे कोट, बाबळियो की घानता, ओइन बिछापणू रें ही गांभू।"

वै गया मा बेटो दोनू । सुधा आपरो झोळो त्यार कर लियो । बस्तो, बँटरी, अर फस्ट-अड री छोटी पेवटी, घाल लिमा धीमे । सान्ति नै टाबरा री भुळावण दे'र, की घर विध री समझावै ही । कंचन अणचीती ही आ पूगो । सुधा बोली, "आव बाई, ठीक आई मौकँसर, सुणा नवी-जूनी कोई?"

बा बोली, "गाव मे बँनजी, टाबरा री आख्या ही आवै है छड़ी-बी-छड़ी । खाज, खुजली अर पचिया तो मोकळै टाबरा रै दीध्या, रामू मेघवाळ री मा रै लकवै री छवर मुणी, पण प्रकोप मनें घून रो विकार ही जादा लाग्यो । हरिजना रै बास मे की बेसी ।"

अध मिट रूकर बा, कचन सामी देखती बोली, "घून मे विकार मनें ही नी उपजै बहन, घणपरो विकार जीमण री जिनसां सागँ ही रळै घून सागँ । म्हारो बहम है कै घासो भलो गोळमाळ तेल मे हुणो चाईजै?"

"किया?"

दिन दो एक पैला, में एक डोकरी नै तेल लायता देखी, देख्यो तेल मै, लाळावधै ही धीमें, हो ही की जाडो, सुगन्ध ही की बाढी-वाडी अर रळप-टाउ-सी, न सरसू न सोयाबीन, बेचणियां जाणै बयारो हो?"

"मूघो तो पोसावै नही, अर मस्तो आछो नही, तो गरीब चाई करै बँनजी?"

"इं गू आछो है नी खावै तेल, बीमारी लगानै गू तो नुयो घाणो आछो ।"

"छोटो सगळी, अर्ये काई करणो?"

"सरपच नै ही की ठा है'क नी, रोग-दोष री?"

"केई घरा मे तो म्हे दीनूँ ही देख-देख आई हा ।"

"दवाई-पाणी रो जावतो ही की सोच्यो हुनी?"

"पैला तो म्हे दोनू 'जिला म्याम्ब्य अधिकारी' गू मिलण री मोचां हा, आगँ फेर की ।"

"बिल्कुल ठीक विचारी थे । तेल रा नमूना ही भराणा है घुपन-मे, अर दवाया रो इन्तजाम ही करणो है आछै गू आछो ।"

"आप अवार?"

“पारं जचै तो, ह इत्तै, दो दिन खाजूआळें रो चक्कर काट
आऊ ?”

“जरूर काटो पण, आया बैगा ही ।”

“मनै किमो घर माडणो है बठै ?”

खानी आठ ही बीघा में हुयोडी ही । चिणा अर गोहू, छडा हा । चिणा में
फाळ अंस की फोरो ही रियो पण वा कसर कणक काडली, लडालूम ही वा ।
कमर रो ऊचाई-मान कणक, हवा सागै झुकती-झूमती आख्या नै तृप्ति अर
मन नै अणमीती खुसी वाटती नी थकै ही । नही-नही करतां मगळो धान
पचास साठ मण सू कम तो काटै हुवैलो ? पाडोस्या रो कूत तो ई मू की
ऊचो है । अध बीघै में गाजर, कादा, अर सकरकद ही लगा राख्या है । एक
क्यारी पोदीर्ण रो है, रोज चूटीजै, रोज बर्ध, अमृत पुत्र है ओ । गाजगा में
नकड़ी पड़न लागगी अबै, लोह ओजू ही भरपूर है आम अर मिठास ही ।
आठ दस डांख, मिर्चा रा ही छडा है, लग्नाई पकडती छीदी-माढी मिर्चा
अवार ही सरसै वा पर ।

मुधा अर सिरदारी नै देखता ही रूपो, मघो अर बहुवा बडा राजी
हुया । “अरे, सोनै रो सरज अगयो आज तो ?” टावर सै दौडता सामा
भावे हा, अर दो बीनप्या कापै गूवटा, बडी नेह-निजर निरपै ही आ बानी ।
मुधा वा सगळा नै, फूल्या, चिणा अर डकोळी-भुजिया रो प्रसाद वाटघो ।
रूपै, मघै रो बहुवा बोली, “बाईसा, फदरा उठीवा हा, आज
बापरपा हो ?”

मघो बोल्यो, “माईता, म्हांनै अठे वाई ला बैटाया, न्यात कर दिया,
जगळ में मगळ, हमी ही तो भूख लागै है गुल'र, इसी ही आवै है नोद अर
इमो ही जोसोरो भोगा हा गुल'र मन पूछो । घण्टबी रोंटी, घण्टबो वाम,
बडा सोरा पण सम्भाऊपा म्हांनै इत्ता मोडा किया ?”

मुधा बोली, “या सगळा रो ओळभो सिर माधै, नी सम्भाऊपा बो
पाटो दानै नी, म्हांनै ही है । दानै सम्भाऊन रै मित्त जे दस-बीम दिन रीवना
पारं गागै तो जानन्द अर ऊमर नी बधता म्हांरा ? दानै देख-देखै ही मुग
जरजतो, ओ साम ही म्हांर वम नी हो ?”

“पण वाईसा, आपरी सीध अर समझ विना म्हे अठे काई ठोके हा ? जमी तो आ, पैसा ही अठे ही हुती, नैर आया तो घरम हुग्या केई, म्हे तो आर कदेई होठ ही ईसा नी किया बीरें पाणी मू ?”

“पण अस आपा नै मरपचर, कम मू कम पन्दरें बीघा जमी और त्यार करणी है । दो टोळघा वणसी आपणी, घादोवाद काम करणों है, घणों वृण करे देया ? हूं खुद सागै रैम्यु पारै ।”

“आप सागै रैया तो पन्दरें काई, बीस नै हाथ घातस्यां म्हे ।”

सिरदारी बोली, “छोटा-मोटा तोमू आपा, हाथ-हाथ त्यार करा तो ही, तीस हाथ जमी त्यार करणाया रोज ?”

मुधा बोली, “रोज यडो हुवै, रोज चालती कीड़ी महीनां मे सडकड, भीत पार करदें, अर फिर वैंठो गरुड ही, गिठभर नी चाल मकै ।”

सिरदारी चैती हुवा मू भैक अर नव जीवण खीचती, हरियाळी मे मस्त हुई धीरें-धीरें की आगै निकळै ही । कदेई कणक री बाल्या कानी देखै अर कदेई चिणा पर नटूमी गेघरघा कानी । बीन चाल चालती, पाष-सात गेघरघा तोडी, चिणा काडघा, दिया जाड नीचै अर सिरकी आगै । मोचै, “वाह प्रभु, काई मर करी है तै ? गोहू ही घाया अर चिणा ही, पण माग्यै पी मू किमा चूरमा हुया ? खळी-दाग्रल, घ्याराना रा मेकयोडा चिणा कदेई तेलिया मुट्टी-भर तो चौयाई वामें अणसिक्या, वांकरा-मा बरडा अर चौयाई कोरडू, आधा रो एक गुवाळो ही मसा । ग्यायां जी मे चिता घडो भळे हुंती कै देघ घ्याराना रा चिणा एक फारुं मे ही, नाग्र तिया वार्ये मे, न सावळदांता रै ही लाग्या अर न आंतां रै ही । आज तै वारो हंमतो घजानों घोल दियो, भावै जिना ग्यावो, पारै ग्याद, काई जीवण ?”

मुधा हेनो बियो, “मा ?”

“हा वाई,” जाड़ां घसावती वा बोली ।

“डेरै नी घालणों ?”

“बाई अठे तो वैंठो जटै ही डेरो, टैरां जटै ही विगाई अर मोदा जटै ही वगीचो । बी दिन तो मने दिन में ही डरलागै हो अठे, जी परे हो, अघ पडो ही नी रुकू अठे, पण आज वाईं ठाठ सगा राध्या है रामजी, फिर-फिर घरूं, रह-रह निरगूं, कोई नी पाले । अरै तो आ, चजर पडो घरनी,

वैंगी खार हुवं जद ही भरीजै जी अर निजर ।”

“लागे रैस्या, तो समै आयो सै थोक हुसो । पाकसो तो पाणी पण पसीनो सागै ले’र । अगलै साला मे आपणै ई खेत मे मन्ना, नीबू, अर माल्टा सै निपजसो, पाच-सात साल हाथ-पग आपणा नीरोग राख्या रामजी तो अठै आम फळसो, रोटी आपां कड्डी सागै नी, आमरस सागै खास्या ।”

“धारी बात म्हारे मनै है बाई, काई-काई रस है धरती-माता रै जीवण भहार मे, बा ही जाणै ?”

“अ अनन्त रस ही अनन्त प्राण है बीरा, तप बीरो, आत्मा अर आखै ससार रो हित सोचणों सभाव है बीरो ।”

पेम्बू बोल्सो, “बाईसा पेट मे अवे तो कूकरिया लड़ता हुसो ?”

“मै तो आधार खासो करलियो चिना खा-खा, धारी धे सांचो,” सिरदारी बोली ।

“तै आधार करलियो जद सगळा रै ही हुग्यो काई ?”

“पैलां बी क्यारी पर चाल’र, मू अँठो की, दूजी बात पछै सोच्या। ” क्यारी कानी आगळी सीध करती मर्घ रो बहु बोली ।

हाथ-पग धोया सगळां फेर धो-धो, साफ कर-कर काळो गाजरा रो प्रसाद पायो, बडी स्वाद, बड़ी मीठी ।

मुधा बड़ी खुस है अवार, रह-रह किता ही विचार उठै है बीरै मानन मे, गाजरा रो प्रसाद पाया पछै सगळा नै बोली, “धरती-माता रो सभाव है देणो ही देणो, क्यों ?

“हा,” मै ही बोल्या ।

“वा, जे, थोडो सो ही हाथ ग्रीचलै तो किमोरु योतै आपा मे ?”

“बडी माछी ।”

“पण आपा टंरां बेटा-बेटी हा नी ? देणो बढ किया करे आ ?”

“हा, सही है ।”

“मा रो सभाव घणों-थोडो आपा मे हीं आपां खाईने की मो ?”

“जरूर ।”

“तो आपा ही को देवा कोनै ही, घणी जरूर हुवं जठै ?”

“जरूर देयो ।”

“घरती-माता ई सू नाराज तो नी हुवै ?”

“नाराज क्यों हुवै, राजी हुसी बा तो ।”

“आपणै बटै अकाळ है अस ?”

“हा ।”

“मनै अबार वैठी-वैठी नै याद आयो, के आपणै वास मे केई भेषवाळा रा गाया, टोघडिया भूख सू भुवाळी खावता डोलै, सावण घानै कद आर्व, वैसाख-जेठ री झळ मे पाधरा दुसी वै, घण्या री हालत ही आपा सू छानी नी ?”

“घण्या कनै काई है, आपरो टक ही मसा टळै वासू ।”

सिरदारी बोली, “वाई पाच-सात टोघडिया टोगड़क्यां, रोज आगीनै कर-कर आऊ हूं, घक्का दिया ही नी सिरकै वै । घेरण नै जावती सोचू, एक दो रै टटा मे इसी टेकू ठुळी री, भळे वै मू ही नी करै ईनै अधालिया, पण कनै जा'र बां हालता पीजरां नै देखू जद, हाय घिर, जीभ ही घुलै घाली ।”

“तो बा दस-पाच डागरां नै आपां ही चटावां की ?”

“किया ?”

“कणक घिणा मू आपां आपणी उदरपूरणां करां, चिपां रो घार, अर कणक री लूडी ओ बा जीवा रै निमित्त करदां, हरसाल तो अकाळ पडै नी आपानै दिया है घरती-माता राजी हु'र ।”

“दिया है बप राजी हु'र तो देवता आपां दोरा क्यों ?” सगळा ही बोल्या । मधै री बहू बोली, “और तो काई है, टुक रै भाडिये री विघ भळै बेटाणी पडसी कियां ही ?”

सिरदारी बोली, “भाडे रो कोई विचार मत करो । भाडो हूं काई टा किनै बरमां मू गळै रै बाधे फिरू हूं, कंवती वण, आपरै गळै मे वध्या कनावून रो डोरो, दे झटको, तोड़ नाश्या । डोरै मे मासा तीनेक रो एण फून हो भेरुं जी रो ।

गुधा बोली, “मा, इयां काई करै है ?”

बा बोली, “बाई, ई मू न म्हारो गळो जाडो पडै, अर न ई मू रोटी ही गोरी गिटीजै, चुर्भ है तो ही लटरा रागी है ई अळबत नै, आज जिसो

मौको भल्ले कद आसो तोड़न रो, मरघां पछे लोग ही तो तोड़सी ई नै ? ह
किसी आडो फिरस्य कीरे ही ?”

“तू पंच है, माई रो इंतजाम तो पंचायत सू ही करा सकै है ?”

“ओ भाडो तो, ई पच रै घर सू ही सुद हवण दे ।” सगळा बीरै मू
कानी देखण लाग्या ।

फेर प्याज अर पोदीणै री चटणी सार्गें गोहू-चिणां री अकरो अर
उबसतो रोटपां जीमण रो आनन्द लियो, छप्पन-भोग ही काई करै बा
आगै ।

चिपतो ही कुभारां रो मुखो हो । मा-धेटी बठै गई । बडा कोड किया—
दो बीनप्या अर वारी सामु । काई दूर में गन्ना हो गडा हा बठै । मुधा तो
बडै धाय मू चूस्या पांच-मात टुकडा पण सिरदारी रै बस रो बात नी
ही । डोकरी बोली, “धे बाई, महीने पैला रो निकालधो, गुड खानो ।”
सिरदारी पाच-नैडो चिपगी । मुधा नै तो गन्ना चूसता-चूसता ही डिकारा
भावण लारगी ।

रुच्चा-गोठा हा दो । छपरै में एक गाय बंधी ही । कोठे में दो टावर
भूना हा । पूछयो जद ठा लाग्यो कै आनै ताव आवै है, पचिया ही है की ।
मुधा टावरों नै देख्या, उकाळी दी बानै, बोली, “आ नांय'र पाव भर
पागी उकाळो, छटाक-नैडो पाणी हुता ही उतार लेया, सू-न्यायो हुवै जद
धाधो-भाधो बिटा देया ।” पच-पच करतै पचियां नै वण गुद घोया, फूटग्या
बै, गाज दाव-दाव पाटी बांधदी । लुगायां बटो राजी हुई, बडी आव-
भगन करी बा री । दूध तो एक-एक गिलास नी-नी करता ही पीनो पट्यो
बानै ।

“धे तो पाहोती हां पारा ।” मुधा बतौयो ।

डोररी बोली, “धन घडो, धन भाग, ओ जिमा पाहोगी मारा, बंगा
पघारो अठै, सेवा करस्यां पारो ।”

“मैर है पारी । अठै थीर दाम्या ही है-पारै भाषयो ?”

“हां है, एक गवाही मारै ही बैन-वा छोडै ।”

“ओर ?”

“एक मुखे में एक बामन है, एक है

ही है, वाने म्हे नी जाणा । केई मुरवा विचाळें सूना ही पड्या है बोनू तो, धणी कोई नी जाग्यो दीसै है ।”

“पाडोस बढिया है, टाबरां नै दूध-दही खवावो, काम करावो घेत मे, पढणआळो है कोई तो पढण नै भेजो वीनै ।”

“पढण नै नैडै-नैडास तो ई रोही मे, सपना ही लेवो भला ही ।”

“सपना लेस्यो तो वै ही साचा ही हुसी—मौड़ा नी, गिणै दिना मे ही, अर बी सू पैलां म्हे बंठी मा-बेटी दोनू, पइसो ही नी लां, थे कहो तो काल ही आ वंठा पण दस-वीस टाबर हुया ।”

“न्याल करस्यो, पग पूजस्या घारा, वस्ती बर्ध है तो टाबर तो हुसी ही ।”

रात नै रकगी वै । लालटेण का चिमन्या रा निमघा चानणां दीखे हा कटै-कठै ही । मिनखा रो बोटारो तो नी सुणीजै हो, पण कदे-कणास की ट्रेक्टर री आवती-जावती आवाज रात री मूनवाड तोडै ही । सिरदारी बोली, “वजड़ अर अळसीडो ऊगी जमी कानी देखतां तो ओजू ही डर लागे बाई ।”

“अळसीडै मे तो डर ही लागे मा, पण ओ डर मिटतां अबे पणो ममे नी लागे, पक्का मकान ही चिलकसी अठै, विजळी, टकी, दूकानां, स्कूल, अस्पताळ अर छोटा-मोटा कळ-कारखाना सै हुसी । हजारों बरसां बाद ई घरती रो उदै आयो है, आदमी री मंनत अर बीरी मूझ-बूझ नै जडीकतो । हिमाळें सागै जुडग्या आपा, अर हिमाळें हिंद महासागर सागै, एक हवा, एक आकास, एक घरती, एक चेतना, भारत-माता री मीर है आपां पर मोकळी-मोकळी ।”

अगलें दिन कुभारां रं बाळका नै भळे देख्या मुघा । फायदो हो बारं, दवा-दारु बारी और करी बण । राजी हुती डोरुरी बोली, एक दिन तो म्हारै ही रको, म्हारी झूपडी मे ही चुळू करो मा-बेटी ।”

मुघा बोली, “आज री तो माफी दो मा-सा, अबकै बदेई, बंगा ही हाजर हुम्या आपरी मेवा मे ।”

डोकरी पाच रिपिया देवण सागी मुघा ने, बा बोली, “अँ क्यांरा मा-मा ?”

"दवायां धारं किसी घर ने नीपजै है बाईसा ?" डोकरी बोली ।

"अं टाबर धारं ही लागं है की, म्हारं नी ?"

"यार ही है बाईसा, म्हे तो स्वार्थं रा हा ।"

"म्हारा है जद, देंवण रो विचार ही मत करो ।"

वै दिन वजी पाचेक, रवाना हुगो वै पेमू सागं उपाळी ही । बाई-तीन कोस आई जित्तं अंधेरो पङ्गयो । दो घंटा वस नं और उडीकी बठे । बारं-साडी बारं, जांवतां, बीकानेर पूस्या वै । रात वस अहुं पर ही काढणी पढी छव घटां ताई ।

सारं बारं जूनागढ रो घाई, आगं कादो-कूटळो अर रोळो सू मधीजती मङ्क । गोडा छाली में दिमा विचाळै ही वै पढी ही—बीटलिया रं सारं । मारकर बारं कुत्ता-कूकरिया ही निकळै हा । केई वामें पावला अर घूस्योड़ा हो हा । चालता ही केया रा गूदडा ही सूधलं अर की असावधान री पीठ ही सभाववस पीठ अर पूरा पर न मूत री हाजत मेटता ही संकं, अर न बारं मू लगावता ही । सुधा सोचं ही, थादमी रं पत्तो लाग्मां भोट ही नी, मायो लगावना ही नी संकं लोग अर लाचारी मे कुत्ता री लघुसका मू तरीजता ही होठ नी खोलं ।

कनं हो दो घोषा चाय रा हा, भुजिया कचौळ्या रा गाडा ही हा हा दो-एक । बारं अंठे पत्ता पर कुत्ता लडै हा रह-रह । बिच-बिच मे वसां रा हॉनं ही आपरी पूरी ऊंवाई पर बाज उठता । भुसाफिरां रो हो-हागो तो मिट ही नी घमे ही । कडकटर न्यारा ही गळ्या फाड़ै हा, रतनगढ-रतन-गढ ! सरदारसहर-सरदारमहर ! अर फाड़ै अन्त हो आ हावां रो । आ हावां गरीब आख्यां नै अध घडी ही लागण नै जाग्या बठे ? इत्तं मू सरती तो ही कोई बात नी ? माछरा री जान उपवाद्यां नं ही, छेड़ें बेटायें ही । कांबळिमो बी ऊपर नांखलें तो जी अमूजै, हटायां रात्रें तो माछरां रा बट्या अर मूत री बाम, डीन घूटीजें अर मायो मूतो पण, केई आ हावां मे ही नोद घूष्यावें हा या अघभो करै ही बां कानी देव-देव ।

मुधा एकर पडो हुगो । मड री घाई कनं जा ऊभी । उदान बाठ-बोसा घडा हा बीने, ऊंडी इत्ती, नीचं देर्यां ही डर लागं हो । बीरो भीत नं तोड-तोड जाग्मां-जाग्मां लोपा गळता बर राग्ना है । अंधारं रो पावरो उटावतो

फूट पड़या। सान्नाइ लारै क्योँ रँवती ही, बोली, "बैनजी काल नी आया, गत नै मोडै ताई उडीकती रही हूँ तो?"

मुधा की मुळकती बोली, "नही आई तो काई ह्यो बाई, तू है नी अठै, सेवा मे सगळा सू आगै?"

छोरी की नी बोली, पण हळको-सो एक भीतरी राग बीरै चैरँ पर नाच उठयो विना आवाज किया।

कंचन बोली होळै-सै, "विराजो बैनजी!"

विराजण नै तो बाई, दिन घणो ही मोठी है, आई हूँ तो की सायरो लगाऊँ तनै!" केई टाबर बांमे, बीरी पौसाळ रा ही हा, मू लाग्या।

मोडिये री मा दीसी बीनै, च्यार आध्या हुता ही, उदास-उदाम बोली वा, 'बाईसा'! होठ बस, इत्ता ही चुल्या बीरा।

"तू किया?" कँवती मुधा बीरँ कनै जा पूगी।

वा बोली, "काई बताऊ, ऊघा है दिन-ग्रह, ताव सिऊँ है छोरँ नै. रोटी उतारसो चाबै, काई करुँ?" अर फीस पडी मतँ ही वा, धीरज छोडती। एक पल रकँर होठ बीरा, भळे फूट पड़या, "एक ही लट अर वा ही... अर?" आमूओर घाथा हुग्या बीरा।

"गूगी है तू? बीमारी आमुवा मू मिटसी का गिडगिड़ाया। मरीर में भेडो ह्योडो दोस है वो तो, दवाई मू मिटसी। बाळक सै ही मोडिया है आररी भावा नै वाल्हा, लोह री आ मे कोई नही, सै ही माटी रा, आधी ममता आछी नही, उतार बीनै।"

मुधा काबळियो बीरो छेडै कियो, सारा बळता आवँ हा बीनै, हाथ लगायो बण, डील सिऊँ हो बीरो। "मोडू"? आरुवा खोलदी बण, एक पल मानो देखयो बण मुधा रँ, पतळा-पतळा हाथ जोड़ दिया बण। मुधा बीरँ निताड पर आपरो ठडो कँवळो हाथ राख दियो। बीरो मा बोली, "अँ चुण है रे मोडिया?" हाथ बीरा, पैसा हा जई ही, आ ठँरघा, पापडो आगोडा पतळा-पतळा होठ बीरा धीमँ नै गूल्या, "बैनजी।"

मुधा बोली, "बाई दूखँ है मोडू?"

"मायो।"

"हाथ-पग ही पाटता हूमो की?"

गै, साधना री दिस्टी सू सरूप बांरो एक ही है, घर नफल, बीरो मसार ही सफल । आछी-माडी जिती भी हू, म्हारो सामो कियो आप तो म्हारं आंसुवां सामे कठं ही को सजळ ही हुणों पडघो है आपनै, म्हारं सपयं अर मुक्ति मे, मुखी-दुखी अर कठोर-कवळा ही हुया हो आप अर कठं ही म्हारी मोटी अर जिही बुद्धि पर रीस-तरस ही उपज्या है आप मे, फेर ही आप लोगां न पीठ ही दी मनै, न कठं ही अनादर ही कियो म्हारो अर न उत्साह भंग ही । ईं खातर ही तो हू निभगी जातरा रै एक मोटे पडाव ताई । आपमा आस्थावान साथी और कुण मिलसो मनै ? मुख-दुख हाणि-ताभ अर राग-रोस सै बढळ्या पण ये अर थारो सहयोग नी बढळ्या, म्हारं सन्तोस री ऊंचाई अर म्हारी आस्था री जीवन्तता इत्तै मे ही है । म्हारी सार्थकता, साची पूछो तो आप लोगा रै सामे रैणै मे ही है, एकली भटकण में नी । एकली भटक्यां न म्हारो कोई अर्थ, न उद्देश्य अर न म्हारं मन री सोराई । हू जाँऊ हौं थामे हू ।

हा तो, आप लोगां आपरो इत्तो अमोलो समै, मैज उदारता मू मनै दियो, ठीक, पण म्हारी जन्मदाता, म्हारी मा-भूमिका आपरी आस्था रै हाया मू अणछुई, आप लोगां आगे आपरा होठ खोलण नै कदरी छडी है एक पग रै तांण आपरी आंठ्या रै उजास-पय मू बीनै ही गुजरणरो पाच मिट । आ मैर नी किया न आपरी सगळी ऊहापोह ही पूरी हुवै अर न इत्तो लम्बी-जातरा री सार्थकता ही । आप सोचता हुस्पो कं किताव रै तोरै आ पूग्या, भूमिका ओजू भळे वाकी ही रही, चुळू वरण री टैम, पुरन-गारो भळे, की अचैरी लागै । इत्तै भूमिका खुद ही बोत पडी घीरै पण बडी मोटी, “मैरवानां, सोचणां आपरो बेजा नी पण की निजर म्हारी बेवमी कानी ही तो फाँतो, मनै इत्तो ताळ होठ खोलण रो मोको ही नी मिल्यो तो म्हारो ईं में काई दोम ? आप लोगा रै मैज चलतै प्रवाह नै रोकर पिगारै म्हारं कानी मोड़ती तो म्हारो बो दुस्माहन न आपरै जचनो अर न मनै सोभनो । बचन मू पैलां बोल्या, गवार बजती अर बग्रन परअवै नी बोनू तो गुणी । म्हारं बोलण रो सही ममै अबै ही आपो है, मुन्नो आर ।”

भूमिका

उपन्यास पूरा हुयो, इच्छा प्रभु री, म्हारो ई मे की नी, सिवा निमित्तता रै । कृतज्ञता मान्या-नी-मान्या, बीर तो की फर्क नी पई, कारण, आंछमै-मावामी री पकड़ म ऊचो-अछूतो है वो । पण, नी मान्या म्हारै घाटो है, अर्थ भे नही, अन्न करण रो । कृतघण रो पैला अन्तःकरण ही डूब, फेर जा भैंग पाणी मे, मगळो की । अन्तःकरण रै मँकाऊ बूटा घातर, कृतघणता, गडा म ही जादा घातक हुवै ।

कथा आ, न जाकासी, न अणदीठी अर न अणभोगी । है हकीकत पण है घन घण्या रो, स्वादियै रै हाथ मे है चाली गेडियो । पाठवा री कचेडी मे कूड़ बयो बोलू ? आधार ई रो साधोडो नही, लियोडो है अणभोगी अर लतैतुकी हेत मे की कने स ही । म्हारी नीयत तो चाली रती ही रही है के की नियोडै घन रो, आधापण अर असावधानी मे दुरुपयोग नी हुवै बठे ही ? बोरे नाभ मू अपेक्षित तो छूटै नही, अर अपेक्षित बीने पूड़ रै भाव परोटे नही । पाठवा नै वो घन मू स्वाद बिगाड-भोजन री मूटि नी हुयै । थारी दिम-दीठ अर थारै परिणाम रै मूळ मे कोई, कुञ्चि रो कोडो नी लागै । पाठवा रै स्वाद नै अवार बटोवडो अर अधोगामी बणावण मे, पदमा-बटोर बनमा, आधी हु'र लायोडो है, घामलेटी साहित्य जिमा-जिमा । ई घातर ही, इमरत मै दूधिया साहित्य रो बदर है तळे बँटनी अर उमेजर साहित्य री है उफलती ।

हू म्हारै पाठवा नै समस री ऊचाई पर मातदार देखणी बाऊ. पीडो-उपाड नही । चाऊ हू के म्हारी आ मनग्या थारी रुचि नै ऊपर उठावण मे जुई अर बै धरती री गध पहण करै । स्वाद-बिगाड साहित्य नी पना ।

म्हारे कानी सू तो चौकमी में पूरी बरती है, जिसी मर्न बरतणी आदं पण अपूर्ण, अपूर्ण ही हुवै है; तो ही कमजोरी रो ठा, लाग्या बीने मानणी चाईने, आगं वा की कम हुवै ई खातर भी अर अन्तःकरण री उरछाई बधं ई खातर भी । लिलाड मे सळ घालघां का डोळा दियाया न आपरी कम-जोरी मिटै अर न किताव री कूत बधं । दिस देवै बीरो गुण मानवादेह मे ही, नी मानै कोई तो फेर किती जूण मे ?

बरस च्यारेक पैलां, दोए-च्यारै एक बूढी भंगण आया करती म्हारै परे । बीरो परवार ही सावठो अर गाव री बिरत ही बीगी मूठी-सावठी । बिरत बीरै बेटो मे बंटघोडी ही, जाप-आपरे हलकै री हाजरी, आपरी समयं साहू सै ही भरता । बी खुद रो अबै न डील ही घणो कंयो करती अर न मन ही । बेटा मा री मनस्या लग्यली । बा बस्ती रो काम बी कनें मू छुड्या दिवो पण, वण बस्ती मे दो घटी फिरणो-घिरणो नी छोडयो । ई मिन बा, जजमाना सागं रामा-सामा ही करलेवती अर आपरा पग मोबळा ही । पोठो पडै बी, रेत की, से'र ही उठै । ई पग-मोबळाई मे कदेई बीने, दम-पांच रेवडी, अर कदेई मीठै-चूठै री कोई हाती-पाती की न मिलता ही अर अँ सै ससम्मान अर अणमाग्या ही । आनै वा आपरै पोती-पोतां मे बाट देवती, वँ राजी, दादी नै देगतां ही मामा डोडता, कंयो करता बीरो एक-एक मू पैलां । पोतां नै ही लाभ अर दादी नै ही ।

म्हारी मा री घर्म-बैन ही बा । दा नी बणी, मा बणाई बीने । माफ-मुपरा बपडा, गळै मे तुळछी नी माळा, पाच-सात खोटा मुगिया ही बिलवता बीने, अर हाप मे बोरटी री पतळी-गुराणी एक डांगटी । डांगटी हर्षे कनें, बिलानेक चीरीज्योडी, बडं वण, चाठी-चाठी मूतळी पळेट राखी ही । मा एक-दो बिरिया बीने दूगरी डांगटी खेबण ग न्योरा ही किमा पण नी ती वण, बोली, "बाई, जूती ही आ अर जूती ही हँ, हँ नै हाप ही मां म्हारा ओळखे अर आंठ्यां ही म्हारी । जीऊ जितै न हँनें स्तागू अर न हँनें अनादम् ।"

माशर ही बा । कबीर, भीरां अर रँदान रा दर्जगू भजन बीनें जयानी हा । मा नै मुणावती बँई बिरियां, बी कदेई म्हारै काना मे ही पुगता । गळ, खबार जागं जिमा ऊंचा तो नी गिचता भी मू पण, सोब अर

डगलिया देखता लागे हो, राग री इमारत बोरी, बुलन्द ही कदेई । आंवती जद, कच्ची बाग्माळी मे आ बैठती वा । दो मिट मुस्ता'र हेला मारती, 'वाई ?' अर फेर दो-ब्यार छिण रुक, 'काई धधो हुवे है वाई ?' काम मे लागी मा, पडूलर देखती, "आई, बैठो दो मिट," अर बा मा ने उडीकती चश्मे रा काच पूछती । हू कँवतो, "मामी सोझी किया है ?"

"धुधळो दीर्म है भाणजा, काचड़ा लगाया पछ, कनें छई रो चँरो सायळ ओळखलू ।"

"काच की लीसा पडग्या हुवे तो मा नुवा चढवा लाऊं ?"

"भाणजा, काच नुवा काई अवे तो आख्या ही नुई लागसी कडे हो, काईं ठा किसीक अर किते दिना खातर, अगलो ही जाणे ।"

"करे नू जाणे अगलो ?"

"मनें काईं ठा, म्हारी जातरा रो अगलो पड़ाव अबकै कठे मू मुरु हूमो अर किया ?"

"की तो जाणती ही हुसी ?"

"जाणू हू दो टैम दालियो घाणों फा पड़नो ।"

"बरस कितारु आ लिया मामी ?"

"आ लिया, पिचतर नैडा, पण बरसां सारु देघणो नी आयो ।"

"ओ किया मासी ? जिता बरम लिया, बितो ही तो देख्यो ।"

"बितो कठे पडपो हो, घाळीस री हुई जिते न देखण री दिन ही मृशी अर न सावळ अटकळ ही आई देखण री ।"

"किया ?"

"पैसा देख्यो मे म्हारे ही पणा ताई, पछे घर स आगे की नी दीयतो, फेर की घेतो ह्यो कै ओ देखणो आघो देखणो है, देखणो की और ही हुवे है, पण अवे करामान सगेर री कम पड़े तो सही दीयणों और ही ओघों । काच पूछ-पूछे'र काम कितारु दिन बाह्यू ? पाणी तो सीप्यां रो घुनें, अर बादो (गोड) किनारा पर बधे ।" बोरे मूळ आमय ने गमगता मे कँयो, "दे हिगाव नो मामी, अमनी देखणों तो घणां नै ऊमरपर ही नी आंनो हूतो ?"

"नी आवे तो नी आवे, रावण रे आख्या दो नही बोन ही पण मरपो

जिते देखणों आयो तो कह ?”

हूं बीरे सल्लभरघं चौखट कानी अचभं सू देखतो बोल्पो “बात धारी जचै है मासी ।”

“पण दूजा री वार्दं बताऊं लाडेसर, म्हारी बताई है मी तो । हा इनी सगळा ही जाणं है कं, अगली जातरा रो आधार आ जातरा ही हुबै है । ई जातरा मे पण जे कोई, देख-देख राखं तो अगली जातरा मे बीने जाघो नी हुणों पडे ।”

“जीवण सार्थक कियं वणं मासी ?”

“सभाव सुधारणां,” अर इत्तं मा आ बैठी, फेर म्हारी बाता बढ अर वा दोनां री गुरू, घर-विध गू ले र मलग ताई री ।

एक दिन पूछलियो मं, “मासी, पोथी पढणी कडे सीखगी नू ?”

बोली, “म्हारं एक मासी हुया करती, सागणनी, सागणी मे, सरीर री सँठी अर सम्यो । घेरो चौटो रोबीलो, अर रग काळो । साच गानर लडती नी सकती । हूं एकर रही बी कर्न दो डाई महीना । म्हारी मायग साघी दर्जन नैटा घर हं बडे । घरा कर्न ही मतोसी-माता री एक मिदर है, बी मे एक बाईसा आयोडी ही । वण विचागे बडे धीरज अर हेन प्यार गू दो आंक मनै ही गिया दिया, भाणजा ।”

“साधणी ही कोई का घारं ही साय री ?”

“म्हारं साय री बयों, यामणो ही वा, साडणू-मुजानगड वाननी । घोरी अर रूप दुलती पढी-लिगी, जवान अर बोली मे मिसरी नै ही मान करे, रामजी री प्यारी, घडती बेळा बेमाना ग्यासी टैम रगाई ही बी पर, भाटी ग्यायळ मे नी घेयडी बीरे ।”

“विधवा ही ?”

“विधवा बयों मुहागण ही ।”

“पढी-लिगी, फूठरी जवान अर मार्ग मुहागण, भयों रै पाटं मे जा घेण रो, वार्दं बोड आयो बीने ?”

“बीरे घरआळां नै देखणो नी आयो हं गानर, बंड रो बाळ्यां मे बाटं टलात्र बता ? अंधेरे मे हालतां गुलाब री टाळी ही धूनणी रो हाथ मार्ग ।” पल भर रुकंर वा भळे बोली, “वा धूगं घर री नही, घारन-

फाटने घर की ही—गैर लज्जति घर की पण सोने की चाळी में सोह रो मेघ लागणी ही कोई नागयी ।”

‘तो घरआळा खुर-घोज तो करो बीरी ?’

‘करी क्यो नी ? मुमंग एकर लेवण नै आयो बतायो वीने, पण वा गई नही ।’

‘क्यो ?’

‘क्या रो तो वा जाणे ।’

‘मिदर रो मेवा ही करनी ग्याली ?’

‘मेवा रो तो नाव हो रे दिन में गडायती हरिजना रे टाबरां नै अर रात नै बारे घरा रो वीम् लुगाया नै और । लेवण रे नाव राती पाई ही भळे किमीक हुवे हें ? कानणो, वणनो में सिद्यावती बाने । हारी-बीमारी वा पर फूनी छटनी, आपरां चण्णा-पाणी बिसार रे । म्हारें साथ नै वण गाव रो मळ-मून ढाणो छड्या दियो, खेती-पाती अर दूजी कारमजूरी में लगादिया वाने ।’

‘गाव रे मवणां की अंतराज नी कियो ?’

‘की काई, डरावण-धमकावण में पाछ नी राखी वा, बीरी भड्डडाई माडीं मू माडी, बठे मू वीरा पण छोडावण रो पूरी चेष्टा करो, पण वा जिया-तिया आपरी ठोड जमी रही । बारे तारे भंग्या नै ही मोकळो लग हणों पडघो, पण बै ही ये निकटघा डिगता पडता विश्वास वा ही आपरो पायम गच्छो । म्हारी मामी नै वण, मा धरपली, मामी रे भाग रो वेंटी नी ही, एक नै स्याणी मुलगणो अर पाळी-पोगी वेंटी मिलगी अर दूसरी नै नन-मन मू जागरो देवणआळी मा । वेंटे मू वेनी राखती वा बीने ।’

‘तू भळे कदेई नी गई बर्डे ?’

‘वीने तो फुरमत अर गुण भूय रो गाड नै बुलावे, रे मूघाई में ? आधो चार तो वा घरा रो रचने नैर यानो, बटीने बीं जमी मिलपी ही बाने । मैं आप-आपरी मेरुण में लाग्योडा तो गुण बीने ही चेत करे, अर बिना चेत विद्या जाणो बटीने दिया हुवे ? न कण ही मुगाई अर गह गई ।’

‘मैं मोच्यो, इमी मुगाई निरचे ही कंचन अर काम रो रेली भूय मू